मज़लूम

(सामाजिक उपन्यास)

पुरुषोत्तम मिश्र 'संकुल'

सारविलाक पब्लिकेशन्स

11बी/5, वृन्दावन आवास, विकास कालोनी, रायबरेली रोड, लखनऊ

आई0एस0बी0एन0 : 978-81-925214-8-0

प्रकाशक : सारविलाक पब्लिकेशन
11बी/5, वृन्दावन आवास, विकास कालोनी
रायबरेली रोड, लखनऊ
प्रथम संस्करण : 2016
मूल्य : ..../-
आवरण : मनीष कम्प्यूटर्स, लखनऊ
मुद्रक : नीलम प्रिटिंग प्रेस, नरही, लखनऊ

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्

विद्यया ऽ मृतमश्नुते

एन.सी.ई.आर.टी
NCERT

NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING
Ph: 011-26565336, Fax: 011-26962873
email: doi.ncert@nic.in
chandrasadayat@rediffmail.com

भाषा शिक्षा विभाग

डॉ. चन्द्रा सदायत
प्रोफेसर एवं अध्यक्ष

फा.सं. 1–1/2013–14/भाशिवि /164
दिनांक : 02.04.2014

विषय : **कविता संग्रह "बेटी" से एक या दो कविताएँ बच्चों की हिन्दी पाठ्यपुस्तकों में शामिल करवाने के संबंध में।**

प्रिय श्री पुरूषोत्तम जी,

आपका पत्र दिनांक 09.01.2014 जो कि आपने माननीय मुख्यमंत्री, दिल्ली सरकार को प्रेषित किया था, वह उनके द्वारा निदेशक, एन.सी.ई.आर.टी. को अग्रिम कार्रवाई हेतु अग्रेषित किया गया है जिसमें आपने अपने कविता संग्रह "बेटी" से एक या दो कविताएँ बच्चों की हिंदी पाठ्यपुस्तकों में शामिल करवाने का अनुरोध किया था।

हम आपकी जानकारी के लिए यह सूचित करना चाहते हैं कि राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा – 2005 के अंतर्गत परिषद् द्वारा कक्षा 1 से 12 तक की सभी पाठ्यपुस्तकें प्रकाशित की जा चुकी हैं। इन पाठ्यपुस्तकों के निर्माण के लिए पाठ्यपुस्तक निर्माण समितियाँ हैं तथा सभी पाठ्यपुस्तकें मॉनिटरिंग कमेटी द्वारा स्वीकृत की जाती हैं। अतः फिलहाल एन.सी.ई.आर.टी. की पाठ्यपुस्तकों में कविता संग्रह "बेटी" से कविताऐं हिंदी पाठ्यपुस्तकों में शामिल करना संभव नहीं है।

आपका कविता संग्रह पढ़कर अच्छा लगा। बेटी पर बहुत ही मार्मिक कविताएँ आप ने लिखी है। आज इस तरह की कविताओं की जरूरत भी है ताकि हमारी बेटियों के बारे में समाज सोचे–विचारे और उन्हें वह स्थान मिले जिनकी वे हकदार हैं। परिषद् पाठ्यपुस्तकों के साथ–साथ शिक्षक–प्रशिक्षण कार्यक्रम भी आयोजित करती है और हम उन कार्यक्रमों में आपकी कविताओं को शिक्षकों के माध्यम से समाज तक जरूर पहुँचाएँगें।

शुभकामनाओं सहित।

भवदीया,

(चन्द्रा सदायत)

श्री पुरूषोत्तम मिश्र "संकुल"
ग्राम – पूरे पयासी
पोस्ट – मोइया बेगमगंज
जनपद – फैजाबाद, उ0 प्र0
पिन कोड – 224188

श्री अरविन्द मार्ग, नई दिल्ली-110016
दूरभाष: 26560620, 26566360 फैक्स: 91-11-26868419
तार: शिक्षाशोध

SRI AUROBINDO MARG, NEW DELHI-110016
PHONE: 26560620, 26566360 FAX: 91-11-26868419
GRAMS: EDUSEARCH

प्रेषक,

जनसूचना अधिकारी,
राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं
प्रशिक्षण परिषद, उ0प्र0, लखनऊ।

सेवा में,

श्री पुरूषोत्तम मिश्र,
ग्राम–पूरे पयासी, पो0–मोइया, बेगम गंज,
जनपद–फैजाबाद, पिन0–224188

पत्रांकः रा0शै0 / 19 /2015–16 दिनांक 21 अप्रैल, 2015

विषय : सूचना का अधिकार अधिनियम–2005 के अन्तर्गत मांगी गयी सूचना के सम्बन्ध में।

महोदय,

कृपया उपर्युक्त विषयक परिषद कार्यालय के पत्रांक राशै0 / 50349 / 2014–15 दिनांक 25.03.2015 के द्वारा प्राचार्य, राज्य शिक्षा संस्थान उ0प्र0 इलाहाबाद से "बेटी कविता" संग्रह की कुछ कविताओं को पाठ्यक्रम में सम्मिलित करने की अपेक्षा की गयी।

उक्त के क्रम में प्राचार्य, राज्य शिक्षा संस्थान उ0प्र0 इलाहाबाद के पत्रांक रा0शि0सं0 / 04 / 2015–16 दिनांक 06.04.2015(छायाप्रति संलग्न) द्वारा अवगत कराया गया कि पाठ्यक्रम की समीक्षा एक निर्धारित समयान्तराल पर होती है वर्तमान में प्राथमिक स्तरीय पाठ्यक्रम की समीक्षा कर के नवीन पाठ्यक्रम विकसित किया जा चुका है तथा पाठ्य पुस्तकें भी समीक्षोपरान्त संशोधन सहित पाठ्य पुस्तक अधिकारी उ0प्र0 लखनऊ को प्रेषित की जा चुकी है। अतः आगामी सत्रों में पाठ्यक्रम की समीक्षा करते समय विशेषज्ञों से विचार विमर्श परीक्षणोंपरान्त श्री पुरूषोत्तम मिश्र संकुल की कविताओं को पाठ्यक्रम में सम्मिलित करने का विचार अवश्य किया जायेगा।

संलग्नकः उक्तवत्।

भवदीय

21/04/15

(ओमकार राणा)
जनसूचना अधिकारी,
राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं
प्रशिक्षण परिषद, उ0प्र0, लखनऊ।

o/c



समर्पण

स्मृति शेष

नानी राजपती, मामा विद्यासिन्धु
एवं दयासिन्धु को जिनके सानिध्य
में मेरा बचपन बीता।

लेखक

एक

शून्य पर छिटके असंख्य तारे कांप 7रहे थे, और चन्द्रमा उनकी दयनीयता पर हंस रहा था। पीली चाँदनी से सारी धरा नहाई हुई, चारों तरफ सन्नाटा अपना पहरा दे रहा था। कभी–कभी श्वानों के भोंकने की आवाज गूंज जाती, तो कभी झींगुरों की झन्कार से वातावरण संगीत मय हो जाता। गाँव की सारी आबादी गहरी निद्रा में निमग्न थी, परन्तु सुधा की आँखों में एक बेचैनी झलक रही थी।

रात काफी बीत चुकी, सप्तऋषि ऊपर आ चुके थे। सुधा ने जैसे आँखे मूंदी कि माँ के खाँसने की आवाज गूँज गयी, वह उठी और माँ के एकदम करीब पहुँच गयी। माँ उसके मुँह से निकल गया, परन्तु माँ ने कोई जवाब नहीं दिया। बस आँखे ऊपर उठायी जो अमित दर्द के कारण रक्तमयी हो गयी थी। सुधा ने काँपते हाथों से दीपक जलाया–जिसकी मटमैंली रोशनी चारों तरफ बिखर गयी उसने देखा माँ की चारपाई के नीचे एक खपड़ा (मिट्टी का बर्तन) रखा था। जो खून से भर गया था। सुधा के बदन में जमाने भर का दर्द उभर आया। परन्तु वह कराह न सकी। फिर यही तो उसका नसीब था। रोज माँ के फेफड़ों से गिरने वाला खून–रक्त के छोटे–छोटे लथोड़े........। सुबह उन्हें फेंकना यहीं सब उसकी दिनचर्या बन चुकी थी। गरीबी कितनी हृदय बेधक होती है, जिसमें सारी भावनायें कामनाये जल जाती है। और वे गरीब सिर्फ इसके मूक दर्शक बनकर रह जाते हैं। काश! इनके जीवन का विरानापन हृदय का दर्द यदि दिखायी पड़ता तो शायद उनको दया आ जाती जिनके पास जीने से अधिक साधन हैं बड़े लोग हैं। समाज के कर्णधार है।

सुधा माँ के करीब बैठ गयी। अपने, हाथों से माँ के हृदय को आहिस्ता–आहिस्ता दबाने लगी। चन्द्र मिनटों के बाद माँ ने आँखे खोल दी। सुधा की विरान सी आँखे उस चेहरे पर अटक गयी जो एकदम पीला झुर्रियों से युक्त था। माँ सुधा की आवाज कंपकपाई थी।

बेटी! तू अभी तक जागती है। माँ का जैसे स्वप्न टूटा हो–और कंपकपाते हाथों से बेटी के बालो को सहलाने लगी। आँखों में ममता का स्रोत फूटा जो गरीबों को सबसे सुलभ है। बिना मूल्य का खजाना है।

बेटी जा सो जा! रात बहुत बीत गयी परन्तु सुधा उठी नहीं। माँ ने जब कई बार अनुरोध किया तो उसे उठना ही पड़ा। आखिर वह कर भी क्या सकती

थी। किसी के पास बैठने से उसका दर्द कम तो नहीं होता हाँ उसे कुछ तसल्ली जरूर होती है।

मनुष्य जब संघर्ष करते–करते निढ़ाल हो जाता है। या जीवन यात्रा समाप्त कर चिर विश्राम के पास पहुंचता है, तो उस समय उसका मन क्षीरफेन के समान हो जाता है। परन्तु माया कितनी बलवती होती है जो अमूल्य सुख पान से डराती है। नश्वरता में विश्वास करती है। और ऐसे समय हमारा कर्तव्य बनता है – उस व्यक्ति की कामनाओं का कद्र करना। यह ऐसा उपचार है जो बड़ी व्याधि को भी परास्त कर देता है। नव जीवन का संचार करता है। परन्तु मृत्यु जीवन का सत्य है इससे हम भाग नहीं सकते।

सुधा ने इन बातों पर पूरा ध्यान दिया। दवा भले ही न मिले परन्तु वह स्नेह जो एक बेटा भी न कर पाता सुधा ने किया था। और यही कारण था कि आज तक रक्त विहीन जीर्ण काया में प्राण का संचार था।

o o o

छात्र एकता – **जिन्दाबाद–जिन्दाबाद**

प्यारे साथियों –

किसी मजलूम के हक को, दिलाना यदि बगावत हैं, तो में भी एक बागी हूँ, मेरा मजहब बगावत है। मैं हवाओं का रूख तो नहीं मोड़ सकता। फिर भी आप सब को विश्वास दिलाता हूँ कि सत्य के लिये नित्य संघर्ष करता रहूगा। यदि ऐसी स्थिति में मुझे अपने प्राणों की आहुति भी देनी पड़ें तो मैं अपना सौभाग्य समझूँगा। सत्य अहिंसा एवं विश्व बन्धुत्व के लिये मैं सदा अग्रणीय रहूँगा। भ्रष्टाचार आरजकता व्यभिचार को जड़ से उन्मूलन करने का कृत संकल्प लेता हूँ। गरीब छात्रों को छात्रवृत्ति दी जाय तथा सब के साथ न्याय हो यहीं हमारा धर्म है।

भाइयों एवं बहिनों आप से अनुरोध है कि एक बार मुझे सेवा का मौका दें। अध्यक्ष पद हेतु प्रधान को भारी मतों से विजयी बनायें।

धन्यवाद

प्रार्थी — समर्थक

प्रधान सिह — सुजान सिंह

भानु प्रताप

सारे शहर में छात्र एकता के नारे बुलन्द हो रहे थे। अपने–अपने प्रचार में सभी व्यस्त थे। इस कालेज के प्रांगण में मिलता हुआ एक इण्टर कॉलेज भी था। यद्यपि इसका डिग्री काँलेज से कोई सम्बन्ध नहीं था, फिर भी वहाँ के छात्र प्रचार में संलग्न थे इस कार्य में उनका उत्साह तो था ही, साथ ही साथ एक उद्‌वेग भी। गत एक सप्ताह से यही कार्यक्रम चलता रहा चुनाव भी हो गया फिर नतीजे का इन्तजार होने लगा, एक दिन नतीजा भी आ गया। प्रधान अध्यक्ष पद के लिये चुन लिया गया। यह खबर समाचार पत्रों में छापी गयी। प्रधान से कहीं ज्यादा खुशी सुजान को हुई भानू खुशी से पागल हो गया।

सुजान भानू एवं प्रधान आमने–सामने बैठे थे। सुजान ने कहा मुझे तुम्हारी विजय की पूरी उम्मीद थी। दरअसल यह बात भगवान भरोसे कह रहा हूँ। अतः अब तुम्हें भगवान की सत्ता में विश्वास करना ही चाहिए।

नहीं सुजान, मैं भगवान नहीं मानता न कभी मानूगा। भगवान एक भ्रम है। व्यर्थ की धारणा एंव मानवीय कल्पना है, तथा बुद्धिजीवीयों की चतुरता है।

एक दिन तुम्हें आस्तिक बनना ही पड़ेगा। मैंने जो कहा वह निरानिर पुस्तकीय ज्ञान नहीं अनुभव है सुजान ने कहा।

मेरा भी अनुभव है भगवान नहीं है – प्रधान हंस पड़ा।

अपनी जिद्‌द को नहीं छोड़ोगे प्रधान यह मैं अच्छी तरह जानता हूँ। अच्छा भानू तुम्हारा क्या ख्याल है।

मैं प्रधान के पक्ष का समर्थन करता हूँ। भानू ने संक्षिप्त सा उत्तर दिया।

तुम दोनों का दिमाग मेरे ख्याल से बीमार पड़ चुका है। इसलिये सत्य दिखाई नहीं पड़ रहा है सुजान बोला –

मैं एक दम ठीक हूँ भानू ने लापरवाही से कहा मुझे ईश्वर के अस्तित्व पर विश्वास नहीं, दया परोपकार एवं करुणा पर विश्वास करता हूँ जैसा कि स्वर्ग के विषय में गुप्त की घोषणा है।

सुनो स्वर्ग क्या है सदाचार है।

मनुज तत्व की मुक्ति का द्वार है।

मुक्ति का द्वार तुम्हें सदाचार में नजर आता है। लेकिन एक बात ध्यान से सोचों भानु–तुम्हारा क्या तर्क है। आखिर तुम्हारे विचार से मुक्ति क्या है?

मुक्ति को वास्तव में हम मृत्यु मानते है। मरने के बाद पुर्नजन्म पर मैं विश्वास नहीं करता। मृत्यु एक ऐसी शीतलता है जो सारे ताप को हर कर शान्ति प्रदान करती है। मेरे ख्याल से यही सच्ची मुक्ति है। सदाचार इसमें इसलिये मिलाया गया है ताकि मरने के बाद हम उसकी याद रखें। मृत्यु के बाद जिस व्यक्ति का नाम अमर रहें सच्ची मृत्यु उसी की कही जा सकती है।

मेरे सवाल का यह जबाब नहीं। सुजान बोला।

मैं इसके सिवा और कोई जबाब नहीं दे सकता भानू ने कहा।

तो मुझे कहना पड़ेगा तुम नास्तिक हो।

तुम्हारे नास्तिक कहने से मुझ पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता। इसमें प्रभाव की बात नहीं मैं तो इतना कहूँगा तुम अपनी जिद् के आगे नीति अनीति कुछ नहीं मानते। तुम उसे सच क्यों मानते हो भानू 'जो वास्तव में मिथ्या है झूठ है। यह गलत है सुजान सिंह – लेकिन मुझे दिल की आग ऐसा करने के लिए बाध्य करती है।

किस्मत का सौदा परमात्मा से न करो भानू – ऐसा करने वाला मुक्ति क्या दुनिया का खेल भी नहीं समझ पायेगा।

खेल और दुनिया – भानू के मुंह से निकल गया। और तभी मैं चलता हूँ सुजान कहता हुआ प्रधान उठ गया। चौंककर सुजान के घड़ी देखी तो दो बज चुके थे।

o o o

पुराणों में लिखा मिलता है कि महर्षि वाल्मीकि के शरीर पर दीमक ने घर बना लिया था। इसी कारण उनको वाल्मीकि कहा जाने लगा। परन्तु आज यह कल्पना सा लगता है। यह समय का प्रभाव है या कुछ और पर हम ज्यादा समझ नहीं सकते। लेकिन दर्द के धारा में बहता हुआ मानव कितना विलक्षण हो जाता है, क्या इसे भी कल्पना कहेंगे। वे शायद कह भी दें जिन्हें दुख का आनन्द नहीं मिला – निष्कर्ष यह है कि दर्द सहता हुआ मनुष्य ऐसा हो जाता है कि दुनिया उसको पागल समझनें लगती है। ऐसा ही हुआ था सुधा के साथ......। रात भर वह सोयी नहीं माँ के सिराहने बैठे–बैठे काट दिया, और उषा मुस्करा उठी। कितनी मोहक थी वह भोर की बेला, पंछीगण का कलरव जल सुत की श्रृंखला, जल के किनारे बैठे सोन बालक, जीवन का नव संचार, करता हुआ यह भोर का समय ठीक विलोम

सुधा के सीने में उतरता गया। उसे ऐसा जान पड़ा मानों उसका हृदय किसी गर्म तावे सा तप रहा हो।

सूर्य अपनी यात्रा शुरू कर दिया। उसकी किरणें जल थल पर खेलने लगी। सचमुच समय बेपरवाह है। सुधा बेटी – आज पढ़ने नहीं जाओंगी माँ ने पुकारा था। सुधा ने माँ को देखा – कितनी थक चुकी थी। तट पर खड़ी विश्राम की तलाश करती माँ वह कराह पड़ी।

क्या हुआ बेटी–माँ का स्वर बेहद कमजोर था।

कुछ नहीं माँ.......। जा रही हूँ न! स्कूल नहीं जाऊँगी तो.....। क्या होगा बेटी–माँ बीच मे बोल उठी.....।

एक लम्बी सांस लेकर सुधा चुप हो गयी। मानो किसी भूल का प्रायश्चित कर रही हो। फिर थोड़ी देर के बाद वह चल पड़ी। गर्म हवायें उसे छूती हुई दूर निकलती रही, पर उसे ऐसा जान पड़ता था मानों गर्म सलाखें उसके बदन में धंसती जा रही हो। स्कूल के करीब पहुंच कर वह रूक गयी थी। क्योंकि कुछ लड़कियों ने उसे घेर लिया था, और मंद–मंद मुस्करा रहीं थी। लेकिन सुधा इससे बिल्कुल बेखबर थी। कोई बेशर्म तो कोई महा बेशर्म होता है। कुछ ऐसी थी मनोरमा जो अपने को रोक न सकी। आखिर बोल ही पड़ी.............।

सुधा क्या दुनिया को दिखाना चाहती हों कि तुम जवान हो गयी। मैं कुछ समझी नहीं – सुधा मनोरमा का मुंह देखती रह गयी। पीछे कमीज देख शायद साफ किये दो सप्ताह हो गये होंगे। सुधा और भी उलझ गयी। लेकिन तुम सब हंसती क्यों हो। अगर में गन्दी हूं तो मेरे पास मत आओ। मैं अछूत हूँ। मुझे छूने से तुम सब नापाक हो जाओगी। सुधा आज के युग में अछूत कोई नहीं रह गया। मैं तो यह कहना चाहती हूँ कि तुम्हारे कमीज पर खून लगा है। तुम्हारे मासिक........। मनोरमा रुक गयी थी, और पास में खड़ी लड़कियाँ ठहाका मार कर हंस पड़ी। तभी एक युवक वहीं आकर रुक गया। मनोरमा ने उसे भी इस विषय में शरीक बना लिया। वह इतने जोर से हंसा कि भीड़ इकट्ठा हो गयी।

सुधा का स्वर खत्म हो गया। एकदम मूक मानों पृथ्वी माता से अपनी लिये मार्ग मांग रही हो। परन्तु वे इससे बेखबर उस पर ऊँगली उठा रहे थे। तभी भानू का नजर इस भीड़ पर पड़ गयी। उसे कुछ अजीब सा यह दृश्य लगा। लाख कोशिश के बावजूद वह अपने को रोक न सका। यंत्रवत चल कर उस भीड़ में

शामिल हो गया। उसने उस लड़की को देखा। जिसके चारों तरफ से ग्रहण लगा था। एक छात्र जो वेश–भूषा में बड़े घर का लग रहा था, वह खुले आम कह रहा था। भाइयों इस कलियुग में सुधा जैसी देवी मिलना मुश्किल है जरा पीछे कमीज पर देखों ''कमल की पखुड़ी कैसे चमक रही है। और इसके साथ वह ठहाका मार कर हंस पड़ा और उसके साथ भीड़ भी। भानू की नजर उस लड़की पर अटक गयी जिसकी कमीज पर खून का घब्बा लगा था, और सारें छात्र उसकी हंसी उड़ा रहें थे। न जानें क्यों भानू के ह्रदय में उसे देख कर एक हलचल उत्पन हो गयी। उसे ऐसा हुआ मानों वह लड़की उसकी कुछ लगती है लेकिन क्या सोचते–सोचते भानू चीख पड़ा गुड़िया.......।

तभी सारे समूह का ध्यान उसकी तरफ चला गया। साथ ही साथ एक ठहाका और बुलन्द हो गया, जो भानू के लिए असहनीय था! वह बैठा था, जो खलनायक था। भानू ने दो तमाचे उसे जड़ दिये।

कमीनों तुम्हें शर्म आनी चाहिए। एक निरीह अबला को सतानें में तुम्हें क्या मिल रहा है। भानू कह कर चुप हो गया, परन्तु वह लड़का जिसका नाम रणवीर था, क्रोध से आग बाबूला हो गया था! भानु का गिरेबान पकड़ते हुए बोला ''मैं तेरा खून कर दूंगा कमीनें, तू नहीं जानता मेरे डैडी आर्मी में कर्नल हैं।

तड़ाक भानू का एक हाथ पुनः पड़ा और वह लड़खड़ा कर गिर गया! संभलता इस से पहले तीन चार हाथ भानू ने जड़ दिये फिर लगभग चीख पड़ा बोल तेरे डैडी क्या हैं।

रणबीर के बाल बिखर गये थें ओंठ फूट गये थे, जिससे खून रिस रहा था। आँखे दहक रही थी– मानों भानू को कच्छा जबा जायेगा – लेकिन मुख से कुछ बोल न सका।

कैसा रहा मिस्टर रणबीर – भानू ने व्यंगतात्मक ढंग से कहा। आप के पिता आर्मी में कर्नल है तो क्या तुम किसी को इज्जत से जीने नहीं दोगें! तुम बड़े हो तो इसका यह मतलब नहीं, कि तुम खुले आम किसी की हंसी उड़ाओंगे। मैंने जो किया आवेश में इसकी क्षमा चाहता हूँ। रणबीर किसी को क्षमा नहीं करता मिस्टर तुम्हें अपने कर्म का फल जरूर मिलेगा।

इसका मतलब तुम यानी कर्नल के छोकरें मुझे धमकी देते हों। ऐसा ही समझना तुमहारे लिये बेहतर है। भानू किसी की धमकी से नहीं डरता! भाग जाओं

यहाँ से वरना मुझे क्रोध आ गया तो कहते हुए भानू ने रणबीर को झिठक दिया।

उठकर रणबीर ने भानू के आखों में झांका जिसमें हिंसा के भाव दृष्टपात थे। वक्त का मिजाज देखतें हुए रणबीर वहाँ से हट गया।

और तभी भानू की नजर उस लड़की पर पड़ी– जो अभी भी उसी तरह खड़ी थी। लेकिन वे लोंग जो कह–कहे लगा रहे थे, चले गये थे।

आप ने अच्छा नहीं किया, वह बड़े मुश्किल से बोल पायी। सुनकर भानू के अधर पर एक पतली सी स्मित तैर गयी! फिर बोला! मैंने जो किया वह ठीक ही किया। रही बात परिणाम की..........उसकी मुझे चिंता नहीं। खैर छोड़ों.....आपको इस विषय पर विचार करना व्यर्थ है। आप से मेरा निवेदन है कि आप यहाँ से चली जाये. ......तुम्हारी भाषा मुझे पढ़ना आता है। आप हताश नहीं होना हताशा ही जीवन की मृत्यु है। क्या आप को मुझ पर संदेह हैं। वह सिसक पड़ीं, नहीं भानू चीख पड़ा! मुझे दुःख है कि आप इतनी छोटी बात कहेगीं! जल की धारायें जितनी बेग से बहती हैं उतनी ही निर्मल होती हैं। गम का पहाड़ कितना ही बड़ा क्यों न हों परन्तु आत्मविश्वास एवं साहस से ढ़ह जाता है, मानव की भावना ही उसका बड़प्पन हैं। अच्छा मैं चलता हूँ। अगर फिर कोई परेशान करें तो जरूर बताना बहन! यह मेरा आप से अनुरोध है! ऐसा कह कर भानू आगे बढ़ गया! और सुधा वहीं खड़ी रह गयी।

o o o

यह उसकी तस्वीर है सुजान जिसके जिस्म में तब खून गरम हुआ जब सारे हिन्दुस्तानी कॉच की चूड़ियाँ पहन रखा था। मेरा मतलब यह है सुजान कि उन की आत्मा मर चुकी थी। फिर दस शताब्दी कम नहीं होती। इतनें लम्बे अरसे से मुगल व अंग्रेजों की गुलामी करते हुए उनके रगो में गुलामी की गंध समा गयी थी। जैसे पैंदा होने वाला बच्चा यदि दस बीस वर्ष अंधकार में बंद कर दिया जाय, तो वह सिफ अंधकार का प्रेमी ही नहीं होगा बल्कि प्रकाश से उसे बू आयेगी। ठीक ऐसा ही हुआ था हिन्दुस्तानियों के साथ–! वे गुलामी के आदी होकर अपना रूप ही भूल चुके थे। तभी यह युवक भी पैदा हुआ। जब सुभाष ने यहाँ का दृश्य देखा तो उसकी आत्मा भी चीख पड़ी। अन्त में वह अपने को रोक न सका और एक नारा दिया – तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी......।

परन्तु यह भारतीयों की बस की बात नहीं थी। पर उसने हिम्मत नहीं हारी

और एक दिन आजाद हिन्द बनाकर खून की होली खेलना चाहा – परन्तु वक्त कितना बेरहम होता है। उसने उसे भी छीन लिया। और उसकी तमन्ना सपना बनकर रह गयी। काश – आज वह जिन्दा होता – मैं भी बहक गया सुजान कहना क्या चाहता था, क्या कह दिया। लेकिन न जाने क्यों यह तसवीर मुझे खिंचती है जब मैं इस बीर को देखता हूँ तो मेरा भी खून गर्म हो जाता है। सुभाष ने अंग्रेजो को खत्म करना चाहा......... क्योंकि उन्होंने मनुष्यता का खून पिया था। भारत माँ पर कलंक थे – एक धब्बा था जो हर पल बढ़ रहा था।

सुजान वे कितने क्रूर थे – यौन सम्बन्धी क्रियाओं में पशु थे और हमारी बहिनों के साथ ऐसा व्यवहार, हमारे अन्दर खून नहीं पानी था। लेकिन एक दिन सुभाष का सपना पूरा हुआ – हम आजाद हुए।

समय चलता रहा – दिन, महीने फिर वर्ष बीत गये लेकिन अंग्रेजों के जाने के बावजूद भी हम आजाद नहीं हुए। उनके रीति रिवाज, यह तो छोटी सी बात लगती है – परन्तु यदि हमारी भावनायें पवित्र नहीं हुई तो आजादी, ऐसी आजादी को गोली मारो सुजान जिसमें परतंत्रता की बू आती है।

मैने बहुत लम्बा भाषण दे दिया सुजान – शायद तुम बोर हो गये होगे। अगर ऐसा हुआ हो तो हम क्षमा मांगते हैं –

नहीं भानु हम बोर नहीं बल्कि बहुत खुश हैं तुमने जो कहा वह सत्य के समीप है हम उसके गहन तक तो नहीं पहुंच सकते, बस उनको सिर्फ नमन कर सकते है। हाँ तुम अब बताओ 'आखिर कहना क्या चाहते हो –

''मैं भानू मुस्करा कर बोला – आप तो जानते ही होगे भैया कल मैंने एक छोकरे की पिटाई कर दी जो किसी कर्नल का बेटा है। और वह कर्नल देश पर मिटने वाले, अपने वतन के लिए जीने वाले – उनके परिवार पर अत्याचार करके क्या मैंने गुनाह नहीं किया – परन्तु क्या उस अबला को देखकर मुँह मोड़ लेता सुजान – जो असहाय उनके मनोरंजन का केन्द्र थी। जो दीन उसका उपहास क्या यह मानवीय धारणा है – आप बतायें क्या मैंने गलत किया.......।

भानू तुमने जो किया ठीक है, मानता हूँ वह देश प्रेमी का बेटा है। परन्तु इसका मतलब यह कतई नहीं कि नियम उसके लिए नहीं हैं। अगर वह खुद कर्नल होता तो भी तुम ठीक थे। देश प्रेम की भावना से विश्व बन्धुत की भावना सर्वोपरि है। सत पुरूषों के लिए विश्व के प्राणी कुटुब होते है। हमें नीति कभी नहीं छोड़नी

चाहिए। मानवीय धारणा से गिरने वाला पिता भी क्षमा के योग्य नहीं...........इस लिए तुम्हें पाश्चाताप करने की जरूरत नहीं।

भानू के आँखों में आँसू उमड़ आयें – पर सुजान उन्हें देख न सका – बड़ी खूबसूरती से मनोभावों को छिपाते हुऐ भानू बोला – एक बोझ उतर गया सुजान! मैंने सोचा कहीं देश द्रोही तो नहीं बन गया। परन्तु आप ने मुझे संभाल लिया।

मैं कौन होता हूँ पगले – उठाने गिराने वाला तो कोई और है लेकिन हम जल कण – उस महासिन्धु को कहाँ पहचान पाते हैं जिसमें हमारे जीवन की क्रीड़ा है। मुझे यह सब समझ में नहीं आता सुजान......... और हम ज्यादा समझना भी नहीं चाहतें! मेरा दिल साफ है हर्ष इस बात का कि एक बहुत बड़ी उलझन सुलझ गयी। देखों संध्या हो गयी। मुझे शीघ्र घर पहुचना है।

''वह तो है ही! लेकिन जरा सावधान रहना..........रणवीर अपनी धमकी पूरी भी कर सकता है।

अगर दूबारा उसनें इंसानियत का खून करना चाहा – तो मैं उसका खून कर दूंगा। कहते हुए भानू का चेहरा क्रोध से तमतमा उठा। और सुजान उसके बदले हुए रूप को देखता ही रह गया।

खून.....। नहीं भानू ऐसा नहीं करना – मैं नहीं चाहता जिस जुबान से तुम मुझे भाई कहते हो उससे ऐसा शब्द भी कहो। जीवन में भूल कर भी ऐसा नहीं करना भानू! मुझे आज बहुत देर के बाद पता चला कि तुम्हारे अन्दर आग का गोला दहक रहा है। मुझे तो डर सा लगने लगा है कि कहीं तमु बागी न बन जाओ।

''यदि दुनिया में मनुष्यता जिन्दा हो जाये, तो भानू बागी भी बन सकता है। फिर मिलेगें कहता हुआ भानू उठ गया।

० ० ०

विश्वविद्यालय के प्रांगण में एक कार आकर रूकी जिसे देखकर अधिकांश छात्राओं का ध्यान उस तरफ चला गया। आश्चर्य इस बात का था कि वह एक सरकारी कार थी। जिसका यहाँ से कोई सम्बन्ध नहीं था। कार से दो व्यक्ति उतरे.. ....जो सैनिक अफसर थे। बड़े आराम से प्रधानाचार्य की ऑफिस की तरफ बढ़े। दौड़ता हुआ चपरासी पहुंचा और जल्दबाजी में बोला........क्या काम है साहब......।

प्रिंसिपल साहब है – उनमें से एक ने छड़ी घुमाते हुए कहा – चपरासी ने

हाँ में सिर हिलाया। और ऑफिस की ओर दौड़ पड़ा।

ठहरो –वही अफसर फिर बोला!

चपरासी ठिठक कर रूक गया।

प्रिंसिपल साहब से कह दो – कर्नल आनन्द आये हैं।

चपरासी चल पड़ा – कर्नल आनन्द का नाम सुनते ही प्रिंसिपल साहब के चेहरे पर खुशी के भाव तैर गये। खुशी के इस बेग को रोक न सके और स्वयं आफिस के बाहर निकल पड़े।

अरे! आनन्द तू उनके मुख से निकला – दूसरे ही क्षण वे दोनों एक दूसरे के बाहों में थे।

आनन्द तू यहाँ कब आया? अरे फोन भी नहीं किया। प्रिंसिपल साहब बोले। फिर वे तीनों आफिस में बैठ गये। मेरे लायक कोई सेवा।

सेवा – कर्नल साहब हंसे थे, वैसे आप जानते ही होंगे कि रणवीर मेरा बेटा है।

ओह प्रिंसिपल साहब ने लम्बी सांस ली। क्षमा करना दोस्त मुझे नहीं पता था कि रणवीर आपका बेटा है।

हो सकता है – कर्नल साहब हंस पड़े। यह कोई बड़ी बात नहीं है परन्तु अब आपको पता जरुर चल गया कि रणवीर मेरा बेटा है। आपको इस बात की जरुर जानकारी होगी कि दो दिन पहले भानू नाम के किसी लड़के ने रणवीर पर हाथ उठाया था। यह बात आज मुझे मेरे पास बैठे दोस्त की लड़की मनोरमा ने बतायी।

सुनकर दुख हुआ दोस्त अगर रणवीर ने हमें बताया होता तो......।

कर्नल साहब रुक गये परन्तु प्रिंसिपल साहब किसी गहरे सोच में डूब गये। उनके सामने उस लड़के की आकृति स्पष्ट दिखायी पड़ने लगी जिसका नाम भानू था।

आप कुछ सोचने लगे कर्नल साहब बोल पड़े?

कुछ नहीं, कुछ नहीं प्रिंसिपल साहब चौंकते हुए बोले! हाँ भानू के विषय में आप क्या कहना चाहते थे।

उसे इस कालेज से निकाल दिया जाय अगर आप ने ऐसा नहीं किया तो

मैं उस कमीने को.......... ।

कैसी बात करते हो दोस्त......भानू को जरूर सजा मिलेंगी। परन्तु यह जरूरी नहीं कि उसे निकाल ही दिया जाय।

उसके लिये यही ठीक होगा मेरे दोस्त......ताकि उसे पता चले कि जल में मगर से बैर करने से क्या लाभ होता है। मैं कोशिश करूँगा – प्रिंसिपल साहब ने कहा।

कोशिश मत कहो दोस्त – ऐसा होगा, कहते हुए कर्नल साहब उठ गये।

○ ○ ○

मुझे किसलिये बुलाया सर – प्रिंसिपल साहब के सामने खड़ा भानू बोला।

मुझे कहते हुए दुख होता है भानू कि तुम्हें इस कालेज से निकाला जाता है क्योंकि तुमने रणवीर पर हाथ उठाकर मुझे ऐसा करने के लिए मजबूर किया बेटे... ।

आप अपने को मजबूर क्यों कहते है सर – इस कालेज में दस हजार से कम छात्र न होगे। मेरे ख्याल से ऐसी घटनायें प्रायः होती ही होगी। इसलिए क्या मैं पूछ सकता हूँ कि मुझे कालेज से निकालने में आप क्यों मजबूर हैं।

''भानू जरूरत से ज्यादा बोलना ठीक नहीं यह मेरा फैसला है कि तुम चरित्र हीन हो और तुम्हारे कर्म की यही सजा है।''

''आपको अधिकार है यह आप जैसे आज तक सभी अधिकारी कहते आये है। कोई नयी बात नहीं है। लेकिन क्या किसी की इज्जत पर उँगुली उठाने वाले को शबासी देने वाला, मेरा बतलब आप उसे क्या कहेगें।

भानू जुबान बन्द करो........ ।

बन्द है सर.........। आप जैसे जिम्मेदार अधिकारियों के सामने जुबान खोलना हास्यास्पद है, क्षमा करना सर।

गेट आउट प्रिंसिपल साहब चीख पड़े।

जोर से बत बोलो सर। मैं खुद जाता हूँ ऐसा कहते हुए भानू मुड़ गया। और जब वह बाहर निकला जैसे सारे बदन में विद्युत लग गयी हो – प्रधान उसकी तरफ आ रहा था।

भानू प्रिंसिपल साहब ने तुम्हें किसलिये बुलाया था। कुछ नहीं प्रधान ''मनुष्य को अपने गुनाह की सजा जरूर मिलती है। शायद किसी जन्म के पाप का

यह परिणाम हो – परन्तु प्रधान में अधीर नहीं जीवन का रास्ता तो खोज ही लूंगा।

भानू प्रधान ने उसे झिझोड़ा था। साफ–साफ बोल मुझे पता है तूने रणवीर पर हाथ उठाया था। कहीं उसी का चक्कर तो नहीं है अगर उस कमीने ने कुछ कहा हो तो बोल भानू मैं तेरे लिये जान भी दे दूंगा।

अपनत्व के सामने महान संकल्प भी टूट जाता है, गम का मारा बच्चा माँ के सामने टूट जाता है। वह ओ भी कह जाता है जिसे कभी कहना नहीं चाहता...। फिर भानू इन मानवीय दोषों से रहित कैसे हो सकता था.....। प्रधान के अपनत्व पर वह टूट गया, और सारी कहानी कह डाली।

इसका मतलब प्रिंसिपल साहब ने तुम्हें निकाल दिया।

हाँ.......इसी लिये मुझे बुलाया था भानु बोला...... ।

नहीं भानू........तुम यहीं पढ़ोगें..........अगर तुम यहाँ से गुजारोगें तो प्रधान की लाश पर से....... ।

ऐसा नहीं कहतें भैया!। आप मेरे लिये यह क्या कह रहें हैं। वही भानू जो सत्य है, अटल है खैर तुम जाओं ऐसा कहते हुए प्रधान प्रिंसिपल साहब की ऑफिस में घुस गया। उसके चेहरे पर जो भाव थे, भानू उन से अच्छी तरह अवगत था।

○ ○ ○

प्रधान क्या बात है – तुम कुछ परेशान से लगते हो.....। प्रिंसिपल साहब हड़बड़ा कर बोले..... ।

मैं जानना चाहता हूँ साहब – भानू का नाम क्यों काटा गया आखिर उसका क्या गुनाह है। यदि उसने आवेश में रणवीर को दो थप्पड़ मार दिया तो क्या इसका मतलब उसका नाम काट दिया जाय।

प्रधान आखिर तुम क्या कहना चाहतें हो! क्या मैंने गलत फैसला किया। अगर यह गलत भी है तो हम जुबान दे चुके हैं।

जुबान को मारों गोली – इस कलियुग में महाराज दशरथ मत बनो साहब! किसी का जान बचाने के लिए झूठ बोलना नीति है ऐसी जुबान की कोई कीमत नहीं, जो किसी निर्दोष को फांसी देती हो।

प्रधान तमीज से बात करो – मेरी भी कुछ औकात है..... ।

ओह........। इसका मतलब तुम लोगों की औकात भी होती है...... ।

मैंने सोचा था आप उन लोगों से अलग होगें जिन्हें अपने पद का अभिमान नहीं होता है। लेकिन आप ने अपना परिचय खुद दे दिया। तमीज की बात आप मुझसे कह रहें हैं। परन्तु आपने तमीज नामक कमीज का नमक खरीद लिया है। फिर इस महँगाई के युग में आपका यह कार्य शोधकार्य के रूप में आना चाहिए।

प्रधान तुम मेरा अपमान कर रहे हो।

नहीं साहब! मैं तो सिर्फ प्रशंसा कर रहा हूँ। खेद इस बात का है कि बिना मेरे सलाह के आप ने यह फैसला कर दिया जब कि मैं भी इस कालेज का अध्यक्ष हूँ।

प्रिंसिपल साहब ने प्रधान की तरफ देखा जिसकी आँखों से आँखे मिलाना मुश्किल था।

साहब एक बात ध्यान देकर सुना लो – भानू यहीं पढ़ेगा और देखता हूँ तुम्हारी कलम कितना अनीति कर सकती है। आपने फैसला कर दिया कि भानू दोषी है सिर्फ इतना जान कर कि वह एक कर्नल का लड़का है। परन्तु आपको शायद कर्नल साहब ने पढ़ाया होगा, या आपकी आत्मा मर चुकी है। वरना एक साधारण सी बात आपके समझ में न आती। क्या आप इतना भी नहीं सोचते कि भानू ने किस भावना में बह कर रणवीर को पीट दिया। एक लड़की के चारों तरफ भीड़ थी जिसमें अधिकांश लड़किया थी। जो सब के सब उस लड़की का मजाक उड़ा रही थी। और तभी रणवीर भी वहीं पहुंच गया, और उसने बेशर्मी की हद भी पार कर दी। दृश्य कुछ ऐसा था कि जैसे लंका में भगवती सीता को चारों तरफ से राक्षसियों ने घेर रखा था।

कुछ ऐसे ही वह अबला थी उसके दिल पर क्या बीत रही होगी, इसकी तो कल्पना ही कटु है और तभी भानू भी वहीं पहुँच गया और यह दृश्य देखकर वह आपे से बाहर हो गया, रणवीर उनका नेता था। यही कारण था कि भानू ने उसे पीट दिया। एक मानव होने के नाते क्या उसने गलत किया।

मानता हूँ किसी दूसरे नीति से इस समस्या का निदान करना था, परन्तु उद्वेग में वह ज्यादा सोच न सका और हिंसा पूर्ण व्यवहार अपना लिया। यही उसकी गलती है, परन्तु उसे इतनी बड़ी सजा देना बुद्धिमानी नहीं होगी। हमारे ख्याल से उसे माफ कर देना चाहिये।

प्रधान क्या तुम सच कहते हो। अगर ऐसा है तो हम क्षमा के काबिल है।

मैं माँ की कसम खा सकता हूँ कि यही सच है, पर आप शार्मिन्दा हो यह मैं नहीं चाहता। मैं भानू को समझा दूंगा कि प्रिंसिपल साहब ने जो कहा– वह अनजाने में। और भानू उसका माँख नहीं करेगा। ऐसा कह कर प्रधान बाहर निकल आया।

o o o

परिस्थितियों से मुकाबला करते–करते सुधा हार गयी। माँ की हालत निरन्तर खराब होती गयी और उन्होनें खाट पकड़ लिया। घरेलू स्थिति इतनी क्षीण हो गयी कि रोटी भी मुश्किल हो गयी। ऐसी स्थिति में स्कूल जाना तो दूर रहा पेट भरना भी मुश्किल हो गया। सुधा ने कई बार भगवान से प्रार्थना किया परन्तु उसकी दयनीयता पर कोई असर नहीं पड़ा।

रोटी के लिये वह उनके पास गयी जो उससे घृणा करते थे। और जब उसने अपनी स्थिति मनोरमा से बतायी तो उसे दया आ गयी, जो मात्र दिखावा थी। दर असल उसे एक नौकरानी की तलाश थी, और बड़ी खूब सूरती से वह सुधा से पूरी करना चाहती थी। इसी कारण दया का आवरण औड़कर बोली –

अरे पगली तूने मुझसे आज तक यह क्यों नहीं बताया। अपने दुख में किसी को शरीक करना नहीं चाहती थी परन्तु आज अपने को सम्भाल न सकी।

और तभी मनोरमा अपने घर लायी थी उसे। मम्मी से चुप–चाप बात किया था। बड़ी गर्ज है इसकी भूखो मर रही है 300 रू0 महीने के काफी होंगे।

और उसी दिन से सुधा मनोरमा से घर काम करने लगी। जरूरत मनुष्य से क्या नहीं कराती, सुधा आज अपनी आत्मा बेचती थी। उनके जूठे बर्तन धोती, कपड़े धोती और पूरे फर्श को गर्म पानी से धोती। बहुत मेहनत से काम करने पर भी चार घन्टे लगते और मुश्किल से दस रूपये मिल जाते।

आज मंगलवार था मनोरमा के यहाँ से काम निपटा कर जल्द बाजी में घर पहुँचना चाहती थी। क्योंकि उसका दिल हर पल माँ में लगा था। रास्ते में गुजरते समय शिव मन्दिर पड़ता था। एक बार सुधा ने उधर ध्यान नहीं दिया। परन्तु न जाने किन भावों में बहकर वह मंदिर की तरफ बढ़ी आत्मा में एक झंकार उठी। सच्ची प्रार्थनायें कभी बेकार नहीं होती सुधा – आत्मा की पुकार परमात्मा तक जरूर पहुंचाती हैं यही सोचकर सुधा मंदिर में प्रवेश कर गयी। उसे विश्वास था

शायद अब प्रभु को दया आ जाये।

मन्दिर सुनसान था। पुजारी भी नहीं – सुधा दोनों हाथ जोड़कर शिवलिंग के सामने बैठ गयी, आँखे बन्द कर अपनी पुकार प्रभु से करने लगी। आँखों से आँसू झर–झर गिरते, ऐसा बहाव जैसे सारी दुनिया को बहा देगा। बड़ी देर तक वह यूं बैठी न जाने कितनी बार प्रभु से पुकार की परन्तु वह मूर्ति ज्यों कि त्यों बनी रही और तभी एक चूहा जाने कहाँ से निकला और शिवलिंग पर रखे बेर को खाने लगा।

परन्तु सुधा इस दृश्य से एक दम बेखबर थी। तभी प्रधान ने उस मंदिर में प्रवेश किया वह यहाँ रोज तो नहीं आता पर आज न जाने क्यों आ गया। सुनसान मंदिर में एक लड़की ध्यान मग्न बैठी प्रधान देखता रह गया – उसकी आँखों से गिरते आँसू उसके जीवन के इश्तहार थे। और तभी प्रधान की नजर शिवलिंग और चूहे पर पड़ी। प्रधान के ओठों पर मुस्कान तैर गयी।

भगवान भी आज कितना कमजोर हो गया, यह भगवान इस अबला की क्या रक्षा करेगा, जो अपने ऊपर रखे बेर की रक्षा नहीं कर सका। ऐसा सोचते–सोचते प्रधान का चेहरा कठोर होता चला गया न जाने क्या सोचकर उसने अपना हाथ उस लड़की के सिर पर रख दिया। किसी का स्पर्श पाते ही उसने आँखे खोल दी, और जब उसकी नजर प्रधान पर पड़ी तो आत्मा कांप कर रह गयी। क्या करें जल्दबजी में कोई फैसला भी न कर सकी।

उसकी चौकन्नी आँखों में झाँकते हुए प्रधान ने कहा – ''देवि इस पत्थर की मूर्ति से क्या माँग रही हो, यह भगवान जब अपने आहार की रक्षा नहीं कर सकता तो तुम्हारी क्या करेगा।

सुधा ने देखा शिवलिंग पर एक चूहा कूद रहा था परन्तु पास खड़े युवक का ध्यान आते ही शरीर में एक सिहरन दौड़ती चली गयी। प्रधान ने सुधा के चेहरें पर आये मानों भावों को ध्यान से देखते हुए कहा ''मुझे खेद है कि मैने आप को दुःख दिया। शायद मेरे आने से आप की प्रार्थना में विघ्न पड़ा। मैंने आपके भगवान का अपमान किया माफ करना रही बात हमारी तो, हम भगवान की शक्ति पर विश्वास नही करतें! वास्तव में वह है ही नहीं अगर वह है तो भी घूस खोर हैं। उसके राज्य में कितना भ्रष्टाचार फैल गया है। परन्तु वह आता क्यों नहीं! मेरे विचार से भगवान एक भ्रम है अगर भगवान है भी तो वह अमीरों का साथी है। इस लिये हम उससे घृणा करतें हैं। बुरा नहीं मानना देवि तुम्हारे आँसू के पीछे जो कहानी है उसे जाननें

के लिये दिल बेचैन है।

परन्तु हम आप से मदद नहीं चाहती! सुधा ने बड़ी मुश्किल से कहा! आप अपना परिचय स्वयं दे चुकें हैं जो व्यक्ति भगवान को भी नकार सकता है उसके अस्तित्व को ठुकरा देता है। जो नास्तिक है। उसका चरित्र कितना ऊँचा होगा इसकी सहज ही कल्पना की जा सकती है।

मैं तुम्हारे तर्क का कायल हूँ। मैं भगवान को नहीं मानता इसें स्वयं स्वीकार कर चुका हूँ। अगर आप की नजर में मैं इस कारण गिर जाता हूँ – फिर भी मुझ पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता! परन्तु यदि आप हमें अपना कष्ट बतायें तो दूर कर सकता हूँ।

उसके बदलें में आप भी कुछ पाना चाहगें। आप के समान भाषण देने वाले इस दुनिया में बहुत हैं – स्वार्थी बाते बानना खूब जानते हैं।

आप अपनी जुबान से गाली भी दे तो हम सहन कर लेगें। मेरे पास कोई कमी नहीं है। विलासता मेरा कदम चूमना चाहा! लेकिन मैने पैर से उसे ठोकर मार दी। अपने लिये नहीं, उन बद्नसीबों के लिये जिन्हें बड़ी मेहनत के बावजूद दो रोटी मिलती है। जिनके लिये मैंने जीना सीखा! वे ही मुझ पर संदेह करतें हैं। काश! हृदय फाड़कर दिखा सकता! तो शायद आप मुझे इतना बड़ा दण्ड न देती।

अगर आप के विचार इतनें महान है तो भगवान का अपमान मत करों। उसकी सत्ता का अपमान करने वाले हम कौन होते हैं। खेल में हार जीत तो होती ही है। इसका मतलब यह तो नहीं कि यदि हम हार गये तो जीतने वाले पर दोष रोपण करें। परमात्मा पर कीचड़ उछालें! यह धारणा एक दम नैराश्य एवं आत्मपतन मुखी है। ऐसा कह कर हम उसकी नहीं, वरन अपने पतन की नींव रखते हैं। हमें हर स्थिति में खुश रहना चाहिए। सुख दुःख एक अनुभूति है। जिसका मानना मन पर केन्द्रित है। दोनों को समान रूप से ग्रहण करना ही बुद्धिमता है। रोना अज्ञानता के सिवा और कुछ भी नहीं। आप के विचार से शिव अपनें भोजन की रक्षा न कर सकें। यदि शिव के विश्व व्यपकता का ज्ञान हो जाय तों क्या वह चूहा शिव से अलग है। यदि ऐसा है तो हम उस भगवान पर क्यों मिथ्या दोष लगाते हैं। उस महान शक्ति को नमन करना, एवं सत् असत् का ज्ञान करना ही जिन्दगी का सच्चा अर्थ है।

जीवन एवं विचारों में बड़ा अंतर है देवि आप रोना अज्ञानता समझती है परन्तु मैने देखा है आप की आखों से क्या पानी गिर रहा था नहीं वह पानी नहीं वरन्

आत्मा की करूणा पिघल रहीं थी..... वह आँसू नहीं रक्त था! कल्पना मैं नहीं मानता यदि भगवान पर तुम्हें इतना विश्वास है। तो आप जिस लिये रो रही थी उसे पूर्ण कर देगा अगर भगवान आप की परेशानी हल नहीं कर पाया तो – आप को मेरी बात मानना पड़ेगा। इसकें लिये एक दिन का नहीं पूरे सात दिन का समय है। ताकि आपके भगवान को भी परेशानी न हों। आने वाले मंगलवार को हम यहीं मिलेंगे और इसी समय! यदि आपका कार्य पूर्ण हो गया तो मुझे भी भगवान पर विश्वास हो जायेगा। यदि ऐसा नहीं हुआ तो" आप अपना गम मुझे बताना – माँ कसम जिसे भगवान नहीं कर सका, प्रधान कर के दिख लायेगा।

सुधा ने उस व्यक्ति के चहेरे को गौर से देखा जो तेज युक्त था। मुझे आप की शर्त मंजूर है – उसने क्षीण स्वर में कहा।

एक छोटी सी विनय है देवि – आपका क्या नाम है। मुझे लोग सुधा कहते हैं। शायद यही मेरा नाम है। सुधा यानि अमृत........दूसरे को जीवन देने वाला.......। अमृत नहीं विष.......। कहती हुई सुधा चल पड़ी......। वह जब तक आँखों से ओझल नहीं हो गयी तब तक प्रधान देखता रहा....। उसके बाद लम्बी सांस ली।

माफ करना प्रभु! मैं पागल तो नहीं हो गया यह पत्थर मेरा क्या करेगा। जो भगवान खुद अपने भोजन की रक्षा न कर सका।

o o o

क्या भानू अब भी पढ़ता हैं। कर्नल साहब चौंकते हुये बोले उसका तो नाम काट दिया गया था।

वह बीत गया डैडी....। भानू पर कालेज के अध्यक्ष प्रधान की साया है। और प्रधान अपने जिद्द के आगे भगवान को भी नहीं मानता। जहाँ तक पता चला है प्रिंसिपल साहब ने भानू का नाम काट दिया और जब इसकी खबर प्रधान को मिली तो वह आग बबूला हो गया। हमने खुद देखा डैडी – वह उसी वक्त प्रिंसिपल साहब की आफिस में गया था और उसी समय उसने यह फैसला स्थगित करा दिया।

कर्नल आनन्द ने लम्बी सांस ली – इसका मतलब वह बहुत चालाक है। लेकिन मैं भी फौज का कर्नल हूँ – जिन्दगी भर जानवर नहीं मनुष्य चराता रहा, न जाने कितनों का गर्व चूर्ण कर दिया। वह कल का छोकरा मुझे मात देना चाहता है।

मगर डैडी – भानू ने जो किया वह ठीक था – वास्तव में हम गलत रास्ते पर थे, फिर उसने अपने अपराध की क्षमा भी मांगी थी।

डरपोक! मैं सोचता था तू भी अफसर बनेगा, लेकिन बेटे 'यह कायरता तेरी बेड़ी बन जायेगी।'' और तेरा भविष्य अंधकार मय हो जायेगा।

तो मुझे क्या करना चाहिऐ डैडी?

बदला – कर्नल साहब बड़े शान्त लिहजें में बोले एक कर्नल का बेटा होने के नाते तुम्हें शेर होना चाहिये, वह शेर जो प्रतिदिन ताजा मांस खाता है।

इसका मतलब भानू को गोली मार दूं, रणवीर बोला। तू सिआर ही नहीं मूर्ख भी है। गोली मार कर क्या फांसी के फंदे पर चढ़ना चाहता है। अपने डैडी के अशोक स्तंभ पर कीचड़ पोतना चाहता है।

सारी डैडी! रणवीर धीरे से बोला – आप जैसा आदेश दे हमें शिरोधार्य है।

सुनो तुम किसी बहाने प्रधान से मिलो – थोड़ी दोस्ती बना कर फिर अपने यहाँ डिनर का निमत्रंण दो। वह जरूर आयेगा – फिर यहाँ पर थोड़ा अपना दिमाग लगा देगें। तुम मनोरमा को अच्छी तरह समझा देना अपनी कला से प्रधान को खुश कर देगी और तब हम बात करेंगे – मुझे पूर्ण विश्वास है कि शराब और सुन्दरी उसके दिल से भानू के लिये उमड़ते हुए प्यार को खत्म कर देगी। और तब हम उसे जोर देगें और खुद प्रिंसिपल साहब से क्षमा मांगेगा, और भानू का नाम कट जायेगा।

गुड आइडिया डैडी – रणवीर मुस्कारते हुए बोला और तभी मनोरमा भी वहां आ गयी।

आओ मनोरमा बेटी। हम आपका ही इन्तजार करते थे?ओह अंकल! आप मेरा क्यों इन्तजार करते थे मनोरमा चंचलता से बोली।

एक बात जानना चाहता हूँ बेटी – कर्नल साहब बोले।

आखिर वह क्या, बात है अंकल।

उस लड़की को जानती हो, जिसके कारण भानू ने रणवीर को मारा था। मुझे उसको सबक सिखाना है। सबक मनोरमा ने मन ही मन दोहराया, फिर बोली मेरा मतलब है अंकल यदि में उसका पता बता दिया तो मुझे क्या मिलेगा मनोरमा हंस पड़ी।

कुछ तो जरुर मिलेगा बेटी – कर्नल साहब बड़े शान्त लहजे में बोले।

मनोरमा के दिल में आया कि सुधा का पता बता दे पर न जाने क्या सोचकर बोली –

मैं कोशिश करुगीं अंकल।

वेरीगुड – बेटी..........।

मनोरमा ने कर्नल साहब के हां में हां मिलाया फिर रणवीर के पास चली गयी।

○ ○ ○

कम से कम एक सिगार तो पीलो – रणवीर ने अपनत्व जताते हुए कहा।

मैं एक बार कह चुका रणवीर कि ध्रूमपान नहीं करता। आप व्यर्थ मैं जिद्द क्यों करते हो।

सारी प्रधान – रणवीर ने बुरा सा मुँह बनाकर कहा दरअसल मुझे इस बार माफ कर दो। मैं आपको एक अच्छा दोस्त समझता हूँ।

अच्छी बात है आप मुझे एक अच्छा दोस्त समझते है। लेकिन एक बात याद रखो, प्रधान का दोस्त बनना बहुत कठिन है।

आपका मतलब मेरी समझ में नहीं आया।

आयेगा भी नहीं रणवीर। अच्छा होगा ''आप मेरे पीछे अपना मौज मस्ती का समय बरबाद न करो।''

ठीक है, प्रधान – दोस्त न सही परन्तु एक बात तो मानोगे अगर मानने वाली हुई तो जरूर मानूगा।

दस तारीख को मेरा बर्थ डे है।

मेरा इससे क्या सम्बन्ध है।

मैं आपको आमंत्रित करता हूँ क्या आप, मेंरे घर आ सकते है। रणवीर ने असली बात कह दी।

मेरा वादा है जरूर आऊँगा – बस अब तो तुम खुश हो, इतनी सी बात कहने के लिये इतनी चमचेगीरी की क्या जरूरत थी मिस्टर रणवीर। यह बात तो मालुम ही होगी, प्रधान को चमचेगीरी से सक्त घृणा है। परन्तु हम जरूर आयेगें – यह देखने कि आप बड़े लोग वर्थ डे कैसे मानते हैं। मुझे तो यह भी पता नहीं कि मेरा वर्थ डे कब आता है और कब चला जाता है।

इसका मतलब आपको अपना जन्म दिन भी पता नहीं रणवीर हारे हुए व्यक्ति की भांति बोला........... ।

यह तो छोटी सी बात है रणवीर, इस देश में मैं ही नहीं, करोड़ों होगें जिन्हें दिन तारीख का भी पता नहीं होता। जीवन भर घिसते–घिसते निढ़ाल हो जाते, उन्हें अपने शरीर का भी होश नहीं होता।

प्रधान यह बात मेरी समझ में नहीं आयी आखिर आप कहना क्या चाहते है।

बहुत छोटी सी बात आपकी समझ में नहीं आयी, परन्तु आयेगी भी नहीं – तुम क्या जानो रणवीर गरीबी क्या होती है। गरीबी की परिभाषा वैसे तो बहुत सरल है जिसके पास धन नहीं वे गरीब होते है। परन्तु गरीबी इससे भी गिरी होती है। वह सिर्फ रोटी के लिये नहीं बल्कि हर क्षण घुटता रहता है, उनकी सारी भावनायें जल जाती हैं।

दुनिया के प्राणी उनके साथ मजाक करके मनोरंजन किया करते हैं कैसे समझाऊँ रणवीर कि गरीबी वह बला है जिसमें इन्सान मर जाता है। परन्तु हम उसे चलते फिरते देखते है इसलिये कह सकते है कि गरीबी चलती फिरती लाश है। ऐसा मालूम होता है संसार के सारे गम सिर्फ इनके नसीब में है।

जिस दिन मुझे गरीबी का तांडवनृत्य दिखायी पड़ा, उस दिन मैं बहुत देर तक रोता रहा। दिल में कितने भाव आये गये। परन्तु मैं उन्हें बता नहीं सकता हाँ उस समय मेरी अवस्था बारह साल के करीब थी। माँ भगवान शिव के सामने आँखें मूँदे न जाने क्या कर रही थी, मैं तभी पहुंचा पूछा यह कौन है माँ –

ये संसार के मालिक है बेटा – मेरी माँ ने कहा था और उसी दिन मुझे पता चला इस दुनिया में भगवान भी है। खैर ये बातें छोड़े रणवीर हम जरूर आयेगें कहते हुए प्रधान ने आंखे पोंछी थी।

o o o

दो

भादों की काली रातें, बरसतें मेघ तेज हवायें सब मिलकर मौसम बड़ा दुष्ट लगा रहा था! तेज हवाओं की सॉय सॉय की ध्वनि प्रधान के कानों को जैसे फाड़ दे रही थी! प्रधान ने लाख कोशिश की मगर नींद जैसे उस से रूठ गयी, उसे उस पर जरा भी दया नहीं आयी! प्रधान के मस्तिष्क में एकाएक विचार कौंधा आखिर रणवीर उसे अपने घर आने के लिए आग्रह क्यों कर रहा है। जरूर कोई चाल चलनें वाला है। नहीं तो इसके पहलें कभी बर्थ डे का निमन्त्रण क्यों नहीं दिया, फिर उसे अपने कहें वचन भी याद आयें जिन्हें सोचते–सोचते वह अपने अतीत में खो गया।

वह खाना खा रहा था, कि किसी ने आवाज लगायी। संयोग कुछ ऐसा था कि माता जी घर पर नहीं थी। उसने खाना बन्द कर दिया और बाहर निकला – देखा वह कोई उसके उम्र के लगभग की लड़की थी। उसके बाल अस्त व्यस्त हवाओं के रूख के साथ उड़ रहें थे, शरीर पर मैल की काली स्याही सी चमक रही थी! एक फटी सी मरदाना धोती उँगुलियों में बोदा (मिट्टी) भरा हुआ। गलें में लाल रंग का एक चिथड़ा लपेटें हुये सहमी हुई प्रधान के सामने खड़ी थी। प्रधान उसे बड़े गौर से देखता रहा परन्तु कुछ कह न सका।

थोड़ी देर के बाद वह लड़की ही बोली बहुत भूख लगी है बाबू! परन्तु प्रधान उसकी भावना का अर्थ न समझ सका! उसने कहा अम्मा घर पर नहीं हैं! और उसी क्षण वह लड़की वहीं पर बैठ गयी! पेट पकड़कर इस प्रकार कराही कि प्रधान अपने को रोक न सका! उस लड़की के एक दम करीब पहुंच गया, जो भूख से एक दम निढाल हो गयी थी।

प्रधान ने अपना हाथ उसके मस्तक पर रख दिया, और उसने आँखे खोलें बिना पानी–पानी कहा। प्रधान चन्द्र मिनटों के अन्दर पानी का गिलास उस लड़की के ओंठो से लगा दिया। सिर्फ दो घूंट पीने के बाद वह पुनः बोली.......रोटी बहुत भूख लगी है, और तब प्रधान को हुआ कि उसकी बेहोशी का क्या कारण है। वह तुरन्त उस लड़की का हाथ पकड़ कर उठा लिया, और दलान में बैठा दिया। फिर घर के अन्दर चला गया। प्रधान ने देखा, उसका जूठा खाना तो रखा था। लेकिन रसोई में बिल्ली सारी रोटियाँ तोड़ रही थी! प्रधान ने जब यह दृश्य देखा तो एक आह सी निकल पड़ी। वह अधीर हो गया एक भूखें को दो रोटी भी नहीं दे पा रहा था।

सहसा उसका ध्यान पूजा गृह कि ओर चला गया! और एक पल गँवाये बगैर अंदर घुस गया! कुछ हलुवा एवं पूडियाँ भगवान के भोंग को रखी थी! बिना कुछ सोचे समझे प्रधान ने वह सामान उठा लिया। और उसी छण भगवान की मूर्ति पर रखा पांच सौ का नोट भी प्रधान ने उठा लिया, और उस लड़की की तरफ चल पड़ा।

वह अब भी उसी तरह लेटी थी, प्रधान ने पूड़ी का एक टुकड़ा उसके मुख में रख दिया। अन्न की सुगन्ध पाकर उसने आँखे खोल दी। प्रधान ने दो कौर और खिला दियें। और तभी वह चौकीं – बोली अरे तुम ने मुझे छू लिया! अरे इस बर्तन को मेरे मुख से भी लगा दिया।

तो क्या यह टूट गया! प्रधान बड़ी मासूमियता से बोला पहले यह खा ले। बाद में जो कहना होगा कहना।

वह लड़की सहम गयी! फिर उस खाने को देखने लगी – पर खा न सकी! हमें तो रोटी चाहिए बाबू – तुम यह क्या ले आयें......।

क्या तूने पूड़ी कभी नहीं खाया प्रधान ने पूछा।

खाया है बाबू – वह बोली बड़े–बड़े भोजों में हम पत्तल उठाते तो पूड़ी मिलती है। परन्तु इस प्रकार लोग हमें कभी नहीं देतें।

तू भूखी है। पहले खा ले – प्रधान को माँ की याद आ गयी! शायद माँ मेरे इस हरकत पर गुस्सा करें, यही सोच कर प्रधान उसे जल्द टालना चाहता था।

जल्दी–जल्दी उस लड़की ने पूड़ी खायी। उसे भी इस बात का था कि कोई भी उसे देख कर दो चार गाली तो जरूर देगा! इसी कारण वह भी जल्द जाना चाहती थी! कुछ पूड़ी बच गयी – जिन्हें वह बड़े गौर से देख रही थी। प्रधान के कहने पर उस लड़की ने बची हुई पूड़ी बांध ली। अब चलती हूँ बाबू भगवान तुम्हें..... आगें वह कह न सकी!

पांच सौ का नोट उसकी तरफ बढ़ाते हुए प्रधान ने कहा – रख ले अपनी माँ से कहकर कपड़ा बनवा लेना। एक क्षण तो वह समझ न सकी – कभी नोट तो कभी प्रधान के चहेरे को देखती रही।

प्रधान ने वह नोट उसके हाथ में पकड़ाते हुए कहा रख ले.....अगर माता जी आ गयी तो कहीं मेरी पिटाई न शुरू कर दें।

तो फिर तुम क्यों देतें हो बाबू – लोग तो मुझे दो पैसे भी नहीं देतें। गाली

देकर भगा देते हैं। तुमने मुझे छुआ अपना बर्तन भी छुवाया – लोग तो मुझे छूनें से घबराते हैं और कहते है हमारे छूने से बर्तन नापाक हो जाता है।

तूनें बर्तन नापाक होते देखा हैं, यह गिलास कहाँ नापाक हुआ – वैसे ही तो चमक रहा है। तू झूठ बोलती है यह देख तो मेरे हाथ कहीं भी गन्दें नहीं हुए। फिर नापाक यह क्या बला होती है। तुम में और हम में कोई अंतर हमें दिखायी नहीं पड़ता। फिर यह क्या होती है नापाक। अच्छा तेरा नाम क्या है।

मुझे मालूम नहीं बाबू – लोग मुझे चमार मंगता कहतें हैं। चमार मंगता प्रधान ने मन ही मन दुहराया। फिर बोला तुम्हारी अम्मा तुम्हें क्या कह कर बुलाती हैं।

साँवली – क्या यही नाम होता है।

तू अपना नाम भी नहीं जानती – प्रधान मुस्कुरा पड़ा।

अच्छा तू रहती कहाँ है?

कोई ठिकाना नहीं बाबू – हम लोगों के चलते फिरतें घर हैं।

आज रात कहाँ रहोगी?

इसी गाँव में वह बड़े सरल स्वर में बोली।

जातें वक्त फिर आना कहता हुआ प्रधान लड़की के एक दम करीब पहुंच गया.........। सहसा उसकें गलें से वह पट्टी खीच ली।

यह क्या करोगें बाबू......वह बोली।

इसलिये कि मैंने तुझे भीख नहीं दिया – अपनी रोटी के बदलें में......।

मुझे यह सब समझ में नहीं आता बाबू.......।

कोई बात नहीं.......। अच्छा अब तुम जाओं.....। लड़की पीछें मुड़ी और चली गयी! प्रधान उस दिशा की तरफ तब तक देखता रहा जब तक वह दृष्टि से लुप्त नहीं हो गयी। तभी वह लाल कपड़ा प्रधान के हाथो से छूट कर जमीन पर गिर गया। प्रधान के विवेक को झटका लगा। उसका बाल एंव स्वच्छ मन करूणा के ओतप्रोत हिलारे लेनें लगा – संसार में भगवान ने गरीब क्यों बनाया – आह......... इनका जीवन इस से तो अच्छी मौत है....... सोचते–सोचते प्रधान को ''नवीन'' की निम्न पंक्तियां याद आ गयी।

लपक चाटते झूठे पत्तल, जिस दिन देखा मैने नर को,

उस दिन सोचा क्यों न लगा दू, आग आज सारी दुनिया को।
फिर यह सोचा क्यों न टेंटुवा, घोटा जाय स्वयं जगपति का,
जिसने ही अपने स्वरूप को, दिया रूप इस घृटित विकृत को।।

''नवीन'' जी को दीनों के प्रति कितना प्रेम था, सोचते हुये प्रधान की आंखों में आँसू आ गयें। फिर उसने झुक कर वह लाल कपड़ा उठा लिया, और पूजा गृह में घुस गया। बड़ें शान्त भांव से वह लाल रंग का कपड़ा प्रधान ने भगवान शिव के गले में डाल दिया, और बाहर निकल आया।

तभी प्रधान की नजर माँ पर पड़ गयी। एक पल के लिये उसका चेहरा उतर गया, परन्तु दूसरे पल अपने भावों पर नियन्त्रण पा लिया। बहुत देर हो गयी बेटा – पूजा का समय भी निकला जा रहा है – ऐसा कहती हुई माता जी पूजा गृह में प्रवेश कर गयी। सबसे पहले उनकी नजर उस लाल चिथड़े पर पड़ी जिसे प्रधान ने भगवान शिव के गले में डाल दिया था। देखते ही उनका बंदन, मारे क्रोध के कांपने लगा। परन्तु प्रधान बड़े शान्त भाव से माँ के भावों को देखता रहा।

बेटा – एकाएक माँ चीख पड़ी! अरे भगवान का भोग कहाँ चला गया! और भगवान के गलें में यह लाल कपड़ा।

प्रधान एक दम करीब पहुंच गया। माँ के चेहरें पर अब भी तनाव था!

तू कहाँ चला गया था बेटा?देख यहाँ क्या हाल है। कुछ भी तो नहीं! प्रधान मुस्कुरा कर बोला– अभी यहाँ भगवान आये थे। मुझे इस बात का दुःख है कि आप उनका दर्शन न कर सकी! बिल्कुल वैसे थे माँ जैसा आप बताया करती थी! वहीं साँवली सूरत, बड़ी–बड़ी आँखे गले में पुष्पों की माला, पीत बसन पहनें हुऐ मन्द–मन्द मुसकरातें हुए यहाँ पर आयें। एक पल के लिए मैं भी सोच न सका – आखिर वे हैं कौन.....। क्योंकि उनकें चार हाथ थे! परन्तु तभी आप की बातें याद आयी! और तुरन्त पहचान लिया कि वे भगवान हैं। उन्होंने कहा मैं बहुत भूखा हूँ, और मैंने उनकी प्रसाद उन्हें खिला दिया! खा कर जाने लगें तो बोलें यह कपड़ा मेरी मूर्ति के गले में डाल देना और मैने भगवत् आज्ञा पूरी कर दी माँ।

० ० ०

आज पढ़नें नहीं जाओगे बेटा! माता जाह्वी ने प्रधान को गलें से लगातें हुए कहा। जरूर जाँऊगा माँ – प्रधान ने गला पकड़ें हुये ही कहा।

अभी तू तैयार नहीं हुआ देख दिन कितना चढ़ आया है। तैयार हो जाता हूँ – कहता हुआ प्रधान माँ से अलग हो गया, और कपड़े पहनने लगा। तभी दिल में एक हूक उठी–न जाने क्यों प्रधान को अपना हृदय फटता हुआ। आँखों से आँसू निकल पड़े। क्या हुआ बेटा एकाएक माँ उसके करीब आ गयी – माथे पर हाथ रख कर कहा –

क्या हुआ बेटा – तेरे आँखों में आँसू।

माँ इस जूते की क्या कीमत है।

तेरे आँसू का जूता से क्या सम्बन्ध है बेटा....... ।

सम्बन्ध तो कुछ भी नहीं माँ। लेकिन मैं जानना चाहता हूँ शायद स्कूल में यह न चले। माँ के ओंठो पर एकाएक मुस्कारहट नाच गयी और बोली –

तुझे दाम से क्या मतलब बेटा – अगर यह ठीक नहीं तो दूसरा आ जायेगा। ''कम से कम तुझे इतना तो घमंड रहे कि मेरे पैर में इतने के जूते हैं जिससे किसी का पूरा ड्रेस बन सके। जाह्वी ने प्रधान को देखा जिसका चेहरा सपाट था। आज पहला दिन था कि प्रधान ने किसी बात की इतनी गहराई ली थी। जाह्वी के लिये यह आश्चर्य का विषय बनता चला गया आखिर इसका क्या रहस्य है, अगर जूते का दाम इसे पता न चला तो शायद खाना भी छोड़ दे। ऐसा सोचते हुए जाह्ववी बोली।

तीन हजार रूपये इनकी कीमत है बेटे।

तीन हजार रूपये प्रधान ने दोहराया – और दूसरे ही पल उसका चेहरा क्रोध से लाल होता चला गया। माँ बदले हुए बेटे को देखती रह गयी, और तभी प्रधान ने उन जूतों को उछाल दिया।

माँ! मैं सोचता हूँ कि कुछ दिन बिना जूता के स्कूल जाँऊ कहता हुआ प्रधान बाहर निकल गया।

ठहरो – यह बेवकूफी है बेठा – जाह्ववी बोली। अगर यह बेवकूफी है तो मुझे बेवकूफ ही रहने दो माँ क्या वे सब बेवकूफ है जो जन्म लेते है नंगे पैर और घिसते–घिसते मर जाते हैं।

प्रधान! मेरे बेटे यह तू क्या कह रहा है। आखिर तेरे दिल में यह बात कहाँ से उत्पन्न हो गयी, मेरे लाल – क्या यह बात मुझे बता सकते हो। जरा मैं भी जानूँ मेरा बेटा इतना उदार इतना महान कैसे बन गया।

यह कोई महानता नहीं है माँ – मैं तो यही सोचता हूँ कि अपने जीवन में उन बदनसीबों को देख सकूँ, उन्हें कुछ दे सकू, जिनका जीवन एक बूंद जल के बिना व्याकुल होता है। मुझे महान कह कर मेरी इस पवित्र भावना का उपहास न करें जो अभी उदय हुई है।

प्रधान मेरे लाल – माता जाह्ववी के आँखों से झर–झर आँसू गिर पड़े। वह सपना साकार होता हुआ नजर आया जिन्हें देखे एक युग बीत चुका था। भावावेश में जाह्ववी प्रधान को हृदय से चिपका लिया। तुम एक दिन महात्मा बनोगे मेरे लाल – यह एक माता का आर्शीवाद है। और माता का आर्शीवाद कभी बेकार नहीं जाता। प्रधान माँ से अलग होकर स्कूल चल दिया। जाह्ववी के ओंठो पर मुस्कराहट तैर गयी, जो विजय से सनी थी। वे अपने उस छोटे लाल को देख रही थी जो नंगे पैर स्कूल गया था।

प्रधान को नंगे पैर देखकर सारे छात्र ही नहीं, बल्कि अध्यापक भी चौंके थे। मानें जाने जमींदार का इकलौता बेटा प्रधान का नंगे पैर स्कूल जाना बड़ा अचम्भित करने वाला था। आखिर एक मास्टर जी अंत में बोल ही पड़े–बेटा, प्रधान तुम्हारे जूते–तुम नंगे पैर क्यों आये हो? सारी सर। मुझे नंगे पैर रहकर देखना है कि कांटे की पीड़ा कितनी मधुर होती है।

पागल तो नहीं हो गये प्रधान.......।

मुझे पागल समझना अच्छा होगा पूज्य गुरूवर। परन्तु मैं यही कहूंगा....इस समय व्यक्तिगत बाते नियम के विरुद्ध है।

मास्टर साहब ने लम्बी सांस ली – और विषय पर आ गये।

o o o

यह क्या कर ही हो माँ – प्रधान माँ के करीब जाकर पूछा। माता जाह्ववी की आँखे बन्द थी, और सामने भगवान शिव की मूर्ति विराजमान थी। माँ ने जब कोई जबाब नहीं दिया तो प्रधान ने पुनः वहीं बात दोहरायी –

जाह्ववी ने आंखे मूदे ही कहा–फिर बताऊँगी बेटा–अभी जिद्द मत करो।

लेकिन प्रधान अपनी जिद्द के आगे किसकी सुनता उसने तीसरी बार भी माँ से सवाल पूछा –

जाह्ववी को क्रोध आ गया। उनकी पूजा भंग हो रही थी फिर भी क्रोध को दबाते हुए बोली – क्या पूछना चाहते हो बेटा?

आप यह सब क्या कर रही हैं माँ–मैं जानना चाहता हूँ यह सब क्या है, भगवान कहाँ रहता है माँ।

बेटा – मैं जो कर रही हूँ इसे आराधना भी कहा जाता है। भगवान उन्हें कहते है जो संसार के मालिक है।

तो क्या ये भगवान दुनिया के मालिक है। प्रधान ने मूर्ति की तरफ उँगुली उठाते हुए कहा।

''भगवान विश्व का कर्ता है बेंटा – क्या इसमें तुझे सन्देह है।''

''मैं तो यही जानता था कि पत्थर के भगवान होते हैं। आज यह भी पता चला कि ये संसार के मालिक भी होते हैं। इनका एक नाम कर्ता भी है।

ऐसा ही कहा जाता है बेटा! हमारे शास्त्र, पुराण, रामायण प्रमाण है कि भगवान सर्व रक्षक है।

''पुस्तक में क्या लिखा है माँ – यह मैं सुनना नहीं चाहता। मुझे यह बताओ कि क्या तुम इन बातों को मानती हो माँ......।

इस सत्य को नकारा तो नहीं जा सकता। हम देखते है भगवान में कितनी शक्ति है। पहली बात तो यह है कि हम भगवान को मानते ही नहीं। बात अपनी नहीं माँ यदि अपनी बात होती तो मैं ऐसा कभी न कहता – जिसे आप घंटो पूजती रहती है क्या उसे कभी देखा है?

मुझे तो कभी दिखायी नहीं पड़ा बेटा। जाह्ववी ने एक ऐसा सच कहा जिसे सुनकर प्रधान के बदन में आग लग गयी। वह अपने उद्वेग को रोक न सका – चीख पड़ा –

यदि भगवान दिखायी नहीं पड़ता तो क्यों घंटो बैठी रहती हो – बोलों माँ ऐसा क्यों करती हो – क्या भगवान से यह माँगती रहती हो कि – हे प्रभु मुझे धन की कमी कभी नहीं करना मेरा सोहाग मेरा बेटा अमर करना, या भगवान से मुक्ति की प्रार्थना करती हो।

बेटा! मैं तुम्हें प्यार करती हूँ – लेकिन सीमा मत तोड़ो। तुम भगवान के साथ माँ का अपमान मत करो।

बुरा लगा माँ! कोई बात नहीं माँ मैं तुम्हारे भगवान पर व्यंग नहीं करता। मैं तो सिर्फ एक सच्चाई कह रहा था। जाह्ववी का चेहरा क्रोध से तमतमा उठा। उन्हें वह गर्व चूर्ण होते दिखायी पड़ा जो कि कभी हृदय में ऊधम मचा रहा था। वह सपना जिसे किशोरावस्था में देखा वह टूट रहा था। वीर बालक की अभिलााषा को नास्तिकता ने का अन्त कर डाला। ऐसा सोंचते हुए माँ के चेहरे पर गहरे दुख की रेखायें दृष्टपात होने लगी। आँखों में आँसू चमक पड़े। प्रधान यह आग लगाकर हट गया। जाह्ववी जब अपने को सम्भाल न सकी तब फूट–फूट कर रोने लगी।

तभी किसी के पदचाप हुए। शायद ठाकुर साहब होगे ऐसा सोचते ही जाह्ववी ने आँखे पोंछ डाली। और जाह्ववी का सच ठीक ही था। ठाकुर साहब के साथ प्रधान भी आ रहा था, जाह्ववी उठी और एक टक ठाकुर साहब और प्रधान को देखने लगी। प्रधान के हाथ में एक चमकती हुई तलवार थी, जिसे देखते ही जाह्ववी पति से बोली – प्रधान को क्यों दिया यह तलवार?

ठाकुर साहब हंसे फिर बोले – आज जाते वक्त जिद्द की – कहा था मेरे लिये एक तलवार लाना मैंने बहुत पूछा परन्तु कुछ नहीं बताया था। क्यों बेटे ठाकुर साहब बोले –

मैने तलवार माँगी थी पिताजी, इसलिये कि मेरा एक दुश्मन है और आज उसे दिखाऊँगा कि मेरे पास तलवार है।

तो क्या होगा बेटे – ठाकुर साहब बोले।

वह डर जायेगा – अगर नहीं डरेगा तो हम उसें मार देगें।

तुम्हारा दुश्मन कहाँ है – ठाकुर साहब कुछ चिंतित होते हुए बोले – प्रधान की आँखों में स्पष्ट हिंसा के भाव थे।

देखो पिता जी – मेरा दुश्मन संसार का मालिक है – प्रधान ने तलवार शिव की मूर्ति की तरफ की थी। ठाकुर साहब के ओंठो पर हंसी तैर गयी – शायद प्रधान का बचपना देख कर – जब कि जाह्ववी एक गहरे सोच में डूब गयी बोली ....

तू हिरणाकश्यप बनेगा रे!

पगली ऐसा नहीं कहते – ठाकुर साहब ने जाह्ववी के मुख पर उँगुली रख

दी, और प्रधान को गोद उठा लिया।

○ ○ ○

प्रधान गाँव के पूरब निकला – जिधर उस बालिका ने जाने को कहा था। वहाँ का दृश्य जब उसने देखा तो लगा सब कुछ घूम रहा है। हरे–भरे बड़े–बड़े वृक्ष धड़ा धड़ गिर रहे हैं और उठकर अपनी जगह पर खड़े हो रहे है। जब उसे अपनी आँखों पर विश्वास न हुआ तो उन्हें खुद हाथों से दबा दिया, मगर कोई प्रभाव नहीं पड़ा।

चार भैस दो गायें बकरियों के बीच एक मानव लाश, लाश के इर्द–गिर्द आठ स्त्री पुरुष फटे वस्त्रों में अपने करुण क्रन्दन का प्रलाप – सूनी पृथ्वी पर जड़ वृक्षों को सुना रहे थे। प्रधान एक दम उनके करीब पहुंचा और जब उस लाश का मुख देखा तो निकल गया सांवली।

और वे सारे व्यक्ति प्रधान को देखने लगे। एक वृद्ध ने पूछा – बेटा तू इसे पहचनता है। प्रधान ने उस बूढ़े को देखा – हड्डियों का चलता फिरता ढांचा – मानव कंकाल की आँखों से पानी बह रहा था।

प्रधान ने कहा –

बाबा एक दिन मेरे घर गयी थी। मैनें..........। आगे प्रधान रुक गया, लेकिन इसे क्या हो गया बाबा?

बूढ़े ने छलछलायी आँखों से प्रधान की तरफ देखा – और बोला मेरी बेटी का गला दबा दिया बाबू – पहले उसने इज्जत लूटी। हम गरीब है बाबू देखो तो कितनी बेदर्दी से लूटा गया है। आह मेरी बच्ची – बूढ़ा पेट पकड़ कर बैठ गया फिर लेट गया – और उस नींद में सो गया जिसकी मिठास खाने वाला न बता सकता, जागने वाला न समझ सकता है। प्रधान उस लड़की के करीब बैठ गया। मुख पर देखने लगा गहरे – गहरे काले निशान थे। कहीं–कहीं खून रिसा था। जाघों पर का जीर्ण कपड़ा खूनों से सना, लेकिन उस दिन जब मेरे पास आयी थी, तब तो ऐसा नहीं था। और तभी एक पुटकी पर ध्यान गया और जब खोला तो पाँच सौ का नोट पुड़ियाँ, जिन्हें देखते ही प्रधान की आंखों में आँसू उमड़ पड़े। बड़ी मुश्किल से बोला –

सांवली को किसने मारा! पर प्रधान को इसका कोई जवाब नहीं मिला।

तभी गांव के कुछ व्यक्ति दिखायी पड़े जिनमें ठाकुर साहब भी थे। पिता को आते देखकर प्रधान कुछ हिचका पर उठा नहीं जब ठाकुर ने प्रधान को देखा तो चीख पड़े –

प्रधान तू यहाँ क्या कर रहा है?

पिताजी! सांवली को किसी ने मार डाला।

प्रधान यहाँ आओ – इन को मत छुओ। मैं कहता हूँ घर जाओ। आखिर तुम यहाँ क्या करने आये, कहते हुए ठाकुर साहब एक दम करीब पहुंच गये, पर प्रधान उठा नहीं।

प्रधान बड़ा ढ़ीठ है ठाकुर साहब, आपकी बात भी नहीं मानता।

ठाकुर साहब क्रोध से पागल हो गये – बोले तुम क्या देखते हो पकड़ लाओ इस गधे को।

दो व्यक्ति आगे बढ़े और प्रधान को पकड़ कर उठा लिया। बेबस पंछी की भांति वह तड़पता रहा। पर किसी ने उसकी परवाह नहीं किया। प्रधान ने सुना उनमें से एक कह रहा था। बाबू साहब हम गाँव छोड़ देगें – मगर लाश को यहीं तोप देने दो।

हम तुम्हारी गन्दगी यहाँ रखना नहीं चाहते–लाश यहां नहीं गाड़ी जायेगी, अपने साथ ले जाओ नहीं तो सब की लाश यहीं पर तोप दी जायेगी। वह बड़े गर्बीले स्वर में बोला और तभी एक बच्ची पेट पकड कर रोने लगी – भूख रोटी....।

एक अधेड़ औरत ने सांवली के लाश के पास की पूड़ी उस बच्ची को दे दिया वह उस पर टूट गयी। भूख भी क्या चीज है।

तुम लोग क्या गूंगे हो। जल्दी करो, नहीं तो खैर नहीं। उसके वचनों को सुन, वे सारे अपना सामान एकत्रित करने लगे। एक भैंस पर उस लड़की और बूढ़े की लाश रखी थी। वे लोग चल पड़े, जिन्हें देख कर प्रधान चीखा और बेहोश हो गया।

o o o

तुम भगवान हो, संसार के मालिक हो, भगवान शिव की मूर्ति के सामने खड़ा प्रधान थर–थर कांप रहा था। उसकी मुट्ठियां भींची और चेहरा रक्त रंजित था।

सांवली का क्या दोष था आखिर तुमने उसे क्यों मारा बूढ़े को क्यों मारा। मैने बहुत कहानी सुनी लेकिन किसी लाश को भैंस पर जाते नहीं सुना, और आज देखा भी। अगर अपना भला चाहते हो तो बोल दो तुम कहाँ हो, नहीं तो आज हम तुम्हें दण्ड देंगे। थोड़ी देर प्रधान उत्तर की प्रतीक्षा करता रहा। परन्तु कुछ नहीं – केवल सन्नाटा का साम्राज्य था। और प्रधान उसको सह न सका, तलवार को ऊपर उठाया और भगवान शिव पर प्रहार कर दिया। फिर धड़ाधड़ कई प्रहार किये और तब तक करता रहा जब तक की मूर्ति टूट नहीं गयी। और जब मूर्ति टूट कर गिरी तो वह हंस पड़ा –

तुम कायर हो – आज से मेरे जीवन में तुम्हारे प्रति बची हुई श्रद्धा भी खत्म हो गयी। कहता हुआ प्रधान जब बाहर निकला तो सामने माँ एवं पिताजी खड़े थे।

जाह्ववी के चेहरे पर भय और आंतक के भाव थे, जबकि ठाकुर साहब विस्मय युक्त आँखों से प्रधान को देख रहे थे। साथ–साथ उस मूर्ति को जिसे प्रधान ने तलवार से तोड़ दिया था।

बेटे यह क्या किया – ठाकुर साहब बोले।

जो भी किया आप देख रहे है पिताजी, आत्मा तो नहीं हाँ दिल जैसे कुछ शान्त हो गया। अब मैं जहाँ रहूँगा भगवान वहाँ नहीं रहेगा।

एक सुन्दर सपना टूट गया था, जाह्ववी को ऐसा दर्द हुआ जो असहनीय हो गया। आँखों में उमड़ा बाढ़ सीमा तोड़कर बहना चाहता था। सामने अपना बेटा अपना खून खड़ा था। और जाह्ववी को ऐसा मालूम हुआ मानों वह कोई नाग हो जो उसे ही डसना चाहता है।

नाथ! जाह्ववी अपने को सम्भाल न सकी। आज प्रधान मेरे लिये मर गया। काश! भगवान मुझे बाँझ कर दिया होता, तो एक राक्षस की माँ न कहलाती।

राक्षस! क्या कुछ और भी कह सकती हो माँ – अब तो मैं गिर गया, और जब एक बार गिर गया तो उठना नहीं चाहूँगा भले ही दुनिया मुझे पिशाच कहे।

तू पिशाच से भी गिर गया प्रधान – दुख इस बात का है कि तू मेरे खून से पैदा हुआ। दिल तो कहता है कि तेरा गला पकड़ कर दबा दूं। तू हिरणाकश्यप बने कि इससे पहले यमलोक भेज दूं। लेकिन ये हाथ ऐसा नहीं कर सकते, जिन हाथों से उठाकर कभी तुझे चांद दिखाया करता था, जिन हाथों से तेरा मल धोया और

उन्हीं हाथों से दूध भी पिलाया। जिस दिन पैदा हुआ था उस दिन मैं कितना खुश हुआ, बस उसकी एक स्मृति है बेटा, और उन हाथों से मैं तेरा गला घोंट नहीं सकता, नहीं घोंट सकता कहते कहते ठाकुर साहब का गला भर आया।

पिता जी एक पत्थर की मूर्ति तोड़ने से आपको इतना दुख हुआ, लेकिन आप ने उस गरीब को नहीं देखा – जो रोटी–रोटी कह कर मर गयी और गाँव के ठाकुरों ने उसके शरीर से खून निकाल लिया। मैंने देखा उस बदनसीब के गालों पर काले–काले गहरे निशान थे। जांघ खून से रंगी थी। बुड्ढ़े ने बताया इसकी इज्जत लूट कर किसी ने गला दबा दिया कहते–कहते मेरे सामने वह बूढ़ा भी मर गया। और फिर उनकी लाश भैसों पर लादी गयी। इतने बड़े गाँव में किसी को उन पर दया नहीं आयी। मुझे खुशी है कि इस पुण्य कार्य में मेरा बाप भी था।

एक पत्थर की मूर्ति के टूट जाने से माता जी ऐसे बैठ गयी जैसे मैं मर गया। जरा सोचो वे मूर्तियाँ जो जीती जागती होती है, पत्थर की नहीं हाड़, माँस की होती है। जब वे टूटती हैं, तो मानव दुखी क्यों नहीं होता।

संसार में ऐसा क्यों होता है। भगवान अगर है तो इन गरीबों को क्यों नहीं बचाता। क्या इनका जन्म दूसरों के लिए होता है।

एक लड़की के लिये तूने यह सब किया बेटे – मुझे क्यों नहीं बताया, उस पर इतना अत्याचार हुआ तूने उसका बदला भगवान से लिया।

जाह्ववी उठ गयी और प्रधान का हाथ पकड़ते हुए बोली बेटा तू दूसरों के लिए भगवान से भी लड़ेगा। मेरे लाल ''मनुष्य कर्मों का दास है, पूर्व जन्म के किये गये पाप तो बगैर भोगे खत्म नहीं होते बेटे – दुनिया में इस लिये अंतर है कि सबके कर्मों में अन्तर है भाग्य में लिखा कोई नहीं मेट सकता बेटा –

आपने कहा था भगवान सर्व शक्ति मान है। अगर कर्म ही प्रधान है तो फिर उसकी सत्ता का अधिपत्य क्यों माँ। तुम बहुत कुछ सोचने लगे प्रधान – आओ मेरे गले लग जाओ, और भगवान से माफी माँग लो। मन्द–मन्द मुस्कारते हुए प्रधान ने कहा – आपके गले लग सकता हूँ, पर भगवान से माफी नहीं मांगूगा। जाह्ववी कुछ संकोच में पड़ गयी। परन्तु ठाकुर साहब ने प्रधान को उठा लिया, और जाह्ववी ने बड़े जोर से प्रधान को भींच लिया।

○ ○ ○

प्रधान का यह पागल पन जाह्ववी को बहुत ही परेशान कर दिया! कभी–कभी रात में उन्हें नींद नहीं आती! बार–बार आँखे मूंदती, और जब नीद भी आ जाती तो कभी भंयकर सपना दिखायी पड़ता! ऐसे सपनें देखकर जाह्ववी का हृदय धड़कने लगता! यह क्रम कई दिनों तक चलता रहा। अंत में जाह्ववी एक दम अधीर हो गयी। और एक दिन ठाकुर साहब से बोली नाथ! प्रधान दिनों दिन उज्जड़ होता जा रहा है मेरा तो दिल कहता है कि उसे कहीं बाहर भेज दिया जाय! हो सकता है यहाँ से दूर जाने के बाद उसकें विचार बदल जायें।

ठाकुर साहब जाह्ववी की बातें सुनकर गहरे सोच में डूब गये। अपनें इकलौते बेटे को अपनें से जुदा करने के संकल्प मात्र से उनका हृदय कांप गया! परन्तु दूसरे छण माँ की ममता का एक विशेष रूप देख कर उन्हें अपने विचार ओछे लगें.........एक माँ जब अपने पुत्र के भविष्य के लिये इतना त्याग कर सकती है तो एक पिता........उस ममता के आगोश में क्यों बंध जाय जिसे जननी ने तोड़ दिया है।

काफी सोचने के बाद ठाकुर साहब को जाह्ववी की बातें अच्छी लगी! अच्छा सुझाव लगा! फिर बोले......... ।

तुमने ठीक कहा प्रिये! हम बहुत शीघ्र प्रधान को शहर भेज देगें! अगर हम ममता के वशीभूत रहें तो प्रधान बरबाद हो जायेगा।

प्रधान को सुधारने के लिये जाह्ववी को मात्र एक ही उपाय सूझा था। आखिर इसकें सिवा कोई दूसरा विकल्प भी नहीं था!

एक दिन प्रधान को बुला कर जाह्ववी ने कहाँ – बेटा एक बात पूछू!

पूछों माँ! प्रधान ने उत्सुकता जातते हुए कहा – तुम्हारा मन यहाँ लगता या नहीं? माँ बोली....... ।

प्रधान के मन में आया कि वह चिल्ला–चिल्ला कर कह दे कि उसका मन संसार में ही नहीं लगता! लेकिन चाह कर भी कह न सका! बड़ी मुश्किल से अपने मनोभवों को दबातें हुये बोला मुझे पूरी दुनिया अच्छी नहीं लगती माँ! लेकिन आप यह क्यों जानना चाहती हैं।

इसलिये बेटा – कि आपके पिता जी ने फैसला किया है कि तुमको कुछ दिन के लिए शहर भेज दें। एक तो गाँव की आब हवा ठीक नहीं दूसरे यहाँ की पढ़ाई गिरी गुजरी है। इसलिये तुम्हारे पिता जी चाहते हैं कि तुम यहाँ से शहर पढ़ने

चलें जाओं।

अगर पिता जी यही इच्छा है तो मुझें इंकार नहीं लेकिन आप की एक बात बड़ी अजीब लगी माँ। आप गांव की हवा की बुराई करती है, जब कि जहाँ तम मैनें सुना है – शहर से गाँव का जीवन श्रेष्ट है। अगर शहर को पृथ्वी का नर्क कहा जाय तो मेरे ख्याल से बेहतर होगा। तुम ठीक कहतें हो बेटा – लेकिन अच्छी तालीम के लिये थोड़े दिन शहर में रह लों वहाँ पढ़ाई अच्छी होती है।

० ० ०

प्रधान ने जिद् नहीं की! माता पिता की इच्छा से मैनपुरी जनपद में, ठाकुर साहब के दोस्त के यहाँ रहने लगा! कुछ दिन के बाद वह सारी घटना भूल कर सारा ध्यान शिक्षा पर लगा दिया! और जब नतीजा निकला तो विद्यालय में वह प्रथम था।

इसी तरह दो वर्ष बीत गये।

प्रधान का व्यक्तित्व भी इन दो वर्षों में काफी बदल गया! अब प्रधान के शरीर पर कीमतें कपड़ें भी होते, एवं पैर में जूतें भी! ठाकुर एवं माता जाह्ववी ने प्रधान को इतना बदला देखा तो उनके खुशी का ठिकना हीं न रहा! ठाकुर साहब ने अपनें मित्र को लाखों धन्यवाद देते हुये कहा – आप लोंगों ने हमारे उपर जो एहसान किया है उसका हम बदला कभी भी नहीं दे सकते! हम तुम्हारे चिरऋणी है दोस्त! यह सब प्रभु की माया है...। भाभी साहब तभी बोली......।

हाँ भाभी! मुझे भी कुछ ऐसा लगता है! उस समय तो मैं इतना निराश हो चुका था कि आप लोगों से कह नहीं सकता! एक ही बेटा जब बिगड़ जाता तब मैं क्या करता।

भगवान इतना र्निदयी नहीं भैया! वहाँ पर देर है अन्धेर नहीं!

और तभी प्रधान आ गया। बर बस ही निकल पड़ा कहाँ देर है। तभी प्रधान का ध्यान पिता की ओर गया!

पिता जी प्रणाम!

चिरंजीव रहों।

आप कब आये पिता जी, चुप चाप चले आये – घर पर माँ तो कुशल है! सब कुशल है बैटा..........। दिल नहीं माना चले आयें। तुम्हें देखने? एक महीना तो

बीत गया। बैठों–बेटा – देखों तुम्हारी माँ ने क्या–क्या भेजा है।

प्रधान पिता के पास बैठ गया। यह देखनें की माँ ने मेरे लिये क्या–क्या भेजा है। बहुत कुछ था! जिनके नाम प्रधान को पता नहीं बड़े गौर से उन्हें देखतें हुए वह बोला – अगर माँ यह सब नहीं भेजती तो क्या प्यार कम हो जाता – मुझे दिखावा पसन्द नहीं।

यह दिखावा नहीं – वरन् माँ की ममता है बेटे यदि थोड़ी गहरायी से सोचों तो पता चल जायेगा कि मेरे कहनें में कितनी सच्चाई है। माँ का हृदय इतना गम्भीर नहीं होता जितनी गहराई से तुम देख रहें हो! माँ का हृदय गंगा जल है बेटा उसका अपमान करना नीच काम है।

आपकी तर्क का कायल हूँ पिताजी! परन्तु क्या कैकई माँ नहीं थी। उसने राम को जंगल ही नहीं दशरथ को स्वर्ग भी भेजा है। एक पति ने पत्नी के पैर भी हुए थे। परन्तु पत्नी का हृदय द्रवित नहीं हुआ। क्या यह उसकी महानता है.......।

बेटा कैकेई ने जो किया वह दैव योग था। किसी ने कहा है आपत्ति कालें विपरीत बुद्धि – इस लिये ऐसा कहना ठीक नहीं कि कैकेई का हृदय पथ्थर था उसी कैकेई ने तो खुद ही कहा था'' देवों की ही चिर काल नहीं चलती है। उसने भी तो अनुताप किया है बेटे.....।

वह कैकेई नही वरन् राष्ट कवि की उदारता है। नारी के प्रति उदार भावना ही साकेत महाकाव्य की रचना है। गुप्त ने नारी को समाज में ऊँचा करने के लिए हजारों वर्ष पूर्व कैकेई पर लगे इस धब्बे को धो दिया! जरा ध्यान से सोचों पिता जी – जिसे वाल्मीकि नहीं कर सके, व्यास का ध्यान नहीं गया – तुलसीदास मानस जैसे विश्व श्रेष्ट काव्य की रचना करने वाले नहीं कह सकें उसे गुप्त ने कह दिया। यह कैसे तर्क संगत है। मेरा तो यही ख्याल है कि यह कवि की उदारता है नारी के प्रति उसकी पवित्र धारणा है।

इसका मतलब हुआ बेटा कि कवि ने नारी के ऊपर दया किया है, तुम यही कहना चाहतें हो ना प्रधान!

एक दम स्पष्ट है आंटी! रामायण से अलग अगर किसी नई चीज की खोज की जाती है तो वह सिर्फ कवि की कल्पना होती है। कवि की मनोवृत्ति होती है। उसके हृदय की भड़ास होती है। स्वान्ता सुखाय धारणा को लेकर लिखने वालें

कवि या लेखक सिर्फ अपनें भावों का उद्गार करतें हैं। जीवन के टेडे मेडे मोड़ गुजरे हुए दिन, अपमान भरा जीवन उनकी कृति में अछूता नहीं रहता, यह बात मैं मानता हूँ कि कृति पर समय एवं देश का प्रभाव जरूर पड़ता है परन्तु उससें कहीं अधिक कृति पर कवि की भावना का अधिक प्रभाव पड़ेगा।

यह दूसरी बात है कि नाम एवं धन अथवा यश के लिये लिखे गये काव्य दूसरों की भावना का आदर करते हैं, ऐसे कृतियों में किसी राजा अथवा शासक आज के युग में किसी पार्टी नेता आदि की बहादुरी बढ़ा चढ़ा कर दिखायी जाती है। कवि उन भावों को भी समिश्रण करना चाहेगा जो श्रोताओं को मंत्र मुग्ध कर सकें। यही कारण होता है कि ऐसी श्रेणी की रचनायें निम्न श्रेणी की हो जाती हैं। इतने लम्बे भाषण का मेरा सिर्फ यही अभिप्राय है कि गुप्त ने कैकेई को अनुताप करा के नारी को समाज में सम्मान देने की कोशिश की है जहाँ तक मेरा अपना विचार है वे इस मकसद में सफल भी रहें। मैं मानता हूँ कवि की कल्पना किसी हद तक ठीक है। परन्तु वास्तविकता का दिखावा करना डोंग हैं।

तुम क्या कहना चाहतें हो प्रधान ठाकुर साहब चीख पड़े!

मुझे जो भी कहना था कह दिया पिता जी! यदि आप को बुरा लगें तो मैं क्षमा चाहता हूँ। आज भी मेरे अन्दर उनकें प्रति दया है करुणा है जो इस दुनिया में मजलूम हैं, जलील है गरीब है एक बात मुझें कुछ अजीब लगी।

प्रसाद ने लिखा है, नारी तुम केवल श्रृद्धा हो, मेरे विचार से हर नारी श्रृद्धा नहीं बन सकती। अगर कवि ने हर नारी में श्रृद्धा देखा है तो यह सिर्फ कवि की महानता है। नारी जाति के प्रति प्रेम है। मैंने पहले ही कहा कि कवि के अपनें विचार होते हैं। हमारे विचार से हर नारी श्रृद्धा नही बन सकती। आप ही बतायें आंटी–श्रृद्धा के गुण आप में कहाँ तक विद्यमान हैं।

प्रधान ठाकुर साहब चीख पड़े – समझते हो तुम किस का अपमान कर रहें हो जो उम्र में तुम्हारे माँ के समान है और रिस्तें में भी!

यहाँ पर कोई रिस्ता नहीं पिताजी – रिस्तें नाते बनाये जाते हैं लेकिन एक सच अगर रिस्तें नाते से दब जाता है तो यह कायरता है और हम कायरता कभी भी बरदास नहीं कर सकते! कहता हुआ प्रधान वहाँ से हट गया!

यह तो कुछ भी नहीं बदला भाभी! ठाकुर साहब बड़ें हताश स्वर में बोले –

बचपन में यह जितना जिद्दी था, आज भी इसका वही रूप है। सिर्फ कपड़ों को देख कर मुझे भ्रम हो गया था।

उसके विचारें को मत देखों भैया! सिर्फ यह देखों कि वह पढ़ने में तेज है। जब बड़ा होगा शादी हो जायेगी तो सब आदर्श की बातें भूल जायेगा।

ठाकुर साहब को भाभी की बातें अच्छी लगी, और वे एक मधुर स्वपन की दुनिया में डूब गयें।

○ ○ ○

हवायें तेज थी और बादल भी! कालें–कालें मेघों के झुन्ड इधर से उधर उधम मचा रहे थे! बादलों की गड़गड़ाहट का भी कम शोर नहीं था। परन्तु थोड़ी देर के बाद वे मेघ न जाने कहा लुप्त हो गये। हवायें भी रूक गयी तेज धूप का एहसास होनें लगा।

प्रकृति के इस मजाक को प्रधान बड़ी देर तक देखता रहा! गरज कर मेघ नहीं बरसें लेकिन तेज धूप सब के लिय सुलभ है!

आज जब वह चला तो जानें क्यों मन कुछ भारी लगा! रात की सारी घटनायें मन पर बुरी तरह हाबी थी! क्या मैंने आंटी एवं पिता जी का अपमान किया। क्या मैंने नारी के प्रति कुछ गलत कहा। नहीं वह मन ही मन बोल पड़ा – और तभी उसके सामनें एक भीड़ लग गयी।

कभी–कभी जीवन में हम वह भी कर जातें है जिसे सोचना भी नहीं चाहतें। ऐसी स्थिति में किया हुआ कार्य कुछ हमें ही चौका देता है। प्रधान उस भीड़ में मिलना तो नहीं चाहता था पर अपनें को रोक न सका – कुतूहल बस वह एक दम उनकें करीब पहुंच गया। देखा था वह किसी युवती की लाश थी! जिसे चारों तरफ से लोगों ने घेर रखा था। प्रधान फटी–फटी आँखों से उस लाश को देखता रह गया।

आज के युग में कितना अत्याचर होने लगा बाबू! देखों न इसे कितनी बेदर्दी से मार दिया। बस इसका सबसे बड़ा यही दोष था कि यह गरीब थी। उस भीड़ में कुछ देर के लिये संनाटा छा गया सब आपस मे खुसुर–फुसुर करने लगे। जिसका मूल विषय वही युवती थी। प्रधान के दिल में ऐसा दर्द उठा कि वह अपने को रोक न सका। घुटनों के बल उस लाश पर झुक गया, और छलछलायी आँखो

से उसे देखने लगा। युवती के मुख पर काले गहरे निशान दिखायी दे रहें थें, तथा घुटनों के ऊपर खून के धब्बे थे। प्रधान का मस्तिष्क फटनें लगा। बड़े जोरो से सर को दबाया तो एक बीती घटना याद आ गयी। दो वर्ष पहले सांवली की लाश एकाएक उसके सामने साकार हो गयी। उसमें और इसमें कुछ भी तो अन्तर नहीं था। एक दम इसी प्रकार वह भी थीं। प्रधान इन्हीं विचारों में निम्गन था कि पुलिस साइरन गूंजी, एक दम करीब आकर जीप रूकी; और एक साथ चार व्यक्ति नीचे उतरे जिनके जिस्म पर पुलिस की वर्दी थी! उनमें से एक आगें बढ़ा जिसे देखकर भीड़ पीछें हट गयी।

लेकिन प्रधान इस दुनिया से बेखबर था वह इंस्पेक्टर उस लड़के की हरकत पर कुछ परेशान सा होता हुआ एक दम उसकें करीब पहुंच गया। क्या सोच रहें हो बेटे, प्रेम से सना हुआ हाथ इंस्पेक्टर ने प्रधान के सर पर रख दिया। स्पर्स के एहसास से प्रधान ने आँखे खोली।

आप.......प्रधान के मुख से निकला – कहाँ थे देखों यह कितनी गहरी नींद सो गयी है। आप ने आने में देरी कर दी!

इंस्पेक्टर ने प्रेम की एक ऐसी धारा देखी जैसे किसी मरु भूमि में सरोबर! उस बालक के इस रूप को देख कर इंस्पेक्टर की आँखे नम हो गयी।

उठ जा बेटे – शायद भगवान की यही मर्जी थी। बैगर उसकी इच्छा के इस दुनिया में कुछ नहीं होता। बिधाता की मर्जी समझ कर आँसू पोछ डालों बेटे – इंस्पेक्टर का स्वर भारी था।

लेकिन इसका क्या दोष! यही न कि यह गरीब है अब आप ऐसा कहने के सिवा कर भी क्या सकते हैं। मैं नहीं समझता इसकें गालों पर ये कालें–कालें निशान किस लियें हैं। और यह खून प्रधान ने उँगुली उठाते हुए कहा अखिर यह सब क्या है इंस्पेक्टर साहब! लाश ले जाने से पहलें कृपया मुझे बतायें।

इंस्पेक्टर कतार आँखों से प्रधान को देखता हुआ बोला – गरीबों में एक और बिमारी होती है वह है सुन्दरता! यह अबोध गरीब के साथ ही सुन्दर भी थी। फलतः दुनिया इसकी दुश्मन बन गयी! वासना के पागल अपनी वासना पूरी करने के बाद पहचानने के भय से इसे सदा के लिये खत्म कर दिया। गाल पर काले निशान इसके प्रतीक हैं, कि वे कितने क्रूर थें।

लेकिन यह वासना क्या होती है सर।

छोड़ो बेटे.........अभी यह न जानों तो ही अच्छा हैं। संक्षेप में वासना आग होती है। जिसमें सब कुछ जल जाता है। पाप की यही सीड़ी है। मानव के पतन की द्योतक है। सर वासना का कोई रूप अथवा आकार भी है?हाँ बेटे – वासना का आकार बहुंत विस्तृत है। यही समझ लो जैसे सागर में डूबने वाला मनुष्य कितना भी हाथ पैर क्यों न मारे वह कभी तट तक आ ही नहीं सकता क्योंकि मूल बात तो यह है कि उसे दिशा ज्ञान भी नहीं रहता वासना भी कुछ ऐसी है, जिसमें फंसा हुआ मनुष्य कभी किनारें पहुंच ही नहीं सकता।

इस पापी वासना से कैसे बच सकतें है सर?

मेरे विचार से वासना का दमन करना यदिप अत्यन्त कठिन है परन्तु इसे दिशा दिया जा सकता है। जो मानव अपने विवेक को जाग्रत कर चिंतन करेगा वह आत्मसंयम की स्थिति प्राप्त कर लेगा। अपने बुद्धि के अनुसार तुम्हारे प्रश्न का यही उत्तर है बेटा।

अब चलता हूँ सर...... आप ने जो मुझे बताया उस पर अमल करुँगा। कहता हुआ प्रधान चल पड़ा परन्तु वह इंस्पेक्टर उसे तब तक देखता रहा, जब तक वह आँखों से ओझल नहीं हो गया। फिर मुड़ कर अपने साथियों से बोला – तुम लोग खड़ें–खड़े क्या देख रहे हो शीघ्र कार्यवाही पूरी करों। फिर वह भीड़ की तरफ उन्मुख हो कर बोला – आप लोगों में कोई यहाँ तब था, जब यहाँ लाश लायी गयी।

भीड़ पर मानों ब्रजपात हो गया हों – सारे मौन किसी ने उत्तर नहीं दिया। इसका मतलब आप लोगों में यहाँ कोई नहीं था।

वह इंस्पेक्टर उस लाश पर झुक गया। बड़ें गौर से उसके चहेरे को देखता रहा......। परन्तु कोई विशेष बात उसकी समझ में नहीं आयी! वह सिर्फ एक ऐसी कहानी दुहरा रही थी, जो हजारों वर्ष से दुहरायी जा रही है। सोचते हुए इंस्पेक्टर के माथे पर सिलवटे गहरी होती चली गयी आखिर ऐसा क्यों होता है। इसका मतलब नारी कमजोर है, हाँ यही ठीक है। अगर ऐसा न होता तो नारी पर अत्याचार न होते क्या उसकी उत्पत्ति सिर्फ लूटने के लिये होती है.....। अगर नहीं तो फिर इसका क्या कारण है.......।

○ ○ ○

वासना के विस्तृत रूप से प्रधान परिचत तो नहीं हुआ परन्तु वासना के प्रति उसके हृदय में वितृष्णा का बेग तीव्र गति से बढ़ता चला गया। उसने चन्द्र शब्दों में वासना का अर्थ निकला वह था मृत्यु! उसने मन ही मन संकल्प लिया कि वह वासना से अजीवन दूर रहेगा। चाहें उसे कुछ भी कुर्बानी करनी पड़े।

हाई स्कूल की परीक्षा के दिन करीब आ गयें। उसे अपने पर पूरा विश्वास था कि पास तो जरूर हो जायेगा। इसी करण इन दिनों पढ़नें से कुछ उदासीन हो गया। कभी–कभी जब एकांत मिलता तो वह अपनें को सोचों की दुनिया में पता। हर बार उसकें सामने दो लाशें होती। एक साँवली और दूसरी जिसका वह नाम नही जानता था। रोड पर पड़ी लाश। चारों तरफ अंनत जन समूह सब कुछ साकार हो जाता था उसकें समाने। कभी–कभी तो वह स्वपन में ये दृश्य देख कर चीख पड़ता। परीक्षा समाप्त हो गयी – अवकाश के दिनों वह गाँव चला गया। एक दिन ठाकुर साहब ने पूछा –

कैसी परीक्षा रही बेटा?

प्रधान के ओंठो पर गहरी मुस्कान तैर गयी! परीक्षा तो अभी शुरू हुई है उम्मीद करता हूँ पास हो जाऊँगा।

तुमसे यही उम्मीद थी बेटा ठाकुर साहब बोले।

एक बाप की यही उम्मीद होती है कि उसकी संतान पढ़े आगे बढ़े – खूब पैसा कमायें ऐश से रहें – लेकिन यह जरूरी नहीं कि हर पिता का यह सपना पूरा ही हो जाये। वैसे मेरे ख्याल से पिता की इच्छाओं का कद्र करना पुत्र का प्रथम कर्तव्य हैं।

ऐसा आज के युग में कहाँ होता है बेटा.....। पिता की आज्ञा माननें में पुत्र अपनी तौहीनी समझता है। वर्तमान समय अगर ध्यान से देखा जाय तो सब से ज्यादा इसी चींज का पतन हुआ है। राम का चरित्र आज कल्पना सा लगता है। पिता की आज्ञा पर चौदह वर्ष जंगल में रहने की कौन बेवकूफी करेगा।

आप किसी हद तक ठीक कहते हैं पिताजी! वर्तमान युग में मानव का सबसे ज्यादा चरित्र पतन हुआ है। इसका कारण पश्चिमी सभ्यता मानी जाती है, विश्व के श्रेष्ट जगत गुरू भारत के लिये यह सबसे शर्मनाक बात है। हम आज इतने नीचे गिर चुके है कि चाह कर भी उपर नहीं जा सकतें। दुःख के साथ यह कहना पड़ता है कि भारतीय खून मिलावटी हो चुका है।

चलों बेठा – पहलें खाना खा लों– जाह्ववी ने आकर कहा ''माता के आदेश को सुनकर प्रधान उठ गया, और उसके साथ ही ठाकुर साहब भी।

नीले अंबर पर एक तारा टूटा उसके तेज की एक पतली सी लकीर बन कर बिगड़ गयी। चन्द्र मिनट के बाद उसका कोई अवशेष नहीं रहा – तारों की झिलमिलाहट से अंतरिक्ष आच्छादित था।

निशा का प्रथम पहर दम तोड़ रहा था, जिसकी सीसिकयाँ झिगुरों की ध्वनि में प्रतीत होती थी। निशा युवा की और निरन्तर बढ़ रही थी। नव यौवना की चूड़ियों की ध्वनि के सामन वसन्तु की समीर वृक्षो से खेल कर हंस रही थी! वृक्षों के टूटते पत्ते कड़–कड़ की कितनी मीटी रव उत्पन्न करते विरहणी के ह्रदय में चुभ रहें थे। आम्रों में नव जीवन उनके फूलों की मंकरद मद होशी सी भर रही थी। पी कहा–पी कहाँ कभी–कभी पपीहा की आवाज बियोग रूपी कृशानु में घृत बन रही थी।

प्रधान की आँखों में मीठी मीठी नींद थी! परन्तु सममोहन सा प्रकृति के इस रूप में निम्गन था! धीरे–धीरे निद्रा देवी ने उस पर अपना अधिकार कर लिया और जब उसकी आँखे खुली तो दूर मंदिर से यह आवाज सुनायी पड़ी।

विषय विकार मिटाओं,
पाप हरों..........देवा।

न चाह कर भी प्रधान ने दोहराया! क्या बिना भगवान की कृपा के विषय बिकार नहीं मिटता! – आज पहली बार उसके दिल में यह आवाज गूंजी थी। मगर मैं बिना देवा कहें ही विषय बिकार मिटाऊगा! कहते हुऐ जब वह उठा तो उषा मुसकुरा रही थी।

प्रधान निरन्तर उन्ही रास्तों पर चलता रहा जिस पर उसका बचपन बीत चुका था। गाँव के बाहर अधिकांश वहाँ पर घूमता जहाँ साँवली के लाश रखी थी! बहुत खोजने पर उसे उस स्थान का पता लगा था फिर भी वह विश्वास न कर पता कि यह वहीं जगह है......। थक कर वह वहीं बैठ गया – जैसे कुछ खो गया हो और वह उसे खोजना चाहता था।

साँवली हम तुम्हें पुनः जीवित तो नहीं कर सकते पर........कहते। हुए प्रधान की मुठियाँ भिच गयी!

○ ○ ○

हवा का एक झोका आया और चला गया! बस इसी प्रकार एक महीना बीत गया। प्रधान जाने की तैयारी करने लगा। सुबह उसे मैनपुरी चले जाना था। हाई स्कूल का परिणाम आ गया था, जिसमें वह प्रथम श्रेणी में था। ठाकुर साहब जब बेटे की सफलता सुनी तो फूले नहीं समायें! माता जाह्नवी, की आँखों में आँसू आ गयें।

बेटा कल चलें जाओगे – जाह्नवी ने पूछा!

जाना तो पड़ेगा ही माँ – यह तो नियम है कि कुछ पानें के लिये कुछ खोना भी पड़ता है। कुछ सीखनें के लिये ममता का गला तो घोटना ही पड़ेगा! प्रधान ने बड़े संयत स्वर में कहा।

बेटा तुम बहुत बड़ी–बड़ी बातें कर लेते हो – अच्छा यह बताओं क्या वहाँ तुम्हें मेरी याद आती है। जाह्नवी का स्वर प्रेम से सना था।

आप बहुत छोटी बात करती है माँ! मुझे तुम्हारी याद न आये ऐसा हो ही नहीं सकता। शायद ही कोई दिन जाये जिस दिन आप की याद न आयें। जिन हाथो ंमें किलकारी मार कर हँसा करता था – जिस शरीर के रक्त से जीवन मिला है.... उसको भूला कैसे जा सकता है। परन्तु रे काल तू कितना प्रबल है। हम जल कण को सागर से भी अलग कर देता है। परन्तु सागर से बिलग हम कब तक जीवित रह सकते हैं।

मुझे हर दिन आपकी याद आती है माँ....! तुम्हारे सिवा इस दुनिया में मेरा इतना निकट कौन है......। परन्तु जब राम उससे अलग हो गये तो हम छुद्र प्राणी क्या है। दुनिया उन्हें भगवान मानती है क्योंकि उन के कार्य इतने श्रेष्ट थे कि लोंग उन्हें नर से नाराण मानने लगें।

जाह्नवी जब प्रधान की बातों की तह तक पहुंची, तो आँखों से अश्रु धार फूट पड़ी।

माँ तुम रोने लगी – प्रधान ने चौंकते हुए कहा।

रोती कहा हूँ बेटा! यह तो तुम्हारे शब्दों की प्रतिक्रिया है, जो हृदय पर एक अमिट छाप छोड़ गयी।

खैर इन बातों को छोड़ों माँ मानव स्वभाव से हम अलग नहीं। वे कमजोरी

आज तक जो मानव में थी, हम उन से अलग कैसे हो सकते हैं। ममता को मैं बहुत बलवान मानता हूँ। ये ऐसी बेड़ी है जो बड़े–बड़े शूरवीरों को बाँध लेती हैं। ममता से रहित होना ही संसार की सब से बड़ी विजय है। मानव के अन्दर जब तक ममता रहती है तब तक वह त्याग नहीं कर सकता। सांसरिक मानव स्पृहा रहित हो ही नहीं सकता! मनुष्य जब तक ममता में बंधा रहता है समझ लो परतन्त्र है।

''क्या तुम ममता से रहित हो बेटा!

नहीं काश इतना महान हो जाता.......। तब भी हम नहीं कह सकतें कि ममता से रहित हूँ......। मुझें हर हलात में इन चरणों की धूल लेनी है – कहता हुआ प्रधान घुटनों के बल माँ के करीब बैठ गया।

तुम्हारी बातें बड़ी अजीब है बेटा?

आप भी तो अजीब है प्रधान मुस्करा उठा!

चलतें समय प्रधान ने जब माँ के चरण छुऐ तो आर्शीवाद के लिये सिर्फ माँ का हाथ उठा – परन्तु वाणी न निकल सकी दर असल कंठ अवरूद हो गया। माँ की वेदना देखकर प्रधान भी मन ही मन रो उठा – जिसे जाह्ववी देख न सकीं।

रास्तें भर वह मन ही मन सिर्फ माँ के बारें में सोचता रहा – कितनी विशाल होती हैं माँ जननी, कितना पावन प्रेम है.....क्या मनुष्य कभी माँ के ऋण से मुक्त हो सकता है – नहीं कभी भी नहीं तभी उसे किसी कवि की निम्न पंक्तियाँ याद आ गयी –

सुन्दर होगें देश बहुँत से,
बहुत बड़ी है यह धरती।
पर अपनी माँ ही अपनी है,
अमित प्यार कर रखती।।

कविता की सत्यता तक पहुंच कर प्रधान की आँखे पुनः छलछला आयी, जिन्हें उसनें पोंछा नहीं, बस आँसू को बहनें दिया अबिरल....।

o o o

तीन

होली के मादक एवं खुशी के प्रतीक गीत चारों तरफ गूंज रहें थे! लोंग उन्मद होली का स्वागत करने की तैयारी में व्यस्त थे! तैयारियाँ और इन्तजार के क्षण समाप्त हो गयें।

आज होली है.....बुरा न मानों होली है, की आवाज जहाँ देखों वहीं सुनायी पड़ रही थी! सुबह से ही युवा बच्चे रंगों से सनें इधर उधर घूम रहें थें बच्चें पिचकारी के लियें जिद कर रहे थे। परन्तु कुछ ऐसी भी माँ थी जो.....पिचकारी नहीं वरन् संतोष दे रही थी, जिन से लोग बेखबर थे.....सब के मुख पर खुशहाली एवं उल्लास था।

उन्हीं में से एक बालक था भानू – जिसके चहेरे पर न तो खुशहाली थी न ही उल्लास – हाँ चहरें पर सोचो की एक परत थी – जिसे बड़े खूबसूरती से उसने छिपा रखा था! गुमसुम वह बैठा था कि गुड़िया ने अवाज लगायी – भानु आ खाना खा ले। तब वह उठा और जाकर चुप चाप बैठ गया – थोड़ी देर के बाद कुछ सूखी रोटियाँ सामने आ गयी।

भानू उन रोटियों को देखता रहा – जो सूखी एवं कुतरी बासी थी – शायद उन का निर्माण उसी के लिये किया गया था।

मुझे भूख नहीं है भाभी.......भानू के मुख से निकल गया। फिर क्यों बैठा है... ..जा आराम कर। भाभी बोली..... ।

भूख नहीं है सिर्फ इतना कह देनें से भूख खत्म नहीं हो जाती। भूख वह सच्चाई है जो कभी छुपती नहीं, भूख नहीं है भानू ने सिर्फ इसलिये कहा कि होली के दिन सूखी रोटी देखकर भावावेश में....। होली के दिन अपमान का जाम वह पी नहीं पाया, जिसे पीने का वह आदी हो गया था। परन्तु आज दिल की पीड़ा जुबान से निकल गयी।

सच्चाई से मुँह मोड़ना कितना मुश्किल था! भानू कुछ देर तक सोचता रहा आखिर अंत में उसने आधी रोटी उठा लिया। परन्तु मुख में रखने से पहले गुड़िया ने हाथ पकड़ लिया। तुमको भूख भी नहीं रहती और दो सेर खा भी जातें हों! अगर दो दिन न मिलें तो नानी याद आ जाये..... ।

न काम के न काज के, दुश्मन अनाज के। तुमसे तो अच्छा यह रोटी भैंस

खा लेगी – कम से कम दूध तो देगी – ऐसा कहती हुई गुड़िया ने भानू के हाथ से आधी रोटी छीन ली!

गुड़िया – रोटी दे दें। मैं बहुत भूखा हूँ मैने जो कहा उसकी क्षमा चाहता हूँ। वह मेरा आवेश था!

ओह – गुड़िया ने बुरा सा मुंह बनाया! सुना मम्मी इन्हें गुस्सा भी आता है। चल उठ आज तुझे रोटी नहीं मिलेगी ताकि आइन्दा ध्यान रहें। ऐसा कहती हुई गुड़िया आधी रोटी लेकर बाहर निकल गयी। और भानू सिर्फ मूक दर्शक बन कर रह गया। तभी किसी के हंसने की आवाज गूंजी भानू ने चौंक कर देखा वे भाभी साहब थी।

भानू ने कतार आँखों से भाभी की तरफ देखा जिनमें याचना थी – परन्तु उस हृदय में करुणा का निवास ही नहीं था।

अपमान का जाम पीकर भानू उठ गया, यही सोच कर कि यही मेरा नसीब है। एकान्त पाकर वह अपने आँसूओं को रोक न सका – बहुत देर तक फूट–फूट कर रोता रहा – तभी आँखों के सामने माँ की तस्वीर घूम गयी – तुम मेरी माँ थी। इसी दिन के लिये मुझें पैदा किया था – काश पैदा होते ही मेरा गला घोट देती – तो आज इतना अपमान भरा जीवन न मिलता – दुनिया के सामने इस तरह मजलूम न होना पड़ता....और तभी उसे ध्यान आया – मरते समय माँ ने भैया से कहा था – भानू बहुत छोटा है इसें पिता बन कर देखना मेरे बेटे, ऐसा कह कर माँ सदा के लिये चली गयी थी! और कुछ दिन भाई ने माँ का वचन पूरा किया, लेकिन धीरे–धीरे उनमें परिवर्तन होने लगा। भानू इसें समझ न सका। समझा भी तो संतोष कर लिया। और एक दिन ऐसा आया कि उसकें हाथ से आधी रोटी छीन ली गयी! इतिहास में वह पहला व्यक्ति हो गया जिसके साथ ऐसी घटना घटी थी।

धीरे–धीरे उसे पता चला कि रामशरन उसका सगा भाई नहीं है। वह एक दासी पुत्र है। लेकिन रामशरन की माँ ने दासी के मरनें के बाद उसें अपना लिया था! क्योंकि उसमें ठाकुर घरानें का खून था। पति के पाप को कभी उस देवी ने नहीं दुहराया, और भानू को अपना ही बेटा समझा। मरतें वक्त भी उन्होंने अपने कर्तव्य का पालन किया। भानू को अपने बडे बेटे रामशरन को सौंप कर वे स्वर्ग सिधर गयी।

रामशरन कुछ दिनों तो माँ के वचनों का पालन करता रहा। लेकिन तभी

उसे एहसास हुआ यह उसकी गलती है। एक दिन भानू आधी सम्पति का हकदार होगा, और यही सोच कर रामशरन भानू के प्रति उदासीन हो गया। रामशरन की पत्नी स्त्री के सभी गुणों से युक्त थी। पति के न रहनें पर पहले भी कभी–कभी भानू भूखा सो जाता था, परन्तु संकोच की एक सीमा शेष थी!

यह बात नहीं है कि श्रीमती ने रामशरन को नहीं समझया – वे हर बार यही कहती देखना एक दिन तुम्हारे सिर पर बैठेगा, और आधा बाँट लेगा – परन्तु रामशरन हंस कर टाल जाता। लेकिन एक दिन पत्नी की बात अच्दी लगी, और मन में भानू के प्रति घृणा उत्पन हो गयी। जब रामशरन का व्यवहार बदल गया तो जुल्म का सैलाब सा भानू पर आ गया। रुखी सूखी रोटी खाकर सो जाने के सिवा भानू का पास कोई दूसरा रास्ता भी नहीं था। रामशरन कभी कहा करता था कि भानू को वकील बनाऊँगा। लोंग सुनतें और उसके नेक दिल की प्रसंसा करते। शायद यही कारण था कि वह अब तक विद्यालय जाता था! गाली देकर भाभी फीस दे दिया करती थी। लेकिन इस महीने उन्होंने साफ इंकार कर दिया, फीस का पैसा मेरे पास नहीं है। उस समय भानू के मुख से यही निकला – भाई साहब को आने दों और उसी समय दैवयोग भाई साहब भी आ गयें। भानू ने अपनी समस्या भाई रामशरन के सामने रख दी! रामशरन मुस्कातें हुऐ बोलें बहुत पड़ लिया अब कोई काम करों! क्या तुम्हें प्रधान मंत्री बनना है।

भानू के हृदय पर एक घूसा सा लगा। परन्तु वह कराह न सका। घायल वह ऐसा पंछी था कि फड़ फड़ा भी नहीं सकता था! रामशरन कहतें हुऐ चले गयें, और भानू एक गहरें सोच में डूब गया! वाह – दुनिया यहाँ मनुष्य इतना बदल जाता है। भैया, जिस जुबान से मुझें पुकारतें थे वह कहाँ चली गयी! इस सब का मात्र एक कारण था घर में बटवारा, भानू अच्छी तरह जानता था उसे किस लिये इतना बड़ा दण्ड दिया जा रहा है।

होली के दिन जब उसके सामने सूखी रोटी आयी तो वह अपने को सम्भाल न सका! गुड़िया ने आधी रोटी मुंह में लगातें ही छीन लिया – और वह बड़ी देर तक रोता रहा, और जब वह शान्त हो गया तो हृदय में एक गुब्बार सा उठनें लगा! तू कुछ भी नहीं कर सकता भानू, भूखा ही मर जायेगा। नहीं वह मन ही मन बोला। तो फिर क्या भीख माँगेगा.....। नहीं।

तो फिर कैसे जिंदा रहेगा।

चोरी करूगा! ऐसा कहते–कहते उसकी मुठियाँ भिजती चली गयी और चेहरा तमतमा उठा।

भैया! तभी वह जोर से पुकार उठा! परन्तु कोई उत्तर नहीं मिला! क्रोध एवं आवेश में आज वह पागल होता चला गया। एक झटकें से उठा और अंदर घुस गया।

भाभी एवं भैया घर पर नहीं थे। हाँ – गुड़िया बैठी हुई कोई गीत गुनगुना रही थी। एकाएक भानू को आया देख कर वह चौंक गयी! दूसरी ही छण बोली यहाँ क्या करने आये हो।

गुड़िया तुम ने मेरे हाथ से आधी रोटी छीन ली – अरे पगली कम से कम तुझे मुझ पर दया करनी थी। यह घर सदा तेरे साथ नहीं रहेगा। एक दिन यहाँ से चली जायेगी। इस जायदाद में तुझें क्या मिलेगा गुड़िया! मैं भगवान की कसम खाकर कहता हूँ कि मुझे भैया के धन से जरा भी मोह नहीं है, परन्तु न जानें क्यों भैया मुझें इतना गिरा हुआ समझतें हैं। इसमें से एक पाई भी लू तो माँ का खून पीऊ।

अखिर मेरा हक ही क्या है – दासी पुत्र हूँ न......मुझे जैसे इंसान पैदा होते ही, या तो नालें में फैक दिये जाते हैं, अथवा किसी अनाथलय में पाये जाते हैं – मैं यहाँ हूँ यही क्या कम है।

बड़ा होकर यह घर सदा–सदा के लिये छोड़ दूंगा गुड़िया...। सोचता था कुछ पड़ लू परन्तु मेरे भाग्य में यह लिखा कहाँ है....। एक बात बताना गुड़िया मेरे भूखें रहने से तुम्हें क्या मिला बहन....। तुम कुछ भी हो परन्तु मेरी नजर में बहन ही हो। मैं बहुत गिर गया गुड़िया फिर भी इतना कहूँगा कि एक बार मेरे करीब आ जाओं गुड़िया में तुमसे होली मिलना चाहता हूँ।

गुड़िया उठी थी! भानू के एक दम करीब आ गयी। परन्तु कुछ बोल न सकी।

चुप क्यों हो गुड़िया – भानू ने कहा – परन्तु गुड़िया मौन थी!

मत बोलों गुड़िया – लेकिन इतनी प्रार्थना स्वीकार करना मेरे ऊपर तेरी महान कृपा होगी। बस एक टूका रोटी में जहर मिला दें। हम तेरे अभारी होगें – भगवान तुम्हें खुश रखें – कहतें कहतें भानू का कंठ अवरुध हो गया – आँखो से

आँसू का सोत्र फूट पड़ा – और वे आँसू गुड़िया के कुन्तल में समातें चले गये!

फिर भानू ने गुड़िया के केशों पर हाथ फेरा ढेर सारा प्यार सिमट आया उसकी आँखों में जिसे गुड़िया समझ न सकी।

○ ○ ○

होली की रात कितनी सुहावनी एवं मादक होती है। सम्पूर्ण कला से युक्त चन्द्र सारी धरा को पुलकित कर देता है। सारे दिलों में शीतलता प्रदान कर देता है। ऐसी सुहावनी निशा में भी भानू के ह्रदय में एक भंयकर तूफान चल रहा था। जिसमें छोटे–बड़े वृक्ष धड़ा–धड़ गिरते दिखायी दे रहे थे। और उन्हीं में एक उसका भी स्थान था! क्या वह इस तूफान में फँस कर उखड़ जायेगा। क्या उसकें जीवन का सेतु इतना कमजोर है.....। परन्तु उसके पास और कोई साधन भी तो नहीं था! मस्तिष्क ने सरगोशी की आज रात भूखा ही सो जा! होली है न! और कल से खून की होली खेलना। इस प्रकार बहुत सोचते हुए भी वह तटस्थ नहीं हुआ!

रात अपनी रफ्तार से बढ़ती रही! लगभग दस से ज्यादा बज चुकें थे। तभी किसी के पद चाप गूँजें! भानू ने चौक कर देखा कोई एक दम उसके करीब आ चुका था, वह तुरन्त खड़ा हो गया। भानू भैया – बहुत धीमी आवाज में गुड़िया बोली। गुड़िया तू यहाँ दया करनें आयी है!

भैया मुझसे भूल हो गयी। मैं भटक गयी थी। आप मुझें माफ कर दें। यदिप मैं इसके काबिल तो नहीं हूँ परन्तु – गुड़िया का स्वर गलें में फँस गया और वह सिसकनें लगी!

गुड़िया भूखा मैं रहा! दुःख मुझे हुआ! रो तू रही है। मैंने कभी भी तुझे दोषी नहीं माना, मुझ पर जो हुआ शायद यही मेरा भाग्य था।

आज तुम नसीब – यह क्या कह रहें हो भैया।

इसके सिवा संतोष का दूसरा पथ भी कहाँ है। लेकिन सच्चाई संतोष से कहाँ तक छुपती है भैया! नहीं छुपती गुड़िया। मगर हम छुपायेंगे! तब तक जब तक प्राण है! आज शायद मेरी मुराद पूरी हो ही जाये। तुम आ गयी हो.....तो जहर तो जरूर लायी होगी गुड़िया।

गुड़िया का दिल तड़फ उठा। भानू को देखने की कोशिश की परन्तु अंधकार उसका साथ नहीं दिया–बड़ी मुश्किल से वह बोली–इतनी बड़ी सजा मत

दो भैया हमनें क्षमा माँगी थी। क्या आप मुझे मॉफ नहीं करेंगे। या मैं इतनी गिर चुकी हूँ जहाँ से उठ ही नहीं सकती, कहते हुए गुड़िया के आँखों से अश्रु फूट पड़े, और फिर अपनी सिसकियां भी न रोक सकी।

तू फिर रोने लगी कायर! कहता हुआ भानू गुड़िया का हाथ पकड़ कर पास बैठा लिया! अब.....बोल तू क्या चाहती है।

आप इंकार तो नहीं करेंगे।

कहकर तो देख गुड़िया! हम तुझे अपनी जान भी दे सकते हैं। अगर विश्वास नहीं तो अभी परीक्षा लेकर देख ले।

यही परीक्षा है भैया कि आप इसें खा ले। आज होली है न भूखें नहीं सोते – यदि आप ने इसे ठुकरा दिया तो मुझे दुःख होगा, और अन्न देवता का अपमान होगा।

तू बहुत चालाक है गुड़िया। मुझे इस प्रकार फँसा लिया कि इस बंधन को तोड़ ही नहीं सकता! फिर इतनी छोटी बात के लिये वचन की क्या आवश्यकता थी शायद तू यही समझती थी कि मैं तेरा अपमान कर दूंगा! तुझें धक्का देकर बाहर कर दूंगा! यही बात थी न गुड़िया।

आप बहुत सोचते हैं भैया! मुझे यह सब नहीं आता। मैं तो इतना जानती हूँ कि इतना अपमान पीकर बरदास करना आसान नहीं मुश्किल है। मेरी दृष्टि में आप महान हैं।

मेरे लिये महान शब्द कह कर इसकी तौहीनी न करों गुड़िया! मैं क्या हूँ इसे अच्छी तरह जानता हूँ! तुम्हारें प्रति मेरे हृदय में प्यार है, और आज आदर भी! इस लिये नहीं कि तुम मेरी बहन हो गुड़िया! आदर इस लिये कहा कि, आज तुम में दया एवं करुणा देखी है, एक ऐसे व्यक्ति के लिये जो भूखा है। सच गुड़िया यह तेरी महानता है। हम भूखे मर सकतें हैं परन्तु भीख नहीं माँग सकतें।

कल का सूरज निकलनें से पहलें हम अपने को बदल देगें! आदर्श और सिद्धान्त का खून कर देगें। सम्बन्ध तो मेरे लिये टूट गये हैं। दुनिया से अब मेरा कोई रिस्ता नहीं रह गया है। इतना सब होने के बावजूद भी मेरे हृदय में तुम्हारें प्रति प्यार होगा! मेरी गुड़िया के तरफ यदि किसी ने आँख उठाया तो सारी दुनिया में आग लगा दूंगा। तुम्हारें लिये मेरी जान भी हाजिर है गुड़िया।

भगवान आप की जान सलामत रखें। मैं तो ईश्वर से यही प्रार्थना करुगी। मैं आप को समझ न सकी। इसका दोष सब से बड़ा यही है कि मेरी आत्मा मर चुकी थी! मैं जिस वातावरण में पली, जिसमें पाप एवं घृणा की महक थी! हो सकें तो मेरी भूल–भूल जाना भैया।

तुम व्यर्थ अपनें को परेशान कर रही हों! मैंने हजार बार कह दिया यह मेरा नसीब था! नहीं तो मेरा जन्म ही क्यों होता! जन्म ही दुःख का हेतु है। और ममता दुःख उद्यान की वसन्तु है। ममता के अनेक रूप होते हैं। उसी में से जीनें की चाह मेरी दुगर्ति हैं, अगर में जीने का मोह छोड़ देता तो – एक सुख की नीद सो गया होता, और सारे पाप ताप से मुक्त हो जाता। लेकिन यह सिर्फ सोचने की कला है! वास्तविकता तो यह है कि ऐसा कहाँ होता है – मुत्यु वह सच है जिसे एहसास कर बड़ी–बड़ी हस्ती काँप जाती है। परन्तु वास्तव में मृत्यु डरनें की चीज नहीं है। क्योंकि मृत्यु विश्व में एक ऐसा सच है जो सब को समान देखते आया हैं। भगवान भी भूल कर सकता है परन्तु इसनें भूल नहीं की है। क्षीर फेन के समान यह देवी जब हमारे स्वागत के लिये खड़ी है तो हमें चिंता लीन होने की क्या जरूरत है। माफ करना भैया। पहलें खाँ लो – बाद में बातें करना – मैं मृत्यु का रहस्य नहीं जानती, न ही जानने की इच्छुक हूँ। हाँ इतना जरूर कहूँगी यदि आप मुझे बातों से टालना चाहगें तो, तुम से पहलें हम इस दुनिया को छोड़ दूंगी।

फिर वही नादनी! भानू ने मुस्करा कर कहा ‘‘चल पहले हम खातें हैं – क्या लायी है हमारे लिये – फिर गुड़िया ने एक निवाला तोड़ कर भानू के मुख में रख दिया। मैं अपने हाथों से खा लूगा – तू क्यों परेशान होती है। रोज आप अपने हाथ से खाते है – एक दिन यदि में खिला दिया तो क्या हो जायेगा। या मेरे हाथों से तुम्हें परेशानी होगी – यदि ऐसा है तो ....।

ऐसी बात नहीं है गुड़िया, बीच में ही भानू बोल पड़ा। मैं कुछ भी नहीं कहूँगा गुड़िया – तेरी जो इच्छा है आज पूरी कर लें।

यह हुई अच्छी बच्चों वाली बात – गुड़िया मुस्करा पड़ी। इसका मतलब मुझे बच्चा बानना चाहती है – कोई बात नहीं आज हम सब कुछ करनें को तैयार हैं। कोई मजाक थोड़े है। आप वचन बद्ध है, गुड़िया बोली, आज के युग में वचन की कोई कीमत नहीं गुड़िया। आज कल लोंग वचन की लाज भूल गये हैं। पहलें खाना खा लों – कहती हुई गुड़िया ने नेवाला उठाया, फिर भानू तब तक नहीं बोला

जब तक खाना खत्म नहीं हो गया!

खाना खत्म हो गया! अब सुनाओ – गुड़िया बोली.......। क्या सुनोगी – कहानी।

उहूँ...........वचन.....।

सुनों.......प्राचीन काल में लोग वचन की लाज के लिये बलिदान हो जाते थे। महाराज हरिश्चन्द्र के नाम से कौन वाकिफ नहीं होगा। महाराज दशरथ वचन की रक्षा के लिए स्वर्ग को सिधार गयें। आज दु:ख है कि उन्हीं आर्यो की संतान छोटी–छोटी बातों में झूठ का सहारा लेते हैं! क्या कहू गुड़िया – आधुनिक पीढ़ी नैतिकता की परिभाषा बदली चुकी है – सुबह से शाम तक सौ बार झूठ बोलना, धोखा देना, अपनी चालाकी समझती है।

आप के कहनें का मतलब झूठ एक बहुत बड़ी बुजदिली है। ऐसा भी समझ सकती हों।

क्या आप कभी झूठ नहीं बोलतें?

शायद हाँ भी, शायद न भी! परन्तु इतना तो जरूर कहूँगा कि बिना किसी खास कारण के भानू झूठ नहीं बोलता! मुझे यकीन है भैया! आप से एक वचन चाहती हूँ कि आप कभी बागी नहीं बनना। इस घर पर तुम्हारा हक है। अपना हक छोड़ना कहाँ का नियम है। आप मेरी बात का जवाब दें। क्या इंकार करोगें।

गुड़िया मैं तुम्हें झूठी तसल्ली देकर अपना कर्तव्य पूरा करना नहीं चाहता! हाँ इतना विश्वास देता हूँ जहाँ तक हो सकेगा बागी नहीं बनूगा। जीवन जीने के लिए चाहें मुझे कुछ भी करना पड़े। परन्तु हक नहीं मगूंगा मिलने पर भी नहीं लूंगा – इसकें लिये मैं अपनी जान भी कुर्बान कर सकता हूँ।

भैया गुड़िया का स्वर दर्द से सना था। आप क्या कह रहें हैं। अगर आप यहाँ से चलें जायेंगे – तो कहती हुई गुड़िया सुबकनें लगी।

गुड़िया – भानू ने उसे एक दम अपनें करीब कर लिया – भावावेश में उसनें गुड़िया को इस तरह भींच लिया जैसे कोई माँ अपनें शिशु को, मैं वचन देता हूँ गुड़िया – तुझे कभी नहीं छोडूगा – चाहें मैं जहाँ रहूँ परन्तु तेरी तस्वीर मेरे मानस पाटल पर सदा अंकित रहेगी। तुझे खुश करनें के लिये मैं अपनें प्राणों की भी आहुति दे दूँगा।

भइया – आप के बिना मैं शायद जिन्दा..... ।

एसो नहीं कहते पगली......भानू ने उसकें मुख पर उँगुली रख दी ।

भैया बुरा नहीं मानना! एक बात कहू – घर में बोर हो जाओगे इसलिये कल से स्कूल जाना समझें फीस मैं दे दूंगी ।

भानू के अधरों पर एक मुस्काहट तैर गयी........जिसे गुड़िया देख न सकी ।

अच्छा अब में चलती हूँ भैया! रात बहुत हो गयी.....कहती हुई गुड़िया बाहर निकल गयी ।

o o o

गुड़िया चली गयी । भानू के मस्तिष्क में यह प्रश्न बार–बार कौंधता रहा – आज होली है न । क्या गुड़िया ने उसका अपमान किया है, नहीं ऐसा नहीं हो सकता । मगर गुड़िया में इतना परिवर्तन, वह सोचता ही रह गया । इसी उधेड़ बुन में उसे नींद आ गयी । और जब आँखे खुली तो उषा मुस्करा रही थी ।

अपनें वादा के अनुसार गुड़िया ने पैसे दिये थे, और वह गुड़िया के मोह को तोड़ नहीं पाया । न जानें क्यों गुड़िया के प्रति उसकें हृदय में एक खींचाव सा होता चला गया । प्रेम की एक विशेष अनुभूति होने लगी! शायद यही स्वार्थ है, उसें एहसास हुआ – अगर गुड़िया उसकी मदद न करती तो न जाने उसे क्या करना पड़ता – उसके लिये वह किसी देवी से कम नहीं थी ।

गुड़िया के कारण भानू के जीवन में एक बहार सी आ गयी । वह हर प्रकार से अपने को संयत करता, परन्तु सफल न हो पता – हर बार उसे यही सोच खाये जाता कि किस प्रकार स्वभिमान से जी सकता है । घर में से अपना भाग न लेने का प्रण कर चुका था । फिर ऐसा कौन सा रास्ता था जो उेस सुखी रख सकता था । बहुत भी सोचने पर जब कुछ समझ में न आया तो सब भाग्य पर छोड़ दिया ।

समय अपनी गति में आगे बढ़ता रहा । भला उसे किसकी परवाह है । तारीक बदलती रही और आज पन्द्रह अगस्त आ गया ।

सम्पूर्ण देश में हर्ष की एक लहर सी दौड़ गयी हर संस्थानों में अपने–अपने ढंग से पन्द्रह अगस्त मनाया गया ।

भानू के विद्यालय में भी उत्सव मानया गया – संगीत की मधुर ध्वनि से वातावरण महक उठा और अंत में प्राचार्य ने अपने संदेश में कहा –

आज के दिन हम आजाद हुए थे। अंग्रेजो की गुलामी पन्द्रह अगस्त सन् उन्नीस सौ सैतालीस को समाप्त हो गयी हमारा देश स्वतंत्र हो गया। मेरे देश वासियों सिर्फ उत्सव मना लेने से हमारा दायित्व खत्म नहीं हो जाता। हमें यह याद रखना चाहिए कि हमारे पूर्वजों ने जो बलिदान दिया है, उसकी स्मृति सदा बनी रहे'' जाति धर्म लिंग की बाते छोड़ कर हम राष्ट्रीयता की भावना बनाये रखें – स्वदेश प्रेम की भावना का सूर्य हर किशोर में उदय हो, तथा हर बच्चा भारत माता की जय का सच्चा अर्थ समझें – आपसी द्वेष घृणा को त्यागना है। जाति मजहब प्रांत भाषा, के नाम पर हमें धोखा नहीं खाना है। ऐसे तत्वों से सावधान रहना है जो देश को खोखला करने पर तुले है। शिक्षा का सच्चा अर्थ हमें हर बालक तक पहुंचाना है'' दलित एवं कमजोर वर्गो का उधार करना है। यही हमारे आज के दिन का संकल्प है। देश हमारा है हम देश के –

दलितों का उथान हमारा प्रथम धर्म है।
हर प्राणी से प्रेम हमारा यही कर्म है।
हम भारत वासी है, यह पूजा समान है।
सदा आखंड रहे यह भारत, देश मेरा भगवान है।

भारत माता की   जय, जय, जय,..... ।

भारत माता की जय, गांधी जी की जय, सुभाष अमर रहें के नारों से आकाश मंडल काँप उठा।

कार्यक्रम सम्पन हुआ। मिष्ठान वितरण हुआ और इसके साथ ही सम्पूर्ण छात्र अपने अपने घरों को चल दियें। शाम हो रही थी। सूरज आकाश की गोद में समाने को व्याकुल था.........धीरे–धीरे संध्या उत्तर रही थी।

भानू मंद मंद घर की ओर बढ़ रहा था। अंधकार की उसे जरा भी चिन्ता नहीं थी। बस उसे अपने अंदर कुछ मंथन सा प्रतीत हो रहा था, तभी किसी के चीखनें की आवाज गूंजी। न चाह कर भानू का ध्यान उस ओर चल गया। और जब उसने वह दृश्य देखा तो उसका खून ही खोल गया। दो युवक जिन में से एक युवती के हृदय पर चाकू रखे था! अंधकार अधिक बढ़ा नही था, इस लिये भानू उन्हें साफ देख रहा था। परन्तु पहचान न सका – तभी वह युवती पुनः चीखी......... बचाओं–बचाओं खबरदार, अगर इस बार चीखी तो, चाकू पटे में कर दूंगा। उनमें से

एक बोला..... । उसकी धमकी सुनकर युवती काँपने लगी ।

तेरे पास जो है निकाल दें, वहीं जो पहले बोला था । मैं तो बहुत गरीब हूँ बाबू वह युवती बोली थी । शटअफ हम कुछ सुनना नहीं चाहतें ।

युवती इतना डर गयी कि शरीर पर पहने जेवर उतार कर उनके सामने रख दिया । भगवान के लिये हमें अब छोड़ दो ।

जानेमन, इतनी जल्दी क्या है, जरा दिल बहला लेते है । ऐसा मौका कहाँ आता है । तुम भी आज अपनी जवानी का लुप्त ले लों, युवक हंस पड़ा..........वाह क्या चीज है । कितनी पतली कमर, एक दम अपसरा हो मेरी रानी ।

मुझे छोड़ दो, युवती पूरी ताकत के साथ चीखी । तभी एक युवक ने आगे बढ़कर उसकें मुख पर हथेली रख दी । युवती कसमासई, परन्तु बेकार, दूसरा युवक उसके वस्त्रों को उतारने लगा ।

भानू को ऐसा लगा वह युवती कोई दूसरी नहीं वरन् उसकी अपनी गुड़िया है । ऐसा सोचते ही उसका चेहरा क्रोध से तमतमा उठा । कमीनों तुम ने एक निरीह नारी पर जुल्म किया है हम तुम्हें जिन्दा नहीं छोड़ेगें । ऐसा बड़बड़ा कर भानू ने एक पत्थर उठा लिया । फिर निशाना लेकर फैक दिया । निशाना अचूक था । उन दोनों में से एक सर पकड़ कर बैठ गया । दूसरा कुछ समझता, इससे पहलें भानू ने उसका भी सर फोड़ दिया । उनमें से एक उठना चाहा, परन्तु उस से पहले भानू वहाँ पहुंच गया, और एक हाथ जड़ दिया । वह कराहा और चित हो गया । पत्थर का प्रहार इतना सही हुआ कि दोनों बिहोश हो गयें । भानू ने मुड़कर देखा युवती खड़ी थी । भानू उसके मनोभवों को समझतें हुये बोला ।

आप कहाँ रहती हैं । मैं तुम्हारें साथ चलता हूँ देखता हूँ तुम्हारें साथ कौन बदतमीजी करता है गुड़िया ।

मैं गुड़िया नहीं हूँ.......युवती बड़ी मुश्किल से बोली..... । माफ करना बहन.... ..यह नाम मेरे जीवन के साथ जुड़ गया है । यही कारण शायद मेरे मुख से निकल गया! हाँ एक बात तो भूल ही गया । इन सालों ने आपके जेवर भी ले लिये थे । यह कहता हुआ भानू उनकी तलाशी लेने लगा । पहले से तो नहीं, परन्तु दूसरे के पास मिल गया । यह लो यह तुम्हारा है मैं तो सोचा कहीं आप का नुकसान न हो जाय ।

युवती ने कंपकपाते हाथों से वह सामान पकड़ा था ।

ये साले ऐसे पड़े है जैसे बाप ने गद्दा लगा रखा है कहों तो सालों को मार डालू।

यूवती ने चौंक कर उस युवक को देखना चाहा। जिसने कितने भोले पन से खून करने को कहा था। परन्तु अंधकार उसका साथ नहीं दिया। हाँ शब्द हृदय में चुमते चले गयें। अपने उद्बेग को युवती रोक न सकी, बरवस भानू से लिपट गयी!

अरे यह क्या करती हो, क्या तुम्हें डर लगता है। भानू ने कहकर एक पत्थर उठा लिया जिसका उद्देश्य उन दोनों का खून था।

इन्हें मार कर क्या फाँसी पर चढ़ने का विचार है युवती को हँसी आ गयी।

अगर इन के खून के बाद मेरी फाँसी हो जायेगी तो भी परवाह नहीं हाँ इस बात का दुःख होगा – आप मेरे खिलाफ गवाही देगी।

आप क्या कह रहें है भैया! मैं तो तुमें समझा रही थी। छौड़ दो इन बातों को, चलों हम तुम्हें अपनें घर ले चलते हैं। हाँ तुमनें अपना नाम तक नहीं बताया।

ये साले फिर किसी दूसरे को तंग करेंगे। मेरा तो विचार है इन्हें सदा–सदा के लिए खत्म कर दूं। परन्तु यदि आप ऐसा नहीं चाहती हैं तो इन्हें छोड़ देता हूँ। आप मेरा नाम जानना चाहती हैं। परन्तु मैं अपना नाम किसी को बातता नहीं। चलों मैं तुम्हारे घर से होता हुआ चला जाऊँगा।

आप नाम क्यों बताना नहीं चाहते......।

दरअसल मेरा कोई नाम नहीं।

ऐसा कैसे हो सकता है।

भानू ने हंस कर कहा आप ने दर्शन शास्त्र पड़ा है। नहीं........। युवती बोली।

तो फिर कैसे समझ पाओगी – दर असल नाम तो एक कल्पना है किसी भी नाम को बदला जा सकता है फिर नाम क्या है, मैं नहीं जानता। अब आप ही बताये – नाम क्या है।

आप बड़ी अजीब बाते करते हैं। मेरे साथ चलने से आप को रात में घर जाना पड़ेगा। आज मेरे ही घर रूक जाओं – क्या तुम्हें मुझपर विश्वास नहीं।

एक गुड़िया के सिवा कोई मेरा इंतजार नहीं करेगा। माँ तो मर गयी, पिता

जी तो देखा तक नहीं, परन्तु इन बातों से आपको क्या लेना। रही बात विश्वास की तो आज के युग में मुझे भगवान पर भी विश्वास नहीं अच्छा चलों ये साले आज रात यहीं पर पंद्रह अगस्त मनाऐगें भानू हंस पड़ा–युवती चल पड़ी। भानू उसके पीछे था। चलते हुए युवती ने पूछा–आप बहुत निर्भीक है क्या तुम्हें डर नहीं लगता, आप मुझे बचाने के लिए खुद को मुसीबत में डाल लिया। यदि वे तुम्हें मार देते तो...।

मुझे मारने का क्या उन्होंने टेका ले रखा हैं। हाँ यदि मर भी जाता तो क्या होता कोई नयी बात तो नहीं, पैदा होने वाला एक दिन मरता जरूर है, यह अटल सत्य है।

आप बहुत बहादुर है। युवती पुनः बोली – परन्तु भानू ने कोई जबाब नहीं दिया। बस युवती के पीछे चलता रहा।

अचानक पीछे मुड़ कर युवती ने देखा! विद्युत के हल्कें प्रकाश में उसे देखकर युवती चौक पड़ी। अरे आप रुक क्यों गयी – भानू युवती के एक दम करीब पहुँच गया!

आप कहाँ से आ रहें है, युवती ने प्रश्न किया, पंद्रह अगस्त मना कर आ रहा हूँ। आप की आवाज सुन कर हम चौक गये! और जब देखा तो अपने को रोक न सका – फिर पूरी कहानी आप देख ही चुकी है। आप किस दर्जे में पड़ते हैं?

हाई स्कूल – भानू ने संक्षिप्त में जवाब दिया।

अब आप को नाम भी बता देना चाहिए। अच्छे बच्चे झूठ नहीं बोलतें।

भानू – यही मेरा नाम है। आप चलती रहें मुझे अभी घर जाना है।

किसी भी कीमत पर नहीं – आज आप मेरे घर पर रहेगें मुझें आप ने कहें – मैं बहुत छोटा हूँ, आप से, आप–मुझसे उम्र में जरूर छोटे हैं, परन्तु किसी चीज में बहुत बड़े है। हम उसकी कद्र करते हैं।

यदि दूबारा आपने मुझें आप क्या तो ''मैं आप के साथ नहीं जाँऊगा! जो दिखायी न पड़ें हम उसें नहीं मानतें चाहें वह भगवान ही क्यों न हों।

अच्छा बाबा – तुम ही कहूँगी – अब तो खुश हो न, इसी प्रकार कि बाते करतें–करतें युवती का घर आ गया। यही मेरा घर है आओं न!

युवती ने जैसे आवाज लगायी – दौड़ते हुआ नौकर ने दरवाजा खोला – भानू मूक बना सब कुछ देख रहा था। बहुत देर कर दी बिटिया – मलकिन परेशान

हैं।

छोटी – छोटी बात पर वे परेशान हो जाती है काका कहती हुई युवती अंदर घुस गयी! खुशी के कारण उसे यह भी ध्यान नहीं रहा कि, अभी किसी ने उसकी जान बचायी थी।

वक्त का तकाजा देखतें हुए भानू वहाँ से हट गया – तेज गति से घर की तरफ बढ़ने लगा..... थोड़ी देर तो वह इस घटना के बारे में सोचता रहा फिर एक दम से निकाल दिया मन से!

युवती को जब भानू का ध्यान आया तो बहार निकली – कतार आँखों से चारों तरफ देखती रही फिर निराश होकर घर में चली गयी! अपने ऊपर उसें क्रोध भी आया परन्तु अब कोई फाइदा नहीं था हार मान कर जब वह लेटी तो आँखों से पानी बहने लगा – ये आसू उसकी बेबसी के नहीं वरन् भानू के प्रति आदर सूचक थे।

० ० ०

दीदी मैंने हजार बार कह दिया कि कहीं भी जाओं परन्तु शाम होनें से पहले वापस। अगर किसी करण बस रुकना जरूरी हो जाये तो माँ को सूचना दे दिया करों। कल तुम्हारें देर होने के कारण माता जी ने आसमान उठा लिया। माता जी का बुरा हाल था कि मैं कह नहीं सकता। इसलिये माता जी का ख्याल जरूर रखा करों। सबसे जरूरी बात तो मैं भूल ही गया था। आप कल आने के बाद कुछ खोज रही थी।

ऐसी कोई बात नहीं! भैया, वह बड़े मश्किल से बोली बात तो कुछ जरूर है, परन्तु आप छिपा रही हैं दीदी। या मेरा दिमाग ही खराब था! कल रात आने के बाद शायद आप इस तरह सहमी एवं चौकन्ना थी कि शायद आप को ही पता न हो, परन्तु बात कुछ जरूर थी दीदी तुम्हे मेरी कसम सच सच बता दो दीदी आखिर बात क्या थी। मैं वचन देता हूँ जब तक आप नहीं चाहेगी – मैं माँ को नहीं बताऊगा। यदि आप बतानें से इस लिये डर रही हैं, सुजान का स्नेह युक्त स्वर था।

भाई के सामने झूठ बोलना उसके लिये मुश्किल था वह दिल में सोचने लगी – आखिर क्या उसे कह देना बेहतर है। परन्तु कहें तो कैसे, उसे उस लड़कें का पता भी मालुम नहीं।

क्या सोचनें लगी दीदी – सुजान बोल पड़ा।

क्या कहू भैया! कल बहुत बड़ी मुसीबत आ गयी थी भगवान की कृपा से आप के सामने आ गयी नहीं तो अलका का स्वर गलें में फंस गया।

क्या हुआ दीदी – सुजान अधीर होता हुआ बोला किसी ने तुम्हे कुछ कहा है तो.....।

भाग्य का खेल था भैया! हम अपनी सहेली के घर से चली तो अंधेरा हो गया था! सच मुच अधेरे में मनुष्य का साथ साया भी छोड़ देता है। दो शैतान पहले मेरे जेवर ले लिये बाद में मुँह काला करना चाहा मैं इतना बेबस थी कि कह नहीं सकती भैया – एक पल के लिये तो मुझें अपनी मृत्यु दिखायी पड़ने लगी – परन्तु शायद भगवान को मेरी दयनीयता पर तरस आ गया! पहलें तो मैं समझ न सकी – बस इतना देखा एक पथ्थर उन में से एक को लगा और तभी दूसरें को – फिर वह आया था – मेरा जेवर भी उन बद्मासों से ले लिया – उसका उद्देश्य उनकों खत्म करना था – परन्तु मेरे कहनें पर छोड़ दिया! वह मेरे साथ यहाँ तक आया – परन्तु कब गायब हो गया हम समझ न सकी – थोड़ी देर उसी की खोज करती रही जिसे आप ने देखा है.......।

क्या उसका पता आप के पास है दीदी......।

चन्द्र छंणों की मुलाकात में उसका पता तो पूछ न सकी! पर उसका नाम भानू और वह हाई स्कूल का छात्र है.....।

भानू–सुजान ने दोहराया था! क्या वही भानू – उसकें सामने भानू की आकृति घूम गयी....। उसने क्या पहन रखा था दीदी....।

अधेरे में मैं उसें देख तो न सकी – पर यदि वह सामने आ जाय तो जरूर पहचान लूगीं। आप को इतना विश्वास है तो हम उसे जरूर खोजेगें देखेगें वह कौन माँ है जिसने ऐसे बेटे को पैदा किया है। यह आप का मुझ पर एहसान होगा भैया न जानें क्यों उसे देखने के लिए मन व्याकुल है.....। मैं भी उसका दर्शन करना चाहता हूँ!

○ ○ ○

इन्ट्रोल का समय था! सारें छात्र इधर उधर घूम रहें थे! परन्तु सुजान भानू की तलाश कर रहा था। और तभी प्रधान आतें हुये दिखायी पड़ा!

प्रधान – सुजान ने पुकारा था।

अरे सुजान तू किसे खोज रहा है।

भानू को – कक्षा दस ''अ'' का छात्र है न। शायद आप उसे पहचानते न हो....।

मैं तो नहीं पहचनता – परन्तु भानू से आप का क्या काम है।

सुजान ने सारी कहानी प्रधान को सुना दी, जो उसे अलका ने बताई थी।

इसका मतलब आप की दीदी की इज्जत भानू ने बचाई.....। हमें बहुत हर्ष होगा सुजान – भानू से मिल कर.....। चलों हम उसका पता लगाते हैं। ऐसा कहता हुआ प्रधान सुजान का हाथ पकड़ कर विश्राम कक्ष में प्रवेश किया।

गुरूजी, कक्षा दस ''अ'' का कौन कक्षा अध्यापक है।

प्रधान ने पूछा....।

मैं हूँ – एक अध्यापक बोला!

सर – भानू आज विद्यालय आया है?

आया है – आप को उससे क्या काम है!

धन्यवाद, मुझें उससे मिलना जरूरी है गुरूजी....। बस एक नीजी काम है। कहता हुआ प्रधान बाहर निकल गया कक्षा शुरू हो गयी – और सुजान की भानू से मुलाकात भी हो गयी!

भानू मुझे तुम से कुछ जरूरी काम है। थोड़ा कष्ट करोगें – आओं इन्हें पहचाना – यह है जनाब प्रधान सिंह – सुजान ने मुस्कातें हुऐ कहा.... फिर वे एक शांत जगह पर बैठ गये।

आप का मुझसे क्या काम है – भानू नू पूछा।

मैं तुम्हें अपना मित्र बनना चाहता हूँ – क्या मेरा प्रस्ताव मनोंगें मुझे विश्वास है आप निराश नहीं करेगें....।

कुछ भी हो, हम आप के मित्रता के योग्य नहीं – मैं एक जाहिल एवं नीच इंसान हूँ भूतल पर इतना पानी होनें के बावजूद प्यासा हूँ! आप आसमान के तारे है और हम मिट्‌टी के कण। मैं तो सोच रहा हूँ कि कहीं आप लोंग मेरा उपहास करनें तो नहीं आये हैं।

भानू – मैने अपनी दिल की बात तुम्हारे सामने रख दी! शायद तुम्हें मजाक लगें – लेकिन मैं हृदय से तुम्हारी कद्र करता हूँ। बस इसलियें की कल तुमने एक निरीह नारी की इज्जत बचायी थी। और बिना स्वार्थ के वहां से हट गयें!

भानू के ओंठो पर फीकी मुस्काहट तैर गयी। इसका मतलब कल की घटना से आप लोग वाकिफ है....। परन्तु कैसे यह जानने के लिये मेरा दिल बेचैन है....।

तुम्हारी दिल की मुराद पूरी कर दूंगा भानू, लेकिन पहलें मेरी दोस्ती काबूल कर लों। कुछ ऐसे जैसे चाणक्य ने चन्द्रगुप्त की! इसकें बाद जो तुम कहोगें – हम उसे करने का प्रयास करेगे यह मेरा वादा है सुजान ने कहा!

भानू – प्रधान मंद स्मित के साथ बोला – तुम चाहे मेरी दोस्ती मानों, चाहे न मानों, परन्तु मैं आज से तुम्हें अपना मित्र मानता हूँ! मैं आज से तुम्हें अनुज समझता हूँ।

तुम्हारें मार्ग पर एक बार मैं पहुंचा था – लेकिन अब जैसे हार मान चुका हूँ वह तड़फ अब शान्त हो चुकी भानू, और अब हम कभी–कभी सिर्फ आँसू बहा देता हूँ। लेकिन तुम ने यह सिद्ध कर दिया कि मानवता मरी नहीं है। सुजान का दिल रखनें के लिए अब तुम्हें हाँ कह देना चाहिए।

आप लोग मुझें इस योग्य समझते हैं तो हम इंकार कैसे कर सकतें हैं। सुजान सिंह मुझे तुम्हारी बात मंजूर है। लेकिन एक अनुरोध है। आप मुझें बतायें यह बात आप तक पहुंची कैसें....।

यदि अभी बताना न चाहू तो – सुजान बोला।

कोई बात नहीं – फिर कभी.....परन्तु वादा करना होगा!

हम वादा करते हैं भानू! इसकें साथ ही एक निवेदन भी, आज आप मेरे घर चलें! डरना नहीं भानू – रात भर की बात नहीं – सिर्फ कुछ घन्टों के लिये।

जरूर चलूगा सुजान – भानू ने मुस्काते हुए कहा अच्छा अब चला जाय! कहता हुआ भानू खड़ा हो गया। बैठों भानू। मेरा परिचय नहीं चाहतें!

आप का परिचय बहुत पहलें हो गया प्रधान सिंह यह दुःख की बात है कि मुलाकात नहीं हुई! आपका परिचय सिर्फ इतना है कि एक राजकुमार होकर खद्दर से प्रेम करतें हों! विलासता पर तुम बिजयी हो प्रधान! मानव का इससे बड़ा

परिचय और क्या हो सकता है। आप इस दुनिया मैं किसी को जीवन दे सकतें हैं, ले नहीं सकतें – मरें ख्याल से यह गलत परियत तो नहीं है।

मानव स्वभाव पढ़नें में आप विज्ञ है – प्रधान ने कहा। नहीं ऐसी बात नहीं है। मैं बहुत क्षुद्र हूँ – गिरा हुआ इंसान तुम जो हो मैं अच्छी तरह जानता हूँ भानू! अब हमारी मुलाकात यहीं पर समाप्त होती है! चलों सुजान – जनाब भानू आज आप मेरे साथ चलेगें – छट्टी होने के बाद बाहर रूकना – यदि हमें देरी लग जाय।

भानू का कक्षा में मन नहीं लग रहा था। बार–बार उसकें मस्तिष्क में सुजान के शब्द गूंज रहें थें!

o o o

कक्षा समाप्त हो गयी! सुजान एवं प्रधान उसका इंतहार कर रहे थे, भानू बाहर निकला तो सुजान एवं प्रधान को बेचैन देखा! भानू तुम ने देरी कर दी – सुजान बोला – दर असल मास्टर साहब ने रोक रखा था – कुछ काम था! कोई बात नहीं हम बड़ी देर से तुम्हारी प्रतिक्षा कर रहे थे। प्रधान ने कहा''।

चलों – इंतजार की घड़ीयाँ समाप्त हुई। सुजान सिंह ने कहा और चल पड़ा – भानू मजबूरन उनकें साथ था।

भानू के दिल में आया कि वह भाग जाये! बेकार में वह अपने को क्यों परेशान कर रहा है। परन्तु चाह कर भी वह ऐसा कर नहीं सका! बातों–बातों में सुजान का घर आ गया! भानू यही मेरा घर है।

भानू को ऐसा जान पड़ा मानों असंख्य बिच्छू ने उसें ढंक मार दिया हो। चेहरा पसीनें से नहा उठा – क्या हुआ भानू! एका एक बदलें भानू को देखकर सुजान बोला।

कुछ भी तो नहीं! बिल्कुल ठीक हूँ – भानू दिल की बात छिपाते हुए बोला। बस ऐसे ही......।

दुःख हुआ भानू – प्रधान बड़ें धीमें स्वर में बोला। अफसोस तो यह है कि आप मुझसें मित्रता के प्रथम दिन ही झूठ बोल रहें हैं। जरूर तुम किसी कटु सत्य को छिपा रहें हो।

आप ठीक कहते हैं भइया! हम झूठ बोल रहें हैं। परन्तु कभी–कभी दिल

की बात जुबान पर नहीं लातें! ऐसा जानते हुए भी कि हमारे प्रिय जन इससे दुःखी होगें.....। एक सच को छुपानें से लिये झूठ बोलतें हैं। लेकिन ऐसा हम इस लिये करतें है कि दूसरों की नजरों में गिर कर भी हम सुखी रहें। हमें पाश्चाताप नहीं होगा – कि हमनें कभी झूठ बोला है सुजान – सच्चाई कितनी ही कटु क्यों न हो – कह देना चाहिए! भले ही, उसें सुन कर किसी का दिल ही क्यों न टूट जाये। सुजान ने कहा।

नही सुजान, वह सच्चाई किस काम की जो किसी का दिल तोड़ दें! ठीक है न भानू। प्रधान बोला ऐसा सत्य छिपाना ही बुद्धिमानी है। सुजान चलों घर में, बैठ कर तर्क करना। सुजान को अपनी गलती एहसास हुई –

बैठों भानू – प्रधान भैया हम अभी आते हैं। कहता हुआ सुजान अंदर चला गया!

दीदी, सुजान बहुत मंद स्वर में बोला – प्रधान के साथ बैठा लड़का भानू है आपके कहनें के अनुसार हाई स्कूल का छात्र है!

अलका के दिल में एक विशेष प्रकार की झंकार हुई। मानों दिल के वे तार जो टूट गये थे एका एक जुड़ गये। मुख पर खुशी की एक आभा चमक गयी! आप चले मैं अभी आती हूँ भैया, अलका बोली! फिर सुजान प्रधान के साथ आकर बैठ गया।

तभी अलका ने प्रवेश किया! उसकें हाथों में कुछ खाने का सामान था।

यह हमारी बहन अलका है भानू! सुजान ने कहा ''नमस्तें दीदी – भानू ने हाथ जोड़ लिये।

नमस्तें अभिवादन का उत्तर देते हुऐ – अलका भानू के चेहरे को पढ़ने की कोशिश करनें लगी। क्या यह वही लड़का है! उसनें अपने मस्तिष्क पर बहुत जोर दिया, परन्तु किसी हद तक पहुंच न सकी।

दूसरी तरफ भानू की स्थिति भी गम्भीर थी! उसने पहचान लिया था कि वह वही लड़की है जिसकों उसने बचाया था। परन्तु क्या उसे कबूल करना चाहिए।

स्वार्थी मन में छिपी एक शक्ति ने सरगोशी की – यह क्या करने जा रहा है भानू! यह तेरी उदारता नहीं वरन् पिशचता है! वे क्रूर एंव हृदय शन्यू होते हैं जो किसी का धन एवं आबरू चुरातें हैं, परन्तु वे जो नेकी कर के उसका गुणगान करतें

है, जिनकी उदारता मात्र दिखलावा है। अपना नाम कामना है। ऐसे इंसानों की श्रेणी दानव से नीचे है! अपनी उदारता प्रकट करके क्या दानव बनेगा! नहीं उसने मन ही मन संकल्प लिया। चाहें कुछ भी हो वह अलका को अपना परिचय नहीं देगा – परन्तु सुजान एवं प्रधान, का ध्यान आते ही भानू का चेहरा विकृत हो गया – क्या उनकों जबाब देगा – जो तेरी सच्चाई जान चुकें हैं। फिर भी कोई प्रभाव नहीं पड़ता भानू दिल से आवाज आयी। इस सच्चाई से कम से कम अलका तो वाकिफ नहीं होगी! रही बात सुजान की वह अलका से कुछ नहीं कहेगा – ऐसा मैं उससे वचन ले लूगा! क्या अलका ने सुजान से यह बात बतायी है। हो सकता बताया हो – तभी तो सुजान को इस घटना का पता है फिर तुझे क्या करना चाहिए। मैं किसी भी कीमत पर अपना उपकार अलका पर जाहिर नही कँरूगा। आप ने नाश्ता नहीं किया भैया – अलका बोली।

भानू एकाएक चौक पड़ा। मुझें चाय.....दर असल डाक्टर ने रोका है बड़ी मुश्किल से कह पाया था।

फिर आप क्या पसन्द करेंगे – काफी शरबत आदि.....।

छोड़ों दीदी – हमें एक गिलास जल पिला दो।

जल से थोड़े नाश्ता होता है, वह तो कहीं भी मिल सकता है।

आप गलत कह रही है दीदी – सुजान क्या दीदी के कथन से सहमत हो? –

मैं तुम्हारें बीच में अपनी राय देना नहीं चाहता – बेहतर यही है भानू कि तुम खुद अपना नजररिया सुना दों।

दुनिया में किसी चीज की कमी नहीं, पानी वह तो अथाह है! परन्तु कुछ ऐसे बदनसीब होते है जिनकी प्यास कभी नहीं बुझती – वास्तव में प्यास जल से थोड़े मिटती है।

यह तो एक दम अस्म्भव है भैया! अलका बोली। अस्म्भव नहीं सिर्फ समझने का फेर है। मैं आप सबको समझता हूँ, प्रधान भैया को भी कुछ अजीब लगा! पर उतना आश्चर्य नहीं – जितना आप सब समझ रहें हैं!

उदाहरण की तौर पर एक व्यक्ति गर्मी में पांच छः लीटर पानी पी जाता है। परन्तु वहीं व्यक्ति ठन्डी में दो लीटर में ही प्यास बुझा लेता है! आप लोगों के

मुताबिक यह परिवर्तन ताप है। मेरा मतलब ताप नहीं तृष्णा है। मानव जितना ही तृष्णा एवं स्पृहा रहित होगा उतनी ही प्यास कम होगी। रोटी तो हम रोज खाते हैं, पर कभी कभी उसमें विशेष स्वाद क्यों आता हैं, यह रोटी की विशेषता नही वरन् प्रेम की अनुभूति है।

अलका ने भानू से तर्क नहीं करना चाहा – चुपचाप एक गिलास पानी दे दिया। जिसे एक साँस में भानू ने खाली कर दिया! प्यास बुझ गयी भैया – अलका बोली। मैने कहा न दीदी जिन्दगी में प्यास बुझती कहाँ बस कम हो जाती है।

क्या ऐसा कोई मार्ग नहीं, जो प्यास को सदा–सादा के लिये खत्म कर दें, अलका ने कहा।

शायद होगा – परन्तु हम वहाँ तक पहुंचे नहीं! इसलिये उसें हम किन शब्दों में आपकें सामने रखें! माफ करना बहन, अब मुझें देरी हो रही है!

आप ने अपना नाम तक नहीं बताया – कहाँ रहते हों। भानू – यही मेरा नाम है! और यह नीला बितान हमारे निकेतन की छत है। बड़ी भी है मजबूत भी!

पंद्रह अगस्त को आप ने स्कूल के नाटक में भाग लिया था!

जी नाटक में भाग – मैं तो दस तारीक को गाँव चला गया था! हो सकता है मेरी शक्ल का कोई दूसरा हो! यह बात जानने के लिये स्कूल से सम्बन्ध बनायें – तभी पता चल सकता है।

आप हाई स्कूल में पढ़ते हैं – अलका ने पूछा!

मैं तो नौं में पढ़ता हूँ – हाई स्कूल भी हो सकता है।

गाँव से आप कब आयें?

दो दिन हुयें – यानि बीस तारीक हो...... ।

तुम्हारे बहन का नाम गुड़िया है।

गुड़िया, आप क्या कहती है, मेरे तो कोई बहन है ही नहीं। इसका मतलब आप वह नहीं है। अलका कहती हुई उठ गयी! प्रधान भानू के चेहरें को देख रहा था कभी–कभी अलका को भी। उसें इस बात की हैरानी हो रही थी कि आखिर भानू झूठ क्यों बोल रहा है! सच क्यों नहीं कह देता एक सच छुपानें के लिए सौं झूठ! क्या यह न्यायसंगत है! मगर भानू अजीब है!

आपका क्या बिचार है दीदी ! क्या यह वही भानू है जिसने तुम्हारी जान

बचायी थी! सुजान ने कहा!

नहीं बड़ी मुश्किल से अलका बोली – फिर फूट–फूट कर रोने लगी।

आप रोने लगी दीदी सुजान ने अलका को झिझोड़ा कम से कम उनका तो ख्याल करों – जो मेहमान घर में बैठे हैं! उनके जाने के बाद दिल की आग निकाल देना, अलका को अपनी गलती का एहसास हुआ सारी भैया।

अब सारी कहनें से क्या होगी दीदी मुझे तुमसे यह उम्मीद नहीं थी! तुम उसें एक सपना समझ कर क्यों नहीं भूल जाती दीदी देवता कभी स्वार्थी नही होतें – अगर उसें कुछ इनाम की जरूरत होती तो गायब ही क्यों होता – वास्तव में वह बड़ा अजीब है! परन्तु हम विश्वास देते है दीदी, एक दिन उससे जरूर मिलाऊगा दर असल मेरे भी दिल में एक हलचल है! वह कैसा इंसान बनेगा, जिसका बचपन ही एक रहस्य मय कहानी बन गया है।

आज के बाद हम उसकी याद नहीं कँरुगी भैया – मुझे सिर्फ उसकी सूरत देखनी थी भैया! मेरे मन में उसके प्रति आदर की भावना है। उसकों नमन करनें को जी चाहता है।

मैं समझता हूँ दीदी–चलों उन्हें बिदा कर दें! हमारा इंतजार कर रहें होगें।

अच्छा मैं अब चलता हूँ सूजान – भानू ने खड़े होते हुए कहा!

मुझसे कोई गलती हो गयी हो तो क्षमा करना भानू सुजान ने विनम्रता से कहा।

आप मेरा अपमान कर रहें है भैया – भानू का रुखा स्वर था – मुझसे क्षमा माग कर नर्क का रास्ता बना रहें हों।

ऐसी बात नहीं भानू – उम्र से कोई बड़ा नहीं होता, होता है चरित्र से और हम उसी चींज को नमन करते हैं।

वक्त को देखकर भानू चुप रहा.......तभी प्रधान बोला मैं भी चलता हूँ!

आज रूकोगें नहीं प्रधान.....सुजान बोला।

नहीं'' अभी अंधरो नहीं हुआ है – हम भानू पैदल ही चले जायेगें.......अच्छा – नमस्कार....।

सुजान एवं अलका ने प्रति उत्तर में दोनों हाथ जोड़ लिये।

○ ○ ○

प्रतीची का पथिक थक चुका, उसका मुख पीला होता जा रहा था। धीरे–धीरे उसका आकार वितान की गोद में समा गया। गहरी लालिमा निशा के स्वागत को तैयार थी! प्राची की श्यामलता धीरे–धीरे प्रतीची की ओर बढ़ रही थी, थोड़ी देर के बाद प्रतीची की लाली समाप्त हो गयी – स्याह की परत गहरी होती चली गयी! भानू मौन साधे निरन्तर आगें बड़ रहा था!

भानू! अचानक प्रधान ने पुकारा, अलका के सामने झूठ क्यों बोलें – दुनिया को तुम धोखा दे सकते हो, परन्तु मुझें नहीं! क्योंकि जो खेल तुम खेल रहें हो, उससे में अच्छी तरह वाकिफ हूँ, मुझे तुम्हारी इस महानता पर गर्व है – अच्दा यह बताओं तुम्हारा रहस्य क्या है।

रहस्य....। भानू के ओंठो पर एक फीकी सी मुस्कान तैर गयी! रहस्य की बात तो पता नहीं परन्तु इतना सही है कि लाख कोशिश के बावजूद अलका के सामने सच बोल नहीं सका! शायद मैं इस लिये डर गया कि कहीं सच्चाई जान कर अलका मुझसे हमदर्दी न शुरू कर दें। मेरे जीवन का एक यह भी उद्‌देश्य है कि मैं किसी की हमदर्दी पाना नही चाहता, क्योंकि मेरे जीवन का क्षेत्र सीमित नहीं है। मैं चाहता हूँ अपना जीवन किसी एक को न देकर उन करोड़ों बदनसीब के नाम लिख दूं जो पानी के बिना प्यासे हैं। और ऐसा तभी हो सकता है कि जब में कामना से रहित हो जाऊँगा। मैं जानता हूँ हमारे इस मार्ग में अनेको रूकावटें आयेगी, परन्तु हम उनसे तब तक लड़तें रहेगे जब तक खुद नहीं मिट जाते! इसका कोई बहुत बड़ा कारण नहीं है। मात्र इतना ही है, जिसके कारण हम अलका के सामने झूठ बोलनें को मजबूर हो गये, चाहें यह मेरी नीचता ही क्यों न हो, परन्तु हम ऐसा कर चुके हैं।

आप से एंव सुजान भैया से यही प्रार्थना कँरुगा कि सच्चाई अलका के सामने न आये! वास्तव में यह एक साधारण सी बात है, परन्तु अलका बहुत गहरायी से सोच रही है, जो मानवीय भावना का दोष, विशेष कर नारी में अधिक होता है।

मैने जो किया वह मेरा कर्म था! अलका पर मैनें कोई एहसान नहीं किया है, लेकिन वह यह समझ कहाँ रही है।

भानू आज तुमनें मेरा बचपना याद दिला दिया, मैंने भी कभी यही सोचा था। आज तुम्हारा संसर्ग पाकर मुझें जो हर्ष हो रहा है उसे शब्दों में कह नहीं सकता। बस यही समझ लो कि मृत्यु के बाद पुनः जीवन मिल गया हो। तुम से झूठ

नहीं बोलूगा भानू – मैंने गरीबी देखी है। जिसकी परिभाषा चलती फिरती लाश है। उस दिन मुझें अमित दुःख हुआ! भगवान शिव की मूर्ति तोड़ दी। मैं बावला होता जा रहा था कि माता जी ने मुझे यहाँ भेज दिया। कुछ दिन के बाद मैं सब कुछ भूल गया। बस एक सपना सा बन कर रह गया, परन्तु आज जैसे तुमनें वह सब याद दिला दिया है। एक दिन मैंने भी सोचा था, अपना जीवन तुम्हारे समान उनकें नाम लिख दूंगा – जो गरीब हैं। परन्तु कर न सका! वह नशा जैसे उतर गया! पर आज हम अपने वचन को दोहरायेगें! तुम्हें विश्वास देता हूँ भानू – तुम्हारें साथ मैं भी रहूँगा।

अगर आप ऐसा करेगें तो मुझे दुःख होगा प्रधान हम आप से यही निवेदन करुँगा कि ऐसा कभी नहीं करना, तुम्हारी माँ की कुछ उम्मीदें होगी – तुम्हारें पिता ने न जानें कितने स्वपन देखें होगें क्या आप उनके सपनों के महल को चकना चूर कर दोगे। एक बात मेरी ध्यान से सुन लो प्रधान – वह व्यक्ति जो जिन्दगी में अपनें माँ–बाप को खुश नहीं कर सका – वह कुछ नहीं कर सकता। और वह धर्म ही क्यों माना जाय – जिसमें आत्मा ही मर जाय! आप ऐसा सोचना भी नहीं मैं मानता हूँ आपके ह्रदय में गरीबों के प्रति प्रेम है दया है, यह आपकी उदारता है। वरना आज के युग में कौन किसकी परवाह करता है। जिनके पास कुछ धन हो गया वे तो गरीबों को भेड़ बकरी समझते हैं। परन्तु आप उन से बिलग है यह आप की विशेषता है मैं आप से यही उम्मीद करता हूँ कि शक्ति संचय कर आप उसका सद्प्रयोग करें। इससे हजारों आदमीयों का भला होगा! आप ही सोचें क्या इस प्रकार एक महान कार्य नहीं कर सकतें। हमारे विचार से कर सकतें हैं।

मैं आपके तर्क का जवाब नहीं दे सकता – क्योंकि तुमने जो कहा है वह एक दम ठीक हैं। परन्तु फिर भी इसमें एक कमजोरी है। ममता बढ़ा लेने के बाद मानव अपनें आप से ही डरनें लगता है। उसें पत्नी, फिर बच्चों की चिंता हो जाती हैं। मैं मानता हूँ ऐसा मनुष्य डरपोक हो जाता है! क्योंकि वह नेकी पर बलिदान नहीं हो सकता। उसकें मरने के बाद बीबी, बच्चों का क्या होगा, यह चिंता उसें कमजोर बना देती है। मैं नहीं चाहता भानू यह कमजोरी भी मेरे साथ हों, इसलिये शादी न करने का फैसला कर चुका हूँ अगर शादी कर ली तो एक मधुर सपना टूट जायेगा जिसका उन्माद वर्षों से चढ़ा है।

अगर तुम्हारें ही समान सब सोच ले तो संसार ही खत्म हो जायेगा, यह

धारणा एक दम नैराश्य एवं हास्य पूर्ण है। जरूरी नहीं की बिना शादी न किये ही हम मानव सेवा कर सकतें हैं। क्या भगवान कहें जाने वाले राम कुवारें थे। लोकेश्वर कृष्ण ने सोलह हजार से ज्यादा शादियाँ की थी! क्या वे दुनिया में मानव सेवा नहीं कर पायें। नहीं प्रधान नारी प्रेरणा भी होती है, जो गंवार जाहिल तुलसी को तुलसीदास बना देती है। महामूर्ख को महाकवि कालीदास बना सकती है। सारंधा के नाम से तुम परिचित ही होगे जिसने पति के ह्रदय में खंजर घोप कर स्वभिमान को चरमोत्कर्ष तक पहुंचा दिया, विश्व के इतिहास में अनेको वीरांगना एवं विदुषी नारीयाँ है जिनके चरित्र के स्मरण मात्र से सिर झुक जाता है।

मेरी बातों पर ध्यान दो प्रधान और अपना विचार बदल दों!

नारी अगर प्रेरणा है तो जंजीर भी। वह दूसरा युग था भानू जब वह तलवार से खेला करती थी। पति को परमेश्वर समझ कर साथ जल जाती थी। परन्तु आज क्या बता सकते हो, हिन्दुस्तान में कितनी सती सुलोचना है। लक्ष्मीबाई, दुर्गावती एवं चांदबीबी को भूल जाओं भानू – कल नहीं सिर्फ आज देखों – कल की स्त्री घूंघट करती थी, और जब खोलती थी, तब प्रलय परन्तु आज न तो घूंघट है न ही तलवार! यह बात ठीक है कि आज उसके जगह कुछ नये आयाम आ गये हैं आज की नारी शराब पीती है अपनी कमर को घुमाती है जिसे लोग डांस कहते है तालियाँ बजाते हैं।

हां आज यही आज नारी की तलवार है जिससे कामी पुरुष कट रहें हैं। अपने बात की पुष्टि के लिये तुम इतिहास के पन्नें पल्टोगें भानू – परन्तु जो मैं कहता हूँ उसे खुद अपनी आंखों से देख सकते हो। मैं मानता हूँ स्त्री सौन्दर्य प्रिय है। परन्तु अधिकांश शरीर को खोल कर सार्वजनिक स्थानो में घूमना क्या नारी की बुद्धिमानी है, मैं नही समझ पा रहा हूँ भानू इससे उसको क्या लाभ है।

इतना सब होते हुए भी हम नारी को दोषी नहीं कह सकतें प्रधान! वास्तव में निरानिर इसमें नारी को दोष है भी नहीं! तुम्हारी तर्क का कायल हूँ प्रधान....। परन्तु इस कृत्य में पुरुष वर्ग भी अछूता नहीं! ऐसी कोई नारी नहीं होगी जिसका किसी पुरुष से सम्बन्ध न हो, चाहे पिता, भाई, पुत्र, पति, अथवा किसी रूप में हो सकता है। ज्यादा न कह कर मैं इतना कहूँगा कि स्त्री को अर्ध नग्न देखने में इन्हें भी मजा आ रहा है। अगर ऐसा न होता तो यह समस्या ही न खड़ी होती, न ही समाज में इतना भ्रष्टाचार फैलता। इतना सब होते हुऐ भी वह जननी है। उसका

अपमान हमें नहीं करना चाहिए! दुनिया को देखने के लिये सिर्फ दो आँखे काफी नहीं होती प्रधान – दो और जो हृदय में है उन्हें भी खोलों, जो हो रहा है देखते जाओं – किसी का भला न कर सकें, तो बुरा भी मत करों! समय और समाज में शरीर को मिला दो मगर आत्मा जहाँ चहों वहाँ रख सकते हो।

मैं भगवान नहीं मानता भानू, इसलिये ये बातें कुछ अजीब सी लगी! वास्तव में तुम्हारी बातें सार युक्त एवं रहस्य मय हैं परन्तु तुम जनाब भानू शादी क्यों नहीं करना चाहतें यदि स्त्री तुम्हारे लिये प्रेरणा है।

अगर आप भगवान नहीं मनातें तो मत मानों इस से हम पर या भगवान पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता। मैं भी भगवान की सत्ता में विश्वास नहीं करता। लेकिन आप यह जानना चाहतें हैं कि मैं शादी क्यों नहीं करना चाहता। न माँ है न बाप न घर, तनहा रहतें हुऐ तनाही से प्रेम हो गया है प्रधान। शान्त प्रकृति की गोद में बहुत प्यार मिलता है, अब तो चिर विश्राम की कामना करने लगा हूँ, भला ऐसे अवसर में शादी करना मेरे लियें कितना पतनोमुखी होगा। मुझे विश्वास है आप मेरा दिल नहीं तोड़ेगें! इस विषय पर फिर कभी बातें करेगें प्रधान! देखों चाँद भी निकल आया पर बेचरा पीला हैं मेरा पथ इधर है अच्छा अब चलता हूँ नमस्कार।

○ ○ ○

चार

समय अपनी गति से चलता रहा! दिन महीनें, वर्ष बदलते गये। प्रधान कई बार इन दिनों में घर भी गया! ठाकुर साहब एवं माता जाह्नवी उसकी सफलता पर काफी प्रशन्न हुऐ थें! उन्हें अपने इकलोतें बेटे पर गर्ब होने लगा था।

प्रधान का मन गाँव की अपेक्षा मैनपुरी में अधिक लगने लगा था! इसका सबसे बड़ा कारण सुजान एवं भानू थे! माता जाह्नवी को भी आश्चर्य हो रहा था कि प्रधान इतना बदल कैसे गया।

एम.ए. फाइनल में पहुंचतें ही प्रधान कालेज का अध्यक्ष बन गया! सुजान ने प्रधान की इस सफलता को भगवान की कृपा कहा। परन्तु भानू बिलोम प्रधान का सर्मथक बन गया। और तभी एक दिन भानू ने रणवीर को पीटा! कर्नल आनन्द, प्राचार्य के पुराने मित्र थे! उन्होंने भानू का नाम काट दिया परन्तु जब यह घटना प्रधान को मालुम हुई तो उसनें यह प्रस्ताव स्थागित करा दिया। भगवान से प्रधान को लगाव नही था! परन्तु कल शिव मंदिर में सुधा को रोते देखकर न जाने क्यों प्रधान को एक बेचैनी सावार हो गयी! फिर रणवीर का निमन्त्रण उसे एक अजीब उलझन में डाल दिया। तभी एक तेज हवा का झोका आया, और अतीत की स्मृति बिखर गयी।

हवायें अब भी पूरे बेग से बह रही थी! गरज के साथ छीटे भी पड़ रहे थे! परन्तु प्रधान का बदन पसीनें से तर हो चुका था। उसकें मस्तिष्क में एक प्रश्न जोर से कौंध रहा था – वह रणवीर के बर्थडे पर जायें या नहीं। काफी सोचने के बाद उसनें जानें का निर्णय ले लिया।

सहसा हवा का एक तेज झोंका आया दूर कहीं किसी वृक्ष के उखड़ जाने की तीव्र आवाज गूंज गयी।

जिसे सुनकर न जाने क्यों प्रधान पर भय की एक लहर दौड़ गयी, और उसनें चादर से मुँह ढक लिया।

o o o

रणबीर की कोटी किसी दुल्हन के समान सजी थी! विद्युत के छोटे छोटे बल्बों की कतार बरबस अपनी ओर आकृष्ट कर रही थी! आनन्द के चहेरे पर रोब की आभा चमक रही थी। आने वालों महमानेों का वे बड़े तपाक से स्वागत कर रहे

थे। पार्टी में अधिकांश अफसर थे। हाँ कुछ रणबीर के सहपाटी भी थे। आठ बज चुकें थे परन्तु प्रधान अभी तक नहीं आया था, रणबीर बार–बार प्रधान की राह देख रहा था।

तभी पाजामा कुर्ता में प्रधान ने प्रवेश किया – उसके हाथों में फूलों का कोई गुलदस्ता था न ही कोई उपहार प्रधान को इस भेष में देखकर कर्नल आनन्द मन ही मन जल उठे! परन्तु इतने मेहमानों की बीच कुछ न बोलना ही अच्छा समझा। उन्हें इस बात का दुःख हुआ कि उन्होंने यह कैसी स्कीम बनायी औपचारिकता बस प्रधान से हाथ मिलाते हुए कर्नल साहब ने कहा ''लेट कैसे हो गये बेटा.......।

मैंने कोई समय नहीं दिया था। आने का वादा था जिसे पूरा कर दिया, कहता हुआ प्रधान एक तरफ बैठ गया रणबीर प्रधान के इस व्यवहार पर दंग रह गया। पार्टी के अधिकांश युवकों का ध्यान उसी की तरफ था। परन्तु एक अपसर अपनें को सम्भाल न सका'' आखिर पूछ ही लिया! मिस्टर रणबीर – यह भिगमंगा कहा से आया है। कम से कम कपड़ें नहीं तो किसी से माँग लेना था। प्रधान वक्त को देखते हुए खून का घूंट पी कर रह गया और तभी कोई बड़ा अफसर आ गया। कर्नल साहब ने दौड़ कर उसका अभिवादन किया – वहाँ के सारे मेहमान उसकी इज्जत के लिये खड़े हो गये, परन्तु प्रधान बैठा रह गया।

कर्नल आनन्द ने जब प्रधान को बैठे देखा तो क्रोध की सीमा न रही, आखिर वे प्रधान के पास पहुंच कर बोले – क्या अंधा है।

प्रधान ने चौंक कर आनन्द को देखा, और बैठा रह गया यह तो पागल है! क्या कोई सिपाही है! मेरा आडर कार्ट मार्शल, आने वाले अधिकारी ने बड़े गर्व से कहा। प्रधान फिर भी बैठा रहा! उसी समय प्राचार्य ने प्रवेश किया – जिन्हें देखतें ही खड़ें होकर प्रधान ने प्रणाम किया, अरे प्रधान सिंह तुम यहाँ – प्राचार्य ने चौंकतें हुए कहा – निमन्त्रण तो मानना ही पड़ता है गुरुजी – दुर्योधन के यहाँ क्या कृष्ण नहीं गये थे ओह कहतें हुए प्राचार्य आगे बढ़ गयें।

कर्नल साहब ने बात बढ़ाना नहीं चाहा – इसलिये तुरन्त पार्टी शुरू कर दी। पार्टी का उद्‌घाटन मिसेज अरोड़ा ने किया। रणबीर ने केक काट कर मोमबत्तीयाँ बुझा दी। सारा हाल तालीयों की गड़गड़ाहट से गूंज गया – हेपी बर्थ डें टू यू मी, की आवाज बुलन्द हो गयी – फिर रणवीर ने केक का एक टुकड़ा मिसेज

अरोड़ा के मुख में रख दिया वे किसी बकरी के समान पागुर करने लगी। ओठों में लगी लिपस्टिक लार के साथ टुटी को रंग रही थी ऐसा लगता था मानों किसी बिल्ली ने चूहा खाया हों, बूडे शरीर पर शलवार कुर्ता खूब जम रहा था। शलवार के उपर गलें पर इतना भाग कटा था कि झूर्रीदार उरोज बाहर झांक रहे थे। इतनी उम्र होने के बावजूद उनकें बाल कालें एवं हेपीकट थे। सब मिलकर प्रधान को ऐसे लगा मानों वासना कभी बुड्डी होती ही नहीं, वह मिसेज अरोड़ा को लेकर सोचने लगा यह कैसी औरत है जो मृत्यु के तट पर पहुँच कर जननी का दर्जा पाकर भी वासना का विष घोल रही है। वैसें वहाँ पर कई युवती थी – पर सबसे अधिक सोचनीय मिसेज अरोड़ा थी।

रणबीर ने केक का दूसरा टुकड़ा उठाया और मनोरमा के मुख में रख दिया। बारी–बारी उसनें कई लोगों को केक खिलाया अचानक उसका ध्यान प्रधान पर गया। स्वार्थ की भावना में भर कर केक का टुकड़ा लेकर प्रधान की तरफ बढ़ा।

ठहरों रणबीर यह केक किस चीज का बना है। प्रधान ने मुँह घुमातें हुए कहा।

मैं नहीं जानता। परन्तु जब सभी लोंग खा रहें है तो तुम्हें अपात्ति क्यों।

माफ करना रणबीर – यह मैं नहीं खा सकता – यदि इससे आप को दुःख होता है तो हम मजबूर हैं।

परन्तु क्यों – रणबीर कुछ उत्तेजित होकर बोला।

चीखों मत मिस्टर रणबीर – मैं कहता हूँ इसे नहीं खाता जिसमें किसी की जान हो ''और किसी के दीर्घ जीवन की कल्पना हो – यह सिर्फ तुम लोगों का विचार हो सकता है – मेरा नहीं।

रणबीर प्रधान के पास से हट गया, क्योंकि प्रधान को वह अच्छी तरह से जानता था। जो अपनी जिद् पर किसी की नहीं सुनता था, पार्टी में शोर हो रहा था। अतः यह बात किसी ने नहीं सुनी....। दर असल बात सुनने की वहाँ किस को फिकर थी, सभी अपनें में मस्त थें।

तभी मिसजे अरोड़ा की आवाज गूंजी – हम सर्ब प्रथम कर्नल आनन्द को बाधाई देते है, जिन्होंने आप लोगों का काफी ध्यान रखा! अल्लाह से दूआ करती हूँ कि कर्नल साहब के बेटे को लम्बी उम्र दे और खूबसूरत बीबी से रणबीर की शादी

हों। मिसेज आनन्द से अनुरोध करती हूँ कि एक गीत गा कर इस महफिल को जवान करें। शायद आप लोगों को पता न हो कि मिसेज आनन्द क्या चीज है। हुश्न के साथ अल्लाह ने क्या गला दिया है, इसकें साथ–साथ हम आप सब को मुबारक बाद देती हूँ थैंक्यू।

हाल तालीयों की ध्वनि से गूंज उठा! थोड़ी देर के बाद मिसेज आनन्द उठीं सारी सभा शान्त हो गयी – वे बोली आप लोगों ने हमें जो सम्मान दिया है हम उसके आभारी हैं! मेरे दोस्तों सबसे पहले आप हमारा स्वागत स्वीकार करें – उसके बाद हम आप की मुराद पूरी करेगें। फिर सारे हाल में शराब की गंध बिखर गयी। सारें मेहमान रात रंगीन करनें में व्यस्त थे!

छोकरे तू शराब नहीं पीता – एक अफसर बोला।

छी–छी साहब – हम तो ठहरें देहती, भला हमें कहाँ शराब नसीब, यह तो आप लोगों को शोभा देती है। आखिर आप भारत माँ के रक्षक है न!

ले पी एक घूंट – बक–बक मत कर.....।

मैं नहीं पीता साहब – आप बेकार परेशान मत हों।

मगर क्यों, अपसर की भ्रकुटी तन गयी.........

क्यों का कोई उत्तर नहीं होता – दुःख है हम भारत वासी है।

क्या मैं पाकिस्तान में रहता हूँ अफसर चीखा।

न.........नहीं साहब........आप पेवर हिन्दुस्तानी है। क्वालटी नं0 वन प्रधान मुस्करा पड़ा!

उसी क्षण मिसेज अरोड़ा की आवाज गूंजी – ड्रांस गाना फिर क्या जो जहाँ पर था – आई.एम डिस्को डांसर बन गया। उस अफसर के पास एक युवती खड़ी थी। प्रधान को भूल कर उसनें उसकी कमर पकड़ ली, युवती ने गलें में बाहें डाल दी!

प्रधान हतप्रभ इस दृश्य को देख रहा था, जिसे कभी उसनें इतिहास में नहीं पढ़ा था, न ही किसी ने उसे बताया था। शराब और सिगार की गंध से उसका माथा फटनें लगा, ऐसा जान पड़ा मानों सारा संसार घूम रहा है। वे मानव आकृतियाँ हारे लाल बल्ब नजर आनें लगें, और प्रधान अपना सर पकड़ कर बैठ गया। तभी किसी ने उसे झिंझोड़ा था! प्रधान ने बड़ी मुश्किल से आँखे खोली देखा वह कोई

युवती थी। युवती बोली क्या आपको ड्रांस नहीं आता। प्रधान हतप्रभ सा उसका मुख देखता रहा – कुछ भी जबाब नहीं दे सका। आओं तुम्हें सिखाती हूँ कहती हुई युवती ने प्रधान का बाजू पकड़ कर खड़ा कर दिया। युवती अपना हाथ प्रधान के कंधे से रखती हुई पीछे आ गयी। पीछे घुमों न वह बोली – लेकिन प्रधान जड़ था। युवती को कुछ हंसी आ गयी और अपने दाँत प्रधान के गाल पर गढ़ा दिये।

दर्द तो थोड़ा हुआ परन्तु आघात काफी। वर्षों पहलें, गाल पर कालें निशान, फटे कपड़ें, जंघों पर खून, साँवली का लाश प्रधान के सामने घूम गयी। आखिर, यह सब क्या है – वासना, वासना, वासना, वह चीख पड़ा – युवती पीछे हट गयी, क्योंकि प्रधान का चेहरा बदल गया था! युवती कुछ समझती इससे पहलें प्रधान ने उसे पकड़ लिया – बोल तेरा नाम क्या है।

जी मेंरा नाम मनोरमा है! आप मेरा नाम जान कर क्या करेगें।

मनोरमा तू नारी है।

क्या आप को इतना नशा हो गया कि मैं दिखायी ही नहीं पड़ती।

नशा – नहीं तो मैं बिलकुल ठीक हूँ, मैंने तो पिया भी नहीं।

ओह.....। तभी तो मजा किरकिरा हो गया। लो डियर कहती हुई मनोरमा ने गिलास प्रधान के ओंठो से लगा दिया। पीकर देखों दुनिया कितनी रंगीन है, पृथ्वी का स्वर्ग यहीं है।

नहीं – मैं नहीं पीता, प्रधान पूरी शक्ति लगाकर बोला। थोड़ा – मनोरमा ने मुस्कातें हुए कहा'' और अपना दांया पैर प्रधान के पैर से सटा दिया, मनोरमा में ऐसी शक्ति थी कि प्रधान टूटता चला गया। आखिर उसने शराब पी ली। आज पहली बार उसे एक नया आनन्द मिल रहा था। ड्रांस सिखोगे मनोरमा ने कहा – क्या मैं सीख नहीं सकता – प्रधान का स्वर था। जरूर कहती हुई मनोरमा प्रधान के एक दम करीब आ गयी! प्रधान के हाथ मनोरमा के जिस्म पर फिसलनें लगें – आदर्शवादी प्रधान एक गहरी अंधकार की खायी में गिरता चला गया – उसने कई बार मनोरमा के ओंठ चूमें, और सीनें से चिपकया – हर बार एक नयी अनुभूति उसें हुई।

मनोरमा, तुम बहुत सुन्दर हो, जी करता है यूँ ही देखता रहूँ – प्रधान मदहोशी में बोला।

कौन मना करता है मनोरमा ने आँखे नचाते हुए कहा। उसी वक्त लाइट आफ हो गयी।

भंयकर अंधेरा। पाप करने का सुअवसर।

वक्त का फाइदा प्रधान ने भी उठया – उसने मनोरमा को एक दम अपने करीब कर लिया। चन्द्र पल में न जाने कितनी बार उसनें मनोरमा के ओंठ, गाल एवं नाक को चूमा। उरसिज को छूकर बरबस मुख से निकल गया कितनें कोमल हैं।

मनोरमा के हृदय में कंपन हुआ बड़ी विचित्र हलचल शायद इसलिये कि प्रधान ने बच्चे जैसी बात कही थी, या कोई दूसरा कारण जिसे लेखक भी समझ नहीं सकता।

मनोरमा एक बात कंहू – प्रधान ने कान के पास कहा.....। फिर मिलने को न। मनोरमा उसके आशय को भाँपते हुए बोली।

हाँ...हाँ.....यही बात प्रधान कुछ हड़बड़ा सा गया।

अरे इसमें घबराने की क्या बात है.........मनोरमा बोली।

बताइयें कहाँ मिलना है!

कल शाम चार बचे.......हरित्र क्रान्ति के मैदान में।

जरूर आऊगी। कहती हुई मनोरमा खड़ी हो गयी।

उसी क्षण प्रकाश ने सारी कोठी पर अधिकार कर लिया। पार्टी समाप्त हो गयी। सारे मेहमान एक–एक कर के जाने लगें। परन्तु प्रधान का मन जाने को नहीं कह रहा था। तभी मनोरमा उसके पास आकर बोली मिस्टर प्रधान अगर कल आप मुझसे मिलना चाहतें हैं तो यह पाजामा कुर्ता घूंटी पर टांग देना समझें – कहती हुई वह आगे बढ़ गयी।

प्रधान अब विष्णु की माया (नारी) का दास बन चुका था। कल के एवं अब के प्रधान में महान अन्तर हो चुका था। प्रधान के विवेक पर मनोरमा का यौवन शोर मचा रहा था! रास्ते में मुख से मनोरमा–मनोरमा कह रहा था।

यन्त्रवत प्रधान अपने कमरें में पहुँचा मन नारी सुख के हेतु छटपटा रहा था। मनोरमा को भुलाने के लिये कुतूहल बस अलमारी से किताबो को निकालने लगा उसे आज कोक शास्त्र की जरूरत पड़ गयी थी। परन्तु कुछ भी हाथ नहीं

लगा – झुंझला कर वह चारपाई पर लेट गया तभी दूर कहीं होती मानस पाठ की यह चौपाई सुनायी पड़ी।

जय तप नेम जलाश्रय झारी।

होई ग्रीषम सोषई सब नारी।

परन्तु आज प्रधान के लिये इस चौपाई का अर्थ व्यर्थ हो गया था। उसका मन तो नारी देह के चारो तरफ घूम रहा था, जैसे किसी पुष्प के इर्द गिर्द चक्कर काटता हुआ मधुकर, उसकें जिन्दगी का इतना ही दायरा रह गया था........नारी........ नारी........नारी.....। यौवन........आह.......कितना सुखद, स्वर्ग....। बाकी सब कुछ महत्त्वहीन हो गया था नारी, यौवन, प्रणय में घूमतें हुए प्रधान की कब आँखें लग गयी उसे पता ही नही ंचला – चौंका तब जब सूर्य की प्रखर किरणें उसके मुख मंडल पर खेल रही थी। वह उठा था एक नवीन सुख की कल्पना को साकार करने की खुशी को लिये हुऐ।

० ० ०

मनोरमा को बाहों में लेते हुऐ रणबीर बोला – आज तो तुमने कमाल ही कर दिया! मैने तो सोचा भी नहीं था कि प्रधान इतनी असानी से हमारें काबू में आ जायेगा।

तुम क्या जानों रणबीर नारी क्या बला है! स्त्री वह शक्ति है जो किसी भी पुरुष को मोम बना सकती है, प्रधान की क्या औकात है। नारी के संसर्ग के लिये विश्वामित्र, एवं परासर की भी तपस्या भंग हो गयी थी। बेचारे प्रधान पर तो मुझें तरस आने लगा है। कल मिलनें को कहा है हरित क्रान्ति के मैदान में!

तो तुम जाओगी – रणबीर का चेहरा उतर गया। जाना तो पडेगा ही, नहीं तो नशा उतर जायेगा। उसे इतना बावला कर देना है कि वह एक साँप बन जाय, जो खुद भानू को हटा दें!

लेकिन भानू – प्रधान से आगे है। यह बात अलग है कि प्रधान अध्यक्ष है! भानू एक आग है मनोरमा मैं तो उससे दुश्मनी करना नहीं चाहता – परन्तु डैडी तो हमें मजबूर कर रहें हैं!

तुम नाहक चिंता करते हो डियर ! तुम पर जिसने हाथ उठाया – उसे मैं कभी सुखी देखना नहीं चाहती। सों जाओं जाकर वैसे आज काफी थक गयी हूँ....।

आज कोई हरकत नहीं होगी, समझें मिस्टर......मनोरमा ने आँख नचायी।

रणबीर ने मनोरमा को बाहों में भर लिया फिर कई चुमन लेकर छोड़ दिया और अपने कमरे की तरफ बड़ गया।

बेबी – कर्नल साहब ने पुकारा था।

अंकल, मनोरमा कर्नल साहब के एक दम करीब पहुँच गयी, काम हो गया, कर्नल साहब बोले।

ओह – अंकल कैसी बात करतें हों आप की स्कीम कभी फेल हो ही नहीं सकती। मनोरमा मुस्करा पड़ी।

बेरी गुड बेबी – कहते हुऐ आनन्द ने मनोरमा का हाथ दबाया था।

छोड़ों न अंकल रात काफी हो गयी है।

एक पप्पी बेबी – कहते हुऐ कर्नल आनन्द ने मनोरमा के ओंठ चूम लिये।

०००

तीन बजे ही प्रधान हरित क्रान्ति के चक्कर लगाना शुरू कर दिया। उसकें विवेक पर मनोरमा का यौवन पूरी तरह हाबी हो चुका था। आज उसनें अपनी शरीर पर कीमती शूट पहन रखा था। हर पल बेचैनी से मनोरमा का इंतजार कर रहा था! तभी उसे मनोरमा आती दिखायी पड़ी उसे देखकर प्रधान आकाश में उड़नें लगा। आप कब आ गये। मनोरमा बोली.... ।

कुछ पूछों न मनोरमा – तूमने तो मेरी नींद ही हराम कर दी। बस रात भर पड़ा सोचता रहा – कब सुबह होगा कब तुम्हें.......... ।

बस रहने दो......ज्यादा झूठ अच्छा नहीं होता..........समझें।

मैं तुम्हें प्यार करता हूँ मनोरमा, तुम क्या इसे भी झूठ कहोगी!

प्रधान की बात सुनकर मनोरमा कुछ सकपका गयी कुछ छणों के लिये मानों जड़ हो गयी, परन्तु शीघ्र ही सम्भल कर बोली – यह तो मेरे लिये सौभाग्य होगा, आप जैसा जीवन साथी पाकर कौन खुश नहीं होगा मगर मुझे पाने के लिए आप को कुछ खोना पड़ेगा। अगर आप में इतनी हिम्मत है तो........मेरी तरफ हाथ बढ़ाना – अन्यथा हमें भूलना ही अच्छा है!

क्या मैं उस चीज का नाम जान सकता हूँ जिसे मुझे खोना है।

भान को – मनोरमा का मुख लाल हो गया, घृणा का धुँवा उसकी आँखों से

निकलने लगा।

भानू – प्रधान के मुख से बरबस निकल गया! मेरी समझ में नहीं आता अखिर भानू से तुम्हारा क्या सम्बन्ध है। अखिर उसे मुझें क्यों खोना है! मनोरमा साफ–साफ बताओं बात क्या है!

भानू का असली चेहरा नहीं देखा प्रधान। इसी कारण उसके प्रति तुम्हारे हृदय में प्यार है। लेकिन मैं एक दिन उसकी वासना कि शिकार होते–होते बची! अगर पुलिस की जीप न आ जाती तो – मनोरमा सिसकने लगी!

यह सरासर झूठ है! भानू ऐसी मूर्खता पूर्ण हरकत कर ही नहीं सकता। तुम जरुर मुझे किसी जाल में फँसना चाहती हों! बोलों तुम्हारा क्या इरादा है।

आपको क्रोध आ गया! इस समय शायद आप उद्वेग मे हैं! कल के पहले जरा सोचों आप क्या थें! परन्तु आज आप इतना क्यों बदल गये! इसलिये कि नारी सुख का आप ने अनुभव कर लिया। जरा ध्यान से सोचों प्रधान कि क्या इस सुख के लिए भानू पागल नहीं हो सकता। शायद आप न माने परन्तु जो मैं कह रही हूँ वह सच है, मैं भगवान की कसम खा सकती हूँ!

मनोरमा के वचन सुनकर प्रधान एक गहरें सोच में डूबता चला गया! नारी एक प्रेरणा है आखिर भानू ने नारी का पक्ष क्यों लिया था। जरुर उसे नारी की कोमलता का एहसास था! फिर भानू इंसान है हो सकता है ऐसा किया हो! फिर मनोरमा को पाने के लिए उसे सिर्फ भानू की दोस्ती ही तोड़नी है, इससे उस पर क्या फर्क पड़ता है। भानू जैसे दोस्त तो उसे बहुत मिलजायेंगे – परन्तु मनोरमा कहाँ मिल सकती है। उसे हर हालत पर मनोरमा को पाना है।

क्या सोचने लगे – मनोरमा ने मौन तोड़ा था।

तुम ठीक कहती हों! यदि ऐसी बात है तो मुझे भानू से दोस्ती तोड़ने में जरा भी फ्रर्क नहीं पड़ता, हम आज ही उसे दुतकार देंगे।

नहीं डीयर इतनी जल्दी क्या है! मुझे इस बात का अफसोस है कि आप भानू पर इतना विश्वास कैसे कर लिया। मेरी आत्मा तो तभी शीतल होगी जब वह इस कालेज में दिखायी नहीं देगा। क्या मेरे लिये एक छोटा सा काम आप नहीं कर सकते।

इसका मतलब भानू का नाम काट दिया जाय प्रधान बोला – हाँ मैं यही

चाहती हूँ। परन्तु जल्दबाजी बिल्कुल नहीं होनी चाहिए! चलों कहीं घूमनें चलते हैं।

जरुर चलेगें – प्रधान मनोरमा पर झुकता चला गया – इतनी बेचैनी ठीक नहीं प्रधान.....कहीं किसी ने....... । सारी, प्रधान को अपनी गलती एहसास हुई। चलों फिर कहीं चलतें है। जहाँ तुम हो, मैं हूँ.....सिर्फ। प्रधान की बात पर मनोरमा मुस्करा पड़ी, दूसेरे पल प्रधान ने मोटर साइकिल आगे बढ़ा दी! शहर से दूर निकल कर एक सुनसान जगह उसने मोटर साइकिल रोक दी! आओ यहीं बैठते हैं! प्रधान बोला! कहाँ चले आये – किसी होटल में चलना था मनोरमा बोली! मेरे लिये तो तुम ही होटल हो – कहता हुआ प्रधान मनोरमा का हाथ पकड़ लिया।

छोड़ो न........मनोरमा हाथ छुड़ाते हुए बोली।

परन्तु प्रधान ने उसे छोड़ा नहीं बल्कि एक दम अपने करीब खींच लिया! उसका दिल इतनी जोर से धड़कने लगा कि मानों बाहर निकलना चाहता हों।

क्या इसीलिये यहाँ लाये थे! मनोरमा बोली।

मनोरमा, मैं पूछता हूँ अखिर ऐसा क्यों होता हैं। मेरा दिल इतनी जोर से क्यों धड़क रहा है! क्या तुम्हें भी.......कुछ हो रहा है। नहीं तो.......मुझें तो कुछ नहीं हो रहा है।

जरा यहाँ पर हाथ रखकर देखों.........प्रधान ने मनोरमा का हाथ अपने वक्ष पर रख लिया।

मेरा भी देखा – मनोरमा ने मुँह घुमाते हुए कहा – प्रधान तो यही चाहता था! मनोरमा के कुच पर प्रधान ने जैसे हाथ रखा मनोरमा प्रधान से लिपट गयी। क्या हुआ – प्रधान शरारत भरे स्वर में बोला!

तभी मनोरमा को अपनी गलती का एहसास हुआ था। यह तो मात्र अभिनय है! कहीं सच न हो जाय सोचते सोचते मनोरमा के बदन पर पसीने की बूंदे चमकने लगी......बड़ी खूबसूरती से अपने मनों भावों को छिपाती हुई बोली। बस प्रधान......इससे आगे शादी के बाद.....परन्तु शादी तभी होगी जब भानू का नाम काट दिया जायेगा, उसने मुझे क्या समझ रखा है। तुम कहों तो उसकी जान भी ले लू – प्रधान मदहोशी में बोला, जान – एक मित्र की मनोरमा मन ही मन सोचती रही फिर खिलखिलाकर हंस पड़ी!

अरे – तुम हंसती हो – क्या तुम्हें मेरी बात पर विश्वास नहीं हँसती हूँ

तुम्हारी बेवकूफी पर......भानू का खून कर के क्या तुम खुशी से रह पाओगे....! यह प्यार, जो जता रहें सलामत रह पायेगा!

सारी मनोरमा – वास्तव में हम जरूरत से ज्यादा सोच गये! अब तुम जैसा चहोगी वैसा ही होगा – समझी। बेरी गुड – मनोरमा ने प्रधान के गले में बाँहे डाल दी! चलों अब चला जाय – देखों संध्या होने वाली है! जरूर चलेगें कहतें हुए प्रधान ने मनोरमा को फिर भींज लिया। अधरों को चूमते हुए बोला –

सरकार को बुरा तो नहीं लगा।

बेशर्म कहती हुई मनोरमा हँस पड़ी।

o o o

मंदिर सूनसान था!

परन्तु वह भगवान के समाने बैठी, अश्रु बहा रही थी एक सप्ताह पहलें यहीं पर उसे किसी की हमदर्दी मिली थी। शायद आज उसनें उसको भगवान मान लिया था! एक घंटा वह वहीं बैठी भगवान से प्रार्थना करती रही!

निराश होकर जैसे वह उठी कि किसी के पद चाप की आवाज गूंजी! शायद वह आ गया, यही सोचकर उसकें चेहरे पर हर्ष की एक आभा चमक गयी! सच मुच उसका अनुभव ठीक था! आने वाले कोई दूसरा व्यक्ति नहीं वरन् प्रधान था।

आप आ गये न, बरबस ही सुधा के मुख से निकल गया। परन्तु प्रधान मौन, बस सुधा के बदन को अपलक देखता रहा – मानों कुछ खोज रहा हो।

कुंसगत का ज्वर बड़ा भंयकर होता है। प्रधान पर कुंसगत का ज्वर ऐसा चढ़ा की सम्पूर्ण मानवीय विचार लुप्त हो गयें! उसने यहाँ तक सोच लिया कि स्त्री पुरुष की उत्पति सिर्फ एक दूसरें के लिये है, जिसकी जब जरूरत पड़ें कहीं भी पूरी कर लें! इसी धारणा के वशीभूत होकर प्रधान सुधा की दीनता भूलकर अपनी वासना खोज रहा था। सुधा मनोरमा से कहीं अधिक सुन्दर थी। उसकी बड़ी–बड़ी आँखें प्रधान के दिल में हलचल उत्पन्न करती चली गयी।

आप ने कोई जबाब नहीं दिया भैया – तभी सुधा बोली – मेरा विश्वास टूट गया। मैं भगवान को बहुत मानती थी। लेकिन आप ने ठीक ही कहा था, भगवान भी घूसखोर हो गया है।

मेरी माँ जिन्दगी की अंतिम साँस ले रही हैं भैया। दुनिया बड़ी स्वार्थी है। हमारें पास कुछ भी नहीं है। आप कृपा करके कुछ रूपयें दे दें! बड़ी मेहरबानी होगी! मैं मंदिर, भगवान से नहीं अपितु आप से मिलने आयी हूँ, कहते–कहते सुधा की आँखे छलछला आयी। उसका स्वर भारी हो गया, फिर वह सिसक पड़ी।

इतनी सी बात के लिये परेशान होने की क्या जरूरत है। मैं तुम्हारी पीड़ा अच्छी तरह से समझ रहा हूँ। दुःख इस बात का है कि आज एक पैसा भी मेरे पास नहीं, फिर भी परेशान होने की जरूरत नहीं। चलों हम घर पर दे देते हैं – आप को थोड़ा कष्ट करना पड़ेगा।

कोई बात नहीं – कष्ट सहने की आदत बन गयी है। कहती हुई सुधा खड़ी हो गयी! प्रधान ने उसे मोटर साइकिल पर बैठाया और चल दिया। यह रहा मेरा घर कहते हुए प्रधान ने मोटर साइकिल रोक दी। आओ अंदर न........कहता हुआ प्रधान अंदर प्रवेश कर गया पीछे–पीछे सुधा भी। सौ का नोट सुधा की तरफ बढ़ाते हुए प्रधान बोला – रख लो माँ की दवा में काम आयेगा। जब भी जरूरत पड़े चली आना बंदा सेवा के लिए हाजिर है।

आप को भगवान सुखी रखे – कहती हुई सुधा खड़ी हो गयी – अच्छा अब चलती हूँ भइया – माता जी इंतजार कर रही होगीं।

सुधा की बात सुनकर प्रधान को हँसी आ गयी, बोला इसके बदले तुम्हे भी कुछ देना पड़ेगा, मैडम हम इतने मूर्ख नहीं कि सौ रूपये यूं फैक दे। मैं कुछ समझी नहीं भइया।

भइया – प्रधान मुस्करा कर बोला – यह भइया – भइया क्या लगा रखा है। भइया यह आप क्या कह रहे हैं।

भइया – भइया की बकवास बंद करो सुधा – अगर तुम्हें पैसे चाहिए तो थोड़ी देर मेरा मनोरंजन कर दो – बस सौ रूपये बराबर हो जायेगें।

भइया – मैने सोचा था कि आप महान इंसान है परन्तु आप भी ऐसे इंसान है जो मजलूम को अपना शिकार बनाते हैं। यह दुनिया भी कितनी विचित्र है यहाँ हर प्राणी आदमखोर है। सभ्यता के नाम पर आज भी इस संसार में जंगल वाला कानून है। सबल की हर तरफ जयकार है निर्बल के सभी काल हैं।

सुधा प्रधान चीख पड़ा। मुझे भाष्ण सुनने की जरूरत नहीं चली जाओं यहाँ से।

नहीं प्रधान, अब में यहाँ से नहीं जाऊगीं, जाँऊगी कहाँ हर तरफ भेड़ियें माँस खाने को तैयार हैं फिर तुम ही क्यों पीछे रहों मुझे पैसे दो प्रधान बदले में कुछ भी....... ।

यहाँ आओं मेरे पास प्रधान ने कहा –

सुधा प्रधान की तरफ बढ़ी थी। उसकी आँखों सें अबिरल अश्रु धार बह रही थी, लेकिन प्रधान पर वासना का भूत इस प्रकार सवार था कि वह कुछ देख नहीं सकता था, सिर्फ एक नारी शरीर को छोड़ कर।

सुधा – प्रधान ने उसे बाहों में लेते हुऐ कहा, आज जो हम करेगें उसकी कीमत दे चुका हूँ अगर तुम्हें फिर पैसों की आवश्यकता पड़ें तो पचास रूपयें में हम यही खेल फिर खेलेगें। तीसरे बार मात्र पच्चीस रूपयें मिलेगा।

आप जो चाहें कर लें, मुझे पैसों की शक्त जरूरत है कहती हुई सुधा ने आँखें मूंद ली।

आखें खोलो सुधा......देखों कितना मजा आ रहा है!

उसी क्षण सुधा ने अपने ओंठ लहूलुहान कर डालें.......उस की स्थिति दयनीय हो गयी। वह इतनी मजलूम हो गयी, इतनी बेबस हो गयी कि अपनी इज्जत के लिये रो भी न सकी।

प्रधान धीरे–धीरे सुधा के बदन को सहलाने लगा। सुधा ने आह भी नहीं किया।

कैसा लगता है सुधा.......... ।

आप अपने पैसों की कीमत मेरे शरीर से पूरा कर ले! इसके सिवा मेरे पास अब शेष है ही क्या, बोलों मत प्रधान – सुधा अपनी लाश बेच रही हैं, कहती हुई वह सिसक पड़ी। पर उस नर पिशाच ने अपनी वासना शान्त ही कर ली।

○ ○ ○

सौं का नोट लिये दौड़ती हॉपती सुधा जब घर पहुंची तो कुछ लोगों को एकत्रित हुये देखा उन सब के चेहरे पर गहरी चिंता की रेखायें थी। तभी एक युवक आया – जिसके हाथ में सफेद कपडें थें। और जब सुधा की नजर उस व्यक्ति पर पड़ी तो चौंक गयी याद आया वहीं था जिसने उसके कारण रणबीर को पीट दिया था। अपना ध्यान उधर से हटा कर वह घर में घुस गयी, कुछ औरतें बैठी थी गुमसुम

माँ गहरी नींद सो चुकी थी। क्या हुआ काकी सुधा एक स्त्री से लिपट गयी, उसके हाथ से सौ का नोट जमीन पर गिर गया।

माँ नहीं रही – सुनते ही सुधा पछाड़ खाकर गिर गयी। उसका करुण क्रंदन सम्पूर्ण वातावरण में गूंज गया।

भानू ने आगे बड़कर सौ का नोट उठा लिया। फिर शीघ्र ही लाश को भी उठवा दिया। सुधा बार–बार लाश से लिपट जाती कहती मुझे अकेली छोड़ दिया माँ मैं आज अनाथ हो गयी। सुधा की मर्म ध्वनि भानू के वक्षस्थल को चीरती चली गयी। बड़ी मुश्किल से उस समय वह अपने को सम्भाल पाया था।

चिता में आग लगा दी गयी – एकाएक सुधा चिता पर चड़ गयी – सबका विवेक शन्यू हो गया परन्तु भानू दूसरे पल चिता पर कूद गया, और सुधा को लेकर चिता से बाहर निकल लाया। यदिप इस कार्य में उसकी शरीर झुलस गया – परन्तु उसने इसकी परवाह नहीं की।

चिता जल कर शान्त हो गयी एक–एक कर के सभी लोग चले गयें। परन्तु भानू सुधा को छोड़ कर जा न सका, जब पूर्ण चिता राख हो गयी तो भानू ने उसे गंगा के हवालें कर दिया। तभी सुधा उठकर बैठ गयी, भानू को थोड़ी खुशी हुई उसकी तपस्या बेकार नहीं गयी थी।

मुझे मर जानें दो – मैं जीने के योग्य नहीं रही कहती हुई सुधा फूट–फूट कर रो पड़ी।

सुधा तू अपने को अकेली मत समझ – मेरे तो कोई बहन नहीं थी! भाई की बेटी गुड़िया जिसे मैं अपनी बहन समझता रहा – आज से यही सोचूगा एक तू भी मेरी बहन है – मेरी आत्मा है।

सुधा की आँखों से मोटी मोटी धारायें बह रही थी धुँधले में उसने भानू की तरफ देखा जिसका चेहरा क्रोध से तमतमा रहा था।

यह नोट – भानू ने सुधा की तरफ बढ़ाते हुऐ कहा माँ की कसम सुधा सच सच बोलना यह नोट तुझे किसने दिया तुम्हारी गरीबी पर तरस खाने वाला इस दुनिया मैं कौन है – क्या इसके बदले तूने......।

उसका नाम बता सुधा इस जली हुई चिता की कसम उसकी यहीं चिता लगा दूंगा।

मत पूछों भैया मैं लुट चुकी हूँ, माँ की दवा के लिये अपनी आबरू भी बेंच दी, अखिर कहाँ तक भूख और माँ के हृदय का खून देखती मेरी आत्मा भी बिक गयी भैया। इसलिये इस शरीर को छोड़ रही थी, पर तुमने मरने भी नहीं दिया।

मुझे उसका नाम बता सुधा – नाम बता भानू की आँखे अंगारें के समान दहक रही थी।

मुझे उसका नाम नहीं पता – मंदिर में बहन कहा था अपने घर में ले जाकर सौं रूपये दिया था, और उसके बदलें कहते कहते सुधा का स्वर भारी हो गया – आँखों में मोटी–मोटी बूदें चमकनें लगी..... मैं बेबस थी भैया इसके सिवा मेरे पास और कुछ विकल्प रह ही कहाँ गया था। सब कुछ बेच कर भी हार गयी! माँ को मौत से बचा न सकी मैं बहुत बदनसीब हूँ, भैया, फिर सुधा अपनी हिचकियों को रोक न सकी।

मत रो मेरी बहन मैं उसे खोंजूगा – आकाश पताल में भी जाकर वह मुझसे छिप नहीं पायेगा। उसे हर कीमत पर मेरी बहन को स्वीकार करना होगा।

यदि वह हिचकेगा तो उसकी लाश भी नहीं पहचानी जायेगी यह मेरा वादा है।

तुमकों जीना होगा बहन मेरे लिये कहते हुऐ भानू का स्वर गलें में फँस गया, भानू के साथ सुधा चल रही थी – पर उसके पैर बेजान थें।

o o o

कामिनी ने प्रधान में इतना उन्माद भर दिया कि वह सारे आदर्श सिद्धान्त भूल गया। वासना को कीचड़ कहने वाला प्रधान वासना का दास बन गया। जिसके दिल में दर्द की दरिया बह करती थी, परोपकार ही जिसका भगवान था, वह पतन की खायी में गिर गया। जिस व्यक्ति का चरित्र इतना उज्जवल हो – एकाएक इतना परिवर्तन बड़ा विचित्र लगता हैं, परन्तु विद्याता की इस दुनिया में यह कोई अनोखी बात नहीं।

मदिरा एवं कामिनी दो ऐसी वस्तु है जो किसी को भी एक क्षण में पाताल भेज सकती हैं। मानव जब इन के रस का स्वाद ले लेता है तो इनका विष दया एवं परोपकार का खून पी लेता है। मानव मन में पशुवृति पैदा कर देता है। जिससे वह अपनी संस्कृति भूल कर पशु के समान व्यवहार करने लगता है! इनका दिवाना

संसार में चरित्रवान हो ही नहीं सकता – और यदि चरित्रवान इस जहर को पीता है तो बहुत शीघ्र ही उसका भी नाश हो जाता है! उसके शरीर की आत्मा एक दम बदल जाती है। उसे पूर्व किये हुये कर्म हास्य पूर्ण एवं मूखता मय लगतें हैं, निश्चित कामिनी दहकता हुआ सूर्य है जो सरिता रूपी जल परोपकार को सोख लेता है!

यदि ऐसा है तो प्रधान का चरित्रहीन होना आश्चर्य नहीं क्योंकि उसको आनन्द कामिनी से मिल रहा था! मनोरमा के पीछे जो ज्वर उभरा – सुधा के साथ पूरा कर लिया, फिर वह नशा और भी गहरा होता चला गया!

प्रधान की आँखों में नींद नहीं थी। उसके सामने मनोरमा का जिश्म घूम रहा था। बार–बार वह उसी में खो रहा था। उसे याद आया मनोरमा ने कहा था – उसको पाने के लिये एक छोटी सी कुर्बानी करनी पड़ेगी सोचते सोचते प्रधान की आँखों के सामने भानू घूम गया एक दम शान्त न जाने क्यों यह रूप भानू का प्रधान को कचोटने लगा। फिर उसे भानू की बातें भी याद आती चली गयी, फिर उसे अपनी भी कहानी याद आयी! परन्तु इस समय वे विचार एक दम तुच्छ लगें प्रधान को।

मनोरमा को पानें के लिये उसे सिर्फ भानू का नाम ही तो कटवाना है यह कोई बड़ी बात नहीं थी.....। परन्तु फिर भी न जानें क्यों प्रधान के हृदय में हलचल होती। आखिर उसे इस प्रकार बदला हुआ देखकर सुजान एवं भानू क्या कहेंगे – तभी मस्तिष्क ने हिदायत दी दुनिया कुछ भी कहें, मुझें हर कीमत पर मनोरमा को पाना है आह क्या चींज है बरबस ही प्रधान के मुख से निकल गया। मुख में लार आ गयी – भानू क्या दुनिया भी चाहें तो भी वह मनोरमा को छोड़ नहीं सकता। तो क्या कल प्राचार्य से कहना होगा – परन्तु वे मेरे बारे में क्या सोचगें, एक बार मैंने उसका नाम लिखवाया दूसरी बार, नहीं यह मुझसे नहीं होगा। मैं प्राचार्य से आँखे भी नहीं मिला सकता! तो क्या मनोरमा को खो देगा स्वार्थ ने सर उठया। यह भी नहीं हो सकता – तो दोनों तो हो नहीं सकता – दो से एक ही रास्ता अपनाना होगा.....। प्राचार्य के पास जाना है मन ही मन निर्णय लिया। हाँ यही ठीक होगा – उसने संकल्प लिया और आँखे मूंद ली... परन्तु नींद को उस पर दया नहीं आयी।

आखिर वह फिर उठा, दो पैग पीने के बाद पुनः लेट गया। आँखे मूँदी तो सब कुछ घूमता हुआ दिखायी पड़ा! ऐसा जान पड़ा वह मनोरमा की कमर पकड़ कर ड्रांस कर रहा है! आँखों के सामने लाल हरे बल्ब घूम रहें हैं सारी दुनिया रंगीन

लग रही है।

शराब का वास्तविक नाम विष है, फर्क़ इतना हैं कि जहर पीनें वाला आदमी मर जाता है। परिवार के सदस्य आँसू बहाते हैं और फिर कफन लपेट कर शव को जला देते हैं।

शराबी भी मर जाता है – परन्तु उसकी लाश चलती है इसी कारण रोने वाले भी नहीं होते। जो चीच दिखायी नहीं पड़ती उसके लिये संसार चिंतित नहीं होता। अगर ऐसा न होता तो लोग परमतत्व की ओर से उदासीन न होतें।

o o o

भानू – किसी ने आवाज लगायी थी – घूम कर भानू ने देखा तो वह सुजान था, सुजान अरे तुम।

मैं तुम्हें ही खोज रहा था भानू....... ।

जनाब को मेरी तलाश......मुस्काते हुए भानू ने सुजान का हाथ अपने हाथ में ले लिया।

भानू बात मजाक की नहीं एक जरूरी बात मुझे तुम से कहनी है!

क्या बात है सुजान – भानू ने चौंक कर कहा।

प्रधान ने तुम से क्या कहा था, घर जाने के लिये न। और क्या प्रधान गाँव गया है, यही मुझको बताया था! मगर ऐसा नहीं है भानू प्रधान यहीं पर है! कल शाम उसे मैंने खुद देखा है। बहुत अजीब लगा – क्योंकि प्रधान के शरीर पर शूट था मोटर साइकिल थी – और उस पर एक जवान लड़की थी। हैरानी इस बात की है कि प्रधान ने हम लोगों से आज तक इस बात का कभी भी जिक्र नहीं किया, यही कारण भानू मुझे कुछ आश्चर्य हुआ।

बात आश्चर्य की नहीं सुजान – अगर प्रधान ने ऐसा किया है तो हम यही सोच लेगें की वह मर गया। आज के बाद भानू उसे आँख उठा कर भी नहीं देखेगा।

तुम बहुत जल्दी उत्तेजित हो जाते हो भानू यह तुम्हारी सबसे बड़ी कमी है। प्रधान अमीर बाप का बेटा है! भानू और अमीरों को अपनी बातों का होश भी नहीं रहता। मुझे कहतें हुए दुःख होता है कि उसने हमारा विश्वास तोड़ दिया। प्राचार्य महोदय मुझे बुला कर कह रहे थे कि प्रधान ने तुम्हारा नाम काटने की सिफरिश की है। उसकें कहनें के अनुसार तुमने रणबीर पर हाथ उठाया, एक देश प्रेमी के साथ

गद्दारी की है। चरित्रहीन कह कर उसने तुम्हें कालेज से निकालने का फैसला किया है। मुझे स्वप्न में भी विश्वास नहीं था कि प्रधान इतना गिर सकता है तुम्हें शायद विश्वास न आये, पर उसकी यह लिखावट पहचान सकते हो – इसमें उसकी यह लिखित माँग है – भानू मैं नहीं सोच पा रहा हूँ आखिर यह क्या हो रहा है – तुम्हारें बगैर मैं तो बहुत कमजोर हो जाऊँगा!

मुझे इसी वक्त प्रधान से मिलना है – मैं जानता हूँ यह किस की करामात हैं – कर्नल आनन्द की मौत आ गयी सुजान! प्रधान दोषी नहीं बहक गया है। मगर उसने अब ज्यादा चालाकी खेली तो हम उसे भी नहीं छोडेगें। गुड़िया की कसम मुझे मरने से एक दम भय नहीं लगता, एक बार मिलता हूँ प्रधान के बच्चे से।

भानू – फिर वही ंआवेश – तुम्हें अब कालेज से निकलना हँसी का खेल नहीं है। बस में इतना कँहूगा प्रधान को हम भूल जाये। हाँ एक बात तो मैं भूल ही गया, दीदी ने तुम्हें बुलाया है कब तक आओगें।

किसी दिन समय मिला तो जरूर आऊँगा। फिर भानू का ध्यान सुधा की तरफ चला गया, उसकी स्थिति से न जाने क्यों भानू का ह्दय दग्ध हो गया! मन में एक असहनीय पीड़ा उमड़ गयी, तभी सुजान ने टोका क्या सोच रहे हो भानू।

सुधा को जानते हो सुजान–जिसके कारण मैंने रणबीर पर हाथ उठाया था। उसकी माँ टी0बी0 की मरीज थी और परसों वे चिर निद्रा की गोद में समा गयी, माँ की दवा के लिये उस लड़की ने अपनी शरीर तक बेंच दी, पर भगवान को उस पर दया नहीं आयी। संयोग बस मैं उस दिन वहाँ पहुंच गया था जिस दिन उसकी माँ का इन्तकाल हुआ था। जब वह औरत दम तोड़ रही थी तो बेटी बिक रही थी, पर जब वह सौ रूपये लेकर आयी तो माँ की लाश उसे मिली थी, वह बहुत रोई सुजान पर रोने से माँ वापस तो नहीं आ सकती थी। मैं आप को यह कहानी इसलिये सुना रहा हूँ कि काश मैं न रहूँ ता उसे धीरज देना मेरे भाई।

मेरे जीवन में गुड़िया के समान वह भी जुड़ गयी है! परन्तु छोड़ों इन बातों को सुजान, चलों हम उसके घर चलते हैं......। इंकार तो नहीं करोगें.......

नहीं भानू......चलों हम भी उसको देखना चाहते हैं जो तुम्हारी मुंह बोली बहन हैं......। हाँ एक बात कि तुमसे शिकायत है कि आज तक तुमने यह बात मुझसे क्यों नहीं बतायी।

जिन्दगी में एक बार ही उससे मुलाकात हुई थी, फिर नहीं – उसके दुःख को मैं भी नहीं जानता था सुजान, फिर तुम्हें कैसे बता सकता था।

ओह – सुजान ने एक गहरी सांस ली.....। इसका मतलब बड़ी अजीब लड़की है। तुम पर भी उसने विश्वास नहीं किया.....।

उसने ठीक ही किया, गलत इतना हुआ कि माँ मर गयी। विश्वास आज कहाँ रह गया सुजान – जब प्रधान जैसे मित्र विश्वास घात कर सकते है तो साधारण मनुष्यों को क्या कहा जाय। मुझे डर है कि कहीं मैं भी न बहक जाऊ, इसका मतलब – तुम्हें आत्मसंयम नहीं भानू – अगर संयम होता तो इतनी कायरता पूर्ण बाते न करतें........अपने नाम के अर्थ को समझों तुम सूर्य हो।

निःसंदेह सुजान मैं आग हूँ.........कहते हुऐ भानू की आँखें दहक उठी।

o o o

भानू के पुकारनें पर सुधा बाहर निकली उसके शरीर पर वही वस्त्र थे – जो आग से झुलस गये थे......। बाल चारों तरफ बिखरे थे। गालों पर गढे के निशान उभर आये थें। उस मूर्ति को देखकर सुजान के हृदय में पीड़ा उठती चली गयी!

सुधा भानू ने पुकरा।

भैया – बस वह इतना कह सकी।

आज तक तुमने कपड़े भी नहीं बदलें भानू बोला।

क्या पूछ रहें हो भैया – जिसके पास बदलनें का कपड़ा न हो, खाने को एक दाना न हो, भला उसे क्या परेशानी हो सकती है।

सुधा – भानू की आँखे डबडबा आयी! बिना बताये हम कुछ न जान सकें बहन हो सकें तो इस भाई को क्षमा कर देना। ये सुजान है सुधा – इन्हें भी अपना भाई समझ लेना, काश मैं न रहू तो भी तुम अनाथ नहीं होगी – कहता हुआ भानू बाहर निकल गया।

भानू – सुजान ने पुकरा – अरे मेरी बात तो सुनों, परन्तु भानू ने पीछे देखा भी नहीं – सुधा हतप्रभ सुजान को देखती रही जिसके आँखों में आँसू उमड़ आये थे।

भानू बहुत भावुक है सुधा – उससे अनजान में जो गलती हो गयी उसकी हम क्षमा माँगते हैं। आप दया की देबी जरूर उसे क्षमा कर देगीं। अगर तुम्हारी

गरीबी का उसे पता होता तो वह कुछ भी कर डालता सुधा। यहाँ से जाकर कहीं वह गलत कदम न उठा दे। मैं तो डरता हूँ कहीं वह बागी न बन जाये।

आपका नाम सुधा ने पूछा तभी मनोरमा आ गयी – सुधा के घर पर एक पुरुष को देखकर वह दंग रह गयी।

मुझे सुजान कहते हैं – सुजान ने सहज भाव से कहा, तभी बीच में मनोरमा बोली – अरे सुधा यह कौन है, माँ के मरते ही जवानी सम्भाल न सकी। रात को बुलाया होता, मनोरमा मुस्कायी काम करने में तेरी माँ मर गयी, और अब तेरी माँ जिंदा हो गयी! तीन सौ रूपये ऐसे नहीं आते सुधा – चल इसी वक्त बर्तन धोने हैं, फिर प्रेमी को बुला लेना। मनोरमा एक साँस में कहती चली गयी।

यह कौन है सुधा – जिसकी जुबान इतनी लम्बी हैं। इसके नाम के साथ इसके बाप का भी नाम बता। दुनिया में आज तक सुजान पर कोई उँगुली नही उठा सका और आज मेरा सर शर्म से झुक गया।

वाह साहब आप कितने महान हैं – यह बात सुधा के शलवार पर लगा खून कह रहा है।

तड़ाक – सुजान का एक हाथ मनोरमा के गाल पर पड़ा और वह लड़खड़ा कर गिर गयी! वह उठे के इससे पहले सुजान ने उसका गला पकड़ लिया बोल तूने क्या देखा था, यदि झूठ बोली तो समझ ले हम तुझे खत्म कर देगें।

छोड़ दो भइया – सुधा सुजान को समझाने लगी...... हम सब सह सकते हैं परन्तु गाली नहीं, इसने कैसे कह दिया सुधा – मैं इसका खून कर दूंगा।

मैने कुछ नहीं देखा मुझे छोड़ दो बचा लो सुधा, कहती हुई मनोरमा हाथ पैर मारने लगी।

नागिन – तू नारी जाति पर कलंक है दिल तो कहता है कि तेरा गला घोट दूं पर मैं ऐसा नहीं कर पा रहा हूँ क्यों कि मेरे भी बहिन है जो तुम्हारे सामने खड़ी है। जो हाथ तेरी जान ले सकते है, उन्हें आवरू लेने में देरी नहीं लगेगी। लेकिन जो तुझ नागिन को छोड़ सकता है, उसके विषय में अच्छी तरह सोच–लेना कहता हुआ सुजान मनोरमा का गला छोड़कर खड़ा हो गया। सुजान के पंजे से छूटते ही मनोरमा भागना चाही परन्तु सुजान ने उसे पकड़ लिया भागती क्यों है मैं हत्यारा नहीं काश भानू होता तो मुक्ति पा चुकी होती। भानू यह नाम मनोरमा का

हृदय चीरता चला गया इसका मतलब यह भानू का परिचित है। मनोरमा मन ही मन सोच रही थी जब की सुजान कह रहा था ''बोल तेरे यहाँ आज पार्टी है! मेरी बहन से बर्तन साफ करायेगी! सिर्फ तीन सौ रूपये के लिये – अरे कम से कम थोड़ी तो इंसानियम सीखों काश तू इस जगह होती तो शायद समझ पाती गरीबी क्या होती है। लेकिन भगवान ने तुझे बड़े घर में पैदा कर दिया, और तू नारी होकर भी नारी की पीड़ा न समझ सकी! इससे अधिक मैं कुछ नहीं कहूँगा। हाँ तूने आज तक जो सुधा को दिया है वह मुझसे ले लेना। और आज के बाद भूल कर भी इधर कदम नहीं रखना। फिर सुजान ने तीन सौ रूपये मनोरमा के ऊपर फैक दिया। और बोला – जो और दे रखा है बक दें!

आप इसके लिये इतना परेशान क्यों होते है मनोरमा बोली यह जो गरीबी का लिबास ओढ़े खड़ी है कुलटा है सुजान। जिसके कारण तुम.....। तड़ाक वाक्य पूरा होने से पहले सुजान का एक हाथ पुनः पड़ा।

खबरदार – अगर तूने मेरे बहन के बिलोम एक शब्द भी कहा तो मैं तेरी जुबान खींच लूगा। निकल जा यहाँ से – अन्यथा कही, इतिहास को कंलकिंत न कर दूं। क्रोध के आवेश में सुजान का शरीर काँप रहा था!

मनोरमा ने सुजान के चेहरे को देखा – जिस पर हिंसा के असार थे। उसे ऐसा एहसास हुआ जैसे सचमुच उसकी मृत्यु करीब खड़ी है...। मारे भय के मनोरमा का चेहरा कला पड़ता चला गया। चेहरे पर दहशत के भाव छा गये, अब उसके लिये यहाँ एक पल भी रुकना बेहतर नहीं था! ऐसा सोचकर वह बाहर निकलने लगी।

मनोरमा, तेरे बाप का क्या नाम है – सुजान बोला – धन्य है वह देबी जिसने तुझे पैदा किया। बल का दुरपयोग किसी भी कीमत पर उचित नहीं होता, जिस बल पर तू सुधा को तड़फा रही है अगर मैं चाहू तो तुझे बरबाद कर सकता हूँ – परन्तु हम ऐसा नहीं कर सकतें क्योंकि हमें शाक्ति का दुरपयोग करना नहीं आता। बेगैर मेरी मर्जी के तू यहाँ से बाहर नहीं जा सकती है। परन्तु हम उस बल का प्रयोग करना नहीं चाहतें। एक बात और कहूँगा कि मुझसे जो हुआ वह सिर्फ इसलिये कि तूने बहुत बड़ी गाली दे दी। काश तू माँ को भी गाली दी होती तो भी हम शायद ऐसा न करतें – फिर भी यदि हो सके तो मुझे क्षमा कर देना। सिर्फ इसलिये कि तू एक नारी है – और एक भारतीय होने के नाते नारी पर हाथ उठाना

बड़े शर्म की बात है.....! मुझे अपने कृत्य पर पाश्चाताप हो रहा है। मैं फिर तुमसे क्षमा माँगता हूँ। अब जाओ जो सुधा को कर्जा दे रखा है मुझसे ले लेना परन्तु सुधा को कभी वचनों से घायल नहीं करना यह मेरा निवेदन है।

सुजान को जो कहना था कह दिया, मनोरमा के चेहरे पर जाने कितने भाव आये गये, कुछ देर तक वह मौन साधे खड़ी रही फिर बाहर निकल गयी। सुधा गुम–सुम सी मनोरमा को जाती, देखती रह गयी। मनोरमा के चले जाने के बाद सुजान ने सुधा का देखा, जो अब भी किसी मूर्ति के समान खड़ी थी।

सुधा – सुजान ने पुकारा।

चौंक कर सुधा सुजान को देखने लगी! उसे ऐसा जान पड़ा जैसे यह आवाज बहुत दूर से आयी है।

सुधा – ऐसे दुष्टों के संग तुम कैसे जीती रही, बोलो जिन्दगी को तुमने कैसे घुट–घुट कर जिया। फिर भी तुमनें भानू से कुछ नहीं कहा! काश एक बार उसे यह पता चल जाता, तो तुम्हारी यह दुर्गति न होती – लेकिन सुधा तुमने यह ऐसी भूल की कि जिसमें खुद तो जल गयी, परन्तु आंच हमें भी लगी। मुझे अपनें पर शायद विश्वास न हों परन्तु भानू जो विश्वास की प्रतिमा है – मेरे लिये, कहते हुऐ आत्मग्लानि से सुजान का सिर झुक गया। मुझें बहुत दुःख है सुधा, हमारे भानू के होते हुये भी तुम्हें इतनी यातना सहनी पड़ी। लेकिन जो हो गया उसे भूलना ही बुद्धिमानी है। अब अपने को कभी अकेला नहीं समझना। यदि तुम्हे यहाँ रहनें में घबराहट है तो हमारे घर चल सकती हो, हमारे एवं अलका दीदी के सिवा कोई नहीं।

क्या माँ–बाप घर पर नहीं रहतें सुधा ने पूछा...। वे बहुत दूर चले गये सुधा – जहाँ जाने के बाद कोई वापस नहीं आता। परन्तु हम आँसू बहाने के सिवा कर भी क्या सकतें – अच्छा छोड़ों इन बातों को...मैं अभी आता हूँ कहता हुआ सुजान बाहर निकल गया। सुधा उसे जाते हुए देखती रह गयी।

फिर वह बैठ गयी! मन भारी सा लगने लगा। दिल में दर्द होने लगा। यह अभी क्या हुआ सुधा – मनोरमा को सुजान ने थप्पड़ मार दिया! क्या मनोरमा कभी मुझे माफ कर सकेगी! अगर वह मुझें अपने यहाँ तीन सौ रूपये की नौकरी न देती तो वह मर गयी होती! कुछ भी हो मनोरमा ने उसे जीवन दिया है! भले ही उसे अपनी आत्मा बेचनी पड़ी। सुधा तू गलत सोच रही है मन में एक अदृश्य शक्ति

चीखी। अगर मनोरमा अपने यहाँ न ले जाती तो शायद अपने को बेच कर माँ के प्राण बचा लेती। मगर ऐसा कहाँ हुआ! यह सब भाग्य का खेल है।

हम रो लेने के सिवा और कर ही क्या सकते हैं। क्या तू मनोरमा के पास जायेगी। नहीं, अब उसे सुजान की बातों पर विश्वास करना चाहिए। आखिर उसने बहन कहा है न! तू मूर्ख है सुधा – मंदिर में भी एक व्यक्ति ने बहन कहा था। क्या उसने जो किया वह भाई का धर्म था! आज के युग में वचन की कोई कीमत नहीं सुधा – तू किसी भी कीमत पर भानू या सुजान पर विश्वास नहीं करेगी। हाँ यही ठीक रहेगा उसनें मन ही मन निर्णय लिया!

और तभी दरवाजें पर आहट हुई सुधा ने किवाड़ खोला तो सामने सुजान खड़ा था! उसकें हाथों में सड़ियाँ एवं खाद्य सामग्री थी!

सुधा कहाँ खों गयी – सुजान बोला।

आप कहाँ चले गये थे! सुधा बोली।

तुम्हारे पास बदलने को कपड़ा न हों – और हम कैसे भाई जो जिन्दा हैं। इसका यही कारण था कि हम अनजान थे मुझे माफ कर देना दीदी – कहतें कहतें सुजान की आँखें डबडबा आयीं।

दीदी, सुधा के हृदय में बिचित्र प्रकार की झंकार उठती चली गयी – आँखें खोल कर देखा सामने सुजान खड़ा था – उसका चेहरा पूर्णरूप से शान्त था, चेहरे पर सोचों की कहीं कोई परत नहीं।

सुधा – सुजान बोला – जब तक तुम कपड़ा बदल कर कुछ खा नहीं लेती तब तक हम यहीं पर बैठे हैं, कहतें हुए सुजान ने वे कपड़े सुधा की तरफ बढ़ा दिये! कंपकपाते हाथों से सुधा ने उन्हें पकड़ा।

○ ○ ○

पांच

आसमान के अन्तिम छोर पर सूर्य चमक रहा था। उसकी अंतिम किरणें जल एवं थल पर खेल रही थी! मंद–मंद वायु बड़ी मोहक लग रही थी! भानू जब सुधा के घर से निकला तो मस्तिष्क में विचारों की आंधियाँ चलने लगी एक तरफ तो सुधा की दयनीयता उसकी छाती फाड़ रही थी – तो दूसरी तरफ प्रधान का व्यवहार उसे पागल बनाये दे रहा था! क्या प्रधान सचमुच इतना बदल गया। उसे विश्वास नहीं हो रहा था! परन्तु वह खत जिसे प्रधान ने लिखा था झूँठलाया नहीं जा सकता था। तो क्या प्रधान इतना गिर गया! सोचते सोचते भानू का चेहरा तमतमा आया! सुधा की बेबसी पर तो वह फिर आँसू बहा लेगा – परन्तु घमन्डी प्रधान से एक बार मिलनें के बाद ही वह कोई हल देखेगा, जिससे सुधा का बीराना पन कुछ तो दूर हो सकें। वह कुछ तो खुश रह सकें, वह इसी उधेड़ बुन में था कि टैक्सी बताये हुए स्थान पर रुक गयी।

भानू ने चालक को पैसे दिये और फिर प्रधान के घर की तरफ बड़ गया, इस समय उसकें चेहरे पर तनाव था। दिल में आग जल रही थी! कालबेल बजानें पर भी जब किवाड़ नहीं खुला तो भानू एक दम आग बबूला हो गया, मारे क्रोध के चीख पड़ा! ठाकुर प्रधान – क्या मर गये। मैं कब से खड़ा तुम्हारा इंतजार कर रहा हूँ।

कौन है बेवकूफ – प्रधान चीखा फिर मनोरमा से बोला – खोलना ही पड़ेगा – सालें ने रंग में भंग कर दिया, बड़ बड़ाते हुए प्रधान ने किवाड़ खाल दियें, भानू तुम प्रधान के मुख से बरबस निकल गया।

पहचान लिया ठाकुर मैं तो सोचा शायद पहचनना भी भूल जाओं।

यह क्या बदतमीजी है भानू – प्रधान अपने को रोक न सका! बैठने को नहीं कहोंगे ठाकुर – भानू मुस्काया।

आओं बैठो कहता हुआ प्रधान पीछे हटने लगा और भानू बेधड़क अंदर चला गया। प्रधान मैं तुमसे कुछ जरूरी बाते करने आया हूँ, जिनका मेरे जीवन एवं मौत से सम्बन्ध है।

मैं जान सकता हूँ भानू – वह कौन सी बात है जो तुम्हें इतना परेशान कर रही है।

ठाकुर प्रधान – यह बात क्या छोटी है – मैं जानना चाहता हूँ तुम इतना बदल क्यों गये! याद करो प्रधान तुम तो भगवान की सत्ता में भी विश्वास नहीं करते थे। मुझे आश्चर्य हो रहा है नास्तिक प्रधान, ये कौन सी देवियों की तस्वीरे हैं, वासना तो तुम्हारे लिये कीचड़ थी – पतन का वर्त्म थी! इन नंगी फाहिशो की तस्वीर तुम्हारें घर में क्या आश्चर्य की बात नहीं हैं! मैं यहाँ कई बार आया परन्तु ये तस्वीरे कभी नहीं देखी हो सकता है मेरी आँखो की रोशनी कमजोर थीं, जिसके कारण दिखायी ही नहीं दिया – भवन के सिवा तुम ने अपनी लाश भी बदली है।

भानू होश में बात करों प्रधान चीख पड़ा।

चीखों मत ठाकुर प्रधान – हम जो कहनें आये है कह कर ही जायेंगे – तुम क्या तुम्हारा बाप भी मेरी जुबान बन्द नहीं करवा सकता। लाश का मतलब तुम्हारी शरीर है ठाकुर जिस पर पैंट सर्ट टाई शोभा पा रही हैं खद्दर का कुर्ता कहाँ फैक दिया।

मैं कुछ भी कर सकता हूँ भानू तुम्हें तड़फने की क्या जरूरत है – अभी तक मैं गलत था मनुष्य शरीर पाकर जिन्दगी का मजा नहीं ले सकें तो जीने से क्या फाइदा, मेरी भी अपनी रूचि हैं – कुछ भी करू तुम कौन होते हो कहनें वालें....।

वाह ठाकर तुमने तो कमाल कर दिया! जिन्दगी का मजा खोज रहे हो मैने तो सुना था – तुमने एक दिन जूता फैक दिया था! क्या वह भी मूर्खता थी!

नगें पैर चलने वाला मूर्ख नहीं तो क्या होगा – भानू मैं कहता हूँ वह सब भूल जाओं।

आप ने मुझसे कहा था – मैं शादी करुँगा ही नहीं! तुम तो नारी को बहुत हीन समझते थें!

वह मेरी भूल थी......भानू.....!

इसका मतलब सांवली की लाश भी भूल होगी। काले निशान बिखरे बाल खून के दाग – वह सब पागल पन रहा होगा प्रधान मुझे बहुत खुशी हुई गिरते गिरते आप संभल गयें। माँ जाह्ववी बहुत प्रसन्न होगी! प्रधान – इसके लिये भानू तुम्हें बधाई देता है!

तुम बधाई देने वाले कौन होते हो – हमारा तुम्हारा रिस्ता ही क्या है।

इसी को घमंड कहते हैं प्रधान – जिसमें मनुष्य को अपनी गलती दिखायी

ही नहीं पड़ती! दोष तुम्हारा नहीं प्रधान क्योंकि तुम पर इस समय शराब एंव वासना का नशा है! जिस दिन यह मद उतेरगा तुम्हें अपनी गलती का पता खुद चल जायेगा! तब तुम पाश्चाताप कर सकते और कुछ भी नहीं! मुझे भाषण देने की जरूरत नहीं भानू – तुम यहाँ किस लिये आये हो जल्द बोलों – हमें बाहर जाना है।

क्या अपनी प्रेमिका का परिचय बता सकतें हो – भानू ने चंचलता से कहा –

परिचय ही नहीं मिलवा देता हूँ कहते हुए प्रधान ने आवाज लगयी! परन्तु मनोरमा बाहर न निकल सकी!

क्या आप दीवाल को बुला रहे हैं – भानू मुस्करा पड़ा! ऐसा सुनते ही प्रधान खड़ा हो गया! ये शब्द उसके ह्रदय को चीरते चले गये! वह अपने को रोक न सका थोड़ी देर के बाद प्रधान के साथ एक युवती भी आ गयी! भानू अपलक उस युवती को देखता रहा – पैन्ट सर्ट, हेपी कट बाल गोरा रंग, नीली आँखें जो उसे घूर रही थी! भानू को याद आया उसे कहीं उसने देखा है मगर कहाँ वह गहरे सोच में डूब गया! सहसा उसके सामने सुधा का चेहरा घूम गया! यह तो वही लड़की है जो सुधा पर व्यंग्य करने में अग्रणीय थी। परन्तु यह सब कैसे हो गया! वह किसी निष्कर्ष तक पहुंच न सका – तभी प्रधान ने झिझोड़ा, देखा यही मेरी.......। हाँ कैसी लगी!

तो यही तुम्हारी प्रेमिका हैं, भानू के मुख से बरबस निकल गया!

हम दोनों ने शीघ्र ही शादी करने की सोच ली हैं। प्रधान बोला – परन्तु भानू उसका ध्यान दिये बगैर मनोरमा का निरक्षण कर रहा था! वह कुछ इस तरह बैठी थी कि सर्ट के खुले बटन के कारण उरसिज की मशाल दिष्टपात हो रही थी। ओंठो पर लाली – आधुनिकता की मूर्ति एंडवास युग की इस नारी को देखते–देखते भानू को नैतिकता का लाश दिखायी पड़ने लगी! चुस्त पैन्ट अर्ध पार दर्शी वस्त्रों में उसके जाँघों की गोलाई स्पष्ट दिखायी पड़ रही थी! मनोरमा के इस रूप को देखकर बरबस ही भानू की आँखे बंध हो गयी!

तुमने कोई जबाब नहीं दिया भानू – क्या मेरी पसन्द अच्छी नही ंलगी! प्रधान गर्व भरे स्वर में बोला....। परन्तु भानू मौन था जैसे उसने सुना ही नहीं, प्रधान हैरत बस भानू को झिझोड़ा, क्या सो गये – याद आया भानू ने मुस्काते हुए कहा – आप मेरी पसन्द चाहते है न, जरूर प्रधान ठहका मार कर हंस पड़ा!

जीवन साथी बनाने के लिए सबसे जरूरी चीज लड़की की सुन्दरता होती है। भाभी साहब सुन्दरता की मिशाल है। फिर तुम्हारा चुनाव गलत कैसे हो सकता है! लेकिन जहाँ तक मेरा अपना विचार है लड़की की सुन्दरता गौण रूप है मुख्य चींज दूसरी है इस आधार पर यह युवती आपकी पत्नी बनने के योग्य नहीं है। यह न तो माता जाह्ववी को खुश कर पायेगी न ही ठाकुर साहब को, जो नारी लज्जा छोड़ दे वह किसी की बहू तो नहीं कुछ और ही बनती हैं! मनोरमा कुछ कहती की इस से पहले प्रधान चीखा मैं चाहता हूँ तुम यहाँ से चले जाओ – कहीं मेरा हाथ न उठ जाये।

सच्चाई बुरी लगती है प्रधान मैं जा रहा हूँ – हाँ एक बात तो मैं भूल ही गया – यह कागज क्या तुम ने लिखा है।

हाँ यह मैने लिखा है – प्रधान चीख पड़ा....!

चीखों मत ठाकुर प्रधान – चीखना मुझें भी आता है – रही बात हाथ उठाने की वह भी उठाकर देख लों –

प्रधान क्रोध से लगभग पागल हो गया – उसका हाथ भानू पर पड़े की इससे पहलें भानू ने उसे पकड़ लिया। ऐसा गुस्ताखी नहीं करना प्रधान – अन्यथा हाथ काट कर फेंक दूगा। मुझे विश्वास नहीं था कि तुम इतने कमीने नीच भी हो सकतें हो, विश्वास घाती अगर मैं तुझे दोस्त न कहा होता तो आज तेरी कहानी खत्म कर देता! मगर मजबूर हूँ दोस्त जाते वक्त इतना कहूँगा कि इस समय तुम्हारा बुद्धि काम नहीं कर रही है। होश आने से पहले इस नागिन को भूल जाओं प्रधान यह नारी नहीं नारी जाति पर धब्बा है कहता हुआ भानू बाहर निकल गया।

○ ○ ○

प्रधान इतना बदल जायेगा मैनें कभी स्पन में भी नहीं सोचा था। वास्तव में आज के युग में विश्वास रह ही कहाँ गया – मुझे उस पर गर्व होने लगा था। उस दिन जब मेरा नाम काटा गया और प्रधान ने प्रिंसिपल साहब को मजबूर कर दिया। उनका फैसला स्थागित करा दिया। उस दिन से उसे मैं मन ही मन पूजने लगा था। देवता की कल्पना साकार हो गयी थी मेरे लिये परन्तु आज वही प्रधान कितना गिर गया सुजाान कहते हुऐ भी दुख होता है! जिसकी पत्नी बहुत सुन्दर हो दुनिया तारीफ करें और वह फूला न समायें ऐसे इंसान को आप क्या कह सकते हैं।

दुःख होता है भानू प्रधान ने हमारे साथ विश्वासघात ही नहीं किया है वरन्

उसनें खुद का पतन किया है! उसकी इतनी हिम्मत कहाँ जो हमारे तरफ आँख उठा कर देखें लेकिन फिर भी हमें सावधान रहना है! वह तुम्हारा दुश्मन बन गया है!

उसके व्यवहार में पशुता आ गयी है – भानू बोला यह मैं अचछी तरह देख आया हूँ! हाँ एक बात याद आयी वह युवती जो प्रधान की प्रेमिका है; एक बार उसे मैं पहलें भी देखा है, वह वही है जो सुधा का अपमान करनें में आगे थी, और मैंने जब अति देखी तो रणवीर की पीटाई कर दी थी! उस युवती का नाम मनोरमा है – जो नारी जाति पर कंलक है!

खैर वह कोई भी हो हमें उससे क्या लेना देना है! परन्तु प्रधान का पतन हमारे लिये सोचनीय है। परन्तु अब यह भी भूल जाओं भानू आखिर हमारा प्रधान से रिस्ता ही क्या है, हम अकारण क्यों परेशान होते है उसके लिये। एक बात सुनकर चौंकोगे भानू कल सुधा के यहाँ एक लड़की बड़ी बदतमीजी से पेश आयी! मैने आवेश में दो थप्पड़ भी मार दिये......! सुधा भी डर गयी थी! जब मैं आया था तो उसके चेहरे पर चिंता की रेखायें देखी थी! मुझे अपनी गलती का एहसास है!

अगर मार ही दिया तो सोचने की क्या जरूरत है सुजान ऐसी घटनायें सोचोगें तो जीना मुश्किल हो जायेगा।

फिर भी मन भारी सा लगता है! क्या करु भानू.....हाँ तुम्हें दीदी ने बुलाया था – परन्तु आये नही.....!

मौका मिला तो जरूर आँऊगा.....भानू बोला!

आज किसी तरह मौका निकाल कर आना मैं तुम्हारा इंतजार करूगा – कहता हुआ सुजान खड़ा हो गया!

रूको सुजान प्रिंसिपल साहब ने क्या कहा – आप ने कुछ बताया ही नही!

उन्होंने साफ–साफ इंकार कर दिया भानू बोले जब तक मैं इस कालेज में रहूँगा – भानू यहीं पर रहेगा.....।

लेकिन प्रिंसिपल साहब ने ऐसा क्यों कहा – भानू बोला।

यह तो मैं नहीं जानता परन्तु वे तुम्हारा कद्र करते हैं – सचमुच मैंने कोई सिफारिश नहीं की है।

इसका मतलब अभी सच्चाई कहीं–कहीं जिंदा है – अगर ऐसा न होता तो

शायद एक नयी मुसीबत आ जाती।

छोड़ो इन बातों को सुजान बोला अच्छा गुड़िया कैसी है भाई साहब तो बदलेगें नहीं भानू – चाहे कछ भी किया जाय।

जहाँ पर लोभ होता है, स्वार्थ होता है वहाँ प्रेम नहीं हो सकता सुजान! रामशरन के अन्दर लोभ की भावना बड़ी बलवती है, मुझे उस जायदाद से कुछ नहीं पाना है, फिर भी भाई साहब अंदर ही अंदर डरतें रहते हैं। उनका बस चले तो मेरी जान ले लें परन्तु क्या करें, बस चल नहीं रहा है। मेरे कारण अब भैया गुड़िया से भी घृणा करने लगे हैं – मैंने गुड़िया को बहुत समझया पर वह पगली मेरी एक नहीं मानती है। क्या करू सुजान उसका मोह अब मुझें भी सतानें लगा है। एक दिन गुड़िया ने मेरे हाथ से आधी रोटी छीन ली थी – परन्तु न जाने मैंने क्या कहा कि उस दिन से एक दम बदल गयी! अब तो विश्वास भी नहीं होता कि वह गुड़िया है! मानव स्वभाव कितना विचित्र है, एक प्रधान दूसरी गुड़िया दोनों ही मेरे लिये पहेली है, सुलझा नहीं पा रहा हूँ।

वास्तव में यह पहेली जटिल हैं – परन्तु यह बात गलत है कि सुलझेगी ही नहीं! परन्तु दुनिया को समझनें के लिये प्रकाश चाहिए। बिना प्रकाश के जीवन अंधकार मय है ऐसी स्थिति में वर्त्म पर कंकड़ पत्थर लगेगें, गिरगें और उठेगें, ऐसा तो होता ही रहेगा। परन्तु ज्ञान की शक्ति हमें दुःख से बचा लेती है। जीवन का उद्देश्य इस प्रकाश को खोजना हैं जो सब जगह होकर भी नहीं है। प्रकाश पाने के बाद मानव कभी पहली नहीं बनता भानू – एक बात ध्यान से सुनों आज सुधा के घर चले जाना! अगर हम नहीं जायेगे तो वह हताश हो जायेगी। हो सकता – आत्महत्या कर लें – इसलिये आलस्य नहीं करना। क्योंकि हम ही संसार में उसे थोड़ा धीरज बंधा सकते हैं। मैं तो उसे अपने घर लाना चाहता था, परन्तु वह तैयार नहीं हुई। मैंने भी उसे बाध्य नहीं किया परन्तु अकेले वह वहाँ रहे इसे मैं ठीक नहीं मानता इसलिये उसका ध्यान रखना। मुझें दरी हो रही है अच्छा कोई गलती हो तो क्षमा, सुजान मुस्काया था।

o o o

तू, मनोरमा किसी नागिन के समान फुंकार उठी! मानो सुधा को कचा चबा जायेगी – चेहरे पर ऐसे भाव दिष्टपात हो गयें।

सारी मनोरमा मैं तुम से क्षमा मांगने आयी हूँ वास्तव में भूल मेरी थी – तू

चाहे मुझें जो सजा दें दे मैं सब कुछ सहने को तैयार हूँ, पर सुजान का माफ कर देना उस ने जो किया वह उसका आवेश था।

सुधा मैं कहती हूँ तू यहाँ से निकल जा अन्यथा – मुझसे बुरा कोई नहीं होगा – तू बहुत नीच हैं कमीनी, जिस थाली में खाया उसे में छेद किया! तभी मोटर साइकिल रूकने की आवाज आयी शायद प्रधान होगा मनोरमा का चेहरा खुशी से नहा उठा – सचमुच वह प्रधान था – आप आ गये मनोरमा प्रधान के करीब पहुँच कर बोली।

वादा किया था न – प्रधान मुस्काया – तभी उसकी नजर सुधा पर पड़ी अरे यह कौन है मनोरमा – सहसा प्रधान के मन में उस युवती की तस्वीर घूम गयी – जिसकी सौ रूपयें मे उसने आबरू खरीदी थी। क्या यह वही है प्रधान गहरे सोच में डूब गया। आप क्या सोचने लगे तभी मनोरमा बोली – यह वही लड़की है जिसके कारण भानू ने रणवीर को पीट दिया था, मारे क्रोध के मनोरमा का चेहरा रक्तमयी हो गया।

सुधा का मस्तिष्क भी नाना प्रकार की शंकाओं से घिरा था, क्या यह व्यक्ति भानू से परचित हैं – आखिर मनोरमा ने भानू का नाम क्यों लिया – क्या यही व्यक्ति मेरी इज्जत.......बस इससे आगें वह कुछ सोच न सकी।

भय एवं आतंक प्रधान पर भी हाबी था, वह भी सोच रहा था अगर इस युवती ने मेरे बारे में मनोरमा को बता दिया तो, क्या होगा मनोरमा कभी मुझे माफ नहीं करेगी, तो मुझें इस युवती से....। हाँ हाँ यही ठीक होगा उसने निर्णय लिया फिर मनोरमा से बोला – इनका परिचय नहीं करोओगी।

मनोरमा हँस पड़ी नौकरों का परिचय नहीं कराया जाता – यह अपने को देवी समझती है एक युवक ने इन्हें बहन कहा तो इन्होंने सोचा वह इनकी जिन्दगी पार कर देगा। नौकरी छोड़ दिया – माँ मर गयी! माँ के मरने से भूख भी खत्म हो गयी थी। बस इसलिये नौकरी छोड़ दी – तीन सौ रूपये बाकी थे और उस गुंडे ने मुझे दे दिया। इसे बहन कहता था मगर पूछो इन देवी से क्या रिस्ता था इनका उससे, आज आयी है नौकरी माँगने – मेरे यहाँ खा–खा कर पहलवान बन गयी थी, अब देखों आँते चिपक गयी हैं! मैंने तीन दिन बर्तन खुद साफ किये अब दूसरी आया रख ली तो माफी मागनें आयी हैं।

मनोरमा तेरे जी में जो आये कह ले मुझें जितनी चाहें उतनी गाली दे दे,

लेकिन भगवान के लिये सुजान को गाली मत दो। मैं तुम से सुजान की गलती की क्षमा माँगनें आयी हूँ नौकरी माँगने नहीं। सुधा का स्वर भर्रा उठा था! भावावेश उसने मनोरमा के पैर पकड़ लिये मैं तेरा पैर पकड़ती हूँ मनोरमा – सुजान को माफ कर दें उसे नहीं पता था कि तू किसी कर्नल की लड़की है।

मारे गर्व के मनोरमा की छाती तनती चली गयी! इसका मतलब सुजान को मेरे बारे में पता चल गया इसीलिये तुझे भेजा है न.....।

मनोरमा यह सुजान कौन है प्रधान बीच में ही बोल पड़ा, क्या तुम उसे जानती हो......! मनोरमा प्रधान की ओर मुड़ कर बोली मैं सुजान को तो नही ंजानती पर वह भानू से परचित है सुजान ने मुझे धमकी देते हुए कहा था, काश अगर भानू होता तो मुक्ति पा चुकी होती।

मनोरमा ऐसा उसने कुछ भी नहीं कहा – वह तो क्रोध में.....! जिसकी मैं क्षमा माँग रही हूँ!

चुप हरामजादी – नौकर को अपनी औकात नही भूलना चाहिए – याद रखों सुधा मैं चाहू तो सुजान को जेल भेज सकती हूँ – समझी अगर बीच में बोली, तो ठीक नहीं होगा।

प्रधान के मस्तिष्क में ये शब्द शोर मजा रहे थें इसका मतलब इस लड़की पर सुजान एवं भानू की मेहरबानी है भानू इसे बहन कहता है अगर उसे पता चल गया तो प्रधान का दिल धड़कने लगा। कयार मन में छिपी शक्ति चीखी – अगर यह राज खुल भी गया तो वे तेरा कुछ बिगाड़ नही ंसकतें बड़े–बड़े लोगों से मेरे पिता का परिचय है जो देश के कर्णधार हैं मगर भानू–प्रधान के दिल में एक दहशत बनती चली गयी – इसी बीच नौकरानी चाय ले आयी – क्या सोचने लगे आप चाय पियों – मनोरमा प्रधान से बोली।

कुछ नहीं बस ऐसे ही मन भारी लगने लगा – प्रधान ने कहा और चाय उठा लिया, सुधा चुप चाप खड़ी थी।

चाय पियोगी, मनोरमा सुधा से बाली।

नहीं सुधा ने जबाब दिया।

क्यों जहर मिला है, अभी तक अच्छी लगती थी चाय, काफी, अमलेट, अरे तेरे बाप ने क्या कभी कुछ खाया पिया था।

मनोरमा जी में आयें वह मुझे गाली दे दो परन्तु बाप का नाम मत लों.....।

खामोश – निकल जा यहाँ से – नही मुझसें बुरा कोई नहीं होगा मनोरमा ने कहा – परन्तु सुधा खड़ी थीं! मनोरमा क्रोध से जल उठी आवेश में आकर सुधा का गला पकड़ कर धकेल दिया। सुधा मुँह के बल गिर पड़ी....! परन्तु उसकी परवाह किये बिना मनोरमा ने उसे उठा लिया, आया ने भी साथ दिया – दोनों ने मिलकर उसे बाहर फेंक दिया – सुधा जब लड़खड़ा कर गिरी तो दाई आँख के उपर एक कंकड़ धंस गया।

प्रधान में इतनी भी शक्ति नहीं रही कि उठकर विरोध करें – जब मनोरमा वापस आयी तो प्रधान ने कहा – यह गलत किया तुम्हें उसे मारना नही था।

तो क्या पूजा करनी थी, मनोरमा का जबाब था।

यह इंसानियत नहीं है – प्रधान ने कहा!

अगर मेरे साथ रहना है तो इंसानियत धर्म, पाप पुण्य का नाम भी मत लो – मनोरमा बोली.....!

मनोरमा तुम भूल कर रही हो – एक निस्सहाय नौकरानी समझ कर तुमने जिस पर हाथ उठाया उसका अपमान करके घर से निकाल दिया यही समझ कर कि वह गरीब है अनाथ है! उसकी माँ मर गयी, दो दिन काम पर नहीं आयी, तो इसमें उसका कोई दोष नहीं है। परन्तु आवेश में तुम वह कर गयी जिसे मैं भी सोच न सका – तुम्हारे लिये मैं इंसानियत छोड़ सकता हूँ परन्तु मुझे भय इस बात का है कि सुधा पर भानू की साया है! जानती हो भानू क्या है आग......। जिसे मैं बहुत करीब से देख चुका हूँ। अगर उसे पता चल गया कि तुमने सुधा पर हाथ उठया है तो वह तुम्हारे हाथ काट सकता है तुम कर्नल क्या, चाहे इस देश की प्रधानमंत्री की बेटी क्यों न होती। फिर भी वह डरने वाला नहीं है। सुजान के पास इतनी सम्पत्ति है कि तुम्हारे बाप को खरीद सकता है यही सोचकर मुझे चिन्ता हो रही है।

तुम मुझे डरवाना चाहते हो.....मनोरमा का तेज स्वर था दरअसल आज भी तुम्हारे अंदर भानू के प्रति प्रेम है! अन्यथा अब तक भानू इस कालेज मे दिखायी न पड़ता।

तुम समझती क्यों नहीं मनोरमा – मैनें तुम्हारें लिये सब कुछ किया परन्तु प्रिंसिपल साहब ने मेरी एक नहीं सुना हाँ अगर मैं छात्रसंघ को बीच में लाता तो

सुजान एवं भानू के सामने मुझे अध्यक्ष पद से त्याग पत्र देना पड़ जाता – तुम तो जानती हो सारे छात्र भानू की कितनी इज्जत करतें हैं फिर भला मैं क्या कर सकता था। प्रिंसिपल साहब एवं सारी कमेटी भानू का सम्मान करती है।

तुम्हें बहुत खुशी हुई होगी न, मनोरमा का व्यंग्य युक्त स्वर था आखिर मैं करता भी क्या प्रधान चीख पड़ा।

मुझे तुम से बहुत उम्मीद थी प्रधान परन्तु सब बेकार हो गयी। आज से यही अच्छा होगा कि हम एक दूसरे को भूल जाये – इसी में अब भलाई है।

मैं तुम्हें भूल नहीं सकता मनोरमा, प्रधान की आँखें डबडबा आयी, परन्तु मनोरमा उसका ध्यान दिये बगैर खिलखिलाकर हंस पड़ी, तुम बुधू हो प्रधान – फिर अपनी बाहें प्रधान के गलें मे डाल दी।

o o o

भानू के मस्तिष्क में एक ही प्रश्न कौंध रहा था, आखिर वह कौन है जिसने बहन शब्द की तौहीनी की है। भारतीय संस्कृति पर दाग लगाया है। अगर वह मुझे मिल जाय तो मैं उसकी बोटी–बोटी कर दूँ! क्या सुधा उसका नाम पता जानती है अगर हाँ तो क्यों छिपा रही है। शायद वह डर रही हो......या.......। सोचते–सोचते जब कुछ समझ में नहीं आया तो भानू को सहसा प्रधान की याद आ गयी। उस युवती की याद आयी, जो प्रधान की प्रेमिका थी! मुझे उससे मिलना है। चाहे कुछ भी हो – उसने अपने रूप के जादू से प्रधान को पथभ्रष्ट कर दिया है। मैं उस कमीनी को समझाऊगा प्रधान का रास्ता छोड़ दें नहीं हम उसे दुनिया से दूर भेज देगें, लेकिन उसका पता प्रधान जानता है – मुझे उस से मिलना होगा ऐसा विचार कर भानू खड़ा हो गया – और फिर प्रधान के घर की तरफ चल पड़ा।

एक घंटा बीता होगा उसे निरन्तर चलते हुऐ – सहसा वह चौंका कोई युवती बिहोश पड़ी थी। उत्कठा बस भानू तेज–तेज डग भरता हुआ उस यवती के करीब पहुँच गया। तभी बिजली चली गयी! यह युवती यहाँ पर कैसे आयी शायद किसी ने मार डाला हो.....शंका समाधान हेतु टार्ज निकल कर भानू ने जलाया! सुधा उसका मुख खुला का खुला रह गया। सुधा बेहोश है यह जान कर भानू को संतोष हुआ संयोग बस तभी उधर से एक रिक्शा गुजरा – भानु ने सुधा को उसी पर लिटाया और जल्द बाजी में घर की तरफ चल पड़ा। तभी न जाने क्यों, वह टार्च की रोशनी से चारों तरफ देखने लगा – तभी बिजली आ गयी।

सहसा भानू की नजर एक युवती पर पड़ी जो किसी को बिदा कर रही थी। दोनों को देखते ही उसकें मुख से निकल गया – प्रधान रिक्शा रोकों, रिक्शा रूक गया – भानू लगभग चीख पड़ा प्रधान सिंह.....! अपना नाम सुनकर प्रधान चौंका – अरे यह तो भानू की आवाज है फिर प्रधान ने मोटर साइकिल आगे बढ़ा कर भानू के सामने आकर रोक दी।

प्रधान भाभी साहब का यही घर है भानू बोला.....।

हाँ यही है प्रधान के मुख से निकल गया – और भानू उस नेमप्लेट को देखने लगा जिस पर अंग्रेजी में कर्नल सी.एच.अग्रवाल लिखा था – तो यही रहा मेरा निशाना भानू के मुख पर एक विषैली हंसी तैरती चली गयी।

तुम हंस रहे हो भानू – प्रधान बोला।

माफ करना ठाकुर आप की महबूबा या दिवानगी पर नहीं – मैं तो इस बदनसीब पर हंस रहा हूँ – भानू ने रिक्शा पर लेटी सुधा की तरफ उँगुली उठाया – देखों प्रधान जालिमों ने कितनी बेदर्दी से मार कर यहाँ फैंक दिया, आज भगवान का नाम लेना पड़ता है, मैं यहाँ न आ जाता तो शायद यह लाश मैं बदल जाती।

प्रधान कभी भानू को कभी उस युवती को देख रहा था, जिसे कुछ ही छणों पहलें मनोरमा ने बाहर फैक दिया था। अगर इसे पता चल गया तो क्या होगा, इसे पता ही कहाँ चलेगा प्रधान मन ही मन सोचता रहा फिर बोला मैं चलता हूँ मुझे देरी हो रही है – इसे किसी अस्पताल में दिखा देना – यह लो पैसे प्रधान ने सौ का नोट भानु की तरफ बढ़ा दिया –

भीख है अथवा ईनाम है ठाकुर भानू ने मुस्कुरा कर कहा – रख लो यह गन्दगी हम इस पर पोतना नहीं चाहतें.....। भानू तुम समझतें क्यों नहीं यह मैं तुम्हें थोड़े दे रहा हूँ मेरी तरफ से इसकी दवा में लगा देना।

आपको इसकी इतनी क्यों चिंता है ठाकुर अगर यह मर भी गयी तो क्या फर्क पड़ता हैं एक आबादी ही कम होगी।

नहीं प्रधान के मुख से निकल गया – और दूसरे पल मोटर साइकिल आगे बढ़ा दी।

कल तक मैं तुम्हारी बहुत इज्जत करता था प्रधान परन्तु अब तुम मेरे लिये मर चुके हो – बहुत दानी बनतें हो न – चलों भानू ने रिक्शा वाले से कहा। सुधा के

घर पर न जाकर भानू ने रिक्शा सुजान के घर की तरफ ले चलने को कहा।

भानू ने रिक्शा वाले को पैसा दिये – और सुधा को उठाकर सुजान के घर में प्रवेश किया। दरवाजा अलका ने खोला था......सुजान घर पर नहीं अलका ने ही बताया था........फिर भानू ने सुधा का परिचय दिया था।

अलका ने गौर से सुधा को देखा – कोई खास चोट नहीं थी – शायद दहशत के कारण बेहोशी छा गयी है। कहती हुई अलका उसकें माथे का खून साफ करने लगी। चेहरे पर बाल संवारते हुए बोली – एक दिन भैया ने मुझें इसके बारें में बताया था, मैंने ही कहा था – अपने घर ले आओ – परन्तु यह यहाँ रहना नहीं चाहती थी। हाँ आप ने ही इसका भइया ने परिचय कराया था।

इसका मतलब आप अच्छी तरह जानती है, इसी बदनसीब के कारण मैंने रणबीर की पिटाई की दी – जलती चिता से इसे मैने निकाल लिया था – परन्तु दीदी यह कैसी बहन है जो मुझे पर विश्वास नही कर सकी..।

आप शायद ठीक कहते है भइया – पर मनुष्य को एक बार ठोकर लग जाय तो वह सावधान हो जाता है....। हो सकता है किसी ने इसके साथ विश्वास घात किया हो – और इसने उस पर विश्वास किया हों......। कल्पना करो भैया इसकें हृदय पर क्या गुजरा होगा – अब आप ही बताये ऐसी स्थिति में अब यह विश्वास कर ही कहाँ सकती है....। दोष इसका नहीं है भैया, अब बाते करने से पहले इसे होश में आने दो हाँ इसका नाम क्या था याद नहीं आ रहा है...!

सु......सुधा – भानू बोला.......!

बहुत अच्छा है, अलका बोली – भानू प्रधान का क्या हाल है। वह तो बहुत बदल गया सुना है किसी लड़की से शादी करना चाहता है – क्या हम सब को एक दम ही भूल गया.....।

यह कोई अजीब बात नहीं दीदी परिवर्तन प्रकृति का नियम है, अब वह कहता है मैने जो पहले किया वह मूर्खता थीं। हमें भी आश्चर्य होता है इसलिये कि प्रधान जैसा युवक यदि भटक सकता है तो साधारण युवकों का क्या हश्र होगा...!

एक वह दिन था दीदी जब प्रधान कहा करता था! तुम बहुत भावकु हो भानू किसी भी प्रश्न का जल्दबाजी से समाधान कर लेते हो परन्तु वही प्रधान आज मुझसे घृणा कर रहा है। सामने पड़ जाता हैं तो सर नीचा कर लेता है। मुझें कोई

माँख नहीं दीदी, कोशिश करूगा शीघ्र ही उसे खत्म कर दूं जिसके कारण प्रधान डगमगा गया है।

खून करने का इरादा तो नही है.........अलका बोली.... ।

अगर जरूरत पड़ी तो वह भी कर दूंगा दीदी, क्योंकि अब मुझे किसी भी परिणाम का चिंता नहीं है – मैं मर भी गया तो क्या, पृथ्वी का भार ही कम होगा।

ऐसा नहीं कहते भानू – अलका बोली – तुम वास्तव में बहुत भावुक हो – प्रधान तुम्हारा क्या था। कुछ भी नहीं, सिर्फ अपनत्व हो गया था बस उसे हम भूल जायेंगे। प्रधान का हम से कोई रिस्ता नहीं जिसके लिये तुम खून करने तक सोच गयें, तुम ठीक कहती हो दीदी – शायद मैनें ही गलत कहा – छोड़ों इन बातों को देखों कब तक इसे होश आता है....। बिना होश आये, क्या पता इसके साथ क्या गुजरा है।

थोड़ा समय और लगेगा – कहती हुई अलका सुधा के पैर के तलवे मलने लगी! मुख पर चिन्ता की रेखायें विद्यमान थी! थोड़ी देर की प्रतिक्षा के बाद सुधा ने आँखें खोली – एक दम लाल निस्तेज....! दूसरे क्षण उसके मुख से निकल गया मैं कहाँ हूँ!

तुम जहाँ हो ठीक हो...अलका बोली.... ।

तुम कौन हो....सुधा ने चौंकते हुए कहा।

मैं भानू हूँ सुधा – कहता हुआ भानू एक दम सुधा के करीब पहुँच कर माथे पर हाथ रख दिया।

भैया तुम यहाँ कैसे आ गये – यह कौन है – सुधा उठने को उद्यत थी।

सब कुछ बताता हूँ सुधा, भानू ने एक गहरी सांस ली, तुम मुझें बेहोश मिली थी, यह संयोग था कि मैं वहाँ पहुँच गया और तुम्हें यहाँ ले आया! ये अलका दीदी हैं, मेरा मलतब सुजान सिंह की बहन....। आज सुजान भैया बाहर गये हुये हैं।

भैया मुझे माफ कर दो, मैं तुम पर विश्वास न कर सकी। इसी कारण आज तक इतनी मुसीबतें सहनी पड़ी मुझे माफ–हुश् पगली – भानू ने उसे झिटक दिया – माफी माँग कर मुझे शर्मिदा न करों मेरी बहन...।

सुधा तू आराम कर ज्यादा बोल मत – अलका सुधा के बालों को सहलाती हुई बोली.....अब तू यहीं रहेगी सुधा – यह भानू भैया का फैसला है। यदि तू माफी

बिना गलती के ही माँग रही है तो बस इतना कह दे, यहीं मेरे पास रहेगी।

आप लोगों के सिवा इस दुनिया में मेरा कौन है मैं इंकार कहाँ कर सकती हूँ! कहते कहते सुधा की आँखे भीगती चली गयी...।

तू रोने लगी....... अलका उसके उमड़ें हुए आँसूओं को पोछते हुऐ बोली, जब तुझे भानू जैसा भाई मिल गया तब रोने की क्या जरूरत है। जो हुआ सब भूल जा सुधा हम तेरे लिये खुशी की तलाश करेगें! आराम कर मैं अभी आती हूँ! कहती हुई अलका उठ गयी और भानू फटी–फटी आँखों से उसे देखता रह गया! मानों कुछ खोज रहा हों।

क्या सोच रहे हो भइया – सुधा बोली!

सुधा तेरे दिल में क्या मेरे लिये इतना प्यार है जितना सगे भाई से होता है.....।

आप के प्रश्न का उत्तर शब्दों में नहीं दे सकती भैया! काश अगर समय आया तो बता सँकूगी – कि मेरे दिल में क्या है! फिर भी आप को सगा भाई से कम नहीं समझती!

सुधा इतना स्नेह करती हो मुझसे तो झूठ नहीं बोलना मैं जो पुछूगा उसका सच–सच उत्तर देना – तुम्हे मेरी कसम सुधा – उसका नाम बता – जिसने तेरी जिन्दगी में विष घोला है। जिसने तेरी आबरू....कहते–कहते भानू का चेहरा विकृति हो गया – और आज किसने तुम पर हाथ उठाया और क्यों मैं जानना चाहता हूँ किसकी मौत आ गयी है जिसने आग से खेला है।

भानू का चेहरा देख कर सुधा का ह्रदय कांप गया। अगर उसने सच बोल दिया तो........बहुत बुरा हो जायेगा निःसंदेह भानू मनोरमा का खून कर देगा, नहीं वह मन ही मन सोच कर बोली भैया मैं उसका नाम नहीं जानती, पहचानती हूँ एक बार मिला भी था, परन्तु मुझे देखकर रास्ता काट गया–विश्वास करो भैया हमें जैसे उसका पता चला आप को बता दूँगी, और आज मैं उसी के यहाँ गयी थी, जिसके यहाँ बर्तन साफ किया करती थी शायद सुजान ने आप को बताया होगा मैने उससे क्षमा माँगी थी परन्तु उसनें हमें धक्का मार कर घर से बाहर निकाल दिया। और मैं भय के बस बेहोश हो गयी–अगर आप न आ जाते तो शायद प्राण भी निकल जाते।

ओह भानू ने एक गहरी सांस ली – अच्छा तुम्हारी मलकिन का क्या नाम

है सच बोलना सुधा..... ।

मनोरमा, वह मलकिन की बेटी हैं.....बहुत घमण्डी है उसे ने मेरी यह दशा कहते–कहते सुधा कराह पड़ी..... ।

उसके बाप का नाम तो जानती हो न....भानू ने प्रश्न किया।

सी.एच. अग्रवाल वे कर्नल है भइया सुधा बोली.... ।

कर्नल अग्रवाल भानू ने भावावेश में अपने ओंठ काट डाले खून सुधा ने भानू के ओंठ पर अपने हाथ रख दिये परन्तु उसकी परवाह किये बिना भानू ने सुधा के केश चूम लिये, हाँ कुछ रक्त अब सुधा के बालों में लग चुका था। तम पर रक्त, बरबस भानू मुस्करा पड़ा – सुधा कुछ कहती इस से पहले अलका वापस आ गयी – उसके हाथ में दूध का गिलास था।

० ० ०

नीले बल्ब की रोशनी में मनोरमा ने नाइटी पहना और लेट गयी न जाने क्यों उसके दिल में एक तूफान चल रहा था। प्रधान उसके पीछे इतना पागल हो जायेगा उसने कभी सोचा भी नहीं था, रणबीर उसे कई बार कह चुका था कि अब उसे प्रधान से मिलने की कोई जरूरत नहीं परन्तु वह मिलती थी। उसे खुद भी हैरानी होती – आखिर ऐसा क्यों हो रहा है परन्तु वह किसी निष्कर्ष पर पहुँच न पाती।

यदिप उसके दिल में प्रधान के प्रति प्यार नहीं था – परन्तु उसके उपर न जाने क्यों तरस सा आने लगा था। इन्हीं विचारों में बड़ी देरे तक उसे नींद नहीं आयी! सहसा सारा कमरा तेज रोशनी से नहा उठा चौंक कर मनोरमा चारों तरफ देखने लगी परन्तु कुछ नजर नहीं आया। वह एक दम भयभीत हो गयी फिर वह रोशनी खत्म हो गयी। फिर उसे किसी के पद चाप सुनायी पड़े.......वह कुछ सोच पाती की एक परछाई ने बल्ब बंद कर दिया – कमरे में भंयकर अधेरा फैल गया मनोरमा के मुख से घुटी घुटी चीख निकल गयी – तभी पहलें जैसी रोशनी हो गयी! मनोरमा मानो जड़ हो गयी एक दम उसके करीब सर पर भानू खड़ा था!

तुम – मनोरमा के मुख से निकल गया!

हाँ मै – भानू गम्भीर था।

आखिर तुम मुझसे क्या चाहते हो – और यह रोशनी......?

धीरे बोलो मनोरमा यह रोशनी कोई अजीब चीज नहीं है..... | बल्ब ही है – परन्तु तुम इतना डर गयी कि बल्ब की रोशनी भी पहचान न सकी भानू ने बल्ब की तरफ उँगुली उठायी मनोरमा के मुँह से बरबस आह निकल गया – बड़ी मुश्किल से वह अपने को सम्भालते हुऐ बोली.....! आखिर तुम यहाँ कैसे आये! क्या करने आये हों!

तुम्हारा खून करने, भानू ने लापरवाही से कहा – अगर तुम्हे अपनी जान प्यारी है तो मेरे सवालों का जबाब एक दम ठीक दोगी हाँ अगर झूठ बोली तो तुम्हारी चीख आज सदा के लिए खत्म कर दूंगा।

मैं सच–सच बताने को तैयार हूँ मनोरमा रो पड़ी..... | ''प्रधान से तुम्हारा क्या सम्बन्ध है उसे पथ भ्रष्ट कर के तुम्हें क्या मिला – और सुधा उस पर हाथ उठा कर तुमने मौत को ललकारा है.....! तुम्हें इन सवालों का जबाब देना है...... |

मैं उसका परिचय बताऊगी भइया – पहचानती हूँ परन्तु नाम सोचते–सोचते भानू का चेहरा विकृति होता चला गया! तुम ने हमारे सवालों का जवाब नहीं दिया मनोरमा.......भानू चीखा पड़ा.....! परन्तु मनोरमा मौन थी!

जबाब दे कर्नल की औलाद.......यह मैं अंतिम बार कहता हूँ......! भानू बोला.....!

मनोरमा मौन थी! और भानू क्रोध से पागल हो गया। मनोरमा का गला पकड़ कर दबाना शुरू कर दिया, और वह हाथ पैर मराने लगी। सहसा भानू के हृदय में दया का सागर हिलोर लेने लगा – और उसका कसाव कम होता चला गया! अगर जिन्दा रहना चाहती हो तो मुँह खोल दो मनोरमा, अन्यथा आज मैं तुम्हे चिर निद्रा की गोद में सुला दूंगा, ये मेरे अंतिम शब्द हैं!

मैात का तांडव मनोरमा के सामने घूम गया! फटी–फटी आँखों से वह भानू को देखनी लगी जो दृढ़ इरादा लिये खड़ा था। मरने के भय से उसे मुँह खोलना पड़ा, मुझे छोड़ दो मैं सब कुछ बताने को तैयार हूँ।

भानू ने मनोरमा के गले से हाथ उठा लिया मनोरमा बोली मुझे कर्नल आनन्द एवं रणबीर ने इसके लिए मजबूर किया कहते–कहते मनोरमा की आंखों से आँसू गिरने लगें।

मनोरमा त्रिया चरित मत दिखा! साफ–साफ बता तेरी क्या मजबूरी थी।

जिसके कारण तूने इतना नीच काम किया। सुधा को जलील करने की क्या मजबूरी थी....अगर गोलमोल बाते की तो....मैं वह जीव नहीं जो किसी युवती को देख कर आह भरू...... प्रधान के समान तुम्हारी गोरी चमड़ी पर मर मिटू जबाब दो.....भानू का स्वर तेज था।

रणबीर ने प्रेम का ढोंग करके मेरी कुछ तस्बीरें खीच ली भानू जिसके बदलें मुझे यह सब करना पड़ा—फिर इस माहौल में रहते—रहते अहम् हो गया, जिसके कारण सुधा के साथ अमनवीय व्यवहार कर डाला.।

मुझे तुम्हारी बातों पर विश्वास नहीं होता तुम झूठ बोल रही हो मनोरमा भानू बोला.....।

मैं आप को वे फोटो दिखाती हूँ प्लीज थोड़ा उठने दो मनोरमा ने याचना भरे स्वर में कहा'' फिर खड़ी हो गयी और भानू पीछे मुँह कर लिया।

पीछे क्या देखते हो......मनोरमा हैरत बस बोली।

जिस नारी ने मुझे पैदा किया उसे मैं इस तरह नहीं देख सकता.....आखिर तुम ऐसे कपड़े क्यों पहनती हो जिसमें वासना की कीर्ति एवं पवितत्रता की लाश है — अगर तुमने उर्वशी का अभिनय किया तो मैं अर्जुन तो नहीं बन सकता, परन्तु खूनी जरूर बन जाऊँगा।

मनोरमा के दिल में एक हलचल सी हुई न जाने क्यों भानू की बातें उसके हृदय को भेदती चली गयी। फिर एक क्षण बाद वह दर्द जानें कहाँ चला गया मुख पर एक मुस्कान उभरी जिसे भानू देख न सका, फोटो लाने के बहाने मनोरमा बाहर निकल गयी। भानू कुछ समझता इससे पहले किवाड़ बंद हो चुके थे। रात की गहरी निस्तब्धता में मनोरमा की चीख चोर, चोर चारों तरफ गूंज गयी, फिर भारी बूटों की आवाजों से वातावरण गूंज उठा!

भानू घबरा गया था, सहसा किवाड़ खुला कर्नल अग्रवाल आगे बढ़े उनके हाथ में रिवाल्वर था। कर्नल साहब के पीछे—पीछे कई संतरी थे। जिन्हें देख कर भानू गहरे सोच में डूब गया।

बांध दो इसें कर्नल साहब बोलें —

भानू का ध्यान मनोरमा की तरफ था जो अब तक नहीं आयी थी। संतरी ने बड़ कर भानू का हाथ पकड़ना चाहा परन्तु भानू झटक दिया! मैं यहां चोरी करने

नहीं आया था। चींख पड़ा भानू! कर्नल साहब ठहाका लगा कर हंस पड़ें फिर इतनी रात को मेरे घर क्या रामायण पड़ने आये थे। अरे तुम लोंग खड़ें क्यों हो बांध दो इसें....! मैं अभी पुलिस को बुलता हूँ! कह कर कर्नल साहब फोन नम्बर मिलने लगें! तभी कर्नल आनन्द रणबीर और मनोरमा भी आ गये यह खबर मनोरमा ने आनन्द तक पहुंचायी थी। गुड नाइट फोन को रखते हुए कर्नल साहब बोले – आज हमारे लिये खुशी की बात है मछली खुद जाल में फंस गयी – अभी पुलिस आने वाली है। आप लोग जो देख रहे हैं बयान देना आखिर हमारी बात इंस्पेक्टर साला कैसे नहीं मानेगा। ये बाते हो रही थी कि पुलिस सायरन की आवाज गूंज गयी। लो पुलिस भी आ गयी रणबीर ने कहा..... ।

पुलिस से पहले मैं पूछता हूँ....यहाँ क्या करने आये थे.....कर्नल आनन्द ने भानू के कंधे पर हाथ रखकर कहा।

हाथ हटा लो कर्नल – कहते हुए भानू ने आनन्द का हाथ झिड़क दिया, मैं यहाँ खून करने आया था, परन्तु दया आ गयी – साला हाथ काँप गया कहता हुआ भानू हाथ मलने लगा।

किसका खून करने आये थे मिस्टर भानू – आनन्द ने कहा..... ।

आप के इक लौते बटे रणबीर का परन्तु भाग्य में शायद उसकी मौत अभी लिखी नहीं! क्यों मनोरमा, जानते हो हमारी क्या हस्ती है, आनन्द बोले.... । भानू के अधरों पर मुस्कराहट तैर गयी हस्ती तो हाथी की बहुत बड़ी होती है साहब यह दूसरी बात है कि एक चीटीं भी उसे खत्म कर देती है, आज तुम खुशी बना लो, गाली जी भर कर दे लो, परन्तु हम ने जो गलती की है उसे दुरूसत करुगा, देवि मनोरमा... ।

समय को क्यों बरबाद करते हो आनन्द आओं इंस्पेक्टर पूछ लो इससे इतनी रात को यहाँ क्या करने आया था। थानें में पूछूगा साहब – कहते हुए इंस्पेक्टर ने भानू के हाथ में हथकड़ी लगा दी।

o o o

अलका की नजर समाचार पत्र के उस लाइन पर अटक गयी एक चोर कर्नल के घर पकड़ा गया। जिज्ञासा बस पढ़ने लगी...! भानू का नाम पड़ते ही वह बुरी तरह चौंक गयी। तभी सुजान ने पुकारा सुधा की तबियत कैसी है दीदी! परन्तु

अलका कोई जवाब देने से पहले सुजान के पास वह समाचार पत्र लेकर पहुंच गयी। क्या बात है दीदी – सुजान हैरान होकर बोला भानू को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया भइया..।

नहीं सुजान के मुख से घुटी–घुटी चीख निकल गयी! कहीं सपना तो नहीं देखा दीदी....।

यह तो अखबार मे लिखा है खुद पढ़ लो....सुजान पढ़ता चल गया चेहरे पर दुःख की रेखायें बनती चली गयी तभी सुधा भी वहाँ आ गयी! क्या सचमुच दीदी भानू को पुलिस ने पकड़ लिया। सुधा हैरत बस अलका का मुख देखती रह गयी।

मैं जाता हूँ सुधा – अलका तुम यहीं पर रहों देखता हूँ कि भानू ने क्या गुनाह किया है! हाँ खून उसने नहीं किया है यह हमारे लिये धीरज की बात है।

आप शीघ्र आना भइया – अलका ने कहा''। और सुजान बिना किसी प्रतिवाद के बाहर निकल गया।

जब सुजान थाने पहुँचा तो वहाँ आनन्द एवं सी.एच.अग्रवाल मौजूद थे। दोनों का चेहरा फूल के समान खिला था थाने में सेना के दो अधिकारी देखकर सारे पुलिस कर्मी हतप्रभ थें। इंस्पेक्अर कह रहा था – मैं पूरी कोशिश करूगा कि उसे कड़ी से कड़ी सजा मिल सकें...! यदि आप लोग चाहते है तो इसे किसी कत्ल के केश में दिखाऊगा मेरा वादा रहा अगर फाँसी नहीं तो आजीवन करावास धरा–धराया है।

हमें तुम से यही उम्मीद है बेटे – कर्नल आनन्द ने कहा यदि तुम ने भानू को इतनी सजा दिला दिया तो हम तुम्हारी इच्छा पूर्ण कर देगें – कहते हुए कर्नल साहब मुस्करा पड़ें – आज शाम मेरे यहाँ डिनर पर आना मंजूर है न...।

इन्कार कब है साहब – इंस्पेक्टर ने कहा।

आप लोग बड़ें आराम से जायें! हमारी वफादारी में जरा भी कमी नहीं आयेगी....। नमस्कार साहब....।

ठहरों मेरे देश के वफादारों–एक निर्दोष व्यक्ति को फाँसने में क्या तुम्हें जरा भी शर्म नहीं आती। चुप लड़के इंस्पेक्टर का स्वर तेज था – आनन्द भी चौक पड़ा था यह यहाँ कैसे आ गया। तुम लोगों की एक–एक बात मैने सुन ली है। ज्यादा मैं नहीं कहूँगा – मुझे भानू से मिलना है....! वह मेरा दोस्त है – मुझे इस बात

का आश्चर्य है कि भानू ने यह कार्य कैसे कर डाला – उसे मैं अच्छी तरह जानता हूँ, सुजान की बाते सुने बगैर आनन्द एवं अग्रवाल उठ गयें।

ये कौन थे इंस्पेक्टर सुजान ने पूछा था!

फौज के कर्नल हैं – इंस्पेक्टर ने कहा – इसलिये हाँ में हाँ मिलाना पड़ा! क्या करू कभी–कभी वह भी करना पड़ता है, जिसे हम सोचना भी नहीं चाहतें...! मैंने जो कहा कुछ ऐसा ही था बेटे.....!

भानू कहा है – सुजान ने पूछा?

उसे सुबह ही जेल भेज दिय गया है क्या करू ऊपरी दबाव के कारण कुछ नहीं कर सका – मेरे दिल में उस लड़के के प्रति आदर था।

क्या आप उसे जानते थे सर?

हाँ – बेटे अच्छी तरह.....!

फिर आप उसे जेल....।

यही तो रहस्य है बैटा...! हम चाहते क्या हैं होता क्या है! चाहने से इस दुनिया में कुछ नहीं होता बेटा..... मैं भी नहीं चाहता था कि उसे जेल भेजू.....! परन्तु ममता कयार बना देती है वासना पौरष को खत्म कर देती है, यही कारण हम चाह कर भी कुछ कर न सकें.....।

मैं आप की बातों को समझ सकता हूँ सर जीवन भावकुता पर नहीं रोटी पर आधारित हैं रोटी पाने के लिए कुछ न कुछ बेचना पड़ता है मेरा मतलब आदर्श, श्रम आत्मा आदि आदि। यह दुनिया व्यापार हैं सर सब कुछ बिक जाता है – इस बाजार में बिकनें वालों की सबसे बड़ी कमजोरी ममता है क्या आप यही कहना चाहतें हैं।

तुमने एक दम ठीक समझा बेटे....।

क्या ममता बढ़ा कर इसका अंत नहीं हो सकता – ममता और स्वार्थ में क्या भिनन्ता है सर...।

ममता से बचने के लिये एक ही उपाय है कि आँखे बंद कर लिया जाय! लेकिन तब जब ममता रूपी बीज में अंकुर न फूटने पायें – अगर अंकुर हो गया तो यह पौधा बड़ा अजीब है दुनिया के पौधे बिना पानी के सूख जाते हैं। परन्तु यह, जितना ही पानी कम करके इसे सुखाना चाहोगें उतना ही हरा होता जायेगा। यह

अंकुर जब छोटा पौधा बन जाता है – पत्तियाँ निकल आती हैं – तो उसके टूटने पर हमें दुख होता है, हम सदा इसे हरा भरा बढते हुऐ देखना चाहते हैं! बस यही स्वार्थ है! ममता का बढ़ता हुआ रुप स्वार्थ में बदल कर मानव की कामनाओं को बढ़ता है! कामनाओं में फंसा मनुष्य कभी तटस्थ नहीं होता हमारे ख्याल से तुम्हारे सवाल का यही जबाब है।

आप तो दर्शन जानतें है सर इस लिये मैं अब कुछ कहना अच्छा नहीं समझता भानू के प्रति मेरे मन में ममता नहीं आदर है! वहीं भावना हैं जो बड़ों के प्रति होनी चाहिए। उम्र में शायद वह मुझसे कम है। परन्तु आप अभी जो बाते कहीं हैं वह उसका रूप हैं। बस इसी कारण मैं उसका आदर करता हूँ! मैं जानता हूँ वह कर्नल के घर क्यों गया! जरूर ही उसे किसी की आह सुनायी पड़ी होगी विश्वास करो सर वह बहुत भावुक है। उसकी भावकुता ने उसे फँसा दिया! मैं आप से यही निवेदन करूगा कि झूठ छोड़कर सत्य का साथ करना, आप अपना फर्ज न भूलें झूठ का आवरण भानू पर नहीं पोतना.....।

आप विश्वास रखे बेटा – भागवान बहुत शीघ्र ही तुम्हारे दोस्त को बा इज्जत रिहा कर देगा.....।

भगवान करें ऐसा ही हो – वास्तव में आप जैसे व्यक्तियों की हमारे देश में कमी है....।

यह कैसे कह सकते हों बेटे – किस आधार पर....। छोटी सी उम्र का यही तजुर्बा है सर.....जहाँ तक मैने देखा हैं धर्म का दिखलावा वही करतें हैं जो अमीर हैं। गाँधी जी ने अहिंसा को सर्वोपरि धर्म कहा था, परन्तु यह अहिंसा क्या हैं, क्या किसी का खून करना ही हिंसा है.....! नहीं अहिंसा का सच्चा अर्थ दया रूपी फूल है छमा उसका फल है! अब बगैर छमा दया के अहिंसा रूपी वृक्ष में नया सृजन कैसे होगा। एक तरफ माँस दूसरी तरफ राम की तस्वीर बड़ों लोगों के भवनों की शोभा सारी सर फिर मिलेगें कहता हुआ सुजान बाहर निकल गया।

o o o

छः

अस्ताचल का सूर्य अस्त होने से पहलें काले बादलों की गोद में समा गया जिसके कारण समय से पहलें अंधकार घिर आया जेल की उच्ची–उच्ची दीवालें इस अंधकार में खोती चली गयी। मानों स्याह की परत उन पर भी अपनी विजय का बिगुल बजा रहीं हो, धीरे धीरे निशा का साम्राज्य चारो तरफ छा गया।

फटे हुऐ दो कम्बल भानू उन्हें देखता रहा जिसे उसे अभी दिया गया था! साले कबाड़ी के दुकान के होगें मन ही मन वह बड़बड़ाया था! फिर वह उन सब को देखनें लगा जो उसकें समान बंदी थें– जिन के मुख पर निराशा की लकीर कमलों में लिपटे हुऐ ठिठुर रहें थे। उनकी दीन अवस्था देख कर भानू का मन मरता चला गया। उसी पल घंटी की आवाज सूनी वे कमलों में लिपटे व्यक्ति एक–एक तसला लेकर चल दियें। खाने जाते होंगे–भानू ने मन ही मन सोचा था। फिर एक लम्बी साँस लेकर रह गया। धीरे धीरे कर के सब चलें गये तनहा वह भारी बैरिक में रह गया। बैरिक में गहरा अंधकार छा गया– क्योंकि जलती हुई एक मोमबत्ती बुझ गयी। तभी किसी के खाँसनें की आवाज गूंजी कोई खा कर आ गया था तसला की आवाज खड़की थी फिर उसने दिया सलाई जलाई पीली रोशनी चारों तरफ फैल गयी। फिर वह व्यक्ति भानू की तरफ बढ़ा पास आकर बोला बिरादर खाना खा लिया– भानू को गुस्सा तो बहुत आया परन्तु कुछ बोल न सका शायद इस वातावरण में अपने को मिलाना चाहता था, इसलिये सिर्फ नहीं कहा था। तभी उस व्यक्ति ने दूसरी तीली जलाई भानू ने देखा वह तसला उठा रहा था।

चलों हमारें साथ तुम्हें खाना दिलवातें हैं उसने कहा, न चाह कर भी भानू उठ गया। आगे आगे वह बूढ़ा चल रहा था तसला उसी के पास था! यहाँ खाना मिलता है! दिन के दो बजे रात के आठ बजे बूड़े ने कहा, हाँ कल साहब से कह कर तसला ले लेना।

भानू जैसे सुना ही नही। वह तो उस काली इमारत को देखने लगा जो धुंवा से एक दम बिगड़ गयी थी! कई आदमी जानवरों के समान मुँह चला रहें थें!

मुंशी जी यह आज आया है–खाना दे देना बूढ़े ने कहा क्या करकें आया है मुंशी जी बोले!

चोरी भानू के ओंठो पर एक जहरीली मुस्कराहट तैरती चली गयी।

अपने बाप का माल समझा होगा न, जानें क्यों तुम जवान आदमी चोरी करतें हो क्या मेहनत करते शर्म आती है, इन बातों को छोड़े मुंशीजी बेचारा भूखा है खाना दिलवा दो बूड़े ने तसला बड़ाते हुए कहा।

बदलू इसे खाना दे दो मुंशी जी बोले।

खा कर आ जाना, कहता हुआ बूढ़ा चला गया, रोटी का एक टुकड़ा भानू ने मुख मे डाला ऐसा जान पड़ा मानों वह मिट्टी की रोटी है। एक दम मिट्टी जैसा स्वाद था भानू को उबकायी सी आ गयी। क्या हुआ मुंशी जी बोल पड़े, रोटी भानू ने सिर्फ इतना ही कहा था।

अच्छी नही लगी गलें में अटक गयी मुंशी जी बोलें।

परन्तु भानू बिना प्रतिबाद के उठ गया! पीली रोशनी में उसने वह तसला उठाया और चल दिया! थोड़ी दूर आकर रोटी फैक दी दाल भी उडेल दी! सिर्फ ठंडा पानी पिया था, परन्तु वह भी मानों उसके लिये अपना शीतल पन खो चुका, तसला धोया और बैरिक के तरफ चल दिया! ये लोग यहाँ कैसे जीते हैं भानू मन ही मन सोच रहा था! इसका मतलब सचमुच जेल बड़ी भयानक है सोचते हुऐ उसनें आँखें मून्दी परन्तु नींद को उस पर तरस नहीं आया, भूख लगी हो तो नींद भी नहीं आती। इसका उसे कई बार अनुभव हुआ था।

आज होली है न सहसा भानू के ह्रदय में यह वाक्य कौंधता चला गया गुडिया की तस्बीर घूम गयी। भूख उसदिन भी तो लगी थी। परन्तु ऐसा कहाँ हुआ था। गुडिया कितनी परेंशान होगी जब उसने मेरे बारे में सुना होगा शायद दिन भर रोती रही हो। बेचारी ने खाना भी नहीं खाया होगा सोचते–सोचते भानू की आँखे नम हो गयी......।

तू मुझे माफ कर देना गुड़िया! मैं तुझसे कैसे मिल सकता हूँ! अगर यहाँ से छूट भी गया तो अजीवन तुम्हें मुँह नहीं दिखाऊगा मैं नीच हूँ विश्वास घाती हूँ मुझे भूल जाना गुड़िया! फिर उसे सुधा की भी याद आयी – कितनी बदनसीब थीं! भाग्य ने सब कुछ छीन लिया – जिस के पास बदलने का कपड़ा न हो – वह सुधा आखिर कैसे जिंदा रही! किसी ने ठीक ही कहा है मांगने से मौत भी नहीं मिलती। अब उसका क्या होगा कुछ नहीं भानू दिल से आवाज आयी, अलका एवं सुजान उसकी देख भाल कर रहें होगें – परन्तु मेरे बारे में क्या सोचते होंगें। शायद उनकी धारणा गलत हो जाये, तब हम गिर जायेगें बहुत नीचें।

ऐसा नहीं होगा भानू – उसकी आत्मा से आवाज आयी! दुनिया कुछ भी सोचे परन्तु सुजान कभी विश्वास नहीं करेगा...। यह गलत ख्याल है भानू प्रधान को भी यही कहा करते थें। परन्तु आज वह कितना बदल गया है, क्या यही विश्वास का रूप है। सोचते सोचते भानू का मस्तिष्क दर्द करने लगा फिर उसें नींद आ गयी – आँखें खुली तो सबेरा हो चुका था।

अभी तुम उठे नहीं वही बूढ़ा खड़ा था।

रात को नींद देर से आयी भानू ने जबाब दिया। यह घर नहीं जेल है बूढ़ा मुस्करा उठा यहाँ काम करना होगा बारात में नहीं आये हों। भानू ने उस व्यक्ति को देखा जो कूरता पूर्ण ढंग से मुस्करा रहा था।

क्या देख रहा है लड़के मैं बैरिक इंजार्ज हूँ यदि बदतमीज की तो तुम्हारी शिकायत दरोगा जी को करनी पड़ेगी....।

क्या यहाँ कोई दरोगा भी रहता है भानू ने हैरत बस कह दिया.....।

मैं कहता हूँ उठ जा! यहाँ पर वही अनुशासन है जो सेना में होता है। तुम भूखे मर जाओं कह नही सकतें, जो आदेश दिया जायेगा उसे हर कीमत पर पूरा करना होगा।

जिसे देश में ऐसा अनुशासन हो वह देश कितना महान होगा, कहता हुआ भानू खड़ा हो गया....!

तुम अनुशासन का मजाक करते हों।

वाह साहब यह मजाक है – यह तो एक दम ठीक है, अगर भूखे को रोटी की अपेक्षा काम देकर अनुशासन का राग अलपा जाये तो निश्चित ही वह अनुशासन महान होगा।

तू बाहर निकल छोकरें – बहुत बोलता है, परन्तु भानू जैसे सुना ही नहीं बस मंद मंद मुस्कता रहा! क्रोधावेश में पैर पटकता हुआ वह बूढ़ा बाहर निकल गया। थोड़ी देर के बाद उसकें साथ एक अन्य व्यक्ति आया। सफेट सर्ट टाई बिना मूछ ऐनक लगाये हुए था, वृद्ध चेहरे पर रोब चमक रहा था। यही वह छोकरा है उसने बूढ़े से पूछा था! हाँ में बूढ़े ने गरदन हिलायी उसकें दाड़ी के बाल पेट को सहला रहें थें।

क्यों छोकरें तू यहाँ पहली बार आया है नये आदमी ने पूछा....! भानू ने

कोई जवाब नहीं दिया....!

क्या गूंगा है वह व्यक्ति लगभग चीख पड़ा.....।

कोई प्रभाव नहीं – भानू मूक था....!

यह तो गूंगा है वह व्यक्ति लगभग झल्ला उठा.....।

नहीं साहब अभी कुछ देर पहलें बोलता था इतनी जल्दी कैसे गूंगा हो गया....।

तू ठीक बोलता है यह बहुत चालाक लगता है लेकिन मैंने भी दुनिया देखी हैं इसे ऐसी सजा दूंगा कि अजीवन याद रखेगा पेट पकड़ कर चिलायेगा आज से इसका अंन जल बंद कर दो जब तक यह मुँह नहीं खोलता है...। हम जेलर साहब से बात कर लेगें.....। कहता हुआ वह व्यक्ति मुस्करा पड़ा...! वह मुड़ा तभी तड़ाक की आवाज गूंज गयी। भानू ने उसे एक हाथ ऐसा मरा की मुँह के बल गिर पड़ा....। बूढ़ा कुछ समझता की उसकी गिरेबार भानू ने पकड़ लिया....। यह क्या करते हो मुझे छोड़ दो बूढ़ा कराह पड़ा...।

तुम दोनों का खून कर दूँगा भानू चीख पड़ा।

नहीं दोनों चीख पड़ें और भानू ठहाका मार कर हंस पड़ा....।

मौत से डर गये – मगर तुम जैसे इंसानों को इतनी सस्ती मौत कहाँ मिलेगी! मिट्टी पशु भी नहीं खाते! परन्तु यहाँ क्या, जहाँ पर भी तुम जैसे वफादार अपना फर्ज निवाहेगें वहाँ सब कुछ होता रहेगा – मैंने देखा था लोग दूध में पानी मिलाते हैं, परन्तु तुम रोटी में मिट्टी मिलाते हों – इंसान को जानवर क्या मिट्टी का कीड़ा बना दिया।

परन्तु आज से अगर किसी को यहाँ ऐसी रोटी मिली तो मैं इस जेल में आग लगा दूंगा, वे तो जल ही जायेगें जो मिट्टी खा रहें हैं....। कम से कम उन्हें मुक्ति तो मिल जायेगी। लेकिन उन के साथ तुम्हारें एशों आराम बीबी बच्चे भी राख हो जायेगें – जेलर साहब से जाकर कहा देना यह भानू ने कहा है....। जिन्दगी चाहते हो तो उठकर भाग जाओं।

वे दोनों उठे ओर द्रुत गति से भाग गयें, और भानू खिलखिला कर हंस पड़ा। सहसा उसका चेहरा शक्त होता चला गया काश उस नागिन का गला दबा दिया होता तो यह दिन देखनें को न मिलता! और जब उसें प्रधान की याद आयी तो

चीख पड़ा.... । हम तुम्हें जिन्दा नहीं छोड़ेगें ठाकुर प्रधान! अगर तुमने सुधा को नहीं अपनाया तो लाश भी दया की भीख मंगेगी हरामजदे. एक एक कर के सब को देखूगा.... ।

भानू को पूरा विश्वास हो गया कि सुधा की आबरू लूटने वाला प्रधान है परन्तु सुधा उसका नाम क्यो नहीं ले रही है, अखिर क्या कारण है। क्या वह मुझे बता कर सच्चाई से मुकाबला नहीं करना चाहती या उसे मेरी चिंता है इससे ज्यादा वह सोच न सका। मैं यहाँ से जल्द आ रहा हूँ बहन! कहता हुआ भानू कोई योजना बनाने लगा अचानक उसके मुख पर मुस्कान नाच गयी।

○ ○ ○

अपना परिचय देते हुऐ सुजान ने कहा मुझे इसी वक्त भानू से मिलना है! सुजान के साथ अलका एवं सुधा भी थी। जेलर साहब से अनुमति लेकर सुजान जेल के अन्दर प्रवेश कर दिया।

भानू–आप से कोई मिलने आया है अपना नाम सुजान बताया है... । आओं मेरे साथ संतरी ने कहा।

भानू के दिल पर कांटा चुभता चला गया मानों ह्दय का कोई भाग टूट गया हो परन्तु वह कराह न सका बस चुप चाप चल पड़ा चेहरे पर न तो कोई तनाव था न ही चिंता की रेखायें ऐसा प्रतीत होता था जैसे किसी विरक्त पुरुष का मुख मंडल शान्त आभा से दमक रहा हो।

भानू भइया–भानू को देखते ही अलका के मुख से निकल गया। सुधा फटी–फटी आँखों से भानू को देख रही थी!

प्रणाम भइया, प्रणाम दीदी, कहतें हुए भानू ने सर झुका लिया! दिल में कोई अनहोनी शक्ति चित्कार उठी तुम कयार हो भानू....चोर हो– चोर हो!

भानू तुमने अपनी यह क्या हालत बना रखी है – क्या तुम्हें खाना भी नहीं मिलता या दिल में शर्म महसूस कर रहे हो सुजान ने कहा!

भइया जेल जाना शर्म नहीं तो और क्या होगा दुनिया की नजरों में आप भी हमारे कारण बदनाम हो जायेगें! चोर की सहायता करना भी हास्यपद्र होता है....!

लेकिन तुम चोर नहीं हो इसे में अच्छी तरह जानता हूँ सुजान बोला – आश्चर्य होता है तुमने ऐसी गलती क्यों कि, कैसे कर डाली पर जो हो गया उसे

भूलना ही बुद्धिमानी है। भगवान की कसम खा कर कहता हूँ भानू मेरे दिल में तुम्हारें प्रति जो भावना है वह भगवान के प्रति भी नहीं है! क्या तुम मुझसे सच बता सकतें हों। वहाँ क्यों गये थे और सब से पहले मनोरमा ने तुम्हें देखा कैसे देखा....।

जरूर बताऊँगा भइया – परन्तु वक्त आने पर हाँ इतना समझ लो इस घटना ने मेरा जीवन मोड़ दिया। जीवन का दृष्टिकोण बदल दिया। आप को भइया कहतें हुऐ भी शर्म आती हैं। जानता हूँ मेरा रास्ता गलत है। परन्तु दुनिया मजबूर कर रही है। आप से मेरी बिनती है मेरी जमानत की कोशिश नहीं करना – मैं बहुत जल्द जेल क्या दुनिया से आजाद होना चाहता हूँ।

भानू अब तो भावकुता छोड़ दो – सुजान बोला जरा ध्यान से सोचों तुम्हारी भावकुता ने तुम्हें कितना जलील बना दिया! मैं जानता हूँ तुम चोरी नहीं किसी की आह सुनकर गये थे किसी का दुःख दूर करने गये थें! परन्तु भाग्य ने तुम्हें हथकड़ियाँ पहना दी! परन्तु भानू इसका यह मतलब तो नहीं की नेकी बेकार है.....। उसकी मिठास तो तुम अच्छी तरह जानतें ही हो....। इस कारण मैं तुम्हें कभी यह सलाह नहीं दूंगा कि तुम अपने की हीन समझों....! कंस के राज्य में उग्रसेन बंद कर दिये गये थें! परन्तु वहीं भगवान प्रकट हुये मेरे कहने का मतलब जेल ही उनका मंदिर बना। तुम जहाँ भी रहोगें भानू वहाँ हर वस्तु पेड़ पौधे खोह पहाड़ सब मंदिर बन जायेगें! वास्तव में मानव की पवित्र भावना ही मंदिर हैं। जो तुम में कूट कूट कर भरी है फिर तुम्हें इतना चिंता लीन होने की क्या जरूरत है! खद्योत को सूर्य की उपमा शोभा नहीं देती भइया – भानू बोला। आप जरूरत से ज्यादा कह गयें मेरा मतलब कविता करनें लगें! मैं तो इतना कहूगा आप सुधा को छोटी बहन समझ कर अपना फर्ज पूरा कर देना, अगर मैं न रहू तो भी कभी सुधा की आँखों में आँसू न आये, यह मुझ पर एहसान होगा, जिसके लिये मेरी आत्मा आप की चिर ऋणी रहेगी।

सुजान की आँखें डबडबा आयी बड़ी मुश्किल से वह अपने को सम्भाल पाया। जब बोला तो स्वर भर्रा उठा – भानू क्या तुम मुझकों इतना गिरा हुआ समझतें हो – आज से मैं तुम्हारी बहन को अपना नाम देता हूँ मैं सुधा से शादी कर लूंगा भानू....।

नहीं सुजान – सुधा तुम्हारी पत्नी नहीं बन सकती क्योंकि वह लुट चुकी हैं – और उसकी जिन्दगी बरबाद करने वाला जिंदा है....! मैं उसे खोजूगा सुधा की

शादी सिर्फ उससे होगी चाहें मुझे कुछ भी करना पड़ें...! यही मेरी अंतिम इच्छा है सुजान....!

भूल से जो मैने कह दिया उसकी क्षमा चाहता हूँ भानू – परन्तु वह कहाँ मिलेगा।

यह सब सुधा से पूछों भइया – अगर मुझे पता होता तो अब तक काम पूरा हो गया होता अन्यथा उसकी लाश भी पहचान में न आती, कहतें हुये भानू का चेहरा विकृत हो गया।

सुजान पलट कर सुधा को देखा जो सर झुकायें आँसू बहा रही थी! अलका मौन खड़ी थीं! सुधा की वह मूर्ति देख कर सुजान की छाती फटती चली गयी! उसकी विवशता पर वह अपना दिल मसौल कर रह गया।

भानू क्या मेरी भी बात सुनोगे अलका बोली जरूर दीदी – अपने दिल की कोई भी बात आज मुझसे कह सकती हो। अगर पूरा हो सका तो जरूर पूरा करूंगा – कहता हुआ भानू रुक गया।

रुक क्यों गये भइया – अलका बोली....!

दीदी मैं रुका नहीं – आप ही कुछ कहना चाहती थी, याद आया अलका ने कहा और फिर वह डिब्बा खोला जिसमें खाने की कुछ चींजे थीं। यह क्या है दीदी – भानू ने पूछा।

पानी अलका के मुख पर एक मुस्कान नाच गयी, आप को सिर्फ पानी से प्रेम है न, डरती हूँ इसके बदलें कहीं पानी न माँग लों!

ओह दीदी, आप वह बात आज तक नहीं भूली – कोई बात नहीं, आज आप जो देंगी मेरे लिये अमृत होगा।

अलका ने अपने हाथ से भानू के मुंह में कौर रख दिया – भानू इंकार न कर सका दीदी उसी क्षण भानू ने पूछा – गुड़िया का क्या हाल है, आपको पता होगा न.....।

उसनें जब से तुम्हारें बारे में सुना है पागल सी हो गयी है....। वह यहाँ जरुर आती भानू परन्तु तुम्हारे भाई सहब ने उसे आने नहीं दिया बेचारी को पिजड़ा का पंछी बना दिया है! भाभी साहब तो कभी खुश है। इस लिये कि तुम्हे जेल हो गयी है।

मैं जानता हूँ बहन वह मेरे लिये रोती होगी – परन्तु क्या करु! दिल की यदि सारी इच्छायें पूरी हो जाती तो वह शक्ति ही कहाँ रह जाती जिसे दुनिया भगवान कहती है! गुड़िया से कह देना मैं एक दम ठीक हूँ – और यह भी कह देना कि मैं वह दिन नहीं भूला हूँ जब तूने मेरे हाथ से आधी रोटी छीन ली थीं। वह भी होली के दिन....। तुम्हें कसम है दीदी यह बात उससे जरूर कह देना, सुनकर कम से कम कुछ तो संतोष पायेगी! इसके सिवा मेरे बस उसकी खुशी का और कोई साधन नहीं!

सुनों सुधा तुमसे मैं इतना कँहूगा कि आत्महत्या नहीं करना – अगर मैं जिंदा रहा तो उस कमीने को मेरी बात मानना होगा – चाहे आकाश फट जाये, पृथ्वी के टुकड़े–टुकड़े हो जाय, परन्तु मेरी बहन मेरा वचन कभी मिथ्या नहीं होगा! कहता हुआ भानू पलट गया। अब आप लोग जाओं – यहाँ भूल कर भी नहीं आना। अन्यथा मुझे दुःख होगा।

भानू–सुजान बोला – क्या मुझे गैर समझते हों।

नहीं ऐसा मत कहो भइया।

फिर ऐसी उल्टी बातें क्यों करते हों।

आपको दुःख हुआ तो क्षमा करना भइया.....। मैं तो इसलिये कहता हूँ कि आपको यहाँ आने की तकलीफ न हों। मेरे कारण किसी को परेशानी हो यह बात मेरी आत्मा सह नहीं सकती, कहते–कहते भानू का स्वर काँप गया।

जबाब दो भानू – सुजान बोला, क्या दुनिया की भलाई का तुमने ही ठेका ले रखा है! यदि मैं थोड़ी सी भलाई करना चाहता हूँ तो तुम पैर क्यों अड़ा रहें हो।

शायद इसलिये कि खुश रहू भानू बोला।

तुम बहुँत अजीब हो भानू परन्तु तुम्हारी पहेली में सुलझ चुका हूँ इसलिये तुम्हे मजबूर नहीं कँरूगा कि तुम मेरी बात मानों तुम खुश रहो सबमें बड़ी खुशी मेरे लिये यही है।

एक बात पूछू भइया – भानू का स्वर सहमा हुआ था।

इसमें संकोच की क्या बात है – सुजान बोला – तुम हजार बात पूछ सकतें हों.....।

एक लाश पानी के उपर थी भानू बोला मैने देखा तो उसे डुबा दिया –

कहीं गलत तो नहीं किया।

सुजान को बरबस हंसी आ गयी – तुमने तो ठीक किया भानू – परन्तु दुनिया कहाँ जानती हैं क्योंकि उसके पास कानून की किताब है।

मुझे किताब से कुछ भी नहीं सीखना है – भानू बोला बस आप कहीं गलत न समझ लें.....।

मैं तुम्हें गलत कब कहता हूँ मेरे भई....!

बस अब जाओ भइया – अंधेरा बड़ रहा हैं – भानू से बिदा होते समय सुजान की आंखों में आंसू थें!

○ ○ ○

भानू पकड़ा गया यह समाचार जब प्रधान ने सुना तो खुशी में लगभग पागल हो गया, परन्तु उसका कारण जान कर वह चिंतित हो गया। कर्नल सी0एच0 अग्रवाल के यहाँ भानू क्यों गया। आनन्द के यहाँ तो रणबीर हो सकता है, परन्तु अग्रवाल के यहाँ भानू, क्या उससे भूल हो गयी! नहीं, ऐसा नहीं हो सकता, भानू को भूल से जोड़ कर खुद भूल करना है जरूर ही उसका कोई मकसद होगा – कहीं सुधा तो नहीं उस दिन मनोरमा ने उसे धक्का देकर बाहर फैंक दिया था, तो इसका मतलब भानू को मनोरमा की तलाश थीं, परन्तु फिर सफल क्यों नहीं हुआ।

इन्हीं विचारों में खोया प्रधान मनोरमा के घर तक पहुँच गया – ज्यादा इंतजार नहीं करना पड़ा – थोड़ी देर के बाद मनोरमा उसकें सामने थीं। आप यहाँ मनोरमा ने पूछा था! प्रधान ने वह अखबार मनोरमा के सामने रख दिया। पढ़ो यह क्या लिखा है। मैं इसकी सच्चाई जानना चाहता हूँ....।

मनोरमा का चेहरा भय से पीला पड़ गया चन्द क्षण के लिये उसके सामने भानू की आकृति घूम गयी।

तुम चुप क्यों हो मनोरमा – तुम ने उसे सबसे पहलें कैसे देख लिया – फिर उसे कैसे पकड़ा दिया – मुझे यह सब कुछ अजीब सा लगता है।

परन्तु क्यों मनोरमा का स्वर तेज था।

मैं सोच नहीं पा रहा हूँ भानू कैसे पकड़ा गया। अगर वह यहाँ आया तो अपना मकसद छोड़ कर क्यों चला गया। जरूर इसमें कोई चक्कर है।

इसका मतलब तुम्हारे दिल में अब भी भानू के प्रति प्यार है अन्यथा उसकें

कारण आप मेरा उपहास न करतें।

तुम्हारा गलत ख्याल है मनोरमा मुझे भानू से न तो प्रेम है न ही हमदर्दी, परन्तु दिल यह जानें क्यों स्वीकार नहीं करता। जब से मैंने यह समाचार सुना है बहुत बड़ी बेचैनी का शिकार हो गया हूँ। तुम नहीं जानती मनोरमा भानू क्या है एक आग जो वह सोच लेता है उसे कर ही डालता है मौत से खेलना उसका शोक है..... जब मैं चुनाव लड़ रहा था तो उसने कहा था – यदि तुम चुनाव हार गये..... इस कालेज में आग लगा दूंगा.....। और वह ऐसा भी कर डालता यदि मैं हार गया होता.. ..! तुम्हारे कारण मैंने दोस्ती तोड़ दी और तुम एक सच मुझसे छिपा रही हों....!

सुनोगें तो दुःख होगा इसलिये बताना नहीं चाहती थी, परन्तु यदि सुनना ही चाहते हो तो सुनों भानू मेरा खून करने आया था, परन्तु कर न सका – हाथ काँप गयें! शायद, दया आ गयी – उसनें कहा था मैं तुम्हारे रास्ते से हट जाऊ अन्यथा वह मुझे दुनिया से दूर भेज देगा, मैं ज्यादा तो समझ नहीं सकी पर उसके भाव बड़े कटोर थे! कहते–कहते मनोरमा सिसकने लगीं! मैं तुम्हें बहुत प्यार करती हूँ प्रधान परन्तु मुझे जाने क्यों डर लगने लगा है...! तुम ठीक कहते हो प्रधान भानू बड़ा विचित्र हैं – वास्तव में वह दुनिया से अलग है। किसी जवान स्त्री को अध नग्न देख कर नेत्र बन्द कर लेना बहुत कठिन है, बस इसी का लाभ उठाकर मैं बाहर निकल आयी और उसे पकड़ाने में सफल हो गयी। यह तुम ने बहुत बड़ी गलती की है मनोरमा किसी भी कीमत पर तुमने यह ठीक नहीं किया – जेल भेज कर तुमने उसे उतेजित कर दिया है। सोता शेर जागना बुद्धिमानी नहीं है। अगर तुम्हें उससे शत्रुता ही करनी थी तो उसका खून कर देना था। कहते–कहते प्रधान का चेहरा शक्त होता चला गया नफरत के शोले आँखों से निकलने लगें....! लेकिन जो हो गया वापस नहीं हो सकता। हमें हर पल भानू से सावधान रहना पड़ेगा जब तक वह खत्म नहीं हो जाता, यह कहानी खत्म नहीं होगी। मुझे तो लगता है वह जेल से भाग जायेगा, और इसके बाद वह तुम्हे किसी भी कीमत पर नहीं छोड़ेगा।

हम उसका खून कैसे कर सकती थी प्रधान उससे नजर मिलना आसान नहीं, मुझे सच बता देना था शायद वह वापस चला जाता। परन्तु अब पश्चाताप हो रहा है।

तुम्हें इतना परेशान होने की जरूरत नहीं – हम कोई उपाय सोचेंगे।

डैडी कह रहे थें इंस्पेक्टर से मिलकर आया हूँ वह ऐसा केस बना देगा कि

उसे फाँसी नहीं तो अजीवन करावास से कम सजा नहीं मिलेगी।

क्या तुम्हारे डैडी को उस इंस्पेक्टर पर इतना विश्वास है.....!

विश्वास तो नहीं परन्तु डैडी का भी कुछ रुतबा हैं, मनोरमा बोलीं।

यह तुम्हे भम्र हैं मनोरमा! तुम्हारे पिता तो मात्र कर्नल हैं राजनीति में ऐसे लोगों की गिनती मात्र मच्छर के समान है किसी के इशारे पर गीत गाना, परन्तु सुजान का परिचय देश के कर्णधारों से है, मेरा मतलब मंत्रीयों से जो कानून बनाते और बिगाड़ देते हैं.....! परन्तु भानू ऐसा नहीं होने देगा जैसे मैने कहा है....!

''क्यों, क्या उसे जेल में रहना पसन्द है....!

''नहीं मनोरमा, बात ऐसी नहीं है – दर असल भानू किसी की मेहरबानी स्वीकर करना नहीं चाहता।

''यह आप किस आधार पर कह रहे हैं?

''मैं उसे कई बार परख चुका हूँ.....!

''इसका मतलब बड़ा अजीब जीव है....! परन्तु मैं उसे ऐसी सबक सिखाऊगी की अजीवन याद रखेगा.....!

''सिर्फ कल्पना का आनन्द ले लों – पर वास्तव में ऐसा होगा नहीं न जाने क्यों मेरे दिल में हलचल सी हो रही है – क्या करू उस कमबक्त से बिना मतलब दोस्ती की थीं....। मैंने नहीं सोचा था एक दिन वह मेरा दुश्मन बन जायेगा।

वह हमारा दुश्मन बनेगा – कि इसमें पहले हम उसका फन कुचल देगें – अब उसकी हिम्मत नहीं की मेरे कोठी में आने की कोशिश करें डैडी ने चारो तरफ संतरी लगवा रखें हैं – जिनकें हाथों में हर दम लोड रायफले हैं!

तुम्हारा गलत ख्याल है मनोरमा दर असल भानू को मारनें के लिए रायफल की गोली कभी कामयाब नहीं होगी।

परन्तु क्यों – यह बात आप किस आधार पर कह रहे हैं, मनोरमा बोली.....!

बिना किसी आधार के कोई बात कही न जा सकती परन्तु मेरा कोई आधार नहीं बस विचार है.....।

मैं नहीं मानती क्योंकि यह जरूरी नहीं कि आप के विचार ठीक हो – क्योंकि आप कोई आधार न मानकर अपने विचार श्रेष्ट मान रहें हैं।

खैर तुम्हारी शक्ति की जय हो प्रधान बोला – मुझे उस दिन अपार खुशी

होगी जिस दिन भानू की लाश देखूगा परन्तु मैं उसका कत्ल नहीं कर सकता....।

कत्ल करने की कोई जरूरत नहीं डीयर, वह खुद ही खत्म हो जायेगा। कहते हुऐ मनोरमा ने प्रधान के गले में बांहे डाल दी.....और प्रधान ने उसे कस कर भींज लिया।

o o o

गुड़िया की आँखों से झर–झर आँसू गिर रहे थें, भगवान शिव के सामने बैठी न जाने कितनी देर तक प्रार्थना करती रही हे आशतोष भानू को बचा लो – उसकी मदद करना प्रभू – कहते कहते गुड़िया का स्वर भारी हो गया। परन्तु भगवान पर कोई प्रभाव नही वे पूर्ववत् मुस्करा रहे थें।

गुड़िया रामशरन ने पुकारा – परन्तु गुड़िया ने कोई जबाब नहीं दिया – बस चुपचाप आँसू बहाती रही। रामशरन एक दम गुड़िया के करीब आ गयें गुड़िया यहाँ क्या कर रही हो, कहने के साथ गुड़िया को झंझोड़ दिया....! चौंक कर गुड़िया ने आँखे खोली सामने पिता को देखकर बरबस ही रुलाई फूट पड़ी –

अरे यह क्या कर रही है – रामशरन चौंक पड़ें.........और गुड़िया सुबकतें हुए कहने लगी – भानू को बचा लो बापू बचा लो बापू....।

तू पागल तो नहीं हो गयी बेटी – रामशरन स्नेहमय स्वर में बोले – यह तो अच्छा हुआ – हमें खुशी मानानी चाहिए बेटी भगवान से प्रार्थना करनी चाहिए कि वह दूबरा भानू को हमारे पास न भेजें....।

बापू यह आप क्या कह रहें हैं....। अगर भानू को कुछ हो गया तो मैं जिंदा नहीं रहूँगी कहते हुए गुड़िया रो पड़ी।

अरे मूर्ख तू फिर रोने लगी – रामशरन ठहाका मार कर हंस पड़े। उसके लिये आँसू गिराती है जिसके मरने से मेरी बहुत बड़ी तपस्या पूरी हो जायेगी! फिर यह मैं अपने लिये थोड़े कर रहा हूँ मेरे बाद तू इस सारे घर की मलकिन होगी....।

नहीं चाहिए मुझे ऐसी दौलत गुड़िया चीख पड़ी – आप अपने स्वार्थ के लिये उसकी जरा भी परवाह नहीं किया, जो देवता है। ये दौलत लेकर क्या मैं स्वर्ग जाऊगी...।

गुड़िया – माँ लगभग चीख पड़ी। अगर फिर तूने भानू का नाम लिया तो मुझसे ज्यादा कोई बुरा नहीं होगा।

माँ – गुड़िया क्रोध से कांपने लगी। यह सब तुम्हारे कारण हुआ! भानू भैया को जल भेजने वाली आप है। मैं क्या कर सकती हूँ परन्तु भगवान तुम्हें कभी माफ नहीं करेगा।

गुड़िया – चीखती हुई माँ ने बेटी को बाल पकड़ कर उठा लिया! सुन कुलबोरनी अगर तूने फिर भानू का नाम लिया तो यह जीभ काट लूगी ऐसा कह कर माँ ने बेटी को झिटक दिया। बेटी जमीन पर गिर गयी फिर माँ का भयानक रूप देखती रही – आखिर उसका क्या अपराध है जिसके लिये इतनी कटोर सजा दी जा रही है। यही न की वह भानू के लिये भगवान से प्रार्थना कर रही थीं। आखिर भानू का क्या अपराध है। क्या इस घर पर उसका हक नहीं क्या वह अपने जन्म का जिमेदार है नहीं, फिर दुनिया अपनी वासना की सजा उसके परिणाम को क्यों देती है क्या गुनाह होता है उस शिशु का, क्यों नजायज कहा जाता है इस दुनिया में। इससे ज्यादा गुड़िया कुछ सोच न सकी बस फूट फूट कर रोने लगी। माँ अब भी विकराल रूप धारण किये खड़ी थीं।

मेरी चाहे जान ले लो माँ – बस एक बार भानू से मिल लेने दो – गुड़िया ने याचना भरे स्वर में कहा..... ।

कहीं तू उसकी दीवानी तो नहीं हो गयी – माँ का स्वर था....! गुड़िया को ऐसा जान पड़ा मानों उसके ऊपर पहाड़ गिर पड़ा हो – माँ की बात उसकें दिल में चुभती चली गयी। परन्तु मुँह न खोल सकीं – बस आँखों से पानी बहने लगा – जो उसकी कमजोरी की कहानी कह रहा था। उसका मूक होना कहीं सचमुच उसे दोषी न ठहरा दें। ऐसा सोचते ही गुड़िया का सारा बदन क्रोध से तमतमा उठा....! तुम माँ हो.....नहीं तुम मेरी माँ हो ही नहीं सकती। जिसने भानू पर शक कर लिया – मेरी भावना को वासना की संज्ञा दे दी। राखी के अर्थ को अनर्थ कर दिया। वह माँ क्या एक नारी भी नहीं हो सकती। अब तक मैं यही सुनती थी कि माँ का ह्रदय बहुत कोमल होता है परन्तु आज देख रही हूँ वह कितना अकरूण है। बेटी इस तरह जाने क्या–क्या कहती रही, परन्तु माँ पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा बस रक्ताभ दृष्टि से गुड़िया को देखती हुई बाहर निकल गयी।

थोड़ी दरे के बाद माँ पुनः आयी गुड़िया अभी भी वैसी बैठी थीं! माँ बोली तू अभी नादान है। बेटी भानू एक दासी का बेटा है। हमारे साथ रहा तो दुनिया हमें भी नीच कहनें लगेगी – मैं तो तुम्हारी भलाई चाहती हूँ और तू माँ को गाली दिये जा

रही हैं। मेरा कुछ भी नहीं जाता गुड़िया – मैं अपने भाई को बुलाकर उसे यह सम्पति दे दूंगी – और तेरी शादी कर के ससुराल भेज दूंगी, तब तो तुझे यह घर भारी नहीं लगेगा।

गुड़िया माँ की बात सुनती रही और सोचती रही आखिर माँ ने वह कह दिया जिसके कारण भानू के हाथ से आधी रोटी छीन ली गयी। और यह पुण्य काम करने वाले यही मेरे हाथ थे परन्तु उसने उफ भी नहीं की! आज होली है न गुड़िया के दिल में घुसता चला गया! परन्तु इन बेरहम इंसानों के सामने रोने से कुछ भी होने वाला नहीं था। पत्थर पर सर मारने से पत्थर का कुछ नहीं बिगड़ता हाँ सर ही फूट जाता है। ऐसा सोच कर गुड़िया ने दिल के तूफान को रोक लिया।

क्या तू जेल भानू से मिलने जायेगी। माँ ने पूछा था – गुड़िया ने बड़ी दयनीयता से माँ की तरफ देखा था। कह कर माँ मुस्करा रही थी! कुछ ऐसे जैसे बच्चा माँ से चाँद मांगता हो और मां उस बालक को थाली के पानी में चांद दिखा रही हो, गुड़िया को क्रोध तो बहुत आया – परन्तु बेबस पंछी की भांति हाथ पैर हिला कर क्या कर सकती थीं। अखिर उसका दायरा (पिजड़ा) घर की दीवार थीं! जिन से बाहर निकलना किसी भी कीमत पर असम्भव था।

माँ – तुम मुझे क्यों जला रही हो – एक बेटी को सिर्फ धन के लिये बलिदान कर रही हो – उसकी पवित्र भावनाओं में आग लगा रही हो। और मैं उन्हें जलती हुई देख रही हूँ और अब जब सब कुछ जल कर राख हो गया – तो उसका कुशल क्षेम पूछ कर उसकी आग क्यों भड़काना चाहती हों.....!

गुड़िया मैं नहीं समझती तू इतनी पागल हो जायेगी वह दिन याद कर गुड़िया जिस दिन तूने भानू के हाथ से रोटी छीन ली थीं। क्या उसे भानू सहज भूल सकता है.....। हमने उसके साथ जो व्यवहार किया वह किसी भी कीमत पर ठीक नहीं था। और वह मौका पाते ही बदला लेना चाहेगा। इसलिये हम चाहते हैं – घायल साँप को खत्म कर दिया जायें।

नहीं गुड़िया चीख पड़ी – हम सब सह सकतें हैं, परन्तु भानू की तरफ किसी ने हाथ उठया तो हम उस हाथ को काट देगें, यह मत भूलों की हम बेबस हैं।

गुड़िया – माँ का तमाचा गुड़िया के गाल पर छाप छोड़ गया। बोल तूने क्या कहा '' तुम नहीं जानती गुड़िया कहनें में और करनें में बहुत फर्क होता है। तमाचा खाकर गुड़िया खड़ी हो गयी – अपनी बेबसी पर आँसू भी बहा न सकी।

माँ चली गयी – पिता जी पहले ही जा चुके थे.......परन्तु गुड़िया घुटनों में मुँह छिपायें सिसक रही थीं। सहसा उसे भानू के शब्द याद आते चले गयें तुम नहीं जानती गुड़िया तुम्हारे हृदय का तार मेरे हृदय से मिला है। अगर तुम्हारे हृदय में जरा भी झंकार होगी तो हमें सुनायी पड़ेगा तू मुझे जब भी याद करेगी मैं तेरे सामने आ जाऊगा। दुनिया में कहीं भी रहू – परन्तु तेरी झंकार मेरे हृदय से कभी अलग नही होगी – पगली तू बार–बार क्षमा क्यों मांगती हैं। हम तो कहतें है तूने कोई अपराध ही नहीं किया मुझ पर जो हो रहा है शायद यही मेरा नसीब है। परन्तु आज मैं बहुत खुश हूँ गुड़िया – इसलिये नहीं कि तू मेरी हमदर्दी कर रही हैं खुश तो इसलिये हूँ कि आज तेरे अन्दर में प्रकाश हो गया है। अब अजीवन भटकेगी नहीं....। कहते–कहते भानू का स्वर भरी हो उठा था और गुड़िया को एहसास हुआ जैसे भानू सामने खड़ा है। उसकें दिल में भी कितनी पीड़ा हो रही होगी – आज भानू ने खाना नहीं खाया होगा – कौन वहाँ होगा जो उसे जबरदस्ती खाने के लिये बाध्य करेगा – भूख नहीं है। यह तो वह सदा कहता रहता है चाहे दस दिन का ही भूखा क्यों न हों, वहाँ पर कौन सुनता होगा, अगर वह दुःखी न होता तो मेरे हृदय में इतनी पीड़ा न होती। परन्तु इस पीड़ा की झंकार क्या उसे खुनायी पड़ती होगी। अरे पगली तू क्या सोच रही है। वह जेल में है। जेल की दीवार तोड़ कर वह कैसे आ सकता है। सोचते–सोचते गुड़िया ने आँखे मूंद ली, आँखों से अबिरल आँसू बह रहे थें – परन्तु वह इस दुनिया से बेखबर थी एक दम विदेह।

○ ○ ○

निशा का पहला पहर दम तोड़ रहा था । जेल में हलचल कम हो गयी थीं। जिनका काम खत्म हो चुका था – वे सब तसला लेकर लाइन लगा चुकें थे।

भानू इन से अलग तनहा कुछ सोच रहा था। काफी सोचने के बाद उसके ओंठो पर मुस्काराहट तैर गयी रात के ग्यारह बज चुके थें। सारी बैरिकों में मौत जैसा संनाटा छाया हुआ था। भानू चुपकें से उठा – दियासलाई जलाई और बूढ़ा जो बैरिक इंजार्ज था पहचान कर उठा लिया। उसनें चीखने की कोशिश की तभी भानू की आवाज बहुत धीरे से गूंज गयी! अगर मरने का इरादा है तो चीखों बुढ़ढे के ओंठ चिपक गयें। थोड़ी दूर पर लाकर भानू ने उसे जमीन पर रख दिया।

क्या तुम मरना चाहतें हो – भानू बोला। नहीं उसकी मरी सी आवाज निकल गयी। आखिर तुम चाहतें क्या हों देखों भानू तुम्हारे आने के बाद यह जेल

कितना बदल गया है। कल जेलर साहब ने तसला की जगह थाली का हुक्म कर दिया है? अब आखिर तुम मेरी जान क्यों लेना चाहते हो।

बढ्ढा गिड़गिड़या – मेरे मरनें से बच्चें अनाथ हो जायेगें अल्लाह के लिये मुझ पर दया करों – मैं तुम्हारें पैर पड़ता हूँ!

किसी के मरनें से कोई न कोई अनाथ जरूर हो जाता है। यह कोई नई बात नहीं है – जिसके कारण तुम्हें छोड़ दिया जाय।

आखिर मेरा दोष क्या है – वह कराह पड़ा और भानू ठहाका मार कर हंस पड़ा तुम्हरा दोष सबसे बड़ा यह है कि इक्कीसवी शदी में भी तुम कैदियो ंके साथ जानवर का व्यवहार करते हो – अनुशासन के नाम पर मनावता का खून पीतें हो..... परन्तु हम ज्यादा न कह कर इतना कहेगें कि खुद अपना दोष स्मरण कर लो..... ।

तुम जो भी चाहों मैं करनें को तैयार हूँ परन्तु मेरी जान छोड़ दों –

ठीक है हम तुम्हारी जान छोड़ देगें – भानू मुस्करा पड़ा परन्तु मैं जो कहूँगा वह तुम्हें करना होगा – याद रखो अगर चालाकी की तो मौत ही नसीब होगी जाओं और इसी वक्त दरोगा जी को मेरे पास ले आओं कोई सवाल नहीं करना भानू का स्वर तेज था।

वह बुढ्ढा उठा था और चुप चाप उधर चल दिया जहाँ पर दरोगा जी रहते थें – दरोगा साहब से वह बड़े ही नाट्कीय ढंग से बोला – साहब जरा मेरे साथ चलों गजब हो गया – क्या हुआ दरोगा जी बोलें.....!

आपको दिखाता हूँ जरा साथ चलें।

साफ–साफ बोल आखिर बात क्या है....! बुढ्ढे ने वही बात पुनः दोहरा दी कोतूहल बस दरोगा जैसे भानू के पास पहुँचा भानू नू उस पर हमला कर दिया, तभी उसका ध्यान बुढ्ढे पर गया तो भाग रहा था...!

नहीं स्कीम फेल – भानू चीख पड़ा दूसरे क्षण उसने फयार कर दिया। रात की नीरवता को भेदती आवाज दूर तक गूंज गयी। फिर उसे अपनी गलती का एहसास हुआ था – एक पल गवाये बिना भानू ने इंस्पेक्टर की वर्दी पहन ली – और उस इंस्पेक्टर को वही बेहोश छोड़ कर भागा जेल में फायर की आवाज सुनकर सारे संतरी सजग हो गये थें परन्तु भानू उन से बचता हुआ मुख्य द्वार तक पहुंच गया।

क्या हुआ सर – घबड़ायें हुऐ एक सिपाही ने पूछा था जले में गड़बड़ हो

गया है। तुम गेट खोलों मैं बाहर का निरीक्षण करना चाहता हूँ। संतरी ने आदेश का पालन किया, क्योंकि सीनियर का आदेश मानना सिपाही का धर्म है।

o o o

भानू के शरीर पर पुलिस इंस्पेक्टर की वर्दी थी परन्तु मन में एक तूफान चल रहा था, वह यहाँ से कहाँ जाय – वह बुढ्ढा शायद मर गया हों – मर जानें दो सालें को हम यह सोच कर क्यों परेशान हो जैसी करनी वैसा फल शायद उसकी मृत्यु मेरे हाथों लिखी थी। मैं उसका खून करना नहीं चाहता था – परन्तु हो गया – तभी उसे गुड़िया की याद आ गयी! बेचारी कितनी परेशान होगी मेरे लिये – अभी रात काफी है हम उससे मिल सकतें हैं परन्तु कैसे भानू गहरें सोच में डूब गया।

तभी पीछे से कोई वाहन आता दिखायी पड़ा आशा की किरण उसे नजर आयी हाथ देने पर वह कार रूक गयी।

आपको कहाँ तक जाना है नारी स्वर था।

अंधेर नगर – भानू ने कहा –

आओ कहती हुई युवती ने दरवाजा खोला दिया और भानू बैठ गया – कार चल पड़ी! आखिर मौन को युवती ने ही तोड़ा – आप को पुलिस की नौकरी कैसे लगती है। "अच्छी नहीं, तो बुरी भी नहीं, परन्तु आप इतनी भयभीत क्यों हैं जरा धीरे गाड़ी चलाओं – अभी मुझे मरने का विचार नहीं – भानू मुस्करा पड़ा।

वह पीछे वाली जीप मेरा पीछा कर रही है युवती ने शंका जाहिर की....!

ओह – इसका मतलब इसी कारण आप भाग रही है मेरा मतलब मौत से डर कर....!

आप क्या कह रहें है सर इस दुनिया में कौन मरने से नहीं डरता।

मैं भानू ने मुस्कातें हुए कहा "आप कार रोक दें अभी निर्णय हो जायेगा।

नहीं युवती चीखी तभी कार लड़खड़ गयी और भानू ने उसे सम्भाल लिया, फिर रोक दिया। युवती भौचक्की सी उसे देखती रह गयी! तभी जीप भी रुक गयी। भय से युवती का चेहरा पीला पड़ गया – जीप से दो व्यक्ति उतरे एक ने कुछ इशारा किया फिर दोनों कार की तरफ बढ़े...!

पिट, पिट भानू के रिवालवर से निकली दो गोली दोनों के जिस्म में समा गयी दोनों कटे हुए वृक्ष की भांति जमीन पर गिर गयें, उनके गिरते ही जीप पीछे

मुड़ी और भाग गयी!

युवती ने मानों कोई सपना देखा हो, उसकी समझ मैं कुछ नहीं आ रहा था! तभी भानू ने युवती का हाथ पकड़ कर कार में बैठाया और बोला अब तो विश्वास आया — हम मौत से नहीं डरतें.... ।

युवती ने कार स्टार्ट कर के आगे बढ़ा दिया, वह इस जगह से शीघ्र दूर जाना चाहती थी, भानू ने मन ही मन सोचा था..... । तभी वह बोली आप ने मेरी जान बचाई है जी तो चाहता है सारी जिन्दगी आप के नाम लिख दूँ.....यदि आप शादी.....!

अपरचित देवि — भानू ने मंद स्मित मे कहा हमारे पास एक कमी है हम कोई भी काम बिना स्वार्थ के करते हैं परन्तु तुम्हारे लिये मैं इतना कहूँगा कि मेरी शादी उसी दिन हो गयी जिस दिन मुझे होश आया — मेरी शादी सुनोगी तो हँस हँस कर लोट पोट हो जाओगी। साधारण लोगों जैसी मेरी शादी नहीं हुई, अक्सर शादियों में एक दूल्हा एक दुल्हन होती हैं। दोनों आग के फेरे लेते हैं एक दूसरे के लिये कसमें खाते हैं और फिर दूल्हन दूल्हा के घर चली जाती हैं ऐसा ही होता है न परन्तु मेरी शादी कुछ अजीब थीं। न तो मैं दूल्हा बना न ही बारात गयी! फिर शादी कैसे हुई दूल्हन को दूल्हा अजीवन कष्टों से दूर करनें के लिए संघर्ष करता है। परन्तु मेरी दुल्हन एक नहीं अनन्त है शायद। वे आत्माये जो दुःखी है और मैने उन से शादी की है। उनके कष्टों को दूर करना ही मेरा धर्म है।

आप बहुत अजीब बात करते है सचमुच आप ने एक नयी बात कही — जो कल्पना से भी परे है।

''मैं कल्पना नहीं, हकीकत ही बात कर रहा हूँ भद्रे... ।

''मैं कुछ समझ न सकी....''

''खैर न समझों तो अच्छा हैं... । कहते हुए भानू ने कार रोकने का इशारा किया.... ।

''आपका घर आ गया.... ।

''हाँ — मेरा गंतब्य यही है.... । भानू ने मुस्कातें हुए कहा.... । कभी फिर मिलेगें। युवती का स्वर स्नेह से सना था।

''वादा तो नहीं कर सकता भाग्य शायद कभी मिला दें। चन्द्र पल में तुम जिस कल्पना में उड़ गयी वह कभी पूरी नहीं होगी तुम्हारे अन्दर इस समय मेरे प्रति

आदर की भावना उमड़ रही है। आप समझ रही है मैं एक पुलिस इंस्पेक्टर हूँ – पर सच यह है कि मैं बागी हूँ – खूनी हूँ।

बागी – युवती का मूँह खुला का खुला रह गया – फिर बोली आप बागी कभी नहीं हो सकतें – जिसका हृदय इतना करुण हो जिसके कर्म इतनें महान हो – जो दूसरों के लिये पैदा होता है वह बागी कैसे हो सकता है! नहीं–नहीं आप झूठ बोल रहे हैं.... ।

मैं आप की बात पर कभी विश्वास नहीं कर सकती। आप झूठ का सहारा क्यों लेते हैं। क्या आप अपना परिचय मुझे बताना नहीं चाहतें।

भानू – उस युवती की बात सुनकर सोचता रहा कैसी है यह दुनिया – मनोरमा वह भी तो एक नारी है। सोचते सोचते भानू का चेहरा बिगड़ता चला गया – बड़ी मुश्किल से वह अपने भावों को छिपाते हुए बोला – मैं किसी पर विश्वास नहीं कर सकता जहाँ मैं पहुँच गया हूँ वहाँ से पीछे मुड़ कर देखना भी बेकार है.... इस मिलन को यहीं पर खत्म कर के मैं चलता हूँ क्योंकि न जाने कितनी भटकी आत्मायें मेरा रास्ता देख रही होगी – और हम किसी एक को अपना परिचय भी देना नहीं चाहतें। कहता हुआ भानू अंधकार में मिल गया।

युवती चौंकी थी। अब वह वहाँ क्यों खड़ी है वह तो चला गया परन्तु वह कितना अजीब था चाहता तो मुझे से कुछ पा लेता – हाँ मैं भी कितनी भावुक हो गयी परन्तु वह क्या है शायद देवता हो – नहीं नहीं देवता भी डिग जाते हैं अहल्या पर इन्द्र ने ईमान खो दिया था फिर वह देवता कैसे हो सकता है। फिर वह क्या है, तो मानव ही परन्तु मानवीय दोषों से उपर उठ चुका है हाँ यही ठीक होगा उसके लियें! ऐसा सोचते हुये युवती ने कार आगे बड़ा दी, उसके मुख पर चिंता की गहरी रेखायें विद्यमान थी। शायद इसलिये कि उस युवक के चरण नहीं छुये थें।

o o o

रात्रि सिसक रही थी रजनी की खामोशी गुड़िया के हृदय को भेदती जा रही थी आखों से नींद बहुत दूर चली गयी थीं! नींद को भी उस पर दया नहीं आ रही थीं! वह उठती और फिर लेट जाती परन्तु बेचैनी प्रति क्षण बड़ती जा रही थी। तभी कुछ आहट हुई गुड़िया चौंक कर देखने लगी एक परछाई घर की छत के उपर घूम रही थी! गुड़िया का बदन काँप उठा भय की लहर उस पर बुरी तरह हाबी हो गयी। वह चीखना चाहा परन्तु जुबान तालू में चिपक गयी। भानू ने दूर से ही गुड़िया

को पहचान लिया डर गया भानू कहीं वह चीख न पड़े इस कारण मंद स्वर में बोल पड़ा गुड़िया मैं भानू हूँ। भइया गुड़िया पागल के समान बड़बड़ाई। फिर लगभग भानू की तरफ दौड़ पड़ी कहाँ चले गये थे भैया – उसने पूछा, दिन भर मैं तुम्हारे लिये रोती रही – और रात को भी नीद नहीं आ रही थी, हाँ परछाई देखकर मैं डर गयी थी। परन्तु आप को पहचान कर जो हर्ष हुआ वह अकथनीय है – आओं भइया अंदर चलों अगर माँ को पता चल गया तो अच्छा नहीं होगा – आप से कुछ दिल की बात कहना चाहती हूँ कहते–कहते गुड़िया सिसकने लगी....!

गुड़िया के पीछे भानू अन्दर चला गया गुड़िया ने रोशनी की फिर एक दम भानू के करीब बैठ गयी भैया यह सब क्या हो गया – आप कैसे जेल गयें तुम्हे मेरी कसम भैया सच सच बताना।

गुडिया मेरी बहन भानू ने उसके सर पर हाथ रख दिया, यह मत पूछ गुड़िया यह मैं तुझे बता नहीं सकता।

आखिर क्यों भैया – यदि आप मुझे सच्चाई नहीं बतायेगे दुःख होगा – आप मुझे बहुत प्यार करते हैं। फिर मुझ पर विश्वास क्यों नहीं करते। गुड़िया तुम बेकार का प्रश्न करती हो – जिसका हम कोई उत्तर नहीं दे सकतें। यही समझ लो बहन भानू इतनें आगे निकल चुका है कि पीछे आ ही नहीं सकता गुड़िया – तेरा भाई खूनी हो चुका है।

नहीं गुड़िया घबरा कर बोली – यह क्या कह रहे हो भैया कह दो यह झूठ है....। गुड़िया भावकुता बस कहती चली गयी – आँखों से अबिरल आँसू की धार बहने लगी....!

गुड़िया तू रोने लगी – अभी–अभी तू बहादुर बन रही थी इतनी जल्दी परिवर्तन इसका मतलब तेरा हृदय कमजोर है....। अरे पगली भानू मर भी गया तो क्या फर्क पड़ता है परन्तु जब तक जिंदा रहूँगा तुझे विश्वास देता हूँ गुड़िया सच्चाई से पीछे नहीं हटूँगा।

ऐसी स्थिति में यदि मुझे अपने प्राणों की आहुति भी देनी पडें तो मैं पीछे नही हटूंगा। मैं उनके प्रति आज भी करुणा रखता हूँ जिनकी आहें अमीरों के पंजो में फंसी कराह रही हैं....! अजीवन मेरा संघर्ष होगा अमीर एवं गरीबों के बीच – तुम्हारी आँखों में आँसू देखकर मुझे बहुत दुःख हुआ गुड़िया। तू मेरी बहन है – एक वीर बहन–फिर इस प्रकार रोकर अपने को कमजोर मत बना! जरा सोच गुड़िया

हम जेल से फरार हो गयें – साथ ही साथ एक खून भी कर चुका हूँ अब तुम्ही बताओं गुड़िया तुम्हारे साथ कैसे रह सकता हूँ।

इतना सब होने के बावजूद मेरी बहन – तुम मेरे इतनें करीब होगी कि मैं तुम्हे हर पल देखता रहूँगा। पर गुड़िया तू कयार मत बन – अब तो मैं कानून के चुंगल में फंस ही चका हूँ – और यह कानून सिर्फ एक बार ही फाँसी दे सकता है। जब फाँसी ही होनी है तो क्यों न अपने दिल के गुबार को ही पूरा कर लूँ!

भइया, तुम्हारे बिना मैं जिंदा नहीं रह पाऊगी आज तक मैंने कभी भर पेट खाना नहीं खाया – जब से आप गये है मुझ पर जो बीती उसे भगवान ही जानता है। बस हर पल भगवान से तुम्हारें लिये प्रार्थना करती रही और आज जब आप आये तो जाने को कह रहे हैं कहते कहते गुड़िया का स्वर भारी हो उठा।

मैं जानता हूँ गुड़िया तुम्हारे हृदय में मरे प्रति कितना स्नेह है....। अपने भगवान से यही प्रार्थना करना गुड़िया भानू जैसे उदय हुआ वैसे अस्त भी हो जाये। दुनिया की कोई भी शक्ति मुझे पकड़ न सकें।

भइया – गुड़िया रो पड़ी और भानू उसे दिलाशा देता हुआ कहता रहा – पन्ना का नाम सुना होगा गुड़िया उदय सिंह की रक्षा के लिये अपने प्यारे बेटे चंदन का बलिदान कर दिया – तू भी तो एक नारी है गुड़िया क्या तेरा हृदय इतना कमजोर है कि नेकी और सच्चाई की राह पर, एक भाई को भी बलिदान नहीं कर सकती अखिर तेरा हृदय क्यों काँपता है....।

भ..........भइया! गुड़िया सिसक पड़ी! और भानू किसी गहरे सोच में डूब गया।

नहीं – उसने मन ही मन संकल्प लिया और बाहर निकल गया। गुड़िया फटी–फटी आखों से उसे देखती रही.....फिर सुबक पड़ी।

० ० ०

सात

सूर्य आकाश के मध्य में चमक रहा था! उबड़ खाबड़ जमीन किसी तावे के समान तप रही थीं! परन्तु वह निरन्तर वहीं भटक रहा था! न जानें उसे क्या तलाश थी! भूख प्यास ने उसे निडाल कर दिया था – परन्तु अद्‌भूत साहस एक अनदेखी शक्ति एक अज्ञात दिशा की तरफ ले जा रही थी। वायु के झोकों से उड़ने वाली धूल उसके शरीर पर अपना निवास बना रही थीं! कुंतल में रेत के कण टिमटिमातें खद्योत लग रहे थें – वह कोई और नहीं भानू था! सहसा उसे कुछ आहट सुनायी पड़ी अखिर कौन इस तपती धूप में भटक रहा है मन ही मन सोचा था तभी उसे स्पष्ट अश्वध्वनि जान पड़ी – पाँच घुड़सवार उसी तरफ बड़ रहें थें! क्या ये डाकू है जरूर होगें सोचते हुए भाने के अधरों पर मुस्कान नाच गयी। तभी वे घुड़सवार उसके करीब आकर रुक गये! उनमें से एक हाथ को उपर करता हुआ बोला – क्या मरने का इरादा है जो सिंह के मुख में घुसता जा रहा है।

भानू ने सिर्फ उसे देखा था मानों ये बातें उसने सुनी ही नहीं भानू की इस हरकत पर वह व्यक्ति क्रोध से तिलमिला उठा। बिना कुछ बोले तमंचा निकला और फयार कर दिया। परन्तु आश्चर्य उसकी आँखे फटी की फटी रह गयी – एक अस्मभव – समभव हो चुका था! उसकें मुख से बरबस निकल गया, वाकई तुमने कमाल कर दिया लड़कें। मेरी गोली से आज तक कोई बचा नहीं! वह मुस्कया बहुत बहादुर हो, जरा अपना नाम तो बता – पुलिस का अफसर है क्या!

नहीं मैं एक आग हूँ जिसका धर्म मजहब सिर्फ जलाना होता है। वैसे मैं इस समय एक बागी हूँ – मैं तुम लोगों के साथ खून की होली खेलना चाहता हूँ क्या तुम मेरा साथ दोगें....।

हमें तुम्हारी बातों पर विश्वास नहीं लड़के क्या पता तुम हमें धोखा दे रहे हो –

''इसका मतलब डाकू बनने के लिए परीक्षा देना पड़ता है।

''अवश्य – वह व्यक्ति बहुत धीरे से बोला – आओं मेरे साथ हम तुम्हे अपने सरदार तक ले चलते हैं। परन्तु शर्त यह है कि तुम्हारी आँखे बन्द होगी।

''मुझे मंजूर हैं – एक बात पूछना चाहता हूँ आपने एक के बाद दूसरा फयार क्यों नहीं किया – आप पांच हैं?मुझे चाहते तो टुकड़ा–टुकड़ा कर देतें परन्तु

ऐसा क्यों नहीं किया।

''हमारे भी कुछ उसूल हैं। जिनके कारण हम ऐसा नहीं कर सकते – या यूं कहों अभी तुम्हारी मौत नहीं थी।

''क्या तुम डाकू लोंग भी आदर्श का आवरण पहनते हो....। क्या तुम्हारे अन्दर भी करूणा दया कि भावना होती है.... ।

''मानव होने के नाते हम इनसे विलग नहीं लड़कें.... ।

''तब तुम डाकू नहीं हो – भानू चीख पड़ा!

''परन्तु क्यों वह व्यक्ति लगभग गरज उठा – अगर ज्यादा बदतमीजी की तो हम अपने उसूल भी तोड़ सकते हैं.... ।

भानू मुस्करा पड़ा – यह तो मैं मजाक करने लगा था। चलों मुझे तुम्हारे सरदार से मिलना है....। फिर भानू को एक घोड़े पर बैठाया गया फिर जब उसकी आँखे खुली तो अंधेरा हो चुका था!

''यह हमारा हेड क्वाटर है लड़के – वही व्यक्ति बोला। आप अपना नाम बताने का कष्ट करेगें भानू ने पूछा ''पहले तू अपना नाम बोल।

''भानू – संक्षिप्त स्वर था..... ।

''मुझे ठाकुर बीरपाल सिंह कहते हैं वह व्यकित बड़े गर्व से बोला।

''आपका सरदार भानू ने पूछा..... ।

मैं हूँ – एक नारी स्वर गूंज गया – और भानू हतप्रभ उस रमणी को देखने लगा।

यह वही लड़का है बीरपाल – युवती बोली – जिसके बारे में तुम बता रहें थें।

''हाँ यह वही लड़का है जिसके बारे में मैं आप को अच्छी तरह बता चुका हूँ..... । बीरपाल ने कहा.... ।

''इसने जो कहा वह सच है लड़के – युवती की ऊँगुली भानू की तरफ थीं। तू बागी क्यों बनना चाहता है मेरे सवालों का सही जबाब दे वरना कहते कहते युवती का चेहरा दमक उठा।

''कहानी कहने से क्या फाइदा बस आप इतना समझ ले इस समय मेरे दिल में आग लगी है। दिल तो कहता है सारे विश्व को जला कर राख कर दूं। इस

पृथ्वी से मनुष्य जाति का नामोनिशान मिटा दूं! पर ऐसा होगा नहीं – फिर भी मेरे शरीर में जब तक प्राण हैं तब तक अपना कर्तव्य पूरा करता रहूँगा....।

लेकिन तुम बागी क्यों बनना चाहते हो – जानते हो यह जीवन कितना भंयकर हैं – खाना भी नसीब नहीं होता कभी–कभी वर्षा, गर्मी एवं शीत लहरों के प्रकोप से यह शरीर सूख जाता है। नींद में भी चौंकने रहते हैं या यूँ समझों नींद भी नसीब नहीं होती।

आप ठीक कहती हैं बागी जीवन तूफान आंधी सहता हुआ न जाने कब खत्म हो जाता है, दुनिया के समाचार पत्रों पर उसकी दस्युवृत्ति की कहानी छापी जाती हैं। सरकार दस्यु उन्मूलन के नये नये कानून बनाती रहती हैं। देश का बच्चा–बच्चा उसे गाली देता है। इतना सब होते हुए भी क्या मैं पूछ सकता हूँ आप बागी क्यों बनीं।

तुम्हारे सवालों का एक ही जवाब है प्रतिशोध, हम सब कुछ सह सकते हैं परन्तु यदि कोई नारी को लूट कर बासी फूल के समान फैक देता है तो या तो नारी आत्माहत्या कर लेती है या मेरे समान जिंदा रहती है प्रतिशोध के लियें।

यदि आप बागी की कमजोरी जानती हैं तो यह सवाल मुझसे क्यों पूछ रही हैं! हाँ मैं आप को विश्वास देता हूँ आपके साथ दगाबाजी नहीं करूंगा, यदि आप को मुझ पर विश्वास नहीं तो जैसे चाहें परीक्षा के लिये तैयार हूँ।

बीरपाल युवती ने पुकरा था इस लड़के को हमारी संस्था का सदस्य बना दो – बता दो हमारे उसूल क्या है ऐसा कहती हूई युवती अंदर चली गयी। उसी क्षण बीरपाल आया उसके हाथ में एक सलाख आग के समान दहक रही थीं!

सीना खोल दो भानू – बीरपाल बोला – भानू ने शन्यू को घूरते हुए सीना खोल दिया बीरपाल ने आगे बड़कर वह सलाख भानू की सीने से सटा दिया चीखने की जगह भानू के ओंठो पर एक मुस्कान तैर गयी।

शाबाश बीरपाल ने कहा सचमुच तू बहादुर है हमें तुम पर गर्व है।

इसे मेरे पास भेज दो, वही नारी स्वर उभरा था थोड़ी देर के बाद भानू उस युवती के करीब था। अब तुम जा सकते हो बीरपाल युवती ने कहा, तो वीरपाल वहाँ से हट गया।

बहुत दर्द हुआ होगा बरबस ही युवती की आँखे नम होती चली गयी –

भावावेश में कपड़ा हटा कर वह भाग देखने लगी जहाँ पर सलाख ने अपना अमिट धब्बा छोड़ दिया था! यह मैने गलत परीक्षा ली मुझे कोई दूसरा रास्ता अपनाना था। तुम्हारा हृदय जला कर मैने पाप किया है – इसका मुझे प्रायश्चित है भानू.....हो सकें तो मुझे क्षमा कर दो।

कायर भानू उसकी आँखों में झाँकते हुए बालो इन्हें पोंछ लो बहन इनको मैं नहीं देख सकता, और आग अब मुझें नही जला सकती क्योंकि यह सारा शरीर आग बन चुका है। यह ऐसी आग है जिसे जल भी नहीं बुझा सकता, आप से निवेदन है जो कदम मैने आगे बढ़ाया है भविष्य में कभी उसे कमजोर मत करना।

आप ठीक कहते हैं खैर इन बातों को छोड़ों आप भूखे हैं मैं खाना लाती हूँ देखों इंकार मत करना – फिर वह युवती चली गयी।

वापस आकर भानू के सामने खाना रखती हुई बोली खाओ न....। परन्तु भानू खा न सका न जाने क्यों गुड़िया की तस्वीर आँखों के सामने घूमती चली गयी।

मैं आदेश देती हूँ खाना खाओ युवती का स्वर तेज था पर भानू पर कोई असर नहीं वह पूर्ववत बैठा रहा एकाएक युवती का चेहरा क्रोध से तमतमा उठा हाथ में तमंचा लेकर गुर्रायी, हम तुम्हे खत्म कर देंगें यदि तुमने खाना नहीं खाया।

भानू पर कोई प्रतिक्रिया नहीं वह शान्त था युवती का चेहरा मारे क्रोध के बिगड़ता चला गया फिर फायर की आवाज गूंज गयी....। परन्तु बेकार भानू पूर्ववत बैठा था.....हाँ भानू के हाथ में भी तमंचा था जिससे धुंवा निकल रहा था.....।

आप मुझे इस प्रकार घूर कर क्यों देख रही हैं दर असल मुझे अभी मरने का इरादा नहीं चलाओं गोली बुला लो उनको जिनके बल पर तुम्हें गर्व है। गुड़िया की कसम अगर मर भी गया – तो तुम जिंदा नहीं रहोगी यह बद्तमीजी बीरपाल ने भी की थीं परन्तु मैने कोई शिकायत नहीं कीं। दर असल मुझे अनुशासन में रहने की आदत नहीं। विशेषकर उस अनुशासन से घृणा है जिससे अधिकार की बू आती है। तुम्हारे उसूल बहुत कमजोर है सुना करता था डाकू अपने वचन की कद्र करते हैं परन्तु तुम....तुम्हारे आदर्श बहुत कमजोर हैं परन्तु मेरे उसूल पत्थर की लकीर हैं जिस पर बहनें वाला पानी, उसे और गहरा करता जाता है। आप के लिये इतना काफी है। युवती की आँखे छलछला आयी जिन्हें देख कर भानू का हृदय कराह उठा – भावावेश में कहता चला गया तुम फिर रोने लगी – अभी–अभी तो सिंहनी

बन गयी थी इतनी जल्दी परिवर्तन मैं कुछ समझा नहीं, क्या यही नारी की विशेषता है।

ऐसा नहीं है भानू – हम तुम्हारी परीक्षा ले रही थी बहुत खुशी है एक विश्वास पात्र तो मिला तुम्हारी बहादुरी देखकर मुझे अपनी हीनता महससू होती है। ऐसा नहीं कहते बहन अपनी हीनता मेरे सामने महससू करों – यह मैं कभी बरदास नहीं कर सकता – हो सकता है यह गुण भी कभी आप की रक्षा कर सकें.......कहता हुआ भानू खड़ा हो गया।

पहले यह खाना खा लो युवती बोली – आदेश नहीं प्यार से कहती हूँ अगर आप यह खाना नहीं खायेगें तो आज मेरा पहला दिन होगा बागी बनने के बाद व्रत का..... ।

व्रत कैसा व्रत भानू मुस्करा उठा..... ।

''व्रत नहीं भानू भूखी रहूगी – हम बागीयों के यहां व्रत का विधान ही कहाँ – कहते हुई युवती सिसक पड़ी.... । और भानू उस पहली में उलझ गया फिर उलझता ही चला गया आखिर इसका क्या रहस्य हैं – बड़ी अजीब लगती है – क्या मैं इसकें जीवन पहेली को सुलझ पाँऊगा परन्तु कैसे – कर्नल आनन्द जब तक जिन्दा है मनोरमा नागिन जिंदा है – प्रधान जैसा विश्वास घाती दोस्त जिन्दा है तब तक मुझे यह पहेली छोड़नी ही है। सुधा कैसी होगी क्या प्रधान कभी उसे अपनायेगा – अगर नहीं तो भानू प्रधान को भस्म कर देगा।

क्या सोचने लगे मैं प्यार से कहती हूँ खाना खा लों युवती की आँखें अभी भी नम थी जिन्हें भानू देख न सका.... ।

खाना खाते वक्त भी भानू के दिल में एक तूफान चल रहा था जिसमें अनन्त तस्वीरे आयी और बदल गयी।

''आप क्या सोच रहें हैं! युवती बोल पड़ी!

''कुछ भी नहीं भानू ने बड़ें शान्त स्वर में कहा..... ।

''आप हम से कुछ छिपा रहें हैं.... ।

आप बड़ी अजीब हैं इसके सिवा हमारे पास सोचने को और बचा ही क्या हैं। भानू मुस्करा पड़ा।

मैं अपने बारे में तुम्हें सब कुछ बता दूंगी.....पर अभी नहीं धीरे–धीरे........

कहते हुए युवती उठ गयी। हाँ कल शाम तुम्हारा दिल देखना चाहती हूँ इसलिये एक योजना बना डाली है।

मुझे कोई आपत्ति नहीं....।

अच्छा अब जाओ – मुझे थोड़ा आराम करने दों – बहुत थक गयी हूँ युवती का स्वर दर्द में डूब गया!

''आप ने अपना नाम भी नहीं बताया – याद का कोई आधार तो चाहिए।

''याद की रेखा खीचने के लिए आप मुझें गुड़िया कह सकतें हैं''

गुड़िया भानू ने दोहराया था – वह तो मेरी आत्मा हैं – परन्तु यदि आप चाहती हैं तो आप भी मेरे लिये गुड़िया हैं मेरा दिल, मेरी आत्मा, एक वही मेरी बहन थी, जिसका एक रूप अब तुम हों....।

बस अब मैं आराम से सौ जाऊगी कहते हुए युवती ने आँखें बन्द कर ली, और भानू को एहसास हुआ सचमुच वह गुड़िया है।

० ० ०

कई दिन बीत गयें।

हर दिन वह युवती भानू के करीब होती गयी! यह बात बीरपाल के लिए असहनीय थी! उसका ह्वदय जल उठा – युवती को पाने की चाह उसके दिल में वर्षो से उथल–पथल मचा रही थीं, जो एकाएक बिखर रही थीं। इस बात की भी बीरपाल को चिंता हो गयी कि कहीं भानू सरदार न बन जाय – और यदि ऐसा हो गया तो उसका सपना मिट्टी में मिल जायेगा ऐसा सोच–सोच कर उसका मस्तिष्क दर्द करने लगा – आखिर उसे अब क्या करना चाहिए सहसा उसके मस्तिष्क में एक विचार कौंधा और ओंठो पर जहरीली मुस्काहट तैर गयी।

रात की गहरी निस्तब्धता अपना डेरा डाले थे और बीरपाल को ऐसे ही वक्त का इंतजार था। काली रात निरन्तर भाग रही थीं। आधी पर पहुँचते ही बीरपाल उठा तमंचा टटोला और चुप चाप अंदर घुस गया शराब के नशे में सभी इस दुनिया से बेखबर थें! किसी को किसी की परवाह नहीं थी।

युवती भी बेखबर थी उसका अनुपम सौन्दर्य बीरपाल देख रहा था मानो निद्रा देबी दुनिया को सुला कर खुद आराम कर रही हों – असुंतलित कुंतल इधर उधर बिखरे थे मानों वर्षा ऋतु का चाँद घनें काले मेघों से गिर गया हो उसी तरह

युवती का मुख मंडल अवलोकित था – ऐसा प्रतीत होता मानों परमात्मा ने संसार की सुंदरता उसके मुख पर दिखाना चाहा है। आंखें बंद थी मानों मधुकर दिन भर सौरभपान करते–करते थक कर सूर्यमूखी पर सौ गया है। बंदन पर गगन रंगी साड़ी क्षितिज एवं अम्बर को मिला रही थीं। शरीर का वह भाग जो वस्त्र से विहीन था उससे बादलों के घर्षण से उत्पन हुई विद्युत प्रतीत होती थीं! साँसों की समधुर ह्रदय के हर तारों को झंकोर रही थी! साँस लेते समय उपर एवं नीचे जाते कुच सृजन एवं विनाश का मौन आमन्त्रण दे रहे थें।

सौन्दर्य के उस खाजाने को देखकर बीरपाल लगभग पागल सा हो गया अविलम्ब उसको पान करनें के लिये वह आतुर हो गया, किसी पिशाच की भांति बड़कर उसने युवती को दबोच लिया, लेकिन युवती भी दुनिया से वाकिफ थी वह इतनी जोर से चीखी कि बीरपाल की पकड़ डीली होती चली गयी, अपने को मुक्त करकें युवती उस नर पिशाच को देखने लगी।

''बीरपाल तुम युवती का मुख खुला का खुला रह गया....।

''हाँ जाने मन – मैं बीरपाल हूँ तुम्हारे रूप ने मुझे पागल कर दिया – अब मत तड़पाओं कहतें हुए बीरपाल ने बाँहें फैला दी।

बीरपाल होश में आओं मैं तुम्हारी पत्नी नहीं हूँ – हट जाओ मेरे आगे से – तुम ने मेरे साथ विश्वास घात किया, जानते हो तुम्हारे पाप का अंत क्या है। वह जुबान कहा चली गयी जिससे तुम मुझे बहन कहते थे। युवती कहती रही परन्तु बीरपाल पर उसका कोई असर नहीं हुआ धीरे–धीरे आगे बढ़ता हुआ बोला –

यदि तुम मेरी इच्छा पूरी नहीं करोगी – तो हम खुद आज अपनी प्यास बुझा लेगें वर्षों से इस ज्वालामुखी को सीने से दबाये हूँ परन्तु आज वह फूट चुकी है हम फिर दोहरते हैं, यदि अपनी भलाई चाहती हों – तो मेरी बात मान लों – नहीं तो हम दूसरा रास्ता निकालेगें, आज और अभी मुझे तुम्हारे बदन के एक–एक अंग से खेलना हैं कहता हुआ बीरपाल मुस्कया।

युवती उसकी बड़ी–बड़ी आँखें लम्बी तगड़ी देह देख कर सहम गयी। उसकी आंखों से झर–झर आंसू गिरने लगे भगवान यह कैसा संसार है क्या नारी की उत्पति इसीलिये होती है क्या वह इतनी कमजोर है कि बागी बनने के बाद भी अपनी रक्षा के लिये चीखती है – इस प्रकार न जाने उसकें मन में कितने तर्कों की आंधी चलती रहीं पर बीरपाल उनकी उपेक्षा करता हुआ युवती के एकदम करीब आ

गया। युवती का मौन उसका साहस बढ़ा रहा था – युवती को एहसास हुआ जैसे वह कहीं बहुत नीचे धंसती जा रही है साहस करके उसने कहा – बीरपाल यह मैं अंतिम बार कहती हूँ कि मुझ पर दया करों – परन्तु वासना दया कहाँ देखती है समय को बरबाद होता देख बीरपाल को अपनी गलती का एहसास हुआ फिर वह किसी भूखे शेर के समान युवती पर टूट पड़ा। जैसे बाज किसी कमजोर पंछी को दबोज लेता हैं, वैसे ही बीरपाल ने युवती को दबोच लिया। युवती चीखना चाहा तभी बीरपाल ने उसका मुँह दबा दिया और उसके वस्त्र का हरण करने लगा।

नहीं युवती के मुख से घुटी–घुटी चीख निकली परन्तु उस पिशाच पर कोई प्रतिक्रिया नहीं....वह युवती पर झुकता चला गया....वह अपने ओंठ युवती के ओंठो पर रखता कि पिट की आवाज के साथ रिवालवर की गोली उसके पैर में धंस गयी! खून का एक फौहारा फूटा – और दूसरे क्षण वह जमीन पर गिर गया। युवती कुछ समझ न सकी हैरत बस उसकी आँखे फटी की फटी रह गयी!

किसी असहाय की तरफ उठने वाले हाथ हम काट देते हैं बीरपाल कहता हुआ भानू बीरपाल के करीब पहुँच गया। फिर केश पकड़ कर घसीटता हुआ बोला इन पैरो पर बड़ा गर्व था न, इन्ही के बल पर यहाँ आये थे....और मैं इन्हें अलग किये देता हूँ........।

नहीं........बीरपाल घीघियया......।

आप इसे क्या सजा देगी भानू युवती की ओर मुखबित होकर बोला.......... हमारे बागीयों के कानून में एसे भेड़ियों के लिये क्या बिधान हैं मैं आप से इसलिये पूछ रहा हूँ कि आप हमारी सरदार हैं अंयथा अब तक यह नहीं इसकी लाश होती।

युवती भानू को देख रही थी जिसका चेहरा एक दम सपाट था परन्तु मुँह से कुछ कह न सकी।

''आप ने कोई उत्तर नहीं दिया भानू शान्त स्वर में बोला।

''यह फैसला आप की इच्छा पर है युवती ने कहा।

''ठीक है – भानू हँस पड़ा – यदि आप इसे मेरे उपर छोड़ती हैं तो देखों हम इसे क्या सजा देते हैं। कहते हुए भानू ने दाहिना पैर बीरपाल के गले पर रख दिया।

''नहीं बीरपाल ने हाथ जोड़ लिये।

''डर गया साला – भानू चीख पड़ा – मौत से सभी डरतें हैं बीरपाल बड़ी–बड़ी हस्तीयाँ भी मौत से काँप जाती हैं तुम हाथ जोड़ कर मेरे मानस को नहीं बदल सकते बीरपाल – जरा देर पहले एक बेबस युवती थी हाथ जोड़ रहम मांग रही थीं। परन्तु तुम्हें दया नहीं आयी। जब तुम्हारा हृदय इतना अकरूण है तो हमारा हृदय कोमल कैसे हो सकता है – क्योंकि तुम्हारा और मेरा रास्ता एक ही है मरने से पहलें एक बात ध्यान देकर सुन लो बीरपाल उन्हें मत सताओं जिनसे परमात्मा रूष्ट हो चुका है बागी बनने के बाद, आदर्श सिद्धान्त का खून कर दो – मनुष्यता का रक्त पी लो – परन्तु उन तत्वों को मत भूलों जो हमें बागी बनने को मजबूर कर देते हैं। दुश्मनी उन से होनी चाहिए बीरपाल या नहीं की उनको छोड़कर गरीबों की आहों से खेलते रहे मासूम युवतीयों को लूटते रहें यदि कोई ऐसा करता है तो भानू की दृष्टि में उसे जीने का कोई हक नहीं..... |

तुम्हारे हाथ जोड़ने से तुम्हारे कर्म क्षीण नहीं होगें बीरपाल मैं ज्यादा न कहकर इतना कहूँगा अगले जन्म में अपने को सुधारना, भगवान की याद कर लो बीरपाल सुना है मरनें से पहले उसकी याद करने वाला नर्क में नहीं जाता। मेरा भाषण खत्म हो गया अब हम तुम्हें उपर भेज रहे हैं – चलों तुम्हारी गाड़ी तैयार है। हाँ टिकट ले लेना अगर चलाकी की तो उपर वाले तुम्हें बाहर फैंक देंगें। कहता हुआ भानू बीरपाल के गलें पर कसाव बढ़ाने लगा – उसकी बड़ी शरीर किसी अजगर के समान पलटनें लगी परन्तु भानू का पैर लोह के समान दबता जा रहा था, जब भानू ने पैर हटाया तो बीरपाल खत्म हो चुका था, मर गया साला – कहता हुआ भानू युवती की तरफ पलट गया!

''आप ने इसका खून कर दिया – युवती का विस्मृति स्वर।

''हाँ भानू मुस्करा पड़ा, लेकिन आप इतना सहम क्यों गयी हमारे मार्ग में खून ही हरि नाम है गुड़िया, लोंग मंदिरों में सीताराम चिल्लातें हैं यदि उन भक्तों से पूछा जाय सीता राम कौन है तो वे क्या उत्तर देंगें यही न की भगवान हैं, लेकिन हमसे पूछा जाय, यह क्या किया तो यही कहेंगें खून कर दिया – खून क्या है, मैं नहीं जानता–परन्तु यह आप पूछ रही हैं तो मुझे आश्चर्य होता है। इस तरह डरने वाली युवती क्या खाक डैकती करती होगी भानू मुस्करा पड़ा।

युवती कुछ कह न सकी बस भानू को देखती रही जो किसी प्रतिमा के समान स्थिर था। मुख पर न तो कोई तनाव था न ही पश्चाताप की कोई रेखा

अपलक उन्हें देखती हुई युवती बोली – बीरपाल की मौत को शायद कुछ लोंग बुरा मानें, इस टुकड़ी पर इसका अधिपत्य था.... । लोगों को यह प्यारा था।

मुझे प्यार की कोई परिभाषा नहीं आती गुड़िया, न ही मैं इस प्यार वार को मानता हूँ हाँ यदि कोई पतन का रास्ता अपनायेगा तो भानू उसे माफ नहीं करेगा चाहे तुम हो या मैं ही खुद क्यों न हूँ.....समझी।

युवती ने गरदन उठायी, भानू की आंखे अंगारे के समान दहक रही थी, जिसे देखकर वह सहम गयी, भानू ने बीरपाल की लाश उठाली युवती उसे देखती रही फिर गहरे सोच में डूब गयी!

o o o

बीरपाल के मृत्यु को पन्द्रह दिन बीत गये। और इन दिनों में भानू ने युवती को कुछ उदास ही देखा भानू स्वयं अपने से पूछता.....अखिर इसका रहस्य क्या है परन्तु कोई उत्तर नहीं मिला – क्या मैने बीरपाल को मार कर गलत किया नहीं मैने जो किया वह ठीक है परिणाम की चिंता भानू को कब से होने लगी। वह अपने ख्यालों में खोया था कि युवती ने पुकारा चौंक कर भानू ने देखा वह सामने खड़ी थी।

''आप कुछ परेशान सी लगती है – भानू बोला।

''क्या करू भानू – दिल में एक दर्द सा न जाने क्यों उठ रहा है। क्या मेरा भी अंत आ गया। '

''नहीं गुड़िया भानू के अंत के बाद ही तुम्हारा अंत होगा। कहता हुआ भानू मुस्करा पड़ा।

''आप मुझसे इतना स्नेह करते हैं.... ।

''जरूरत से ज्यादा भानू उसके मानों भावों को भौपते हुऐ बोला – क्या तुम्हें मुझ पर विश्वास नहीं.... ।

''ऐसा मत कहों भानू – मुझे तुम पर अपने से ज्यादा विश्वास है......कहती हुई युवती मुस्करा पड़ी.....फिर चली गयी भानू भी चुप चाप वहाँ से हट गया थका हुआ सूर्य अपनी मंजिल पर था पूर्व से चाँद झाँक रहा था – मानो तपती हुई धरा को अमृत पिलानें को व्याकुल हो – धीरे–धीरे चन्द्र की किरणे सारी वसुधा पर छा गयी! सूर्य के द्वारा दग्ध पृथ्वी चन्द्रमा की शीतलता पाकर अपनी गर्म गर्म सांसे छोड़ रही

थी। सभी बागी खाना खाकर अपना–अपना स्थान ग्रहण कर लिया था, परन्तु भानू अब भी बैठा था।

''क्या देख रहे हो भानू – युवती बोली थीं।

''मजाक को.....भानू ने मंद स्मित में कहा.... ।

''कैसा मजाक....मैं कुछ समझ न सकीं.... ।

''न समझों तो ही अच्छा है गुड़िया, रात काफी हो गयी जाओं सो जाओं कल हमें एक जरूरी काम करना है शायद आप को पता होगा अत्यन्त आवश्यक।

कल की बात कल देखी जायेगी भानू – तुम्हें इतनी चिन्ता की जरूरत नहीं हम हाथ पर हाथ रख कर वर्षों रह सकते हैं मेरा मतलब रोटी खा सकतें हैं। आप थोड़ा मेरे साथ आना न जाने क्यों वह रूक गयी....!

भानू ने न चाह कर भी उसकी बात मान लीं – आओं आगे युवती और पीछे भानू उसके कमरें में पहुँच गये।

''अब मैं जा सकता हूँ – भानू बोला।

''चले जाना इतनी जल्दी भी क्या हैं – थोड़ा बैठो मेरा दिल जानें क्यों घबड़ा रहा है न चाह कर भानू बैठ गया आप उधर क्या देख रहें हैं – मेरी तरफ देखों न युवती बोली।

''आप कहना क्या चाहती हैं – भानू ने कहा''

''क्या आप समझ नहीं रहे हैं....... ।

''मेरी समझने की शक्ति बहुत कमजोर है.... ।

''मैं समझाती हूँ कहती हुई युवती ने भानू के गले में बाहें डाल दीं। क्या अब भी नहीं समझें..... ।

गुड़िया बनने से पहले क्या तुमने कभी मेरी तरफ देखा है। अगर आज तक तुमने मुझे नहीं पहचाना तो यह तुम्हारी भूल है मैं बहुत गिरा हुआ इंसान हूँ गुड़िया परन्तु जिन्दगी में एक कुर्बानी की है कि किसी भी नारी को नहीं छुऊगा। क्या आज तुम मेरी उस प्रतिज्ञा को तोड़ना चाहती हो – जिसके लिये मैने अपने को आग बना दिया।

मैं कुछ भी नहीं जानती भानू – तुम्हें मेरी इच्छा पूरी करनी होगी – वरना अगर मैं चीख पड़ी तो तुम्हारा भी वही हश्र होगा जो तुमने बीरपाल का किया था।

इसका मतलब तुम मुझसे बीरपाल का बदला लेना चाहती हो – परन्तु यह सपना तुम्हारा कभी पूरा नहीं होगा।

तुम्हें पछताना होगा भानू यह मेरा अंतिम फैसला है कहते हुए युवती खड़ी हो गयी। भानू उसे देखकर भौचका रह गया – युवती का अर्धनग्न शरीर जिस से काम के सर निकल रहे थें! भानू को एहसास हुआ जैसे उसका शरीर शिथिल होता जा रहा है – तभी युवती भानू से लिपट गयी – मैं प्यासी हूँ भानू – मुझे अपनी बाहों में लेकर मेरे नारीत्व को परितुष्ट कर दो।

तड़ाक – पूरे बेग से भानू का हाथ युवती के गाल पर पड़ा था वह हाथ जिसे बरदास करने वाला उसे आज तक कोई नहीं मिला था – फिर उस युवती की क्या बिसात थीं। एक ही हाथ में वह दूर छिटक कर गिरी तभी भानू के हाथ में तमंचा आ गया।

तू नारी है दिल कहता है आज तेरी कहानी खत्म कर दूं – परन्तु नहीं शायद मैं ऐसा नहीं कर सकता चीख जोर से चीख देखता हूँ कौन तेरी चीख सुनकर आता हैं कहता हुआ भानू युवती पर झुक गया।

मैं आग हूँ जो पानी को भी भाप बना कर खत्म कर देता है स्वर्ग की अप्सरा भी भानू को पथ भ्रष्ट नहीं कर सकती और मुझें जब तक अपने उपर इतना संयम है तब तक दुनिया की कोई भी शक्ति मुझे खत्म नहीं कर सकती, दिखा मुझे रूप का नशा – कहते कहते भानू का दूसरा हाथ भी युवती पर उठ गया।

नहीं कहती हुई वह फर्स पर लुड़क गयी। भानू ने उसे उठया पर फैंक न सका युवती के उमड़े हुए आँसू देखकर भानू का ह्रदय द्रवित हो गया।

अरे तू रोने लगी – तुझे पता है न मुझे रोने धोने की परवाह नहीं कपड़े पहन ले कहता हुआ भानू पीछे घूम गया।

कपड़ा पहन कर युवती सिसक रही थीं। परन्तु भानू उसकी परवाह किये बिना किसी दुसरी दुनिया में खो चुका था। कपड़ा पहन कर युवती पलटी भानू किसी जड़ के समान खड़ा था।

मुझें माफ कर दो भानू मैं बहक गयी थीं। मुझें अपने पर विश्वास न रहा – कहते–कहतें युवती सिसक पड़ी।

बहक गयी यह सुनने का मैं आदी नहीं, भूल से भी पकड़ी गयी आग घाव

के सिवा कुछ नहीं देती, क्योंकि उसका वही स्वभविक गुण है मुझे इस बात का दुःख है कि मैने तुम पर हाथ उठाया हो सकें तो मुझे क्षमा कर देना, कहता हुआ भानू बाहर निकल गया युवती, का शरीर अब भी काँप रहा था।

० ० ०

लूट सफल हो गयी....।, परन्तु डाकुओं का दल जैसे बाहर निकला – इंस्पेक्टर देवेश की आवाज गूंज गयी तुम सब पुलिस के घेरे में हो जिन्दगी चाहते हो तो हथियार डाल दों – अन्यथा तुम सब को भून कर रख दिया जायेगा। खबरदार किसी ने भागनें की कोशिश की तो अन्जाम बुरा होगा।

चन्द्र छण मौत जैसा संनाटा छा गया सारे डकैत रूक गये क्या करें कुछ भी समझ न सकें तभी भानू की आवाज गूंज गयी – हट जाओं इंस्पेक्टर फर्ज के नाम पर अपनी मौत को मत ललकारों, अन्यथा कुत्तें की मौत मारे जाओगें .....।

बकवास बंद करो भानू........इंस्पेक्टर चीख पड़ा हम आखिरी वारनिंग देते हैं! अपने को कानून के हवाले कर दो......शायद कानून को तुम पर दया आ जाय।

पागल इंस्पेक्टर भानू अट्टाहास लगाकर हंस पड़ा कानून तो मर गया क्या तुमने उसकी लाश नहीं देखी......।

फायर इंस्पेक्अर देवेश चीख पड़ा फिर पुलिस की अनन्त रायफलें गरज उठी.....। मजबूर होकर भानू ने भी फायर शुरू कर दी – तभी फिर देवेश की आवाज गूंजी, अभी भी समय है भानू हथियार डाल दों........।

मुझे मत मारों इंस्पेक्टर साहब कहते हुए एक डकैत ने हथियार डाल दिया धीरे–धीरे वह पुलिस की तरफ बड़ा की धाँय की आवाज गूंज गयी। बड़ता हुआ वह डाकू सदा सदा के लिये शान्त हो गया।

''भानू तुमने यह क्या किया युवती चीख पड़ी.....।

''खून भानू सिंह के समान गर्जा कान खोलकर सुन लो मेरे दोस्तों अगर किसी ने ऐसी बेवकूफी की तो मौत के सिवा मेरे पास देने को कुछ नहीं है – तुम आगे बड़ते रहों ऐसी धमकियों की परवाह करेगें तो मौत ही नसीब होगी – जो बागी होते है वे मरनें की परवाह नहीं करतें – तुम्हारी मौत तो उसी दिन हो गयी जिस दिन तुमने जंगल की शरण ली थीं – इस लाश की क्यों चिंता करतें हो बढ़ों......... तुम अवश्य बिजयी होगें क्योंकि तुम्हारें दुश्मन जीने की कामना में बंधे हैं और जीवन

का लोभ ही सबसे बड़ी कयारता है हार है – भानू के कहने पर कुछ डकैत आगे बड़े थें परन्तु अधिकांश हिम्मत हार चुकें थे।

वास्तव में पुलिस ने जबरदस्त घेरा डाल दिया था जिससे निकलना बहुत कठिन था और इसका एहसास भानू को अच्छी तरह हो चुका था – परन्तु अस्मभव को सम्भव करने की क्षमता रखने वाले भानू के लिये पुलिस कुछ न कर सकी – मौत से खेलते हुए भानू ने अनन्त पुलिस क्रमियों को दुनिया से अलबिदा कर दिया स्थिति देख कर देवेश बौखला गया सैकड़ों पुलिस पर मात्र दस डकैत भरी हो रहे थें....।

इस मुठभेड़ में भानू को भी क्षति उठानी पड़ी उसकें कई साथी दुनिया से दूर जा चुकें थें – परनतु वह विचलित नहीं हुआ....।

तभी सनसनाती हुई गोली युवती की बांह में धंस गयी आह कहती हुई युवती गिर गयी और उसी छण भानू पलट गया युवती की तरफ......मौत की तरफ मत जाओं भानू एक डकैत चीख पड़ा – परन्तु उसकी परवाह किये बिना भानू युवती तक पहुँच गया....।

गुड़िया – भानू ने पुकारा.......परन्तु कोई उत्तर नहीं भानू युवती को उठाना चाहा परन्तु तभी कई गोलिया उसके उपर से निकल गयी क्रोधावेश में उसकी मुठियाँ भीजती चली गयी और तुसरे पल पागल के समान गोलियाँ चलाने लगा भानू!

आह....कहता हुआ इंस्पेक्टर देवेश बैठ गया गोली उसकें पैर को बुरी तरह जख्मी कर चुकी थी.......देवेश के गिरते ही पुलिस बुरी तरह घबड़ा गयी भानू की अंधा धुन्द फायरिंग ने कई जवानों को जख्मी कर दिया जिनमें से अधिकांश मर चुके थे।

भानू ने युवती को उठा लिया फिर वहाँ तक लाया जहाँ उसका घोड़ा था – युवती ने आँखे खालेी बड़े क्षीण स्वर में बोली मुझे छोड़ दो – अपनी जान बचाओं भानू.......!

क्या बकती हो – भानू कायर नहीं मौत का एक खेल के सिवा कुछ नहीं जानता तुम्हारी हिफाजत करना हमारा धर्म है कहता हुआ भानू युवती को घोड़ा पर चढ़ा कर खुद पैदल चलने लगा, घोड़ा तेज चल नहीं रहा था शायद आंतक एवं भय

उस पर भी हाबी हो चुका था पलट कर भानू ने पीछे देखा – कोई नहीं था साले कायर ये नहीं जानते जीने का लोभ ही मौत है जो मरने पर उतारू हो जाता है उससे मौत भी कतरा जाती है।

कई घंटे वह चलता रहा घोड़ा बुरी तरह थक चुका था वह भी निढाल हो रहा था परन्तु हार मानना उसनें नहीं सीखा था!

एक गहन पाकर भानू ने घोड़ा रोक दिया युवती को उतरा विशाल जंगल बड़े–बड़े वृक्ष नाना प्रकार की आवाजें गूंज रही थी, परन्तु भानू जैसे बहरा था, उसे कुछ भी सुनायी नहीं पड़ रहा था।

गुड़िया केशो हो सहलातें हुए भानू ने कहा चोट ज्यादा तो नहीं लगी – शायद हम भटक गयें कोई सहारा नहीं रहा, सब उपर चले गयें क्या विधान है परमात्मा का.... ।

''मैं जिंदा हूँ.......युवती ने कहा था... ।

''भानू के ओंठो पर जहरीली मुस्काहट तैर गयी इस तरह डरने वाली युवती क्या खाक डकैती करती रही होगी जिसे यह भी पता नहीं कि मैं जिंदा हूँ.... । भानू मन ही मन सोच रहा था कि युवती कराह पड़ी.... । तभी वह जंगल प्रकाश से नहा उठा – भानू ने प्रकाश की तरफ देखा तो पता चला वह कोई मार्ग था – इसका मतलब ठीक जगह ही पहुँचा हूँ कहता हुआ भानू सड़क की तरफ चल पड़ा।

युवती अब भी अर्ध चेतन अवस्था में लेटी थीं।

सहसा सामने से दो हेड लाइट चमकी उसके प्रकाश से भानू ने अनुमान लगाया वह कोई छोटा वाहन जीप या कार थीं! यह देखकर भानू बीच रोड पर खड़ा हो गया उसके समीप आकर कार रूक गयी! पीछे बैठा व्यक्ति चौंका कार क्यों रोक दी चालक कुछ कहता इससे पहले भानू ने उसकें कनपटी से रिवाल्वर सटा दिया।

चुपचाप तुम लोंग नीचे उतर जाओं वरना सब के सब कुत्ते की मौत मारे जाओंगे.... ।

पीछे बैठा व्यकित भय बस पत्नी से लिपट गया, अरे यह क्या कर रहे हो श्रीमती कहती रही पार्टी का नशा नहीं उतरा घर में चल कर उतरना ड्रायबर देखेगा तो क्या कहेगा....अरे यह कार रूक क्यों गयी, श्रीमती जाग गयी थी..... ।

चालक नीचे उतर गया – उस व्यक्ति के साथ वह युवती भी उतर आयी।

आप का क्या नाम है साहब भानू बड़े शान्त स्वर में बोला वह व्यक्ति अब तक पूर्ण रूप से अपने को संयत कर चुका था अतः बड़े संजीदें स्वर में बोला....!

मेजर आर.के. पंडू....!

इतना सुनते ही भानू का चेहरा शक्त होता चला गया तमंचा पर कसाव बढ़ता गया.....परन्तु फिर न जाने क्या सोचकर बोला....। परेड जानतें हो मेजर....।

परेड का तो मैं माहिर हूँ....। उसने कहा.... ठीक है भानू बोला मैं तीन बोलूगा तुम तीनों दौड़ना शुरू कर दोगे, पीछे मुड़ कर नहीं देखना जब तक अगला आदेश न मिलें समझें.....तीन......।

वे तीनों भागे हेड लाइट की रोशनी में भानू ने उन्हें देखा फिर जाने क्या सोचकर तमंचा जेब में रख लिया – मुस्कातें हुए भानू ने युवती को उठाया और कार की पीछली सीट पर लिटा दिया और स्वयं ड्रायवर सीट पर बैठ गया।

कार की आवाज सुन कर तीनों रूक गयें, कार ले गया कहती हुई युवती ने माथा पीटा था.....।

कोई बात नहीं साहब ड्राइवर ने कहा जान तो बच गयी।

तुमने ठीक कहा रामलाल – कार तो आती जाती रहेगी जब तक हम भारत सरकार के अधिकारी हैं आखिर सरकारी सम्पत्ति भी तो अपनी है, बस खुदा जिन्दगी सलामत रखें....।

० ० ०

युवती की बाँह से गोली निकालने के बाद डॉक्टर बोला अब आप इसे ले जा सकते हैं कोई ज्यादा घाव भी नहीं हैं। जल्द ही भर जायेगा हाँ यदि गोली न निकलती तो मुश्किल था.....।

बहुत बहुत धन्यवाद डॉक्टर, आप ने मुझे नया जीवन दिया। यदि इसको कुछ हो जाता तो मैं सारे संसार में आग लगा देता, अच्छा मैं अब चलता हूँ डॉक्टर आप को रात में कष्ट दिया इसकी क्षमा चाहता हूँ हाँ एक बात याद रखना डॉक्टर यदि इसे कुछ हो गया तो आप भी......। कहता हुआ भानू युवती को उठा लिया!

कार आँखों से ओझल हो गयी परन्तु डॉक्टर अभी वहीं खड़ा था।

''डैडी......डैडी.........।

‘‘बेबी तू डॉक्टर ने चौंकते हुए कहा।

‘‘कौन था डैडी बहुत बद्तमीज था, आप को उसे जहर दे देना था सारी सेखी खत्म हो जाती।

‘‘बेबी डॉक्टर का स्वर तेज था.....धीरे बोल....दीवारों के भी कान होते है.... तू नहीं जानती वह कौन था.......वह जाना माना दस्यु भानू था....।

भानू.......लड़की काँप गयी वही भानू डैडी जिस पर सरकार ने पच्चास करोड़ रूपये का ईनाम घोषित किया है।

हाँ वही भानू बेबी.......आज कल उसके नाम से सरकार भी चिंतित है....।

आप ने ठीक किया डैडी......आई एम सारी......कहती हुई लड़की अंदर चल गयी.......थोड़ी देर के बाद डॉक्टर भी अपने कमरे में था........अब भी उस पर भानू की दहशत विद्यमान थी!

० ० ०

कार को छोड़ कर भटकता हुआ भानू मुख्यालय तक पहुँच गया भानू को देख कर गिरोह में आश्चर्य और खुशी की सीमा न रही।

दोस्तों यह डकैती हमें बहुत मंहगी पड़ी उस पुलिस इंस्पेक्टर के बच्चे ने हमें बरबाद कर दिया – अपनी जान पर खेल कर सरदार को यहाँ तक जिंदा लाया हूँ.....।

थोड़े इंतजार के बाद युवती ने आँखे खोल दी फिर उसके सामने सारी घटना घूम गयी दहिनें हाथ पर बंधी पटी देखकर आश्चर्य की सीमा न रही वह किस तरह यहाँ आयी मस्तिष्क मैं एक साथ कई प्रश्न कौंधे....।

रात के बारह बजे होगें – सारे डकैत सौ चुके थे परन्तु भानू अब भी युवती के करीब बैठा था......। युवती ने आँखे खोली।

‘‘आप अभी सोये नहीं......?

‘‘तुम्हारी तबियत ठीक है न....उत्तर की जगह भानू ने प्रश्न किया!

‘‘एक दम ठीक हूँ युवती बोली – हाथ में तोड़ी चोट आ गयी पर मैं जरूरत से ज्यादा डर गयी शायद आप ने होते तो कहते–कहते युवती सिसक पड़ी. ...। आप ने मेरे साथ जो किया वह एक पति भी नहीं कर सकता था, उस दिन मुझसे जो अपराध हुआ उसे माफ कर देना भानू...कहते–कहते युवती का स्वर गलें

में फंस गया...चेहरा आँसूओं से भीगता चला गया।

गुड़िया तू रोने लगी – भानू का स्वर भावुकता में डूबता चला गया – अरे पगली मैने तेरे उपर कोई एहसान थोड़े किया है – तुमने मुझे शरण दी भटकते हुए राही को मंजिल दी! फिर कहती है मैने तेरी जान बचायी अरे मैं कौन होता हूँ किसी की जान लेने देने वाला यह सब खेल है – सच्चाई तो आज भी मुझसे कतरा रही है – शायद उसे मुझपर दया नहीं आती, परन्तु मैं भी आजीवन उसे खोजूगा। स्यात् कभी सपना पूरा हो ही जाय.....।

भानू जो दिखायी न पड़ें उसे हम नहीं मानती और जहाँ तक मैनें देखा है मेरे जीवन दाता तुम्ही हों।

दोष उनका नहीं मौत चीच ही ऐसी हैं जो तत्व ज्ञानियों को भी मोहित कर देती है बीर बड़े–बड़े देश प्रेमी भी काँप जाते हैं – दुनिया में कोई भी मरना नहीं चाहता भानू – क्योंकि हर प्राणी सुःख के लिये व्याकुल हैं – इसलिये डरना मनुष्य की सहज प्रक्रिया हैं – परन्तु तुम शायद उन से भिन्न हो – यदि मैं पूछू तो क्या बता सकते हो – तुम्हारे अंदर मानवीय भावना का विचित्र अंकुर क्यों है?

दुनिया से अलग मैं नहीं गुड़िया – हो सकता है कि सोचने का ढंग शायद मेरा कुछ भिन्न है दुनिया में एक मानव दूसरे से हर तरह से मिल सकता है परन्तु विचारों से नहीं, यह बात मैं भी मानता हूँ कि बालक का संस्कार उसका घर है। उसके बाद शिक्षा परन्तु फिर भी एक घर में उत्पन बच्चे भी विचार में भिन्न–भिन्न होते हैं। मेरे कहनें का मतलब मानवीय भावना से मैं रहित नहीं हूँ हाँ उन से उपर उठनें की कोशिश सिर्फ विचारों पर केन्द्रित है आप के सवाल का जवाब मेरा विचार ही है। अब यदि यह प्रश्न पूछे कि मेरे विचार ये कैसे बनें तो मैं इसका उत्तर नहीं दे सकता। परन्तु ऐसा भी नहीं है कि आप समझें न, क्योंकि आप के साथ रहते हुए इतने दिनों में आप मुझे काफी समझ चुकी होंगी – अगर नहीं तो इसमें मेरा कोई दोष नहीं हाँ वासना को दमन करने की अपेक्षा दिशा देना मैं श्रेयकर समझता हूँ।

मैं ने आप को बहुत अजीब पाया जब–जब देखनें की कोशिश की....एक बात बताओंगे भानू तुम्हारे बागी बनने की क्या उद्देश्य है।

उद्देश्य भानू के ओंठो पर जहरीली मुस्काहट नाच गयी – मेरा उद्देश्य बरबादी और तबाही फैलना है इस देश में, खत्म कर देना है आदमखोर–आदमी को. ......जिसने शराफत की नकाब पहन कर हम से जयजयकार कराकर हमारा ही खून

पीया है परन्तु मूल मकसद मजलूम को हक दिलना ही मेरी बागावत हैं – मैं जानना चाहता हूँ गुड़िया आखिर तुम्हारी क्या मजबूरी थी जिसके कारण तुमने नारी को खत्म कर दिया – विश्वास करों गुड़िया तुम्हारी बरबादी करनें वाले के खानदान को खत्म कर दूंगा।

भगवान के लिये शान्त हो जाओं भानू......तुमें सब कुछ बताऊगी क्योंकि मेरा अब आत्मविश्वास खत्म हो चुका है दिन प्रति दिन कमजोर होती जा रही हूँ –

तुम्हारे सिवा मेरा है ही कौन – भानू मरनें से पहले मैं भी किसी का खून करना चाहती हूँ परन्तु वह बड़ा आदमी है जिसके कारण में आज तक सफल न हो सकी।

कहानी मत कहों गुड़िया साफ–साफ उसका नाम और पता बताओं वह बड़ा आदमी है तो क्या हुआ क्या मौत उससें डर जायेगी सच तो यह है गुड़िया इन बड़े आदमियों ने मेरे अन्दर घृणा भर दी है – वितृष्णा भर दी इन लोगों ने मेरे अन्दर हर बड़ा आदमी आदमखोर नजर आता है जिनका खून कर के मुझे सुकून मिलता है शक्त नफरत है मुझे इन लोगों से – मुझें उसका नाम बता गुड़िया शाम तक उसकों लाश में बदल दूंगा चाहे वह विश्व का शासक ही क्यों न हों।

मैं आप के साथ चलूगी थोड़ा घाव भर जानें दो, कम से कम उसकी बरबादी अपनी आँखों से देख लूगी।

अगर तुम्हारी यही इच्छा है तो मुझे मंजूर है थोड़ी प्रतीक्षा ही सही – भानू ने गहरी सांस ली – हाँ याद आया मुझे मैनपुरी जाना है बहुत जरूरी काम है गुड़िया तुम एक दम मेरी चिंता नहीं करना मैं शीघ्र ही वापस आ जाऊगा।

जब तक मैं ठीक नहीं हो जाती आप कहीं नहीं जायेगें यह मेरी आप से बिनती है भानू....।

''इसका मतलब आप मुझे बांधना चाहती हैं.........।

''नहीं भानू बस जाने क्यों दिल धड़क रहा है'' तुम गये तो मैं शायद ही...।

''ऐसा नहीं कहतें गुड़िया भानू ने उसकें मुख पर ऊँगुली रख दी जब तक तुम ठीक नहीं हो जाती मैं कोई भी कदम नहीं उठाऊगा कहता हुआ भानू गुड़िया के उपर झुक गया – कुन्तल अस्त वस्त थे जिन्हें संवारते हुए वह बोला दो दिन में चेहरा पीला पड़ गया इतना सोचती हो क्यों गुड़िया, जो होना है वह अटल है, उसे

कोई भी टाल नहीं सकता।

आप ठीक कहतें भइया – फिर मैं सोचती ही कहा हूँ आप जैसा भाई पाकर सोचने की शक्ति ही क्षीण हो गयी है.....। मैं कितनी भग्यशाली हूँ..........।

तुम कितनी भाग्य शाली हो गुड़िया भानू का हृदय जानता है। कहतें कहते भानू का स्वर काँप गया........बस एक बार मुस्करा दो गुड़िया हँसना भी एक टानिक हैं – भानू ने कुछ इस ढंग से कहा कि युवती के अधर पर एक पतली मुस्कान तैर गयी.......भानू को एहसास हुआ वह कितनी बनावटी थी.......जो उसका दिल रखने के लिए बिना ऋतु के पुष्प के तरह आ गयी थी.......।

गुड़िया भानू बोला लोग हँसते है अपनी खुशी जहिर करते है.....हर्ष परिणति होता है हँसी में, परन्तु तू हँसती है तो तेरे ओंठ रोते है आँखे उस देखकर कुछ देने को सोचती है परन्तु उनकें पास है क्या वही खारा पानी........और वे मजबूर होकर उसी को भेंट कर देती हैं – परन्तु वह खारा पानी ओंठ तक न पहुंच कर कपोलो से बहता हुआ वसुधा पर टपक जाता है स्यात् इस लिये की भूमि भी प्यासी है मैने ठीक कहा न गुड़िया।

युवती की आँखें भर आयी – दिल में भानू की बात उतरती चली गयी – कितना यर्थाथ चित्रण किया था भानू ने उसकें जीवन का....जिनमें सिर्फ काटें थे चुभन दर्द तड़फ.....और इन्ही का नाम था उसके लिये जिन्दगी एक ऐसी जिन्दगी जो मौत से बदतर थी उसने आँसू पोछे थे फिर मुस्काराकर भानू से बोली जाओं सो जाओं रात काफी बीत चुकी है.....।

जाता हूँ गुड़िया तुम अकारण मेरे लिये परेशान न हो........अरे.....अरे. तुम रोने लगी......भानू उसके आँसूओं को पोछने लगा अपने हाथों....गर्म पानी का एहसास भानू को ऐसा लगा....मानों वे युवती के आँसू नहीं वरन् रक्त है.....। उथल पथल मच गयी भानू के हृदय में..........मत रो मेरी बहन.....हमारे लिये यह शोभा नहीं देता। यह तो कल तक हमारी धरोहर थी आज हम डाकू है रोना हमारी कयारता है।

जानती हूँ भानू.........रोना हमारे लिये भूर्खता है........। परन्तु ना जानें क्यों, ये आँसू नहीं रूकतें......।

भानू गहरे सोच में डूब गया – रूकतें भी तो नहीं, परन्तु मेरी आँखों में ये

क्यों नहीं आते.....आखिर क्यों – शायद इनकी मुझसे दोस्ती नहीं – आप कुछ सोचने लगे तभी युवती बोल पड़ी...... ।

नही तो चौंकते हुए भानू ने कहा था, दरअसल बात यह है कि आप से कम दुनिया ने, मुझे भी नहीं सताया न जाने किसने मेरा भाग्य लिखा था – परन्तु आप जितना आँसू बहाती है मैं उनका एक सौंवा भाग भी न बहा सका आखिर क्यों, मैं नहीं जानता उस दिन होली थीं लोंग न जाने कितनी उमंगों में झूम रहे थें परन्तु मैं भूखा था आधी रोटी भी मुझसे छीन ली गयी, जानवर से बद्तर व्यवहार करतें थे वे लोग, जाने दो वह सब बीत गया उसकी याद से चिंगारी ही भड़केगी। इतना सब होने के बावजूद मैं रो न सका शायद रोना ही नहीं जानता था....... ।

छोड़ों इन सब बातों को गुड़िया भानू ने एक गहरी साँस ली......फिर बोला.. ...अब तू नहीं रोयेगी बहन, तू एक बागी है मेरी बहन है किस की हिम्मत है जो तुझ पर ऊँगुली उठा सकें अगर तुझे कुछ हो गया तो आग लगा दूँगा सारी दुनिया को – खत्म कर दूंगा पथ्वी से मनुष्य का नामों निशान........ ।

भानू – युवती का स्वर अथाह प्रेम में डूब गया, सोच नहीं पा रही हूँ कैसे तुमसे उऋण हो पाऊगी।

गुड़िया भानू का स्वर तेज था – आइन्दा अगर तुमने ऐसा कहा तो मैं तुम्हें माफ नहीं करुगा....भाई बहन पर उपकार नहीं करता यह उसका कर्तव्य बनता है, तुमने मुझ पर नहीं भारतीय संस्कृति पर उँगुली उठायी है।

''मुझे माफ कर दो भइया – युवती सिसक पड़ी।

मैने तुम्हें दोषी ही नहीं माना गुड़िया अच्छा अब आराम कर – मैं चलता हूँ. .... । अगर कोई परेशानी हो तो आवाज लगाना – तुम्हें मेरी कसम गुड़िया......अपनी पीड़ा छिपाना नहीं.....!

भानू चला गया – युवती उसकों लेकर जाने क्या–क्या सोचती रही – बरबस ही उसकी आँखें भीग गयी – भानू के अतुल स्नेह की पराकाष्ठा देखकर....न जानें किस भावना के वशीभूत होकर स्वतः उसके हाथ जुड़ गयें......उसका मूक नमन था भानू को......... ।

○ ○ ○

भानू जेल से भाग गया – यह बात किसी आग के समान सारे देश में फैल गयी – और जब यह समाचार सुजान ने सुना तो उसे एक धक्का लगा – वही हो गया जिसका उसे संदेह था अलका एवं सुधा की बेजान आंखे उस समाचार पत्र को घूर रही थी!

''अब क्या होगा भानू को भइया – सुधा बोली।

''सारी उम्मीदों पर पानी फिर गया सुधा – भानू बागी बन गया हम उसे भूल जायें, इसी में भलाई है! फिर तुम्हें चिन्ता करनें की जरूरत नहीं हम तुम्हारें लिये हर सम्भव सहायता को तैयार है वह भी एक बहन पर फर्ज के रूप में – मेरे लिये तुम में अलका में कोई भेद नहीं अब मैं दो बहनों का भाई हूँ – कहते–कहते सुजान का स्वर लड़खड़ा गया। मुझे महान दुःख हुआ सुधा भानू ने कितनी नासमझी की परन्तु भाग्य की रेखाओं एवं काल के कूर गति को कौन रोक सकता है – भानू जेल से निकलने के लिये पुलिस इंस्पेक्टर की वर्दी का इस्तेमाल किया और एक व्यक्ति का खून कर दिया – मैं आप को बताकर दुखी नहीं करना चाहता था बहन....परन्तु हालात के सामने मजबूर हूँ...... ।

भइया अलका बोली – क्या अब कोई रास्ता नहीं है जिससे भानू सुधर जायें..... ।

अब सोचना बेकार है – भानू पीछे कभी नहीं आ सकता उसें मैं अच्छी तरह जानता हूँ – किसी भी काम को कर के पश्चाताप करना उसकी आदत नहीं..... ..अपनी मंजिल तक पहुंचने के लिये अब वह खून की होली खेलेगा – हमें उसे भूलना ही होगा कहता हुआ सुजान आँखे पोंछता हुआ बाहर निकल गया।

''दीदी – सुधा अलका से लिपट गयी – अब मेरा क्या होगा।

''अरे पगली मैं भी तो तेरी बहन हूँ तू इतना पेरशान क्यों हो रही है – तेरी खुशी के लिये हम अपने जान की बाजी लगा देंगी सुधा – मत रो मेरी बहन कहते–कहते अलका भी सिसक पड़ी.... ।

दीदी......सुधा का स्वर गलें में फंस गया...... । अलका ने बड़ी मुश्किल से सुधा को अलग किया फिर वह भी गहरे सोच में डूब गयी... ।

रात की गहरी निस्तब्धता चारों तरफ व्याप्त थी – अलका और सुजान सौ चुके थें – परन्तु सुधा की आँखों में नींद नहीं बस सोचों की अगड़ित परछाइ तैर रही

थी – अंत में उसने निर्णय लिया और एक खत लिखने लगी।

प्यारे भइया सुजान, दीदी,

अंतिम नमस्कार

आप से क्या कहू भइया – वक्त ने मेरे साथ बहुत बड़ा मजाक किया – माँ की जिन्दगी के लिये इज्जत तक बेच दी – परन्तु शायद तब यह न समझ सकी इसका परिणाम कितना भंयकर होगा – उसका नाम लेकर मर जाती परन्तु आप से उसका जिक्र न करती – परन्तु भानू को वचन दिया था भइया – और मैं उसके साथ विश्वास घात नहीं कर सकती भइया भानू, एक दिन जरूर आयेगा – ऐसा मुझे पूर्ण विश्वास है – यह जान कर उसे दुःख होगा आप उन्हें धीरज बंधाना।

मेरी आबरू लूटनें वाला आपका मित्र प्रधान था, जो शीघ्र ही मनोरमा से शादी करने वाला है और मेरे पेट में उसके पाप का अंकुर पल रहा है अब इस बारे में कुछ सोचना चाँद को पकड़ना हैं। मैं यह पाप आखिर कब तक छिपाऊगी एक दिन इसे फूटना ही है परन्तु मैं आपके विश्वास को कभी दाग दार नहीं करूगी – इस कारण आज मैने इसकी जड़ खुद को खत्म करने का फैसला कर लिया है – दुःखी नहीं होना भइया – शायद मेरा ऐसा ही अंत नियति को मंजूर था।

अब तक न जाने कभी मेरी कहानी खत्म हो चुकी होती – परन्तु भानू ने मुझे जलती चिता से निकाल लिया – आत्महत्या न करनें की कसम दी, उससे सब कुछ सच सच बता देना भइया इस दुनिया में भानू से मैं उऋट नहीं आज उससे विश्वास घात कर रहीं हूँ पर इस अभागिनी बहन को माफ कर देना। अलका दीदी से जो अपनत्व आत्मयता मिली वह सगी बहन से भी मुश्किल है। ऐसी प्यारी बहन के साथ विश्वासघात की क्षमा माँगती हूँ, मुझे माफ कर देना दीदी.....।

मुझें खोजना नहीं भइया – मैं इस दुनिया से दूर जा रही हूँ – आप के विश्वास के लिये अलिपुर रेलवे स्टेशन पर मेरी लाश मिल जायेगी। उस लाश को देखकर मत रोना भइया तुम्हे मेरी कसम सुधा तो बहुत पहलें मर गयी थी.......आपने सिर्फ उसकी लाश देखी है लाश के लिये नहीं रोना भइया........मुझे माफ करना भइया.........अलविदा।

आपकी अभागिनी बहन

सुधा

पत्र को लिखकर उसने पड़ा – आखों से झर–झर आँसू बहने लगें परन्तु वह कराह न सकी – चुप चाप बाहर निकल गयी, बाहर गहरी खामोसी उसका स्वागत कर रही थी, थोड़ी देर तक वह वहीं खड़ी रही फिर चौखट को प्रणाम किया, और दूसरे क्षण भाग पड़ी उसे डर था शायद कोई पीछे न हो, स्टेशन के करीब पहुँची तो बुरी तरह हाँफ रही थी, पीछे मुड़ कर देखा कोई आहट नहीं दूर तक गहरा अंधेरा घना काला डरवाना.........तभी रेल की पटरी प्रकाश से नहा उठी – मुझे माफ करना भइया........बड़–बड़ाती हुई सुधा पटरी पर लेट गयी।

○ ○ ○

आठ

सुजान के हाथों में वह कागज लरज रहा था जिसे सुधा ने उसके ंलिये लिख छोड़ा था – पूरा पत्र पढ़नें के बाद उसके मुख पर चिंता की रेखायें गहरी होती चली गयी अलका अपलक सुजान के भाव शून्य मुख मंडल को देख रही थी।

क्या लिखा सुधा ने भइया!

सुजान ने वह पत्र अलका को दे दिया – और अलका पड़ कर मानों जड़ हो गयी – तुषार पात हो गया उसके ह्रदय पर.....दर्द की एक ऐसी वेदना उठी जिसे चाह कर भी वह कह न सकी।

सुधा ने आत्महत्या कर ली – सुजान बोला – मुझे स्वप्न में भी इसकी कल्पना नहीं थी....अनर्थ हो गया दीदी.......यह पत्र सम्भाल कर रखना भानू को विश्वास दिलाने का एक मात्र यही साधन है....मैं स्टेशन पर जा रहा हूँ...... ।

अलिपुर रेलवे स्टेशन के पास सुधा की लाश मिल गयी – विकृति शव.... जिसे देखकर सुजान का ह्रदय काँप गया। सब कुछ खत्म हो चुका था सुजाान के पीछे अलका भी वहाँ पहुंच गयी सुधा की लाश देखकर वह फूट फूट कर रोने लगी।

मत रोओ दीदी.....सुजान बोला मनुष्य को अपने कर्मो का फल भोगना ही पड़ता है, शायद इसका उदय एवं अंत कुछ ऐसा ही था – फिर हम कर भी क्या सकतें हैं अपनें प्राण भी देकर इस को वापस नहीं ला सकतें.......अलका सुजान की बाते अनसुनी करती हुई फटी–फटी आखों से सुधा की लाश देखती रही.... ।

चिता लग कर तैयार हो गयी अलका अभी तक बेसुध थी परन्तु सुजान ने जब सुधा की मांग भरनी चाही तो वह चौंक पड़ी।

यह क्या कर रहें हो भइया – सुधा कुँवारी थीं......सुजान के ओंठो पर दर्द भरी मुस्कान तैर गयी – हम अपना कर्तव्य पूरा करना चाहते हैं दीदी यह बदनसीब जब तक जिन्दा थी संसार ने इसकें साथ बुरा सलूक किया तभी तो बेचारी संसार से डर गयी, परन्तु संसार के लोंग ऐसे ही बेरहम होते हैं – उन्हें अपनी पीड़ा का ही एहसास होता है, दूसरे के रक्त को वे पानी से बद्तर समझते हैं बहुत स्वार्थी है दुनिया – अपने मतलब के सिवा कोई मंत्र ही नहीं रह गया – इस पगली ने दुनिया को समझा ही नहीं अगर मरने से पहलें यह बता देती तो शायद हम प्रधान के पैर पकड़ कर इसकी मांग भरवा देते – लेकिन इसने हम पर विश्वास ही नहीं किया

भाई के रहते भगिनी का यह हश्र हो, धिक्कार है उस भाई को....नालत है उस की जिन्दगी, परन्तु अब क्या करू दिल के अरमानों को पूरा करने के लिये इसे सुहागिन बना कर अंतिम बिदाई दिये देते हूँ.....ऐसा कह कर सुजान ने चिता में आग लगा दी. ... ।

भइया भानू को क्या जबाब दोगें – उसने इसे हमारे हवाले किया था – और हम कुछ न कर सकें।

जलती हुई चिता की तरफ से धूम कर सुजान ने अलका की तरफ देखा – उसके मुख पर पसीने की नन्ही–नन्ही बूदें चमक रही थी – चिता धधक रही थीं।

जिन्दगी और मौत पर किसी का बस नहीं होता दीदी ये होती है और मिट जाती, कुछ ऐसे जैसे घनो में विद्युत कब होकर कब मिट जाती है हम ने भानू को वचन दिया था इसे दुःख नहीं होगा लेकिन मौत न होगी – ऐसा कोई वचन नहीं।

आप तो जानतें है भइया भानू भगवान नहीं मानता – आप के दर्शन की वह व्याख्या नहीं सुनेगा भानू भाग्य की बात नहीं मानेगा वह कारण जानना चाहेगा आखिर सुधा ने आत्महत्या क्यों की।

यह तो मैं भी जानता हूँ दीदी – शायद उसे इस अनहोनी की आशंका थीं – एक बार उसनें मुझसे कहा था जब इसकी माँ दम तोड़ रही थीं तो यह अपनी इज्जत बेच रही थी लेकिन फिर भी वह अपनी माँ को बचा न पायी ।

''भैया, क्या भानू को प्रधान का नाम बता दोगे।

''दीदी, यह पाप अपने सिर पर रखकर मरना नहीं चाहता मैं प्रधान को कभी माफ नहीं कर सकता, दिल तो कहता है ऐसे कमीनें का खून अपनें हाथों कर दूं, परन्तु ऐसा नहीं कर सकता – शायद इस लिये कि मेरी आत्मा कमजोर है। परन्तु भानू को बताकर शायद अपना फर्ज पूरा कर लूँ। यह जान कर भानू सब कुछ भूल जायेगा – बस उसे एक प्रधान के सिवा कुछ भी याद नहीं रहेगा – जब तक वह प्रधान का खून नहीं करेगा, पानी भी नहीं पीयेगा, वह इतना भावुक है फिर इससे फक्र ही क्या पड़ता है भानू ने न जानें कितने खून कर दियें अगर उसनें प्रधान का खून कर भी दिया तो क्या उसकी सजा बड़ जायेगी, उसें फांसी से ज्यादा सजा नहीं होगी, वह आज या दस वर्ष बाद पकड़ा जाय।

अलका ने कोई उत्तर नहीं दिया हाँ उसके चहेरे पर संतोष विद्यमान था

चिता जल कर शान्त हो गयी सुजान ने उसे कई बार कुरेदा – सुधा का सारा अस्तित्व समाप्त हो गया, तो राख को नदी के हवालें कर दिया – हाँ सुधा की कुछ हड्डीयाँ उसनें एक कपड़ें में बांध ली।

''इसे क्या गंगा के हवालें करोगें भइया.....।

''नहीं सुजान का दर्द मिश्रित स्वर उभरा – इन्हें भानू को दूंगा दीदी, और कहूँगा इन्हें किसी की तलाश है ये प्यासी है तुम दुनिया की प्यास बुझातें हो तो क्या अपनी बहन की प्यास नहीं बुझाओंगें।

भइया इसका मतलब आप हिंसा में विश्वास करने लगें।

ऐसा नहीं है दीदी तुमने अहिंसा का अर्थ गलत लगा लिया – मैं अहिंसा में विश्वास रखता हूँ – परन्तु अहिंसा का मतलब कायरता नहीं विश्व के कानून नियम जब खूनी को फाँसी दे सकते हैं तो क्या इसका मतलब कानून हिंसा पूर्ण हैं कानून शान्ति के लिये है.....कानून न्याय के लिये है – मैं न्याय के तकाचा को देखकर ऐसा कर रहा हूँ क्योंकि प्रधान क्षमा योग्य नहीं है – कहता हुआ सुजान जली चिता की परिक्रमा करने लगा।

चलों दीदी हमारा फर्ज पूरा हो गया। सुजान के पीछे अलका चल रही थी, परन्तु उसके पैर बेजान थे, चेहरे पर दुःख की गहरी परत थी......।

o o o

यह मैं क्या सुन रहा हूँ मनोरमा – प्रधान मनोरमा को झिझोड़ता हुआ बोला कहीं दुनिया मजाक तो नहीं कर रही है।

आप ने ठीक सुना मि0 प्रधान – मनोरमा ने मुस्कातें हुए कहा – दर असल रणबीर के सिवा मैं किसी से प्यार करती ही नहीं आप से तो बस यूं ही.........हाँ अभिनय कह सकते हों......।

नाटक – प्रधान का मुख खुला का खुला रह गया इसका मतलब तुमने जो किया वह सब नाटक था लेनिक मैं एक बात नहीं समझ पा रहा हूँ आखिर तुम्हे मिला क्या, यही न की मैं पागल के समान रोता रहूँ और तुम मुझ पर मुस्काती रहो।

ऐसी बात नहीं है प्रधान दर असल रणबीर ने तुम को बस में करने के लिए मुझे तुम्हारे पास भेजा था। उसकी दुश्मनी भानू से थीं और आप भानू को बहुत प्यार करते थे। रणबीर का उद्‌देश्य भानू को तुमसे अलग करना था जो हो चुका है अब

सब भूल जाओं प्रधान तुम्हारे उपर मुझें भी तरस आता है परन्तु मैं क्या करु मजबूर हूँ........।

इसका मतलब तुमने मेरे साथ धोखा किया – मैने अपनी दोस्ती जिस प्यार पर कुर्बान कर दिया वह एक फरेबी एवं मक्कार लड़की निकली मैं तुम्हारे बिना जिन्दा नहीं रह सकता, कहते – कहते प्रधान की आँखो से आँसू टपक पड़ें – मनोरमा तुमने मुझे कहीं का नहीं रखा भानू मेरा ही नहीं तुम्हारा भी दुश्मन है। वह मुझे ही नहीं अपितु तुम्हें भी खत्म करने का प्रयास करेगा।

बस करों प्रधान और हम सुनना नहीं चाहती भानू मेरा कुछ नहीं बिगाड़ सकता हाँ आप अपनी चिंता करें जहाँ पर सशस्त्र जवान हर दम तैनात हो वहाँ पर भानू क्या उसका भूत भी नहीं आ सकता। आप तो जानते ही है कि अगले सप्ताह मेरी शादी होने वाली है – हाँ आप जरूर आना मनोरमा मुस्करा उठी।

आग की जलन पर नमक मत छिड़कों मनोरमा, मुझें आश्चर्य होता है मेरे इतने निकट रह कर भी तुम दूसरे को चाहती थीं कैसी नारी हो – मैं समझ न सका.....।

इक्कीसवीं सदी में यह सोचना मूर्खता है प्रधान यदि दुनिया की हर चीज जरूरत के अनुसार काम में लायी जा सकती है – तो यदि मैंने अपने शरीर की जरूरत तुम से पूरा कर ली तो कौन सा आश्चर्य हो गया – मनोरमा मंद–मंद मुस्कायी।

मुझे तुम से यह उम्मीद नहीं थी – प्रधान बड़े दर्द भरे स्वर में बोला।

यह आपका अपना विचार है मेरा नहीं हाँ एक बात ध्यान से सुन लो – आज के बाद भूल कर भी मुझसे मिलने की कोशिश नहीं करना अन्यथा परिणमा बुरा होगा, मैं नहीं चाहती आप की बदनामी हो – मनोरमा तुम होश में हो – तुम जानती हो क्या कह रही हो बदनामी मेरी होगी तो तुम्हारी भी....।

मनोरमा मुस्कुरा कर रह गयी – प्रधान उसकी मुस्काहट देख कर अंदर तक जल उठा – वही ओंठ जिसे देखकर वह सब कुछ भूल जाता था और आज उन्हीं ओंठो की मुस्काहट डरावनी भयंकर लग रही थी, दिल कहता इस मुस्काहट को सदा–सदा के लिये खत्म कर दें.....गला दबा दूँ नागिन का, जिसने उसे एसे डंसा की वह न मर सकता है, न जी सकता है।

अब आप जा सकते हैं – मनोरमा ने मौन तोड़ा मैनं तुम्हें इसीलिए बुलाया था कि आप अब अंधेरे में न रहें....कहती हुई मनोरमा पैर पटकी हुई बाहर निकल गयी – और प्रधान कर्तव्य विमूढ खड़ा रह गया.... ।

० ० ०

ठाकुर प्रधान – सुजान ने पुकारा –

सुजान को सामने देखकर प्रधान की आँखें हैरत बस खुली की खुली रह गयी – अरे तुम बरबस ही उसकें मुख से निकल गया।

''क्या मूझे भूल गये – सुजान मुस्कराया।

''नहीं–नहीं दर असल आज कुछ तबियत खराब थी पर इतनें दिनों के बाद आप को मेरी याद कैसे आयी?

''प्रधान मैं तुम से पैसा माँगने नहीं आया हूँ डरों नहीं मैं तुमें एक सूचना देने आया हूँ, जिसे सुनकर तुम शायद खुशी से पागल हो जाओ – आखिर इससे बड़कर खुशी तुम्हारे लिये और हो ही क्या सकती है। अगर आप इजाजत दे दो कह दूँ। मैं तुम्हारा शुभचिंतक नजर आऊगा।

सुजान के वचन सुनकर प्रधान गहरे सोच में डूब गया – आखिर ऐसी कौन सी बात है जो उसकी खुशी से सम्बन्ध रखती है क्या – मनोरमा मुझसे शादी करने को तैयार हो गयी हाँ यही हो सकता है – तभी तो सुजान गोल मोल बाते कर रहा है। ऐसा सोचते – सोचते प्रधान मुस्कुरा उठा – फिर बोला विश्वास करों सुजान तुम्हारी खुश खबरी सुने बगैर हम तुम्हारा मुंह मीठा करवातें हैं उसके बाद.... ।

ओह.....सुजान ने गहरी साँस ली, इसका मतलब जनाब को सुख का आभास हो गया, वैसे दिल तो नहीं कहता था कि आप के पास आऊ, लेकिन यह खुशखबरी तुम्हे सुनाना था अखिर पुराने दोस्त हो न........ ।

लो पहलें मुँह मीठा करो – प्रधान ने बर्फी का टुकड़ा प्रधान की तरह बढ़ाया परन्तु सुजान ने उसे रखते हुए कहा – ऐसा नहीं होगा दोस्त पहले खुश खबरी सुनाऊगा, तुम्हारी खुशी में ताली बजाऊगा फिर मुँह मीठा होगा – आखिर दोस्त हो न – हाँ अब आदेश हो तो शुरू कर दूँ।

''जैसी तुम्हारी मर्जी प्रधान मुस्करा पड़ा..... ।

''तो सुनो – सुजान बड़े शान्त स्वर में बोला – आज से कुछ वर्ष पूर्व भानू ने रणबीर को पीटा था शायद आपको याद होगा।

मुझे उससे कोई मतलब नहीं – प्रधान आवेश में बोला......।

मतलब है दोस्त – तभी तो इतना बड़ी भूमिका बाँधनी पड़ी – मैं जो कहता हूँ सुनते रहों सिर्फ हाँ या न मे जबाब देते रहों....... बाद में जो कहना होगा कह देना – मेरा मतलब रणबीर को भानू ने सुधा के कारण मरा था, क्या आप यह भी भूल गये।

''नहीं प्रधान बोला।

''तो आप सुधा को भी जानते थे.....।

''क्या बकतें हो – प्रधान गरज उठा – मेरा सुधा से कोई सम्बन्ध नहीं – मैने उसे देखा भी नहीं....।

चीखो मत प्रधान धीरे–धीरे बोलों जोर से कहीं मैं डर न जाऊ मेरी खुश खबरी सुधा की कहानी खत्म करती है। जिसके पेट में तुम्हारा पाप था....।

सुजान – प्रधान इतनें जोर से चीखा की दीवाल तक झनझना उठी – तुम मेरे घर में ही मुझे गाली देते हों.....।

गाली नहीं दोस्त मैं तो यह कहने आया था कि सुधा खत्म हो गयी – उसने आत्महत्या कर ली उसने एक पत्र लिखा था जिसमें कहते–कहते सुजान का चेहरा दहक उठा।

सुजान – अब हम ज्यादा बरदास नहीं कर सकते, भलाई चाहतें हो तो यहाँ से चले जाओं, कम से कम दुश्मनी तो नहीं होगी।

मुझे धमकी देते हो.....क्या तुम्हारी धमकी से मैं डर जाऊगा। फिर यह तो तुम्हारे लिये खुशखबरी है मुँह मीठा कराओं न अगर सुधा जिंदा रहती तो एक न एक दिन तुम्हें उसे अपनाना पड़ता – मैं नहीं यह भानू का फैसला था – शायद तुम्हे न पता हो प्रधान जब तुम उस बेबस को सौ रूपयें में खरीद रहें थें तो उसकी माँ दम तोड़ रही थी। सुधा तो माँ के साथ ही जल गयी होती परन्तु भानू ने उसे बचा लिया था, और उस दिन से भानू उसे बहन समझ लिया था – भानू ने सुधा की आबरू लूटने वाले को बहुत खोजा पर पा न सका, सुधा ने जीते जी तुम्हारा नाम नहीं लिया अगर यह कहानी भानू को पता चल गयी – तो क्या परिणाम होगा –

तुम कल्पना कर सकतें हो प्रधान, तुम चाहे दुनिया की ताकत लगा दों परन्तु भानू तुम्हें सजा देकर ही रहेगा। यह बात आज ही मैं भानू तक पहुँचा रहा हूँ।

''नहीं – प्रधान के मुख से चीख निकल गयी।

''डर गयें ठाकुर, तुम तो सुधा को जानते ही नहीं थें – मैं यह बात अपने सीनें में लेकर मरना नहीं चाहता दोस्त, यह सुधा की अंतिम इच्छा थी – उसने भानू से वादा किया था जिसे हमें पूरा करना है।

परन्तु मैंने सच्चाई जानने के लिए तुम से ऐसे उलटे सीधे सवाल किये परन्तु फिर भी तुम मुकर गये उसकी बेबसी पर तुम मुस्काते रहें – धिक्कार है तुम पर.....हाँ.....माँ की कसम खा कर कह दो कि तुम ने सुधा को नहीं लूटा था – इसके बाद हम कोई सवाल नहीं करेगें।

प्रधान का मस्तिष्क सांय–सांय करने लगा वह घटना एक दम साकार हो गयी सुधा की मूर्ति आँखों के सामने घूम गयी – फिर वह अपने पिशाच पन पर खुद रो उठा, यह मैने क्या किया वह अपने अंदर टूटता चला गया, आखिर सुजान के सामने सच्चाई कह दीं।

मुझे स्वप्न में भी विश्वास नहीं था प्रधान तुम इतनें गिर जाओंगें। वासना को तुम मृत्यु कहा करते थें – नारी के अवगुण संस्कृत दर्पण में खोजा करते थें – उनकी बातो पर खुद अपनें विचार की सहमत प्रधान किया करते थे, मैं सोच भी नहीं सकता था प्रधान तुम किसी बेबस को लूट भी सकते हो, अरे प्रधान क्या वे बाते मात्र दिखलावा थीं।

नहीं – मैं नशे में न जानें क्या–क्या करता रहा कुछ भी समझ न सका – और अब सब समझकर भी कुछ नहीं कर पा रहा हूँ, जो नहीं होना हो गया, मेरी एक प्रार्थना है सुजान जो तुम जानते हो उसे भानू से नहीं कहना।

मैं आपको झूठी तसल्ली नहीं देना चाहता – यह बात भानू को जरूर बताऊगा – हाँ एक बात ध्यान से सोचूगा कि भानू आप से दुश्मनी न करें.....।

सुजान मुझ पर रहम करों – मुझसे गलती हो गयी, भगवान भी गलती की क्षमा कर देता है परन्तु आप इतने निष्ठुर हैं.....।

प्रधान, तुम भगवान का नाम लेते हों तुम तो उस सत्ता को मानते ही नहीं – यह परिवर्तन मैं क्या देख रहा हूँ मुझे भ्रम है या आप मजाक कर रहें हैं।

अब मजाक मत करो सुजान मैं घुट रहा हूँ अंदर ही अंदर खोखला हो रहा हूँ – मुझे अपनी भूल का एहसास है।

तुम्हारे भूल कहने से सुधा को जिन्दगी नहीं मिलेगी प्रधान – पाप करकें भूल कहने वाले को हम महानीच मानतें हैं। प्रधान एक बात यह भी सुनों सुधा को मेरे हवाले करके भानू जेल गया परन्तु जाते वक्त कहा था सुधा को देखना भइया हम क्या जबाब देगें भानू को, यही न की मैनें सूधा को जला दिया, बोलो प्रधान क्या भानू मेरी बातों पर विश्वास कर लेगा मैं भानू से झूठ बोल कर परमात्मा की नजर में गिरना नहीं चाहता, अगर सुधा जिंदा होती तो मैं तुम्हारे पैर पकड़ कर कहता – सुधा को अपना लो प्रधान पर अब कल्पना करनें से कोई फाइदा नहीं, मैं जाता हूँ प्रधान आइन्दा कभी नहीं आऊँगा हाँ आज खुशी मानना – क्योंकि तुम तो सुधा को जानते ही नहीं थे – कहता हुआ सुजान बाहर निकल गया और प्रधान उसे रोकनें की हिम्मत भी न कर सका।

○ ○ ○

गुड़िया – देखों हमारी कामयबी कहता हुआ भानू गुड़िया के सामने रद्दी कागज के समान नोट रख दिये....।

वाह तुमने तो कमाल कर दिया भानू.....। युवती का स्वर स्नेह से सना था।

मेरे लिये यह सब बेकार की चीज है – भानू मुस्काया आप ने मेरा वादा पूरा कर दिया न – मेरा मतलब जरूरत मंदों को आधा भाग दे दिया – युवती का स्वर तेज था।

हम गलती नहीं करतें गुड़िया – डकैती का आधा भाग हम अपने हाथों दान कर देते हैं – फिर आप के उसूल तोड़ने की किसमें हिम्मत हैं – फिर ऐसा करके मुझे भी आत्मकि आनन्द मिलता है – भानु मुस्करा पड़ा।

तुम्हारे आने से हम चमक गये भानू – तुम्हें देखकर ऐसा लगता है सच्चाई अभी जिन्दा है। हाँ इतना धन प्राप्त करने में कितनी जाने गयी – कहती हुई युवती उदास हो गयी।

यह सवाल बार–बार क्यों पूछती हो गुड़िया – क्यों तुम्हें मरने वालों से हमदर्दी हैं – मैं कुछ समझ नहीं पा रहा हूँ।

तुम ठीक कहतें हो भानू मैं मात्र धन के लिए किसी की जान लेना नहीं

चाहती – पर आप के विचार मुझसे बिलोम हैं किसी का खून करके क्या तुम्हें विशेष आनन्द मिलता है युवती कह चुकी परन्तु भानू सिर्फ मुस्करा कर रह गया।

''आप ने कोई जबाब नहीं दिया – युवती ने प्रश्न किया।

''कैसा जबाब – मैं समझा नहीं....।

''इस धन के पीछे कितने खून किये युवती का स्वर तेज था।

''सिर्फ एक भानू का स्वर स्पष्ट था।

''परन्तु क्यों – युवती लगभग चीख पड़ी।

''क्यों का कोई जबाब नहीं गुड़िया – मैं चाहता नहीं पर हो जाता है जिसे चाह रहा हूँ आज तक नहीं हो रहा है गुड़िया तुमने मुझसें वादा किया था – घाव भी भर गया – पर अपना वादा, आखिर क्यों पूरा करना नहीं चाहती – कहने में आखिर क्या तकलीफ है।

युवती के चेहरे पर उदासी छाती चली गयी – मानों भानू ने हृदय के उस तार को झकझोर दिया जो सारी शरीर में जीवन प्रदान करता है।

तुम उदास हो गयी – आखिर बात क्या है जिसे चाह कर भी कहते वक्त जुबान में ताला लग जाता है।

कहूगी भानू – आज जरूर कहूँगी – कहते हुए युवती ने मुख घुमा लिया – शायद आँखों में आये आँसू भानू ने छिपाना चाहती थी, परन्तु भानू उसे अच्छी तरह देख रहा था।

अपने हृदय के गुबार को निकाल दो गुड़िया इस प्रकार हृदय में रखकर तुम्हें शांति नहीं मिलेगी, तुम्हारी खुशी के लिये में अपने प्राणों की बाजी भी लगा दूंगा। बता दो गुड़िया वह कौन आदमखोर था जिसने तुम्हें इस प्रकार भटकनें के लिये मजबूर कर दिया – मेरी जिन्दगी का लक्ष्य उसे खत्म करना है।

युवती कुछ देर तक मौन रही – मानों कुछ खोज रही हो – फिर बोली हम आखिर किस तरह कहें भानू – मुझे बरबाद करने वाला आज कल एक कर्णधार है। भारत की रक्षा करने वाला है क्या मेरी बात पर आप विश्वास कर लेगें युवती ने असमंजस भरे स्वर में कहा।

तुम विश्वास की प्रतिमा हो अगर भानू तुम पर विश्वास नहीं करेगा – तो फिर किस पर करेगा निःसंकोच कहों गुड़िया – तुम्हें मेरी कसम....।

यह उस व्यक्ति की तसवीर है जिसने मेरी जिन्दगी बरबाद कर दी कहती हुई युवती ने एक चित्र भानू के सामने रख दिया।

''कर्नल आनन्द भानू चौंक पड़ा..... ।

''क्या आप इसे पहचानते हैं, युवती हैरान होकर बोली।

''अच्छी तरह पहचानता हूँ इस दरिन्दे के साथ मेरी जिन्दगी की भी एक कड़ी जुड़ी है मैं यह सोच भी नहीं सकता था तुम्हारी बरबादी का यही कारण है क्या बता सकती हो, इसे कमीनें ने तुम पर क्या जुल्म किया।

मत पूछों भानू – उस कहानी को दोहरा कर हम नारी की हीनता कहना नही चाहती – बस यही समझ लो इस नर पिशाच ने मुझें कहीं का नहीं रखा – मेरे तिरसकार पर पिता का साया भी छीन लिया – क्योंकि पिता जी आनन्द के यहाँ मजदूरी करते थे – जानते हो भानू रोटी में जहर मिला दिया – हम चिल्ला–चिल्ला कर थक गयी परन्तु उसका हृदय द्रवित नहीं हुआ। पिता की लाश मैने खुद जलायी भानू – परन्तु लोग यही कहते रहे बेचारे को साँप ने काट लिया – इतनें पर भी उस कमीने को संतोष नहीं हुआ – हम दर्दी के बहाने – शाम को अपने घर ले गया – परन्तु रोटी के बदले उसने मेरी आत्मा को लहूलुहान कर दिया। हम चीख भी नहीं सकती थीं, भानू – क्योंकि चीखने की शक्ति मुझमें थी ही नहीं उस दिन जब आनन्द के घर से निकली तो मेरी आत्मा मर चुकी थी। प्रतिशोध की ज्वाला में मैं यहाँ तक पहुँच गयी पर उसका कुछ भी बिगाड़ न सकी – क्योंकि वह सेना अधिकारी है – कहतें–कहतें युवती सिसक पड़ी।

वह आज भी उतना ही क्रूर है भानू......!

गुड़िया भानू चीख पड़ा – बस करों अब हम सुनना नहीं चाहते....भावावेश में भानू की आँखों से आँसू टपक पड़ें...... ।

''अरे तुम रो रहे हो भानू.....युवती बोती.... ।

''आज रोना पड़ा गुड़िया – यह कैसा संसार है कितनी भी दूर भाग जाओ – पिशाचता पीछा नहीं छोड़ती, तुम ही नहीं गुड़िया इस धरती पर अगडिंत ऐसी – कहानी हैं। मैं इस लिये रो पड़ा गुड़िया – आखिर एक मानव दूसरे के दर्द को क्यों नहीं समझता। किसी का खून करना मुझें भी अच्छा नहीं लगता गुड़िया – परन्तु मैं खून इसलिये करता हूँ कि खून रूकें – वे इंसान जो तुम जैसी बेसहारा युवतियों

को लूट लेते हैं, शरीर का ही नहीं अपितु आत्मा का खून करतें हैं, फर्क इतना है उनके शिकार चलती फिरती लाशे रह जाती हैं इसलिये दुनिया उनसे अनिवज्ञ होती है। परन्तु मैं ऐसे व्यक्तियों का खून करकें समाज में बह रहे मानवता के खून को रोकना चाहता हूँ – बस इसी कारण मुझे खून करने का शौक है।

मैं आजीवन ऐसा करता रहूँगा – या तो दुनिया से अत्याचार खत्म हो जायेगा – या भानू खत्म हो जायेगा। तभी यह संघर्ष बंद होगा – आनन्द से मेरी दुश्मनी थी जिसे लगभग मैं भूल चूका था – परन्तु आज मुझे उससे एक–एक पाई का हिसाब चुकना है। मैं वादा करता हूँ, गुड़िया बहुत जल्द जिंदा उस आनन्द को तुम्हारें हवाले कर दूंगा – यह एक बागी का नहीं – अपितु एक भाई का वचन है।

भइया – युवती की आँखे भीगती चली गयी – उन आँखों में झाँकतें हुए भानू ने कहा – ये आँसू पोंछ दो गुड़िया – आनन्द को इतनी भंयकर मौत मरूगा कि मृत्यु भी काँप जायेगी! भानू ने जो चाहा उसे पाया है – मेरे उद्‌देश्य में भगवान भी दखल नहीं कर सकता, कहते कहते भानू की आँखें दहक उठी।

मरनें से पहले मेरा एक ही ख्वाब था भइया – अपनी बरबादी करनें वाले की लाश देख संकू – परन्तु आज जैसे वह सपना साकार हो चुका है – एक बात ध्यान से सुनना भानू – यह काम उतना आसान नहीं है जितना तुम समझ रहें हो – हाँ तुम्हारे लिये इतना कठिन भी नहीं कि हो ही न सकें – फिर भी तुम्हें सावधान होकर यह काम करना है ! जहाँ तक वर्षों इंतजार करती रही – कुछ दिन और कर लूँगी – परन्तु यदि आप को कुछ हो गया तो मैं जिन्दा नहीं रह पाऊगी, कहते हुए युवती की आंखे भर आयी – अपने लिये नहीं मेरे लिये तुम्हें जीना है भानू – यह तुम से एक बेबस नारी की बिनती है!

बिनती नहीं आज्ञा है गुड़िया तुम बिलकुल परेशान मत हो – हमें पूरा विश्वास है संसार की कोई भी शक्ति मेरा अंत नहीं कर सकती – विश्व में कोई भी गोली नहीं जो भानू के ह्रदय को भेद सकें.....।

भइया – तुम्हें इतना आत्मविश्वास है – परन्तु क्यों–क्यों का कोई भी जबाब नहीं होता– परन्तु आत्मविश्वास जरूर है – और यह विश्वास इसलिये है कि मैं गलत नहीं कर रहा हूँ यह धारणा ही मेरी ज्योति है।

भगवान आप की ज्योति कभी बुझने ने दें – यह मैं भगवान से हर पल प्रार्थना करती रहूँगी।

''एक दिन तो बुझ ही जायेगी गुड़िया।

''परन्तु वह दिन बहुत दूर हो।

''तुम्हारी इच्छा पूरी हो – अब हम चलते हैं – न तो मुझे किसी प्रकार की मदद की जरूरत है न ही किसी साथी की, परन्तु–युवती का स्वर लरज गया – आप अकेले कैसे सफल होगें भइया!

यह सब मुझ पर छोड़ों गुड़िया – कहता हुआ भानू बाहर निकल गया – युवती के ह्रदय में एक पीड़ा उठती चली गयी – तभी बायी आँख फड़क उठी – भगवान सगुन तो अच्छा है – फिर भी गोपीनाथ भानू की रक्षा करना, युवती ने आँखें बंद कर लीं – उसे एहसास हुआ मानों सचमुच भगवान कृष्ण खड़े हैं।

o o o

भइया – मुझे पहचाना.......।

भानू तुम रामशरन का मुँह खुला का खुला रहा गया – बड़े मुश्किल से बोल पाया – आओ अंदर मेरे भाई – अरे गुड़िया की माँ देखों तो कौन आया है। और जब गुड़िया की माँ ने भानू को देखा तो सारा बदन काँप गया – सफेद दूध के समान वस्त्र – कांधे पर रायफल – बंगल में दो तमंचे नंगी तलवार देखकर उसके होश उड़ गये।

क्या हुआ भाभी – भानू ने हाथ पकड़ते हुऐ कहा – परन्तु भाभी को एहसास हुआ मानों हाथ अलग हो जायेगा।

अरे भइया खड़े क्यों हो – डरों मत मैं तुम्हारा खून करनें नहीं आया हूँ न ही हिस्सा माँगनें, भानू ने मुस्काते हुऐ कहा – मैं तो यहाँ इसलिये आया हूँ कि कोई गाली बची हो तो वह भी दे दो।

''मुझें माफ कर दो भानू – रामशरन का स्वर था।

''तुमने गलती ही क्या की भइया – जो माफी माँग रहे हो – मैं दासी पुत्र था – कैसी पापी वासना से मेरा शरीर बना रामशरन तुम्हारा भाई होकर भी तुम्हे भाई न कह सका।

आप ने मुझें इसलिये थप्पड़ मरा कि मैने तुम्हें भइया कहा था – लेकिन यह तुम भूल गयें रामशरन मेरी उत्पति तुम्हारे बाप की पिशाचता है। उस नारी को भी मैं गाली दूँगा रामशरन जो पेट की भूख पूरा करनें के लिये शरीर बेच देती है।

उसको मर जाना चाहिए – मौत का यही रहस्य हैं। लेकिन तुम अपने बाप से आगे थे रामशरन, उनकी वासना का पाप मैं था क्या था – मेरा दोष, उसी वक्त किसी नाली में क्यों न गला घोट कर डाल दिया मुझें, इस देश में प्रतिदिन कितनें नाजायज बच्चे गंदे नालों में मिलतें हैं एक मेरे मरनें से इस दुनिया पर क्या फ्रक पड़ता। आज कल तो गर्भ गिरवाना मामूली बात है रामशरन – प्रायः बड़े घरों की बेटिया शादी से पहले तीन बच्चों की माँ बन जाती हैं। समाज में उन लोगों का सम्मान होता है। परन्तु उनकी वासना का परिणाम – नाजायज होता है। धिक्कार है मनुष्य के इस विधान को......।

हमारा आखिर क्या दोष था जिसके बदलें दुनिया ने मुझें मजलूम बना दिया, आज यदि मैं चाहू तो तुम्हें खत्म कर दूं – इसलिये की तुम्हारे हम पर बहुत एहसान हैं।

''मुझे क्षमा कर दो भइया – रामशरन रो पड़ा।

''डरों नहीं मैं तुम्हे खत्म नहीं करूगा – इसलिये कि तुम गुड़िया के पिता हों – अरे भाभी साहब आप मौन क्यों खड़ी हैं क्या जुबान एक दम हरकत नहीं करती क्या मेरा इस घर पर कोई अधिकार नहीं।

''ऐसा – मत कहों भानू – तुम जो चाहते हो सब मिल जायेगा – बैठो – खड़े क्यों हो......।

''मुझे कुछ नहीं चाहिए भाभी – यह धन तुम्हें मुबारक हो – डरों मत भाभी हम तुम्हें नुकसान नहीं पहुंचायेगे, जाओ भाभी गुड़िया को जगा दो मैं उसी के लिये आया हूँ कहता हुआ भानू बैठ गया।

थोड़ी देर के बाद दौड़ती हुई गुड़िया ने प्रवेश किया।

''भानू भइया – मैं तो सोचती थी मुझे एक दम भूल गयें।

''तुझे कैसे भूल सकता हूँ गुड़िया – तू ही तो मेरी जिन्दगी है – पहलें तू यह बता ठीक है न.....।

''एक दम ठीक हूँ भइया – हर रोज आप का इंतजार किया करती थीं आज बहुत खुश हूँ कहती हुई गुड़िया भानू के बालो को संवारने लगी – फिर शिकायत भरे स्वर में बोली – थोड़ा अपना भी ख्याल किया करों भइया देखो ंसर में बालू भर गयी है – और ये ओंठ अरे इन से तो खून निकल रहा हैं यह मैं क्या देख

रही हूँ भइया – गुड़िया सिसक पड़ी फिर उठी बाहर जाने लगी।

''सुनों तो गुड़िया परन्तु गुड़िया जा चुकी थीं।

''भइया आप जाओं – भाभी आप भी – मुझे गुड़िया से कुछ बात करनी है भानू के कहने पर वे दोनों चले गयें तभी गुड़िया आ गयी।

''कहाँ गयी थी गुड़िया भानू बोला....।

''भूख नहीं लगी है – गुड़िया का स्वर दर्द में डूब गया पहले खाना खा लो भइया बाद में हम दूसरी बात करेगें कहती हुई गुड़िया ने निवाला भानू की तरफ बड़ाया – भानू इंकार न कर सका।

अब बताओं भइया – यह जिन्दगी कैसी है, आप के कारण मुझे जो दुःख हुआ – बहुत मुश्किल से वरदास कर पायी क्या आप खुश रहते हैं भैया गुड़िया भावुक होती चली गयी बस इसके सिवा कुछ नहीं पूछूगी.....।

''बहुत खुश हूँ गुड़िया भानू मुस्करा पड़ा।

''आप झूठ बोल रहें हैं भैया.....।

''तुम्हारी कसम गुड़िया – मुझे अपने किये पर पश्चाताप नहीं है यदि मेरे ह्रदय में ऐसी भावना है तो दुःखी कैसे रह सकता हूँ – हाँ दूसरों के लिये शायद दुःखी हूँ।

''क्या कभी आप अपनी भी परवाह करेगें भइया।

''अब ऐसा नहीं हो सकता गुड़िया ।

''क्या मैं किसी को भाभी नहीं कह पाऊगीं – क्या परमात्मा ने मेरे भाग्य में यह सुःख नहीं लिखा गुड़िया का स्वर गले में फंस गया।

''पगली तू सपना देख रही है – हकीकत से इसका कोई सम्बन्ध नहीं पर तू मेरे अंदर झांक कर देख गुड़िया मेरी आत्मा में तेरे लिये वह भी प्यार है.......। मुझे अपनी भाभी भी समझ ले यह आत्मा यानी मैं, तेरे भाभी के बल पर ही तो चल रहा हूँ।

वाह भइया – गुड़िया मुस्कुरा उठी आप ने एक दम नयी बात कह दी – शायद यह किसी कवि ने कल्पना की हो – इज्जाजत हो तो भाभी को साड़ी पहना दूं!

गुड़िया – भानू ने उसे बाहों में भर लिया। मुख पर छिटकें कुंतलों को

अलग करते हुए बोला – तू बहुत समझदार है गुड़िया मैं इतने आगे निकल गया हूँ कि पीछे मुड़ कर देखता हूँ तो खुद ही चौंक जाता हूँ – मुझे ही विचित्र लगती है अपनी जिन्दगी, जानती हो गुड़िया आज तक मैने लाखों खून कर दिये – कितने घर तबाह कर दिये, कितनी जिन्दा लाशे जला दी कितना भंयकर है मेरा असली चेहरा – बरबादी एवं तबाही का तूफान हुँ गुड़िया जहाँ जाता हूँ लाशें बिछा कर आ जाता........क्या मैं गलत नहीं करता गुड़िया।

भइया – गुड़िया ने चेहरा उपर उठया था आंसूओं से डूबा हुआ आप मुझसे झूठ बोल रहें है भइया....आप गलती कभी कर ही नहीं सकतें.....आप तो लाखों की बात करतें है राम ने तो करोड़ों का नर संहार किया था.........लोंग आज उनकी क्यों जयकार करतें है – आग शरीर को भस्म कर देती है भइया – थोड़ा सा जलने पर मनुष्य चीखता है – परन्तु यदि मानव के पेट के अन्दर जठराग्रि न हो तो.....मौत हो जायेगी। ठीक उसी तरह हिंसा है हर जगह उसे पाप की संज्ञा देना मूर्खता है...... तुम जो कर रहें हो भइया वह हिंसा नहीं अंहिसा से भी श्रेष्ठ है.....ऐसा कह कर मुझे दुःख मत दो भइया..... ।

तू तो बड़ी–बड़ी बात करने लगी गुड़िया, मैं तो यह कहना चाहता था कि अब मैं पीछे नहीं आ सकता, पुलिस को मेरी जिन्दा या मुरदा लाश की तलाश है फिर तेरा सपना पूरा कहाँ हो सकता है – अरे मैं तो भूल ही गया – यह देख तेरे लिये मैं क्या लाया हूँ – कहते हुए भानू ने अशोक पत्तीयों का हार गुड़िया के गलें में डाल दिया।

गुड़िया के ओंठो पर मुस्काहट आंखों में नमी तैर गयी – दिल के तूफान को रोकनें के लिये उसने अपना सिर भानू की छाती से लगा दिया।

गुड़िया – मेरा उपहार तुझे पसन्द नहीं आया – भानू उदास हो गया।

कैसे पसन्द नहीं आयेगा – आप का तोहफा आपकी बहन जो ठहरी – मैं जानती हूँ भइया – फूलों को तोड़कर तुम उनका हार नहीं बना सकतें। क्योंकि उनकी मुस्कान तुम खत्म करना नहीं चाहतें। और लूट के धन से अपनी बहन के लिये कुछ खरीद नहीं सकतें – फिर पीली पत्ती, जो डाल से गिर गयी वे ही तुम्हें पसन्द आयी। सच मानो भइया तुम्हरे इस उपहार के सामने त्रिलोक की सम्पत्ति तुक्ष है तुम्हारी इस भावना की कद्र करती हूँ भइया – कहते हुऐ गुड़िया सुबक पड़ी... ।

गुड़िया अरे पगली तू रोने लगी – इतनी समझदार होने के बावजूद बच्चों जैसी रो पड़ती है। भानू ने उसे छाती से चिपटा लिया किसी शिशु के समान गुड़िया के प्रति भानू के हृदय में प्रेम उमड़ आया.....तू मुझे बहुत प्रिय है गुड़िया तेरे लिये मैं अपने प्राण भी इन पत्तों के समान कुर्बान कर दूंगा!

नहीं गुड़िया ने भानू के मुँह पर उँगुली रख दिया – ऐसा मत कहो भइया – गुड़िया अब भी सुबक रही थी।

हर बात पर तुम रोने लगती हो गुड़िया, क्या मेरी कहानी नहीं सुनोगी – भानू गम्भीर होता चला गया।

गुड़िया के ओंठो पर एक फीकी मुस्काहट तैर गयी फिर बड़े शान्त स्वर में बोली – एक बात सच बताना भइया – भूखे तो नहीं रहतें – इसके सिवा हम कुछ भी सुनना नहीं चाहती।

भानू गुड़िया के मासूम मुख को देखनें लगा – कितना सुन्दर कितना प्यारा – कितना स्नेह रखती है वह उसका, सोचते हुए भानू के हृदय में कम्पन होने लगा भावों को छिपाते हुए बोला – तुम कितनी अच्छी हो गुड़ियां सचमुच तुम किसी देवी की प्रतिमा हो – जिसे पूजने को जी चाहता है।

बस–बस–बस अब रहने भी दो भइया – झूठी तारीफ अच्छी नहीं लगती – मैं तो एक भटकी हुई आत्मा हूँ। मेरी महानता कह कर आप उसका अपमान कर रहे है जिसने मुझे ज्योति दिया...।

बुरा लगा – मुझे माफ कर दे बहन.....। भानू का स्वर अथाह प्रेम से लरज रहा था।

भ.......भइया – कहती हुई गुड़िया भानू के सीने से लग गयी।

तू बहुत अजीब है बहन – भानू उसे अलग करता हुआ बाला – अब मुझे इज्जात दे बहन, कहता हुआ भानू खड़ा हो गया।

भइया – आप थोड़ी देर......। गुड़िया का स्वर गले में फंस गया आंखों में मोटी मोटी बूंदें चमकने लगी।

भानू को एहसास हुआ मानों उसका हृदय फट जायेगा ममता के शैवाल में फंस कर वह कराह पड़ा, तभी विवेक ने झकझोरा होश में आ भानू.... यह ममता तेरी जान ले लेगी, नहीं उसने दृढ़ निश्चय किया – फिर गुड़िया के सिर पर हाथ फेरता

हुआ बाहर निकल गया। गुड़िया का सपना टूट गया, गले में अब भी पत्तों को हार था। भावावेश में वह उसे चूमने लगी। आँखों से अविरल अश्रु बह रहे थे – लेकिन गुड़िया इन सब क्रिया कलापों से अनविज्ञ दूसरी दुनिया में थी....जहाँ पर न सुख है न दुःख है न जन्म है न मृत्यु है, न मान है, न अपमान है, न लाभ है, न हानि है, एकदम अद्भूत एवं वित्रित है वह दुनिया।

○ ○ ○

मनोरमा की शादी का दिन आ गया – परन्तु प्रधान जाने का साहस न कर सका – उसका हृदय अथाह दर्द से फटा जा रहा था, मानों हृदय शरीर से अलग अस्तिव बनाना चाहता हो – वह अपनी पीड़ा में छटपटा रहा था कि द्वार पर आहट हुई उखड़े मन से प्रधान ने दरवाजा खोल दिया।

''कौन – प्रधान का स्वर लड़खड़ाया था।

''हम भानू है ठाकुर और ये शब्द किसी अंगारे के समान प्रधान के हृदय में धंसते चले गये आँखें हैरत एवं आश्चर्य से फटी की फटी रह गयी।

उजाला तो करो प्रधान कम से कम हमारी बरवादी तो देख लो – भानू के स्वर में इतना जोश था कि प्रधान के हाथ हरकत में आ गये भानू के रूप को देखकर प्रधान के मुख से चीख निकलते–निकलते बची।

बैठो दोस्त, बड़ी मुश्किल से वह बोल पाया था।

मत कहों मुझे अपनी जुबान से दोस्त – यह शब्द तुम्हारे मुख से शोभा नहीं देता प्रधान – अगर दूबरा इसका प्रयोग किया तो सर कलम कर दूंगा!

मुझे माफ कर दो भानू – प्रधान का घायल स्वर, तड़ाक – भानू का हाथ प्रधान के गाल पर पड़ा था और प्रधान लड़खड़ा कर गिर गया – किसी दरिन्दे के समान अट्टहास लगाया भानू, – एक भंयकर एवं बबरता पूर्ण हंसी गूंज गयी......।

यह शब्द बनाने वाला मूर्ख था प्रधान – यदि मैं अदालत में चीख चीख कर माफ–माफ चिल्लाता रहूं तो क्या कानून मुझे माफ कर देगा।

नहीं – कानून मुझे माफ नहीं करेगा – फिर हम तुम्हें कैसे माफ कर सकतें हैं, मै जो पूछता हूँ उसका सही–सही उत्तर देना प्रधान झूठ बोल कर अपनी मौत को निमंत्रण नहीं देना।

जिन हाथों से तुम्हें प्रणाम किया करता था आज थप्पड़ मारना पड़ा – झूठ

बोल कर मुझे मजबूर नहीं करना कि इन्हीं हाथों तुम्हारा कत्ल भी करना पड़ें।

मैं सब कुछ सच–सच बताने को तैयार हूँ भानू – प्रधान रो पड़ा।

पुरूष होकर त्रिया चरित्र मत दिखाओं प्रधान तुम्हारे आँसू मेरे लिये पानी है। तुम वह पारस पत्थर हो जो इंसान को शैतान बनता है। मंदिर में किसी युवती को बहन मान कर उसके माँस को खाने वाले आदम खोर भेड़िये, राक्षस.....उसका क्या नाम था – झूठ नहीं बोलना प्रधान वरना कुत्ते की मौत मारूगा, हरामखोर.....।

''सुधा – प्रधान इतना ही कह सका।

''सुधा – वहीं सुधा जिसके कारण मेरे हाथ रणबीर पर उठे थे वही सुधा जिसको मैने मौत के मुख से निकला था......। उसी सुधा को तूने कहते–कहते भानू का चेहरा शक्त हो गया।

प्रधान अगर तू–जिंदा रहना चाहता है तो सुधा को अपना ले अगर तुमने मेरी बात नहीं मानी तो समझ ले तेरी कहानी खत्म हो गयी – कहते हुए भानू ने तमंचा निकला लिया।

प्रधान भानू के चेहरे को देखता रह गया जो आग के समान दहक रहा था। भय एवं आतंक उस पर बुरी तरह हाबी हो चुका था – चेहरे पर असंक्य पसीनें की बूंदे उभर आयी थी मन में सोचों की आँधियाँ चल रही थी......सुधा तो मर गयी अगर भानू को पता चल गया तो.......इसके आगे प्रधान कुछ सोच न सका – सारा बदन आतंक से काँपनें लगा । प्रधान की दयनीयता देखकर भानू के ओंठो पर मुसकुराहट तैर गयी। डरो नहीं ठाकुर – अभी तुम्हें खत्म नहीं करूँगा मुस्काते हुए भानू ने तमंचा रख लिया – घबराओं नहीं प्रधान मैं जो कहता हूँ सुनों – सुधा सुजान के घर पर रहती है मैं चाहता हूँ तुम माता जाह्ववी की आज्ञा लेकर सुधा से शादी कर लो – इसके सिवा तुम्हारे जीवन का कोई विकल्प नहीं, मैं जानता हूँ यह दुनिया निर्बल असहाय की काल है – परन्तु मैं उनका काल हूँ जो निर्बल पर अपना रोब जमाते हैं।

सांवली की लाश तुम भूल सकतें हो प्रधन आदर्श सिधान्त का खून तुम पी सकतें हो परन्तु मैं नहीं, नारी नरकस्य द्वारः के विचार तुम से मैने सीखे थें – लेकिन तुम सिर्फ मुख से कहते रहें, अमल न कर सकें – मैं भी एक साधरण इंसान हूँ – आखिर मेरे अन्दर ऐसी कौन सी विशेषता है कि लोग मेरे नाम से काँपते है – यही

न की मैं बागी हूँ – मैं बागी जरूर हूँ प्रधान परन्तु चरित्रहीन नहीं। स्यात् इसी चरित्र के बल पर आज तक जिंदा हूँ।

पुस्तकों में बहुत कुछ लिखा है प्रधान परन्तु सिर्फ उसकी पड़ने से अभीष्ट नहीं मिलता – इसके हम तुम प्रतेक्ष उदाहरण हैं। तुमने पढ़ा – दुसरों को समझाया परन्तु खुद अमल न कर सकें। नारी को हीन कहते रहें और दूसरी तरफ चाटते रहें – जब उसका नशा चढ़ गया तो सारी हीनता महानता बन गयी – परन्तु मैं इससे अलग हूँ प्रधान – विलासता की किसी भी वस्तु को आज तक मैंने नहीं छुआ। भोगना तो आसान है प्रधान – खर सूकर स्वान भी रति क्रिया कर लेते है परन्तु बहादुर वे होते है जो त्याग करते हैं मुझे अपने ऊपर विश्वास है प्रधान – इसी कारण मुझे मृत्यु से भी भय नहीं लगता।

अच्छा यह बताओं प्रधान – माता जी कैसी है घर कब गयें थे।

माता जी ठीक है, पांच तारीक को घर गया था – प्रधान ने कहा।

रोते क्यों हो ठाकुर, भानु जुबान का पक्का है हम जो कह चुके वही होगा प्रधान, किसी का खून करते समय मेरे हाथ नहीं काँपते प्रधान – अखिर बागी हूँ ना, वे पंक्तियां याद है ना प्रधान जिसको चुनाव के समय लिखा था, अध्यक्ष बनने के बाद सब कुछ भूल गये, आर्दश सिद्धान्त, माता जाह्ववी की तमन्ना को गंगालाभ कर दिया, मै खून करता हूँ प्रधान परन्तु उनका जो मनुष्यता का खून करते हैं चोर तो वे भी है प्रधान जो किसी आवरण को ओढ़ कर प्रहार करते हैं,....परन्तु न देखने के कारण समाज उनकी पूजा करता है। परन्तु हमें गाली इसलिये मिलती है कि हम बिना किसी आवरण के सीधे प्रहार करते हैं।

ज्यादा वक्त मेरे पास नहीं है प्रधान हाँ अपने बुलबुल मनोरमा का कुछ हाल सुनादों– वह तो तुम्हें बहुत प्यार करती थी, हाँ मैं तो प्यार वार मानता नहीं – भानू मुस्कुरा पड़ा।

मनोरमा रणबीर से शादी कर रही है भानू, मेरी आँखे बहुत देर बाद खुली – मुझे अपने पर इतना पश्चाताप होता है जिसे कह नहीं सकता।

ओह – भानू ने गहरी सांस ली – इसका मतलब जनाब का दिल टूट गया।

वह मुझसे प्रेम नहीं वरन् नाटक करती थी – सिर्फ इसलिये कि मैं तुम्हारा

दुश्मन बन जाऊ, और वह अपने मकसद में सफल हो गयी!

ऐसा कह कर तुम निर्दोष नहीं बन सकते प्रधान क्योंकि तुम–पागल नहीं हो – जो स्त्री खुले आम शरीर सौन्दर्य दिखा सकती है – जो स्त्री पिता अग्रज के सामने किसी पुरुष के साथ नाच सकती है – जो नारी होकर घूंघट फैक देती है – वह किसी भी कीमत पर पत्नी क्या मित्र भी नहीं बन सकती। ये सारे गुण तुम्हारी देवी मनोरमा में मौजूद थें – आदि काल से नारी कुंतल रखे आयी है प्रधान – परन्तु यह आधुनिक काल जिसमें उसने बाल भी काटना शुरू कर दिया – प्रकृति के नियम ही बदल रहे हैं, प्रधान, मैं तो डरता हूँ संतान उत्पति कहीं पुरूष से न शुरू हो जाये। भानू ने कुछ इस ढंग से कहा कि बरबस प्रधान मुसकुरा उठा तुम एक दम नहीं बदलें भानू – प्रधान ने कहा।

तुम्हारे समान कमजोर मैं थोड़े हूँ भानू बोला जिसे हवा का रुख अपनी तरफ कर लें – मैंने कहा था मनोरमा पर विश्वास करके तुमने मूर्खता की है और अब यदि तुम अपनी कहानी सुनाकर किसी से हमदर्दी की उम्मीद चाहते हो तो यह तुम्हारी दूसरी मुर्खता है – दुनिया को शायद तुम पर तरस आ भी जाय परन्तु मुझे – तुम पर कभी भी तरस नहीं आयेगा – जाओ प्रधान सो जाओं – रात काफी बीत गयी है – हाँ हमारी बात नहीं भूलना दूबारा हमारी मुलाकात निर्णायक होगी – समझें कहता हुआ भानू बाहर निकल गया।

प्रधान गहरे सोच में डूब गया – सहसा उसके मस्तिष्क में सुजान की बात कौंधती चली गयी मारे भय के उसके रोम कूपों से स्वेद की बून्दे निकल आयी – सारा बंदन ठंडा पड़ गया – बड़ी मुश्किल से वह अपने को सम्भाल पाया – परन्तु भय उस पर बुरी तरह हाबी हो चुका था।

o o o

कर्नल सी.एच. अग्रवाल की कोठी किसी दुल्हन के समान सजी थीं, ऐसा प्रतीत होता था मानों शहर की सारी रोशनी यहीं एकत्रित हो गयी है बैन्ड बाजों की ध्वनि गगन को चूम रही थी आनन्द के चहेरे पर खुशी छायी हुई थी। रणबीर दुल्हा बना बैठा था – पंडित मत्रों का जाप कर रहा था – मनोरमा की सखियाँ मंगल गीत गा रही थी।

कर्नल की व्यवस्था को देखकर भानू असमंजस में पड़ गया – उसे अपना सपना झूठा सा लगने लगा – इतने इंतजाम के बाद आनन्द को युवती के पास ले

जाना – एक दम अस्म्भव था।

अचानक उसके सामने मनोरमा की तस्वीर घूम गयी – आँसूओं से डूबा सुधा का चेहरा भी उसके सामने आया – अंतःकरण तक काँप गया भानू मनोरमा को मैं कभी माफ नहीं करूगा, परन्तु उसे बरबाद कैसे करु अकेले वह कर भी क्या सकता है फिर आनन्द के घर पर सैनिक भी मौजूद है – समस्या से निपटने के लिए भानू ने अपने मस्तिष्क पर जोर दिया – फिर उसके ओंठो पर एक मुस्काहट नाच गयी।

फोर्स को लगा कर कर्नल भानू को रोक नहीं सकता – दुनिया की कोई भी ताकत मुझे अपने मकसद से नहीं हटा सकती – मैं आ रहा हूँ कर्नल तबाही और बरबादी का उपहार लिये.......।

मुस्कातें हुऐ भाने ने अपने सारे वस्त्र उतार दिये साड़ी का सहारा लेकर वह अपने को एक नारी बना चुका था.....। आवाज बदलता तो उसकी एक कला थी. ....अपनी इसी कला के कारण वह बड़े आराम से अग्रवाल की कोठी में पहुच गया था।

भंवारे हो रही थीं, देखतें ही भानू के जिस्म में आग लग गयी बड़ी मुश्किल से अपने उद्वेग को रोक पाया –मनोरमा की सहेलियों में वह मिल चुका था लोग इतने खुश थे, कि किसी को किसी का नाम पता पूछने का प्रश्न ही नहीं था।

शादी की रस्में पूरी हो गयी – थोड़ी देर के बाद भोजन शुरू हो गया बड़ी सोसाइटी होने के कारण पुरुषों के साथ औरतों का मदिरा पीना सट कर बैठना अन्य कामुक हरकते करना – आम बात थीं।

समय अपनी गति से चलता रहा – धीरे–धीरे आये हुए मेहमान वापस जाने लगें – परन्तु भानू निरन्तर अपने मकसद की तरफ बढ़ रहा था, कोटी के चारों तरफ संतरी टहल रहे थें – जिन्हें वह अक्कसर देख लिया करता था न जाने क्यों।

मनोरमा के पास के लड़कियाँ उठ कर जाने लगी क्यों बेशर्म बनती हो बेचारी को जीजा जी के पास जाने दो किसी ने चुहलकर कहा – उसके इस बात पर सभी हंस पड़ी – और फिर उठ गयी – परन्तु भानू बैठा था –

"तू नहीं जायेगी, मनोरमा बोली।

"आप के जाने के बाद – भानू ने आवाज बदल कर कहा।"

मनोरम हंस पड़ी – आ मेरे साथ कहती हुई वह उठ गयी अब मुझे जाने दें वे इंतजार कर रहे होगें।

''पति से पहले भगवान के दर्शन करते हैं मनोरमा, भानू ने कहा।

तू ठीक कहती है आ मेरे साथ हम भी भगवान के दर्शन करते हैं, कहती हुई मनोरमा पूजा गृह में घुस गयी मनोरमा के पीछे भानू भी था।

उसी क्षण भानू ने दरवाजा बंद कर दिया – मनोरमा कुछ समझती इससे पहले भानू अपने असली रूप में आ चुका था।

तुम – मनोरमा के मुख से चीख निकल गयी – परन्तु भानू उसका ध्यान दिये बगैर तमंचा निकल लिया।

चीखने की कोशिश मत करना कर्नल की औलाद – वरना भूनकर रख दूंगा......मैं मर भी गया तो तुम जिन्दा नहीं रहोगी – मनोरमा सुन्न की हालत में खड़ी रह गयी।

आखिर मुझसे तुम चाहते क्या हो मनोरमा का स्वर क्षीण था।

जान बुझकर अनजान बनने का नाटक मत करों मनोरमा – अगर मेरे मुख से सुनना चाहती हो तो सुनो – तुम्हारी शादी प्रधान की जगह रणबीर से क्यों हो गयी – उसे गुमराह करकें क्या मिला सबसे मुख्य बात सुधा को क्यों जलील किया, उस असहाय को मारते समय क्या तुम्हारी आत्मा चित्कार नहीं किया मैं यहाँ से निराश होकर जाने वाला नहीं – भानू की आवाज धीमी परन्तु स्वर कटु था।

मैने जो भी किया रणबीर के कहने से........मेरे डैडी भी ऐसा चाहते थे, मैं मजबूर थी भानू...... ।

परन्तु क्यों आखिर तुम्हारी विबस्ता क्या थी...... ।

मनोरमा की आँखों में आँसू भर आये, भानू के प्रश्न का वह कोई उत्तर न दे सकी...... ।

मनोरमा – आँसू बहाने से हमारी समस्या का निदान नहीं होगा – मुझे तुमसे अधिक आनन्द की जरूरत है। परन्तु सरकारी वफादारो के कारण हम उसका अभी तक कुछ बिगाड़ न सकें, परन्तु वह मुझसे कब तक छिपता रहेगा – एक दिन वह आयेगा जब मैं उसका अन्त कर दूंगा – पर तू – नारी नहीं नागिन है, दिल करता है तेरी कहानी खत्म कर दूं, परन्तु ऐसा होगा नहीं – स्त्री पर हाथ

उठाना भानू कायरता समझता है – इस कारण तुझे जिंदा छोड़ रहा हूँ – तूने जो पाठ किया हैं उसका परिणाम मौत है परन्तु हम तुझे खत्म नहीं कर पा रहे हैं...... मजबूर हैं उसूल से.....हाँ सुन तुझे मेरे साथ अभी चलना है..... ।

ऐसा मत करों भानू.......मनोरमा रो पड़ी...... ।

मैं कह चुका तुम रोकर मुझे अपने मकसद से नहीं डिगा सकती तुम्हें मेरे साथ चलना है हाँ तुम्हारे साथ अन्याय नहीं होगा – यह भानू का वचन है परन्तु यदि तुमने कोई चालाकी की तो मजबूरन हमें तुम्हे खत्म करना पड़ेगा – यह मेरे लिये भी शर्म की बात है। इसलिये जो मैं कहता हूँ – सूनों ये साड़ी उतार दो भूल जाओं की तुम्हारी अभी–अभी शादी हुई है। मेरे पास समय नहीं है – मरना है या हमारे साथ चलना है – भानू के सामने वह एक दम असहाय हो गयी, आखिर वह भानू के साथ चल पड़ी – दरवाजा भानू ने खोला – घर के अन्दर अगर चालाकी की तो...... भानू ने वाक्य छोड़ दिया।

बेबस पंछी की भांति मनोरमा बाहर निकली, भानू ने एक कागज मंदिर में फैंक दिया – रात का एक बज चुका था, संतरी अब भी चारों तरफ घूम रहे थें, मनोरमा को भानू ने आगे रखा था – भानू गेट पर पहुँचा तो संतरी करीब आ गया।

अभी तक क्या कर ही थी – स्वर तेज था..... ।

तुम्हारी सेवा में हाजिर हूँ – भानू का सुरीला स्वर सुनकर संतरी के ओंठो पर पानी आ गया। कैसे–कैसे लोग है नारी शरीर का बर्फी का टुकड़ा समझते हैं भानू ने कल्पना की थीं।

संतरी ने गेट खोल दिया – मनोरमा कुछ झिझकी तभी भानू ने पैर लगा दिया – सहम कर मनोरमा आगे बड़ गयी गेट के बाहर संतरी आ गया – अब आप थोड़ा इधर जा आयें.... ।

मैंने इंकार कब किया – मिठास से युक्त स्वर हाँ मुझे इससे डर लगता है – भानू ने रायफल की तरफ उँगुली उठायी।

मंदांध – संतरी ने रायफल एक तरफ रख दी आओ इस रूम में अंधेरा है–परन्तु भानू उससे बेखबर रायफल उठा लिया–दूसरे पल संतरी तड़फ रहा था दर असल भानू ने बट उसकें सर पर मार दिया था...... ।

क्या देख रही हो मनोरमा ऐसे लोगों को मैं इंसान में गिनती नहीं करता, ये

लोग नारी को मात्र भोग की वस्तु समझतें हैं किसी सुंदर जवान स्त्री को कैसा माल है कहकर उँगुली उठातें है जिन्हे हर नारी में सिर्फ पत्नी नजर आती है जो माँ बहन बेटी भूल जाते हैं उनकी मृत्यु पर अफसोस नहीं करना चाहिए.....चलो मनोरमा।

तुम कैसे बागी हो – मेरे समझ में नहीं आ रहा है, मनोरमा बोली।

सब कुछ समझ में आ जायेगा मनोरमा कहता हुआ भानू आगे बड़ने लगा – थोड़ी दूर आगे बड़ने के बाद भानू ने साड़ी खोल दी – फिर एक जीप पर मनोरमा को भानू ने बैठाया था।

कहाँ ले जा रहे हो – मनोरमा बोली।

चुप चाप बैठी रहो – भानू का स्वर तेज था सहम कर मनोरमा चुप हो गयी – फिर उसे याद आया उसने भानू को कितना जलील किया था काश वह ऐसा न करती तो आज उसका यह हश्र न होता।

क्या सोच रही हो मनोरमा भानू बोला – मनोरमा चौंकी कुछ कह न सकी बस आँखों में झरझर आँसू बहने लगें।

भानू के अंधरों पर फीकी मुस्काहट तैर गयी फिर वह जाने क्या सोच कर बोला – डरो मत मनोरमा हम तुम्हें मँफ कर रहे हैं मैं अपने लिये तुम्हारा अपहरण नहीं कर रहा हूँ न ही अपनें अपमान का बदला ले रहा हूँ फिर ऐसा किस लिये कर रहा हूँ हाँ वक्त तुम्हें सब समझा देगा – भानू कह चुका था मनोरमा ने सिर्फ सुना था पर यह तसल्ली उसकें भय को दूर न कर सकी।

o o o

नौ

पौ फूटनें से पहले भानू मनोरमा को लेकर मुख्यालय तक पहुँच गया – रास्ते में उसनें जीप छोड़ दिया था – घोड़े की सहायता से ऊबड़ खाबड़ जमीन पार किया था मनोरमा किसी लाश की भाँति उसके साथ चल रही थी। तुम आ गये भानू – युवती की आवाज खुशी से काँप रही थीं।

सपना तो नहीं देख रही हो गुड़िया – भानू मुस्कुरा पड़ा एक खेद की सूचना है गुड़िया हम अपना वादा निभा न सकें – यह भी नहीं कि भानू हार गया आनन्द के जगह उनकी पुत्र बधू ले आया हूँ।

भानू यह बुद्धिमानी नहीं है मैं अपने कारण किसी दूसरे को दुःख देना नहीं चाहती आनन्द के जगह किसी नारी का अपहरण करते समय क्या तुम्हारा आदर्श तुम्हें इजाजत दे दिया बोलों भानू मौन क्यों हो।

मेरे पास आदर्श नाम की कोई चीच है ही कहाँ – गुड़िया मैं हृदय शून्य प्राणी हूँ – किसी की पीड़ा तड़फ का एहसास मुझमें कहाँ – हाँ एक बात सुनों मनोरमा को मैं किसी मेहमान कि तरह लाया हूँ सिर्फ इसलियें कि आनन्द को मजबूर कर सकू अगर मेरी योजना फेल हो गयी तो मेरा विश्वास करों गुड़िया मनोरमा को हम बा इज्जत रिहा कर देंगें।

तुम्हारी इस लड़की से कोई दुश्मनी युवती ने अपनी विशाल आँखे भानू के मुख मंडल पर जमा दी, वह दृष्टि उसकें अंतर मन को भेदती चली गयी बरबस उसका सर झुकता चला गया।

''जबाब दो भानू – हम ने कुछ पूछा है?

'' नहीं नहीं – भानू के स्वर में घबराहट थी

''तुम इतना घबरा क्यों रहें हो?

''नहीं तो भानू मुस्करा पड़ा।

''आखिर तुम्हें इतना पसीना क्यों आ रहा है?

ओह भानू अपने को संयत कर चुका था – तुम्हारे सामने अपनी हार का गम बरदास न कर सका हिम्मत ही नहीं पड़ती थी अपनी गुड़िया के सामने आने की कहते हुए भानू ने अपना हाथ गुड़िया के सर पर रख दिया – और वह स्पर्स कितना

खुखद कितना शीतल था अपनत्व से युक्त था कि गुड़िया सब कुछ भूल गयी! भाववेश में वह भानू के सीने से सिर टका दिया.... ।

गुड़िया आनन्द को शीघ्र ही तुम्हारे सामने लाऊगा बस तुम मुझसे नाराज नहीं होना।

भइया – युवती का स्वर भर्रा गया – आप ऐसा कह कर हमे दुःख दे रहे हैं अथाह अमित.... । इस संसार में आप के सिवा मेरा है ही कौन फिर भला कोई अपने इष्ट से नाराज हो सकता है।

गुड़िया – भानू ने उसका मुख हथेली में ले लिया कितना सुंदर था उसका मुख – किसी कवि की कल्पना से दूर भोली भाली उस रूप की देवी पर नियति ने कितना कूर प्रहार किया था। सोच कर भानू का मन रो पड़ा अपनी वेदना को छिपाया था उसने बोला यह क्या कह गयी गुड़िया – ऐसा तुम्हें सोचना पाप है।

मैं पापी नीच नारी हूँ भानू......फिर पुण्य धर्म अच्छाई मुझमें कहाँ हो सकती है –

गुड़िया – भानू का स्वर तेज था – तुम ऐसा कह कर मेरा अपमान कर रही हो।

''अगर ऐसा है तो मुझे माफ कर दो भइया।

''पगली इस तरह कि बाते नहीं करते – भानू ने उसे डाटते हुए कहा – और एक बात सुन.......अब भविष्य में कभी ऐसी बाते नहीं करना – अगर तू मुझसे माफी मांगती है तो वादा कर..... ।

वादा रहा भइया – कहती हुई युवती मुस्करा पड़ी हाँ – मनोरमा से नहीं मिलवाओंगें।

भानू के इशारे पर मनोरमा को सामने लाया गया – युवती और भानू की बाते सुनकर वह गहरे सोच में डूब गयी थी।

बैठो युवती ने मुस्काते हुए कहा ''थोड़े दिन तुम्हें मेरे पास रहना था शायद यह विधि का विधान था नहीं तो भानू भइया तुम्हारी जगह आनन्द को लेकर आते।

आनन्द यानी रणबीर के डैडी मनोरमा का स्वर अरे तू चौंक क्यों गयी युवती ने पूछा।

इन बातों को छोड़ों गुड़िया यह कुछ नहीं जानती है – हाँ मनोरमा आप के पास मेरी अमानत है जिस दिन मैं आनन्द को ले आऊँगा मनोरमा को मेरे हवाले कर देना – मेरा मतलब समझ गयी न।

''इसका मतलब आज ही आप चले जायेगें!

''जरूर जाकर देखना है यह आग जो मैं लगा आया हूँ क्या कारिश्मा दिखाती है – साथ ही साथ मुझे अपने एक मित्र से भी मिलना है। एक अभागिन बहन से मिलना है....।

वह सब जो तुम कह रहे हो – क्या कल नहीं हो सकता आज आप कहीं न जाये यक मेरी बिनती है।

जैसे तुम्हारी इच्छा कहता हुआ भानू बैठ गया बहुत थक गया हूँ – एक सच मुंह से निकल गया थक गये फिर भी आज ही जाना चाहते हो कहती हुई युवती खड़ी हो गयी – भानू के सर पर हाथ फेरती हुई बोली सर भी दर्द कर रहा होगा – भानू ने युवती का हाथ पकड़ लिया रहने दे गुड़िया – पेरशान मत हो।

o o o

प्रातः के छः बज गये – परन्तु मनोरमा का कहीं भी पता न चला – कर्नल आनन्द के चेहरे पर परेशानी के लक्षण स्पष्ट थे – तभी किसी ने आकर कहा गेट पर एक संतरी की लाश पड़ी है – यह समाचार सुनकर आनन्द एवं अग्रवाल गेट पर पहुँच गये – सचमुच एक संतरी की बीभत्स लाश पड़ी थी! यह सब कैसे हो गया आनन्द ने कहा था – अग्रवाल साहब भी काफी परेशान नजर आ रहें थें।

तुरन्त पुलिस को सूचना दी गयी थोड़ी देर के बाद पुलिस भी आ गयी लाश को देखकर इंस्पेक्टर बोला इसकी रायफल इंस्पेक्टर के प्रश्न पर आनन्द भी चौंक गये।

आप लोंग चिंता न करें हम इसके खूनी को जरूर गिरफ्तार करेगें – आनन्द ने अग्रवाल से कहा – क्या पुलिस में मनोरमा के गुम होने का रिपोर्ट लिखा दूं नहीं अग्रवाल ने दबी जुबान से कहा – इससे हमारी बदनामी होगी...।

यही तो मैं भी सोच रहा हूँ आनन्द ने बुरा सा मुँह बनाया।

''क्या मनोरमा प्रधान के साथ भाग गयी।

“ऐसा नहीं हो सकता मनोरमा प्रधान की बात मैं खुद सुन चुका हूँ – वह प्रधान से घृणा करती थी फिर हमारा दुश्मन कौन हो सकता है अग्रवाल गहरे सोच में डूब गये – तभी दौड़ता हुआ रणबीर उन दोनों के बीच पहुँचा – मारे भय के उसका बंदन काँप रहा था।

क्या बात है रणबीर कर्नल आनन्द उसकें भावों को भाँपते हुए बोले परन्तु उसका जवाब दिये बगैर रणबीर ने एक कागज आनन्द की तरफ बड़ा दिया यह क्या है बेटे कर्नल साहब बोले.....।

मेरी और मनोरमा की जिन्दगी – रणबीर टूटे स्वर में बोला!

“मैं अब भी नहीं समझा बेटे – कर्नल साहब हकलायें।

“ समझने की कोई बात नहीं डैडी – आप को अपने पर बहुत गर्व था – यही गर्व मेरी जिन्दगी बरबाद कर दिया अब आप कह रहें है समझा नहीं। क्या भानू को भूल गये आप! आखिर आप की उससे क्या दुश्मनी थी जिस के कारण मुझे बहका कर मनोरमा से अलग कर दिया पड़ लो डैडी इसकें बाद सब कुछ समझ जाओगें भानू का नाम सुन कर आनन्द चौंके फिर पत्र पड़ने लगें!

प्रिय शत्रु कर्नल आनन्द......

सादर नमस्कार!

तुम शायद मुझें भूल गये होंगे कर्नल परन्तु हम तुम्हे कैसे भूल सकतें – तुम आखिर हमारी बरबादी के जड़ हो – तुम ने मुझें कालेज से बाहर निकाल ही दिया – खैर तुम्हारी विजय तुम्हे मुबारक हो मुझे उस से कुछ लेना देना नहीं है – मैं तो वे पुरानी बाते भूल चुका था – परन्तु तुम ने एक गुनाह ऐसा किया कि जिसकी क्षमा भगवान भी नहीं दे सकता – फिर मैं तो एक मनुष्य हूँ हाड माँस का पुतला – फिर मैं कैसे भूल सकता हूँ।

हाँ आज से तुम्हारी बरबादी का खेल शुरू हो गया – तुम्हें अपने उपर बड़ा गर्व है न – फोर्स को लगा कर तुम मुझे रोक नहीं सकतें कर्नल – तुम्हे याद होगा आनन्द प्रधान को पथ भ्रष्ट करने वाली मनोरमा थी – जिसे हम कभी माफ नहीं कर सकते वैसे मूल जड़ तुम हो – और मुझे सिर्फ तुम्हारी तलाश थी परन्तु सरकारी नौकरों के कारण बच गये कब तक – या तो भानू मर जायेगा – या तो तुम – जब तक तुम जिन्दा हो हमें तुम्हारी तलाश रहेगी – ये सरकारी नौकर जिस दिन

तुम्हारे पीछे नहीं होगें – समझ लो वहीं तुम्हारा अंतिम दिन होगा। अगर मरना नहीं चाहते हो तो अगर मनोरमा को जिंदा चाहते हो तो – जो मैं कह रहा हूँ उसे करना होगा – मैं खुद तुम्हारे घर से मनोरमा को ले जा रहा हूँ अगर तुम्हें मनोरमा की जिन्दगी चाहिए तो – आज के सातवें दिन तुम्हें बस पर बैठ जाना है उस बस का नम्बर और उतरनें की जगह आप को बाद में बतायी जायेगी अगर आज के सातवें दिन तुम मनोरमा को लेने नहीं आते तो – हम विवश होकर मनोरमा की लाश रोड पर फैंक देंगे सिर्फ इसलिये कि आप को मेरी बातों पर यकीन हो जाय – बस ज्यादा न कह कर हम अगले पत्र में मिलेगें अच्छी तरह सोच लेना कर्नल मनोरमा की जिन्दगी तुम पर आधारित है चाहों तो उसे बचा सकतें हो हम उसके बदलें चाहे तो मोटी रकम माँग सकते है हराम की कमाई बैंक में सड़ रही होगी – परन्तु शायद हम ऐसा नहीं कर सकतें अखिर देश रक्षक हो न, हम तुम से मिलनें को बेताब हैं कर्नल आनन्द!

आपकी प्रतीक्षा में

भानू

पत्र को अग्रवाल को देते हुए आनन्द बोले – क्या करू अग्रवाल मैंने सोचा भी नहीं था कि यह छोकरा यहाँ तक पहुँच जायेगा – अब तो मुझे जाना ही होगा अगर हम किसी की मदद लेगें तो मनोरमा की जान नहीं बच सकती, भानू के चगुंल में जो फंस जाता है वह तड़फ तड़फ कर मर जाता है अग्रवाल और हम अब फंस चुके हैं – बुद्धि काम नहीं कर रही है – अग्रवाल की आँखों में नमी तैर गयी – इकलौती बेटी पर हो रहे जुल्म को आखिर वे कैसे बरदास कर सकते थें।

मेरी बेटी को बचा लो दोस्त – अग्रवाल का स्वर दर्द से सना था। अगर मनोरमा को कुछ हो गया तो अग्रवाल का स्वर गले में फंस गया। पास खड़े रणबीर की भी आँखें गीली थीं। जबकि आनन्द कह रहा था हमे भानू की हर शर्त स्वीकार करनी पड़ेगी, इसके सिवा कोई विकल्प नहीं लेकिन यह बात गुप्त रहनी चाहिए अग्रवाल – मनोरमा को हम हर कीमत पर लायेगें – रणबीर तुम जरा भी चिन्ता नहीं करना। मनोरमा को कुछ नहीं होगा।

कैसे धीरज धरु डैडी – रणबीर बोला – क्या भानू मनोरमा के व्यवहार को भूल जायेगा – नहीं डैडी मनोरमा अब जिन्दा नहीं बच सकती भानू उसे छोड़ ही

नहीं सकता।

ऐसा नहीं होगा रणबीर वह मेरी प्रतीक्षा जरूर करेगा मेरे न जाने के बाद ही शायद वह कुछ करें। आप जायेगें डैडी – रणबीर उखड़ें हुऐ स्वर में बोला – जाऊँगा क्या हजार बार कहूँ मनोरमा को वापस जरूर लाऊगा यह एक पिता का वचन है।

० ० ०

अरे भानू तुम सुजान का स्वर आश्चर्य से सना था। क्या बैठने को भी नहीं कहोंगे मुझे एकदम भूल गये – भानू का स्वर भर्रा उठा!

क्या बकता है पगलें – मैं तुझे भूल सकता हूँ कहतें हुऐ सुजान ने भानू को बाहों में भर लिया आओं बैठो – हम अलका दीदी को बुलातें हैं –

सुधा को भी – भानू बोल पड़ा – और सुजान को जान पड़ा जैसे यह स्वर उसके ह्रदय में चुभ गया बरबस आखे छलक आयी क्या जबाब दे भानू को यहीं न सुधा को मैंने जला दिया – यही सोचते हुए सुजान अलका के कमरे तक पहुँच गया – दीदी उसने पुकारा था, भइया इतनी रात चौंकती हुई अलका उठ गयी।

आप कुछ परेशान से लगते है भइया – क्या बात है अलका कहती चली गयी पर सुजान मौन था – आखिर बात क्या है भइया अलका ने सुजान को झिंझोड़ दिया.......।

भ....भानू आया है दीदी मुझें यकीन था एक दिन वह अवश्य आयेगा – अब उसे क्या उत्तर दूँ दीदी सुधा की मृत्यु क्या भानू बरदास कर पायेगा।

सच्चाई के सिवा हमारे पास कोई वर्त्म नहीं भइया – यदि आज हम झूठ बोल कर भानू को टाल देते हैं तो सच्चाई जानने के बाद उसकें विचार हमारे प्रति क्या होगे – यह कल्पना आप कर सकते हैं – आप चिंता न करे भइया – भानू को मैं सब कुछ बता देती हूँ कहती हुई अलका चल पड़ी।

आओ दीदी – भानू ने अलका के चरण छुये फिर सुधा कहाँ है प्रश्न भी परन्तु अलका मौन...।

मौन क्यों हो दीदी – आखिर सुधा कहाँ है।

वह इस दुनिया में नहीं रही भइया........।

नहीं चीख पड़ा भानू.....क्या हो गया सुधा को वह पागल के समान नजर आ रहा था!

जिंदगी और मौत पर किसी का बस नहीं होता भइया। सुधा को चाह कर भी हम बचा न सकें! उसने आत्म हत्या कर लीं।

नहीं—नहीं ऐसा नहीं हो सकता......वह पागल के समान अपना सर दीवार से टकराने लगा।

यह क्या कर रहे हो — भानू सुजान ने उसे पकड़ लिया — होनी को कोई टाल नहीं सकता भानू पर तुम्हारे आँखों में आँसू शोभा नहीं देते भानू — सुधा के कातिल को सजा दो — जो इस पत्र में लिखा है, सुधा ने मरने से पहले यह खत लिखा था अपना फर्ज पूरा करो भानू, पोंछ दो आँसू........।

भानू ने वह पत्र पड़ा था मुख पर न जाने कितने भाव आये गये दिल मे तूफान चल रहा था, प्रधान को उसने आखिर क्यों छोड़ दिया उसकी वासना ने सुधा की जान ले ली — फिर उसे सुधा की बेवकूफी का एहसास हुआ वह कयार थी तभी तो उसने यह रास्ता अपनाया — अगर वह जिंदा होती — बरबस भानू की आँखें गीली हो गयी।

मैं सोच भी नहीं सकता था कि यह पत्र पड़ कर तुम्हारी आँखों में आंसू आ जायेगें। मेरा अनुमान था यह पत्र पड़ कर तुम आपा के बाहर हो जाओगे पर तुम में यह परिवर्तन बड़ा अजीब लग रहा है सच कहो भानू — आज यकायक कयारता पर कैसे उतर आये — तुम तो आँसू बहाने के विपक्ष थें — सुजान ने कहा.......!

आप ठीक कहते है भइया — आज जिन्दगी में पहली बार इस तरह से रो रहा हूँ — परन्तु मैं सुधा की बदनासीबी पर नहीं रो रहा हूँ, सोच रहा हूँ यह कैसा विधान है — दुनिया बनाने वाले का, नारी कितनी कमजोर है वह लुटती है — फिर घुट—घुट कर मर जाती है, और लूटने वाला सीना खोल कर घूमता रहता है — और प्रकृति इसकी सजा सिर्फ नारी हो देती है। शायद पुरुष सबल है इसी कारण जीत कर भी नारी हार जाती है मैं सुधा की बरबादी पर नहीं बस यह सोचकर रो रहा हूँ क्या हमारे देश में सुधा जैसी बदनसीब इसी तरह खुदकुशी करती रहेगी। विश्व के सारे धर्म इस देश में है। विश्व के सारे संविधानों से हमारा संविधान भी श्रेष्ट है, परन्तु इस समस्या का न तो कोई धर्म निदान कर सका न ही कोई कानून सुधा की

मौत तो हो चुकी है, मैं उनके लिये रो उठा जो मरने को मजबूर हैं। वह बात दूसरी है कि मौत डरने की चीज नहीं है – मृत्यु वह सत्य है जो सबको समान देखते आया है आत्मा पर दाग लगने से पहले मर जाना मैं बेहतर समझता हूँ। परन्तु आत्मा बेच कर मरना बहुत ही दुःख की बात है। इसका मतलब प्रधान को माफ कर दोगें भानू सुजान ने कहा.......।

कदापि नहीं – मैं सुधा के कातिल को कभी भी क्षमा नहीं कर सकता – प्रधान से मेरी श्रद्धा बहुत पहलें खत्म हो चुकी थी। परन्तु मैंने यह नहीं सोचा था कि उसकी मौत मेरे हाथो होगी, दोस्ती का ऐसा अंत होगा मैं नहीं जानता था।

सुजान ने एक पोटली भानू के हाथ में रखते हुए कहा ये वे फूल हैं जिन्हें मैंने सुधा की चिता से निकाल लिये थे – फिर बिस्तार से सुधा की कहानी सुजान ने कह दी, मुझे अगर पता चल जाता तो सुधा को कभी भी मरने नहीं देता, बच्चे को मैं अपना नाम दे देता भानू – परन्तु उसने हमें सोचने का मौका हीं नहीं दिया।

भानू उन हड्डीयों को अपलक देखता रहा मानो सुधा उस के सामने खड़ी है....।

भानू कहाँ खो गये........सुजान बोला।

मैं इन्हें सम्भाल कर रखूगा भइया – अपने प्राणों से भी अधिक.....।

इन्हें तुम्हे सम्भाल कर रखने को नहीं दिया भानू ये प्यासे हैं – और तुम इनकी प्यास बुझा सकते हो इतना ध्यान रखना भानू ये पानी नहीं पीयेगी – ये खून पीयेगी प्रधान का – पति के मरने पर स्त्री सती हो जाती है परन्तु मैं इन फूलों के साथ प्रधान को सती कराना चाहता हूँ, न जाने कितने खून किये होगें भानू एक खून और कर दो – आखिर तुम पर फर्क ही क्या पड़ता है।

भइया आज तुम्हारे मुख से ये कैसी बाते सुन रहा हूँ आप अहिंसा के पुजारी हैं। आज हिंसा पर कैसे उतर आये।

मेरी बाते सुन कर तुम्हें आश्चर्य हुआ भानू परन्तु मैने अहिंसा का साथ कभी नहीं छोड़ा.......मैं जो कहता वह अहिंसा से परे नहीं......।

किसी का खून करना हिंसा ही होता है भइया मैं प्रधान का खून जरूर करूगा.....मुझे माँ की कसम, हाँ अगर मर गया तो दूसरी बात होगी – परन्तु आप के मुख से यह शोभा नहीं देता – मेरा अनुरोध है आप अपने शब्द वापस लें.....।

भानू तुम मेरी बात समझे कहाँ – मैं जीवन में अहिंसा का कद्र करता रहा करता रहूंगा, परन्तु तुम जिसे हिंसा कहते हो वह हिंसा नहीं हैं, भगवान राम क्या अहिंसा के पुजारी नहीं थें, मुनि के भेष में राक्षसों का बध करना क्या तुम हिंसा कहोगें, अगर राक्षसों का बध हिंसा था तो आज हम राम की क्यों जय–जय कार करते हैं, किसी भी विज्ञ पुरुष ने राम के इस कार्य (राक्षस संहार) को हिंसा मय नहीं कहा है मैने तुम से एक राक्षस के बध का अनुरोध किया है ठीक उसी प्रकार जैसे अत्रि महात्रृषि ने भगवान राम से किया था।

अब कोई शंका नहीं भइया – मान गया आप आहिंसा के पुजारी है परन्तु एक खूनी को इतनी बड़ी उपमा देना उचित नहीं।

यह तो अपना विचार है भानू तुम अपनी नजर में बागी हो दुनिया की नजरों में खूनी हो परन्तु मेरी नजरों में कुछ और जिसे मैं कह नहीं सकता।

मत कहों भइया, अच्छा अब हमें बिदाई दो। अलका दीदी आप कुछ कहना चाहती हैं।

''कुछ नहीं भइया – कहतें हुए अलका सिसक पड़ी।

''क्या हुआ भानू उसके सिर पर हाथ फेरता हुआ बोला – परन्तु अलका मौन थीं।

दीदी! मैं जानता हूँ तुम क्यों रो पड़ी एक दिन तुम्हारे सामने झूठ बोला था, दर असल उस दिन मैं ही था, मुझे क्षमा कर दो दीदी।

''तुम मुझसे झूठ क्यों बोले भइया।

''इस लिये कि तुम्हारी हददर्दी न पा सकू–बस और कोई कारण नहीं था।

वक्त ने मजाक किया भइया – उस दिन हम तुम्हे पहचान न सकी! और आज हम कुछ कर नहीं सकती, तुम्हारे उपकार के बदलें धन्यवाद भी नहीं मेरे पास, आओ भइया – अलका का स्वर भर्रा गया....

दीदी – भानू अलका के करीब था – अब मैं जाता हूँ दीदी अधिक देर मैं यहाँ रूक भी नहीं सकता।

अब के गये फिर कब आओगे भइया – अलका की आँखे छलछला आयी।

भाग्य शायद फिर कभी मिला दे दीदी – मैं तो अपनी जीवन क्रीड़ा नियति

पर छोड़ चुका हूँ। भइया सुजान आप का वचन अवश्य पूरा होगा कहता हुआ भानू अंधकार में मिल गया।

भानू में यह परितर्वन कैसे हो गया भइया।

यह परिवर्तन नहीं दीदी वरन् मानवी गुण है एक मनुष्य होने के नाते भानू की आँखों में आँसू आ गये, अब जाओ दीदी सो जाओ रात काफी बीत चुकी है।

○ ○ ○

वादे के मुताबिक कर्नल आनन्द को एक खत मिला जिसमें स्थान का नाम लिखा था। जहाँ उसे अकेले पहुँचना था कर्नल आनन्द बहुत सोचने के बाद रणबीर और अग्रवाल को समझा कर चले..... बस से उतरते ही जैसे भास्कर का भी सफर पूरा हो चुका था।

आनन्द गहरे सोच में डूब गये – एक अनजान जगह दूर तक निर्जन पंछीयों की ध्वनि के सिवा कुछ नहीं था आखिर उसे यहाँ किस लिये बुलाया गया – मुख पर चिंता की रेखाये उभर आयीं! तभी कुछ आहट हुई उस निर्जन में न जाने कहाँ से एक व्यक्ति प्रकट हो गया – मानों आनन्द को वह पहचानता हों..... एक दम उसके करीब पहुँच गया।

तुम कौन हो – आनन्द बोला – परन्तु उस व्यक्ति ने उसकी परवाह किये बिना जेब से एक फोटो निकाल लिया, फिर इतमीनान से बोला आओं मेरे साथ....।

कहाँ – आनन्द ने कहा – उस व्यक्ति ने आनन्द को सिर्फ घूरा – मानों कच्चा खा जायेगा। उसकी इस हरकत पर आनन्द मन मसौल कर रह गया। थोड़ी देर उबड़ खाबड़ जमीन पर चलने के बाद उस व्यक्ति ने कहा–ठहरों।

क्या बदतमीची है – मुझें भानू से मिलना है तुम मुझें कहाँ ले जा रहे हों, आनन्द का स्वर तेज था।

मुझे आपकी तलाशी लेनी है। उस व्यक्ति ने कहा।

क्या मैं चोर हूँ..... आनन्द चीख पड़ा।

चीखों मत साहब यह हमारा उसूल है आप की बिना तलाशी लिये हम अगला कदम नहीं उठायेगें। वह व्यक्ति मुस्करा उठा, उस के ये वचन सुन कर आनन्द आग बबूला हो गया – क्रोधबेश में शरीर बुरी तरह काँपने लगी....और फिर

एक पल गवाये बगैर रिवालवर निकाल लिया.....खबर दार अगर जुबान खोली तो गोली मार दूंगा.....वह व्यक्ति मुस्कराकर रह गया!

तुम मुझे गोली मार सकते हो....परन्तु मेरी मृत्यु के बाद तुम भी जिंदा नहीं रहोगें – तुम यह खिलोना लेकर बहादुरी दिखाओगे, यह भ्रम दिमाग से निकाल दो – मैं अपना उसूल नहीं तोड़ सकता शुक्र खुदा का मनाओं, साहब भानू के आदेश पर तुम अपने पैरो से चल रहे हो – अन्यथा हम उठा कर ले जाते।

कमीने तेरी इतनी औकात – मुझे कुछ भी होगा परन्तु तुझे जिन्दा नहीं छोडूगा – कहते हुए कर्नल ने गोली चला दी – निशाना सही था वह एक ही गोली में खत्म हो गया। परन्तु कर्नल के चहेरे पर भय की रेखाये उभर आयीं अब क्या होगा।

नहीं चाहिए मुझे मनोरमा – मर जाने दो रणबीर को क्यों मैं अपनी जान देने जा रहा हूँ अभी कुछ दिन दुनिया का स्वर्ग भोग लूं ऐसा सोचकर आनन्द पीछे मुड़ गये.....परन्तु तभी एक खौफनाक आवाज गूंज गयीं।

रूक जाओ वतन के रक्षक देखों और पहचानों मैं कौन हूँ।

तुम भानू हो न – आनन्द विस्मृत स्वर में बोला....।

मर गया भानू – सरकारी नौकर तुम्हें रोज मुफ्त का समाचार पत्र दिया करते थे – क्या तुम ने वह तहरीर नहीं पड़ी जिसमें भाने की मृत्यु छपी थी।

मैं कुछ समझा नहीं और इसी के साथ कर्नल ने गोली चला दी। परन्तु बेकार भानू पहले ही इससे अवगत था – बड़े आराम से उसने कर्नल की गोली बीच में ही काट दी, यह देखकर कर्नल बौखला गया।

श्वेत सूकर चले गये – लेकिन तू उन के खून से पैदा हुआ कर्नल हम बागी भी अपने वचन के पक्के होते हैं। परन्तु तुम देश सेवी – रुक क्यों गये चलाओ गोली....कर्नल के हाथ में रिवाल्वर अभी भी था।

मैं समय बरबाद नहीं करता कर्नल जिन्दगी चाहते हो, तो तमंचा फैक दो – अन्यथा अपनी मौत देख लो – शायद अदृश्य है – खिलखिला कर हंस पड़ा भानू।

बौखला गया कर्नल – अपनी मौत का उसे एहसास हुआ। दूसरे क्षण

रिवाल्वर हाथ से छूट कर गिर गया।

आगे बढ़ो कर्नल एक दम मेरे करीब......हमने तुम्हे वचन दिया था – हम मनोरमा को छोड़ देगें, परन्तु तुम ने हमारे एक साथी को मार कर, हमें उसूल तोड़ने पर मजबूर कर दिया है, मेरी प्यास तुम्हारे खून से बुझेगी हरामखोर भानू दहाड़ उठा....।

भानू से दो मीटर की दूरी पर कर्नल खड़ा था....मेरी बात सुनो कर्नल दोनों हाथ उपर उठाओं और जबाब सिर्फ गरदन देगी – मेरा मतलब हाँ या न में सिर्फ हिलती रहेगी। कर्नल ने दोनों हाथ उठा दिये।

तो तुम भानू के मृत्यु से अवगत नही थे..... भानू बोला कर्नल ने न में सिर हिला दिया।

अवश्य भानू मुस्करा उठा – मुझें कालेज से निकलवा देने से तुम्हें क्या मिला।

कर्नल मौन था हिला भी नहीं।

मुँह खोल अग्रेजी औलाद भानू दहाड़ा...... परन्तु कर्नल मौन था, तू एसे मुँह नहीं खोलेगा सूकर कहते हुए भानू के हाथ हवा में फैल गये......।

परिणाम कर्नल तड़फ कर शान्त हो गया बेपरवाह भानू घसीटता हुआ आगे बढ़ा – फिर एक घोड़े पर डाल कर चल पड़ा – भानू को एहसास हुआ मोनो वह लाश है।

○ ○ ○

मैंने अपना वचन पूरा कर दिया गुड़िया कहते–कहते भानू की आँखों में अमित प्रेम उमड आया – गुड़िया के लिये....।

क्या आनन्द को पकड़ लाये – मारे खुशी के युवती का स्वर गले में फंस गया। आँखें से अविरल आँसू बहने लगे। सहसा उसका चेहरा विकृत होता चला गया – कहाँ है आनन्द चीख पड़ी।

इतनी उतावली क्यों होती हो गुड़िया – अभी उसे होश नहीं है, बहुत बहादुर था – मेरे उपर गोली चलाई थी एक बागी को मार दिया आनन्द ने गुड़िया, तुम्हारे कारण अभी तक जिंदा है, अन्यथा भानू ने वाक्य छोड़ दिया!

कहाँ है आनन्द युवती ने न चाहते हुए भी कह दिया, फिर भानू के आदेश पर बिहोश आनन्द को युवती के सामने लाया गया – ये वही है न भानू बोला।

हाँ भानू ये वही नर पिशाच है – जिसने मुझको दुनिया में भटकनें के लिये मजबूर कर दिया, आज तुमने मेरे उपर जो उपकार किया है शुक्रिया के सिवा और कह ही क्या सकती हूँ मैं जीवन भर भटक कर मर जाती परन्तु इस कमीने तक पहुँच न पाती, परन्तु तुम ने मौत से खेल कर मेरी मुराद पूरी कर दी।

ऐसा मत कहों गुड़िया, इस कमीने से मुझें भी बहुत कुछ सौदा करना है तुम हमारे प्रति इतनी कृतज्ञ क्यों होती हो, हाँ मनोरमा को बुलाओं...... ।

युवती के आदेश पर मनोरमा को लाया गया भानू मनोरमा की तरफ मुखबित होकर बोला – कोई तकलीफ तो नहीं हुई, परन्तु मनोरमा कोई उत्तर न दे सकी। बस अपलक आनन्द को देखती रही भानू कुछ और कहता कि इससे पहले दौड़ कर मनोरमा – आनन्द से लिपट गयी।

हट जाओ मनोरमा भानू का स्वर कठोर था – अन्यथा हम....रूक गया भानू...... ।

अंकल आप यहाँ कैसे आ गयें – मनोरमा कह उठी।

शेर भी एक दिन फंस जाता है मनोरमा – कहते हुई भानू ने मनोरमा का हाथ पकड़ कर उठा दिया।

इसे ले जाओं गुड़िया – हम आनन्द को होश में लाते है कहते हुए भानू ने आनन्द के चेहरे पर पानी के छीटे मरना शुरू कर दिया, थोड़े परिश्रम से ही आनन्द ने आँखे खोल दी।

गुड़िया यह तुम्हारा शिकार है – तुम इसे जो चाहो वह सजा दे सकती हो – कहता हुआ भानू हट गया – और युवती ने आनन्द को जब होश मैं देखा तो चीख पड़ी मुझको पहचानते हो कर्नल...... । कर्नल आनन्द को एक धक्का सा लगा वर्षों पहले की घटना उनके सामने घूम गयी बरबस ही उसके मुख से निकल गया तुम....... ।

मैं उसी गरीब किसान की लड़की हूँ आनन्द जो तुम्हरे यहा हल जोता करता था – मेरे बाप की मौत साँप काटने से हुई थीं। युवती चीख पड़ी आज तुम्हें मेरे सारे प्रश्नों का उत्तर देना होगा। परन्तु आनन्द मौन और युवती कहती जा रही

थी! तुम चुप होकर नहीं रह सकतें आज तुम्हें पता चलेगा कि नारी वास्तव में क्या है, तुम्हारी वासना तुम्हें ही कितनी बेरहमी से मारती है तुम खुद देखोंगे – युवती का स्वर कर्कस था।

आनन्द मौन था – उसनें एक शब्द भी नहीं कहा और दूसरे पल युवती का सारा जिस्म क्रोध से काँपने लगा हाथ में रिवाल्वर लेकर गुर्रायी मेरा बाप तुम्हारे यहाँ मजदूरी करता था आनन्द वह भी बिना मजदूरी के, चार पसेरी गेहू के ब्याज में मेरा बाप तुम्हारे यहाँ कितने वर्षों हल जोतता रहा गिनती नहीं है, परन्तु ब्याज सुरसा के बदन के समान बड़ता रहा कभी पूरा नहीं हुआ। मुझको देख कर तुम्हारी वासना दहक उठी बापू को जहर दे दिया – मुझें लूटने के बाद भी तुम्हारा ब्याज पूरा नहीं हुआ मुझे खिलोना समझ कर खेल कर फैक दिया – और जब हम लुट कर घर पहुँची तो दूसरे दिन तुम्हारा बाप मेरे पिता के बदले मुझें ले आया –दिन भर काम कराया और तुम उसी दिन देश सेवा के लिये चले गये।

काम के बदले मुझे क्या मिला – लात घूसों की मार और मारने वाली तुम्हारी माँ थी कर्नल इसलिये मारा था कि बर्तन धोते समय एक रोटी का टुकड़ा मुख में रख लिया था – यही था मेरा गुनाह......।

उसी दिन मैंने कसम खायी थी, कि तुम्हें बरबाद कर के ही जीवन से मुक्ति लूगी...तुम्हारे अत्याचारों ने मुझे कहाँ तक पहुँचा दिया, कभी तुमने भी सोचा है कि उन बदनसीबो का क्या होता है जिन्हे तुम लूट लेते हो – अपने ऐशो आराम के वक्त क्या कभी तुम्हे हमारी आह भी सुनायी पड़ती है।

मैं भी मूर्ख हूँ – भला तुम जैसे अंधे बहरे आदमी दूसरे की पीड़ा कहाँ देखेगे, कहाँ सुनेगें...एक बात ध्यान से सुनों कर्नल मरने से पहले अपने पापों को याद कर लों.....।

आनन्द मौन था – युवती ने अनेक यत्न किये परन्तु उसने मुँह नहीं खोला – निराश होकर वह गोली चालने वाली ही थी कि भानू ने आगे बड़कर हाथ पकड़ लिया....। यह क्या करने जा रही हो गुड़िया इसे इतनी सस्ती मौत नहीं मिलेगी.....।

श्वेत सूकर की औलाद – तू सोचता है मुँह नहीं खोलूगा तू गदहा के समान रभाना न शुरुकर दे तो भानू मेरा नाम नहीं। अरे गुड़िया इतनी जल्दी यह मुंह नहीं खोलेगा जो ठहरा देश प्रेमी – यह बहादुर हमारे देश का सैनिक है न,

अगर इतनी जल्दी ही हार गया तो सीमा पर दुश्मन का सामना कैसे करेगा क्यों गलत तो नहीं कहां कर्नल सा.......ह..........ब।

आनन्द मौन था आगे बड़ कर भानू ने कर्नल को जमीन पर लिटा दिया।

यह क्या बदतमीजी है आनन्द चीख पड़ा....तुमने मुझें भेंट के लिये बुलाया था...... ।

पार्टी है न भानू मुसकराया – तुम्हे लिटा कर मैं यह देखना चाहता हूँ कि ब्रेड, जाम, अंडा, द्राक्षी सरकरी माल खा कर फूली, इस देह की कबर के लिये कितनी मिट्‌टी खोदना पड़ेगा।

मुझे गोली मार दो भानू – परन्तु इस तरह तड़फाओं मत आनन्द का स्वर क्षीण था!

ओह.......अभी ही डर गये कर्नल साहब अभी तो कुछ शुरु ही नहीं हुआ। मालुम पड़ता है अक्ल काम करने लगी। इसे देख रहे हो न भानू ने युवती की तरफ उँगुली उठाते हुए कहा इसकी जिन्दगी में विष घोलने वाले सच बता दो इसने जो कहा क्या तुम कबूल करते हो – कि सच है।

नहीं, आनन्द बोला – यह मुझपर आरोप लगा रही हैं। तड़ाक भानू का तमाचा आनन्द के गाल पर पड़ा था – आनन्द को ऐसा लगा – मानों सारी दुनिया घूम गयी।

यह अदालत नहीं है आनन्द जहाँ पर जिरह एंव प्रमाण पर फैसला होता है न ही एक तुम्हारा अपना घर है, जहाँ तुम्हारी कोई चीख सुनेगा। अगर झूठ बोले तो वह सजा दूँगा कि सह नहीं पाओगे......जला दूगा तुम्हारे एक–एक अंग..... और तुम अपने जलते हए अंग को देखोगे मरोगे नहीं आनन्द अब तक हम नहीं चाहेगें...... ।

विश्वास करो भानू – मैं सच बोल रहा हूँ आनन्द रो पड़ा।

तुम्हारे रोने से सच्चाई खत्म नहीं हो जाती कर्नल यह चित्र देखों क्या तुम्हारा नहीं.....न जाने क्यों तुम बड़े लोगों को आज कल रोज फोटों खिचवाने की बिमारी लग गयी है एलबम में फोटो सजाने से किसी का नाम अमर नहीं होता कर्नल भानू मुस्करा उठा।

जब कि वह चित्र देखकर आनन्द के मुख से घुटी–घुटी चीख निकल

गयी...... ।

तुम्हारे चीखने या रोने से हमें दया नहीं आयेगी। तुम लोग जैसे मुर्गे काट डालते हो.......वैसे ही हम आदमी, हमारे लिये आचरण हीन आदमी से जानवर श्रेष्ट है कर्नल!

यह मेरा अंतिम प्रश्न है इस ने जो कहा क्या वह झूठ है....?

नहीं.....मैं गुनाहगार हूँ। मरते समय झूठ बोलना नहीं चाहता अभी तक शायद मैं भूल कर रहा था, परन्तु अब झूठ का सहरा लेकर जीना नहीं चाहता।

भानू के अंधरो पर विजय की मुस्कान थिरक गयी फिर वह गुड़िया की तरफ मुखबित होकर बोला। मुझे दुख है गुड़िया तुम्हारे पिता के कातिल को मौत से ज्यादा सजा नहीं दे सकते और तुम्हारी आबरू से खेलने वाले को तो एक तरह से माफ ही कर रहा हूँ। हाँ यदि मुझे कर्नल आनन्द की आत्मा मिल जाती तो विश्वास करो गुड़िया उसे मैं इतना तड़पता कि आज एक किसी ने किसी को इतना नहीं तड़पया होगा – परन्तु हम ऐसा कर नहीं सकते – क्या करू मजबूर हूँ, विधाता के विधान से...... ।

तुम्हारी मृत्यु के बाद हम तुम्हारा खानदान आबाद कर रहा हूँ – वैसे दिल तो कहता है इस आग में तुम्हारा सारा खानदान जला दूँ – परन्तु ऐसा करूगा नहीं।

ये सवाल गुड़िया के थे – अब हम अपने सवाल दोहराते है....तुम कैसे बाप को आनन्द बाल सफेद हो जाने के बाबजूद तुम्हें अक्ल नहीं आयी – मनोरमा को बहकते वक्त क्या तुम्हारी आत्मा ने चीत्कार नहीं किया – मुझे तो आश्चार्य होता है तुमने उससे बात कैसे किया – शायद यह तुम लोगों को शोभा देता हो उच्च्च सोसाइटी की क्या यही पहचाना है कि बेटी, बीबी, भगिनी, को नचाया जाय।

अफसोस होता है कर्नल, इस देश सेवा जैसे त्यागमय कर्म में विलासता का अंकुर कहाँ से फूट गया। जनता तो यही जानती है कि तुम एक वफादार कर्तव्य परायण देश सेवी हो, परन्तु तुम जैसे देश सेवी शराब की गंध में दूसरों की बहू–बेटीयों के साथ राते रंगीन करते हैं, विलासता आदर्श को खा जाती है कर्नल, भगवान बुध ने कहा था – कोमल शैया पर सोना आत्मा का बध करना है। उनकी अहिंसा की पुकार सिर्फ सन्यासी के लिये नहीं वरन् मानव मात्र के लिये थी, मैं यही

कहना चाहता हूँ कि तुम्हारी विलासता ही तुम्हारी मृत्यु बनी। गरीबों की आहो से जब पाप का घड़ा भर गया तब तुम मुझे मिल गये, बस मैं इतना कहूंगा हम बागी होकर भी चरित्रहीन नहीं हैं और तुम जो हो मैं कहना नहीं चाहता हूँ। लोग तुम्हे पूजते हैं हमें गलियाँ देते है इसी का नाम संसार हैं। बस मेरा भाषण और तुम्हारा समय खत्म हो गया – कहते हुए भानू ने जेब से तमंचा निकाल लिया दिल तो कहता है कि तुझे तड़पा–तड़पा कर मारु, परन्तु नहीं एक गोली सीने में उतार देता है, आखिर देश सेवी हो न, बहादुर सैनिक मरता है तो सीने में गोली लगती है, मैंने गलत तो नहीं कहा – कहते हुए भानू ने तमंचा उठाया – लक्ष्य की ओर।

ठहरों भइया – मुझे इसे अपने हाथों खत्म करने दो, नहीं तो स्वर्ग में जाकर बापू को क्या उत्तर दूंगी।

तुम्हारी जैसी इच्छा गुड़िया – कहतें हुऐ भानू का हाथ झुकता चला गया – तुम अपनी इच्छा जरूर पूरी करो।

मैं तुम्हारी इच्छा का हनन नहीं करूंगा। फिर भानू ने तमंचा युवती की तरफ बढ़ा दिया!

भइया, इसे मैं गोली से नहीं मारुगी, कहते हुए युवती ने तलवार खींच ली।

तुम्हारी जैसी इच्छा गुड़िया – भानू का चेहरा दीप्तिमान था युवती ने आगे बड़ कर आनन्द के बाये पैर की ऐडी पर प्रहार कर दिया आनन्द की चीख गूंज गयी पर युवती मानों पागल हो गयी, उसकी तलवार उठती और आनन्द के कमर के नीचे गिरती थीं।

अगणित प्रहार किये युवती ने – आनन्द का निचला भाग लगभग अलग हो चुका था – युवती के केश बिखरे थे, मुख पर पसीने की नन्ही नन्ही बून्दे उभर आयी थी, आनन्द के खून के छीटे भी युवती के बदन पर चमक रहे थें – परन्तु वह उनकी उपेक्षा करती हुई निरन्तर प्रहार करती रही....।

रुक जाओ गुड़िया – मुझे आज पता चला कि तुम काली भी बन सकती हो, तुम्हारे इस कृत्य को देख कर सचमुच मुझे बड़ी खुशी हुई परन्तु अब इसे छोड़ दों।

''युवती ने तलवार रख दी – फिर सिसक पड़ी....।

''गुड़िया – तुम रो रही हो, भानू चौंका था...।

''मैं किसी का खून नहीं करना चाहती भइया, परन्तु प्रतिशोध ने मुझें अंधा कर दिया.....देखों ये खून के छीटे मेरा उपहास उड़ा रहे हैं, मेरे अन्दर विचित्र प्रकार ही हलचल हो रही है भइया।

ऐसा मत कहों गुड़िया – बगावत कर के पश्चाताप करना मूर्खता है – कहते हुए भानू ने अपना पैर आनन्द के गलें पर रख दिया – अब इसें बिदाई दे दूं गुड़िया कहते हुए भानू ने पैर का भार बड़ाना शुरु कर दिया।

इस खत्म मत करो भइया – युवती ने भानू को झिंझोड़ा था तथा रिवाल्वर उठा लिया!

भानू ने पैर हटा लिया – तभी युवती पागलों के समान फायर करने लगी।

खेल खत्म हो गया गुड़िया भानू मुस्करा पड़ा! आपको शुक्रिया भइया – आज सचमुच मैं बहुत हल्की हो गयी हूँ कहती हुई युवती भानू के सीने से लग गयी।

० ० ०

कर्नल आनन्द का भयानक शव पुलिस को मिला था – शव के गले में एक पत्र भी पड़ा था – जिसे दस्यु सम्राट भानू ने लिखा था। आश्चर्य की बात यह थी कि आनन्द की लाश के पास बेहोश मनोरमा को पाया गया था।

मनोरमा ने पुलिस को जो बयान दिये थे वे इस प्रकार थे, कर्नल आनन्द का खून भानू ने किया था मैने अपनी आँखों से खुद देखा था, मुझें एक सप्ताह भानू के हिरासत में रहना पड़ा परन्तु मेरे साथ भानू ने कोई जबरदस्ती नहीं की – भानू की संस्था में एक नारी भी है जिसे भानू बहन कहता है – आनन्द की मृत्यु के बाद मैं वहाँ से यहाँ आ गयी, मुझें कुछ पता नहीं है।

मनोरमा की बात पर पुलिस ने विश्वास नहीं किया था परन्तु डाक्टरी रिर्पोट के बाद शक की कोई गुंजाइश ही नहीं रह गयी थी मनोरमा के अपहरण का उद्देश्य पुलिस समझ न सकी।

मनोरमा के मिलने से रणबीर को खुशी जरूर हुई परन्तु पिता की मृत्यु ने उसे झिंझोड़ दिया था बड़ी मुश्किल के बाद वह यह सदमा सह पाया था।

कर्नल अग्रवाल एवं अन्य सैनिक अधिकारियों ने रणबीर को दिलाशा देतु

हुए ''आनन्द का अंतिम संस्कार पूरे सैनिक सम्मान के साथ करवाया था।

कर्नल आनन्द की मृत्यु से भानू का आतंक कुछ और ही रंग लाया था, पूरे देश के समाचारों पत्रों ने इसे नमक मिर्च लगाकर छापा था।

पुलिस अपनी ऐड़ी चोटी की ताकत लगाकर भी नाकाम रही पुलिस की इस असफलता से सैनिक अधिकारी क्षुब्ध थे।

आई.जी. की नीद भानू नाम ने हराम कर दी, वे सोचते तो न जाने क्यों उन्हे भानू के प्रति एक विचित्र प्रकार की करूणा एव अपनत्व का भाव उमड़ आता। उनकी बूढ़ी आँखे नम हो जाती।

सेना अधिकारियों से उन्होंने भेट की तथा भानू को शीघ्र गिरफ्तार करने का आश्वासन दिया। कर्नल आनन्द की मृत्यु पर उन्होंने गहरा दुःख व्यक्त किया कहा – देश ने एक कर्तव्यनिष्ट योग्य व्यक्ति को खो दिया। जिस पर हमारी सेना को गर्व था।

रात के ग्यारह बज चुके थे आई.जी. साहब को नींद नहीं आ रही थी, सहसा उन्हें भानू के खत का ध्यान आया न जाने क्या सोचकर वे फिर पढ़ने लगे, कई बार उन्होंने यह पत्र पढ़ा था।

एक तोहफा, **स्वीकार कीजियें**

पुलिस को हमारी तलाश है क्योंकि हम खूनी हैः हम भी इस देश के नागरिक है, जिसे जिंदा या मुरदा लाने के लिये सरकार ने पचास करोड़ रूपये का इनाम घोषित किया है। खैर वह भाग्य शाली होगा जिसे यह पुरस्कार मिलेगा। हमारी तरफ से भी उसे धन्यवाद!

मेरा मतलब आप को जो तोहफा दिया जा रहा है कबूल करेगें हमने पूरी कोशिश की है कि आपकों ऐसे तोहफें देता रहूँ हमने कभी गिनती नहीं की परन्तु अनुमान के आधार पर अब गिनती चार अकों में पहुँच चुकी है।

कर्तव्य परायण देश भक्त कर्नल आनन्द की मृत्यु पर आप को गहरा दुःख हुआ होगा। सारा देश इंसाफ माँग रहा होगा, खैर हम ज्यादा न कह कर अपने वादे के अनुसार आनन्द के मृत्यु का कारण बता रहा हूँ।

आनन्द एक पवित्र आवरण को ओढ़ कर मनुष्यता का खून पीता रहा,

आजादी के सत्तर वर्षों के बाद भी चार पसेरी गेंहू के ब्याज में एक मजदूर मजदूरी करता रहा – रोटी की जगह उसे जहर दिया गया फिर उसकी मासूम बेटी से मुँह काला किया गया, वह कोई दूसरा नहीं वरन् कर्नल आनन्द था.......... ।

पिता के बदलें उस लड़की ने ब्याज उतराना चाह। एक दिन बर्तन धोते सयम उसनें सड़ी हुई रोटी का टुकड़ा मुख में रख लिया, तो लातों और घूसों से उसे मारा गया मारने वाली कर्नल की माँ थी।

ऐसे व्यक्तियों को दुनिया भले ही पूजें – परन्तु भानू नहीं, आनन्द ने बहुत गुनाह किये थे – मैंने तो सिर्फ एक उदाहरण दिया है।

मेरे कानून ने आनन्द को सजा दे दिया......क्या करू आई.जी. साहब मौत से बड़ी सजा कोई संसार में है ही नहीं.....काश मुझें ऐसे व्यक्तियों की आत्मायें मिल जाती.........तो....... ।

अच्छा अब पत्र बंद करता हूँ आप पूरी कोशिश करना की भानू का अंत हो सकें आपका फर्ज है न..... ।

मुख्य पृष्ट पर लिखा थ यह पत्र सिर्फ आई.जी. के लिये। अगर किसी ने गुस्ताखी की तो मौत ही नसीब होगी। अगले तोहफें का इंतजार करना।

भानू

पत्र पड़ कर आई.जी. साहब की आँखों में आँसू आ गयें, यह कोई नहीं बात नहीं थी – अक्सर उन्हें ऐसे पत्र मिला करते थें, जिन्हें पड़ कर उनकी आँखों में बरबस आँसू आ जाते थें...। न जाने क्यों आई.जी. के ह्रदय में भानू के प्रति आदर उमड़ आया था......उनका दिल कहता आखिर भानू ठीक ही तो कर रहा है। हमारे देश में जब तक ऐसे व्यक्ति जिन्दा रहेगें तब तक न्याय हो ही नहीं सकता। और न जाने क्या–क्या आई.जी. साहब सोच जाते!

एक सप्ताह बीत गया – भानू का कोई भी सुराग पुलिस को नहीं मिला – जैसे तूफान चले जाने के बाद सब शांत हो जाता है। तो उस तूफान की विनाश लीला को लोग भूल जाते हैं ठीक कुछ इसी तरह यह तूफान भी शांत हो गया।

आज के समाचारपत्रों में एक और खबर छपी थी...... भानू को गिरफ्तार कराने वाले को दस लाख रूपया, कर्नल अग्रवाल की तरफ से।

अग्रवाल साहब ने रणबीर को समझाते हुए कहा था वे किसी भी कीमत पर भानू को नही छोड़ेगें – थोड़ सब्र करो बेटे – समझा कर वे चले गयें थें! रणबीर की माँ गाँव मे रहती थी इस कारण रणबीर गाँव में रहनें लगा।

० ० ०

एक बात पूछू मनोरमा रणबीर ने एक दिन दिल की बात कह दी। मनोरमा ने हाँ में सर हिलाया.......।

क्या भानू ने तुम्हें बेदाग छोड़ दिया – मुझे विश्वास नहीं होता मनोरमा आखिर उसने तुम्हारा अपहरण किस मकसद से किया था।

विश्वास करो रणबीर मैं सच कह रही हूँ – आखिर तुम विश्वास क्यों नहीं करते – क्या तुम्हें डॉक्टर की बात पर भी शक है – वास्तव में भानू मेरा नहीं अंकल का अपहरण करना चाहता था, परन्तु जब वह सफल न हो पाया तो यह रास्ता निकाल लिया! इसके सिवा मैं और कुछ कह नहीं सकती तुम्हारे शक को निकालने के लिये.......।

''इसका मतलब भानू बड़ा अजीब है – रणबीर ने कहा''।

''वह अजीब नहीं बागी होकर भी चरित्रहीन नहीं।

मैं उसके पास रही रणबीर, उस दिन भी जब वह मेरे घर आया था तो कुछ भी कर सकता था, परन्तु वह इसलिये मुझे छोड़ दिया कि मेरे शरीर पर नाम मात्र के वस्त्र थे। इसलिये उसने मुँह फेर लिया था – कहा था जिस नारी ने मुझे पैदा किया उसे इस भेष में नहीं देख सकता। और मैं कपड़ा लेने के बहाने बाहर आ गयी – फिर किवाड़ बंद कर के डैडी को बुला लिया था.......।

यह तुमने मुझे आज तक क्यों नहीं बताया – रणबीर बोला – शायद इसकी जरूरत ही नहीं पड़ी मनोरमा ने कहा।

० ० ०

इंस्पेक्टर देवेश ने आप को जिंदा या मुर्दा कानून के हवाले करनें की बीड़ा उठाया है यह आज की ताजी खबर है। मनोरमा को लेकर रणबीर गाँव जा चुका है जिससे आप अवगत ही हैं।

ठीक है, अब तुम जा सकतें हो, कोई विशेष सूचना हो तो मुझ तक तरन्तु

पहुँचना चाहिए समझें।

आप बेफिकर्र रहें उस व्यक्ति ने कहा और चला गया थोड़े ही दिनों में मुझे पकड़ें के लिये जाने कितने बीडे उठाये गये आखिर मैं क्या हूँ भानू अपने ही दिल से पूछ बैठा परन्तु वह भी कोई उत्तर नहीं दे पाया, सहसा उसे सुधा की याद आ गयी और भानू का मस्तिष्क सांय सांय करने लगा प्रधान की स्मृति से भानू का चेहरा अरुण हो गया, फिर न जाने क्या सोचकर वह गुड़िया के पास पहुँचा।

भइया आप – युवती खड़ी हो गयी । बैठो न.......अखिर बात क्या है आप पेरशान लग रहे है आखिर क्यों?

तू सच कह रही है बहन आज मैं बहुत परेशान हूँ आनन्द का खून हो गया, लेकिन प्रधान अभी जिंदा है वही प्रधान जो कभी मेरा मित्र था परन्तु इतना गिर गया गुड़िया जिसे कहने में शर्म आती है, उसे मैं जिंदा नहीं रहने दूंगा बहन, तुम्हारी कसम आज मैं जाऊगा.... । मुझें अनुमति दो मेरी बहन..... ।

युवती ने चेहरा उठाया विशाल आँखे नम थी कुछ कहनें का उसने प्रयास किया परन्तु ओंठ फड़फड़ा कर रह गयें..... ।

गुड़िया कहों न....आखिर तुम इतनी कमजोर कैसे हो गयी, खुद सोचों इस ज्वालमुखी को मैं कब तक सीने में डबाये रखूगा मेरी बहन अब मुझे जाने कि आज्ञा दे दों।

मैं तुम्हें रोक नहीं सकती भइया क्योंकि प्रतिशोध क्या है मैं अच्छी तरह जानती हूँ – परन्तु फिर भी मुझें विश्वास है कि आप मेरा दिल नहीं तोड़ेगें यह आग जो लगी है थोड़ा कम हो जाने दों.... ।

जिस दिन तुम दुनिया छोड़ दोगें वह दिन भी, मेरे लिये आखिरी दिन होगा – अपने लिये न सही कम से कम मेरे लिये थोड़ा शान्त हो जाओ भानू.......! फिर युवती अपने उद्‌वेग को रोक न सकी बरबस आँखों से सावन भादों बरसने लगा..... ।

मत रो मेरी बहन हम तेरी आज्ञा के बिना कोई कदम नहीं उठायेंगे।

भइया.....युवती ने अपना सिर भानू के वक्ष से टिका दिया, एक बात सुन बहन आज फिर मुझे पकड़नें के लिये एक देवेश नाम के इंस्पेक्अर ने बीड़ा उठया है तू ही बता गुड़िया क्या मैं गलत कर रहा हूँ।

नहीं गुड़िया का स्वर तेज था....इस दुनिया में कानून भी है यह बात मैं नहीं मानती भइया...... अमीरों ने अपने ऐशों आराम को बरकार रखने का नाम दे दिया है कानून, कानून एक धोखा है फरेब है उस आदमी के लिये तो यहाँ गरीब है, सज्जन है।

हमारे देश में रोज सैकड़ों खून होते हैं, खूनी ऐशों आराम की जिन्दगी जीता रहता है जब की कानून की वेदी पर निर्दोषों की बलि हो जाती है – कानूनी दाँव पेंच सिर्फ पैसे पर केन्द्रित है भइया.....नफरत है मुझें इस कानून से.....।

हमारे देश में एक सौ पच्चीस करोड़ जनता है परन्तु कानून अगर इंसाफ का नाम है तो उन लोगों को क्यों रोटी नहीं दे पा रहा है जो आये दिन भूख से काल के पेट में चले जाते हैं। वर्षा गर्मी, सर्दी और दवाओं के आभाव से हमारे देश में अस्सी प्रतिशत लोंग बिना समय के मर जाते हैं, और यह कानून आत्महत्या करने का प्रयास करने वाले को भी दण्ड देता है। युवती खिलखिला कर हँस पड़ी।

वाह तुमने तो भाषण ही दे दिया या यूँ कहूँ वर्तमान कानून का चित्र खीच दिया सचमुच बहन तुम्हारी यह दूरदर्शीता प्रसंसनीय है।

बस रहने दो भइया, मैं तो सिर्फ वह कह गयी जिसे देखा है तुम जो कर रहे हो भले ही कानून की दृष्टि में अपराध है परन्तु मानव धर्म के अनुसार पुण्य है, क्योंकि आप मात्र निशाचरों का वध कर रहे हैं।

''निशाचर का मतलब जानती हो, भानू मस्कुरा पड़ा।

''रात को चलने वाला, यह तो शब्द का अर्थ है परन्तु भाव यह है, रात का मतलब अंधेरा, अंधेरा का अर्थ अधर्म और अधर्म का अर्थ मानवता का खून पीना, शायद अब आप निशाचर का मतलब समझ चूके होगें.....।

''बहुत अच्छी तरह गुड़िया.....भानू सिर्फ इतना कह पाया.........।

जब आप इतना सब समझतें है तो अपने को इस प्रकार क्यों हीन समझने लगते हो भइया......।

ऐसी बात नहीं है गुड़िया भानू ने उसका मुख्य हथेली में ले लिया बस यू ही पूछ लिया था।

o o o

क्या बात है तुम बहुत खुश नजर आ रहे हो भानू बोला देवेश मेरे कब्जें में है ठाकुर – वही इंस्पेक्टर जिसने आपकों कानून के हवाले करने का बीड़ा उठाया था।

मुझे तुम लोगों पर गर्व है भानू मुस्कुरा पड़ा, उसे मेरे पास ले आओं।

थोड़ी देर के बाद देवेश भानू के सामने था "तुम्हारा नाम देवेश है?भानू बोला...... ।

"जानबूझ कर अनजान मत बनो भानू, अगर ये कमीने कुत्ते न होते तो..... कहते–कहते देवेश का शरीर काँपने लगा।

शाबास मालुम पड़ता है माँ का दूध पिया है, वैसे तो तुम लोंग बच्चों को पाउडर या गाय–भैंस का दूध पिलाते हों, इसलिये कि बीबी के स्तन ढल न जायें, जवानी का मजा किरकिरा न हो जाये – भानु मुस्करा पड़ा।

भानू – देवेश चीख पड़ा...... ।

चीखने से कोई फाइदा नहीं देवेश भानू तुम्हारी इच्छा जरुर पूरी करेगा, तुम लोग बाहर जाओं....... ।

आदेश सुनकर वे सभी बाहर निकल गयें......अब मैं अकेला हूँ मिस्टर देवेश तुम अपनी हर तमन्ना पूरी कर सकते हो, कसम गुड़िया की यहाँ तुम्हारे साथ अनीति नहीं होगी।

तुम्हारी नीति ही क्या है भानू – देवेश चीख पड़ा बंदूक के बल पर किसी की जान लेना बहादुरी नहीं है अगर तुम में इतनी गैरत है तो बंदूक फैक दो.....मैं ललकार रहा हूँ माँ कसम अगर चीर फाड़ न दूं तो देवेश मेरा नाम नहीं।

जुबान को लगाम दो देवेश भानू शान्त स्वर में बोला – यह पुलिस स्टेशन अथवा तुम्हारा घर नहीं है तुम जिंदा हो बस यही सोच लो हम क्या हैं।

"बंदूक के बल पर न ही – देवेश के स्वर व्यंग का पुट था।

"इंस्पेक्टर अपनी औकात मत भूलों – मैं कहना नहीं चाहता तुम जैसे कितने वर्दी धारियों को बेश्याओ की कोठी पर मैने देखा है साबूत के लिये ऐसे व्यक्तियों की लाशे आई.जी. साहब के पास भेजी हैं देश सेवा का बिल्ला लगाकर तुम लोंग गरीबों का पेट काटते हो "एक नजर देखों अपने घर को....सरकारी

सामान आखिर, अपना ही है न.....भानू के स्वर में व्यंग्य का जहर था........।

तुम जिंदा हो तो सिर्फ इसलिये कि तुम वफादारी दिखा रहे हो.... लगता है सच्चाई की बिमारी तुम को भी लग गयी....भानू मुस्करा पड़ा.....।

''बातों में मत टालों भानू – तुमने कुछ वादा किया है।

''मैं तैयार हूँ – वार कर।

''बस ऐसे ही, देवेश चौंका था?

''मैने कह दिया वार कर – मैं पहले कभी वार नहीं करता।

''परन्तु क्यों देवेश गहरे सोच मैं डूब गया।

''क्यों का जबाब नहीं देवेश – जब सारी दुनिया हमें बागी कहती है तो हम और हो ही क्या सकते हैं तू बहादुर है चल शुरू हो जा........।

किसी चीते के समान देवेश ने भानू पर छलांग लगा दी – परन्तु उसके आश्चर्य की सीमा न रही पुलिस का सारा प्रशिक्षण फेल – भानू किसी लोहे के प्रतिमा के समान स्थिर था, जब की देवेश की सांसे तीव्र गति से चल रही थी मानों मीलों की दौड़ कर ली हो।

दूबरा वह भानू पर झपटा परन्तु भानू ने सिर्फ उसका हाथ पकड़ कर झिटक दिया, परन्तु उसे ऐसा लगा मानों बाजू बदन से अलग हो गया – मारे दर्द के वह बिलबिला पड़ा.....अब उसमें इतना सामर्थ नहीं कि पुनः भानू से लोहा लें।

बस इसी बल पर तुम्हें इतना गर्व था भानू का चीर फाड़ दो माँ की कसम इतनी सस्ती नहीं होती देवेश।

देवेश बड़ी मुश्किल से उठा – भानू से नजर मिलते ही उसके बदन में सिहरन दौड़ गयी आखिर भानू किस मिट्टी से बना है वह अपने आप से पूछ बैठा – दुर्योधन का वज्र शरीर माँ के आशीर्वाद से हो गया था ऐसा उसने महाभारत में पढ़ा था। आल्हा, में भी मलखान का शरीर पत्थर के समान था। परन्तु आज भानू को देखकर ऐसा लगा कि वे बात ठीक ही थी, भानू भी साधारण मनुष्य जैसा नहीं, उसका बदन निश्चित ही वज्र है, जिस पर वर्षा, गर्मी सर्दी का कुछ भी असर नहीं।

क्या सोच रहे हो देवेश – भानू ने मौन तौड़ा – मुझें हर्ष हुआ कि तुम में अभी ईमानदारी शेष है वरना आज कल तो ईमान बेजकर ही लोग अफसर बनते हैं

मेरा मतलब सुविधा शुल्क देकर....।

''सुविधा शुल्क देवेश के मुख से निकल गया।

हाँ सुविधा शुल्क, मेरा मतलब घूस रिश्वत, भानू मंद स्मित में बोला – आज कल अधिकारियों का चयन पाप की डिग्री पर होता है देवेश, ज्ञान विज्ञान इतिहास ये बाते मात्र दिखलावा है। इस देश में अफसर का बेटा अफसर होता है, गरीब किसान का बेटा भीख मांगना शुरू कर देता है, क्योंकि वह अग्रेजी माध्यम स्कलो में पड़ नहीं पाता, हमारे देश की शिक्षा व्यवस्था हाथी के दाँत के समान है, खाने के और दिखाने के और हैं। अगर कुछ पढ़ भी लिया तो सुविधा शुल्क नहीं दे पाता है। फिर वह वहाँ पहुंच जाता है जिसे हम ईश्वर का वरदान कहतें हैं।

हाँ देवेश गरीबी भगवान का वरदान है ऐसा हमारे शास्त्र कहते है ऐसा लगता है उस युग में भी इंसाफ नहीं था, तभी तो अमीरों ने गरीबों को संतावना दी है ताकि वे बड़े लोग आराम से ऐश कर सकें, और गरीब बेचारा भगवान–भगवान चिलता रहें।

यह राजनीति भी बड़ी अजीब है देवेश – जनता का खून पीने के लिये नये–नये तरीके निकाला करती है कभी धर्म कभी भाषा कभी प्रान्त कभी पार्टी, आदि–आदि।

इन बातों को छोड़ो देवेश उलझोगें तो लोग पागल कहेगें मुझे खुशी हुई कि इस युग में भी तुम ईमान की सोचते हो, परन्तु तुम्हारा यह आरोप गलत है कि मैं बंदूक के बल पर गर्व करता हूँ अगर मैं गलत बोल गया तो तुम मुझे रोक सकते हों.. .. मैं बागी जरूर हूँ देवेश परन्तु मैंने आज तक मानवता का खून नहीं पीया है, मैने वही किया है जिसे मेरी आत्मा अच्छा मानती है भले ही दुनिया की दृष्टि में अपराध हो।

देवेश अपलक भानू को देखता रहा, बरबस उसकी आँखे भर आयी – फिर भर भराये स्वर में बोला – मुझे माँफ कर दो भानू, मुझसे भूल हो गयी!

भूल शब्द का प्रयोग कर के अपने फर्ज को मत भूलों देवेश – तुमने जो किया वह तुम्हारा फर्ज था – माफी का प्रश्न ही नहीं उठता तुम अकारण परेशान हों.....।

फर्ज कैसा फर्ज – देवेश का चेहरा विकृति हो गया मैं उसे फर्ज नहीं

मानता जिससे आदर्श एव मानवता का गला कट जाय – शहजादों के घरों में ही नहीं निर्जन जंगलों में भी गुलाब खिल जाते हैं, परन्तु लोंग उन्हें देखते नहीं इसलिये अनविज्ञ रहते हैं, तुम्हें मैं पहचान चुका भानू, तुम बागी नहीं दया के मूर्ति हो करुणा के अवतार हो, लोग कुछ भी कहे परन्तु तुम अपने आपा में पूर्ण रूप से आनन्दित रहोगें – इससे बड़कर सुख हो ही कहाँ सकता है।

बहुत दूर तक सोचते हो देवेश भानू मुस्करा पड़ा वक्त ने मेरे साथ मजाक किया देवेश, यह समझ लो यही मेरा नसीब था।

''एक बात पूछ भानू – देवेश बोला......।

''एक क्या, सौ बात पूछ सकते हो......।

''आपने कर्नल आनन्द का खून क्यों किया, सच बोलना भानू तुमें परमात्मा की सौगन्ध है।

इस सवाल का जवाब मैं आई.जी. साहब को दे चुका हूँ तुम्हारे लिये इतना ही काफी है कि वह चरित्रहीन था – विश्वास करो देवेश वह इतना गिरा हुआ था कि दूसरे की बेटी को बेटी नहीं समझता था, उसके लिये नारी मनोरंजन की वस्तु थी उसने मानव धर्म को गहरी क्षति पहुँचायी थी।

आप मुझे टालना चाहते है, या खास कारण बातना नहीं चाहते देवेश ने कहा।

सुनों भानू ने सारी कहानी कह दी – हाँ उसने गुड़िया का परिचय नहीं दिया।

''क्या तुम उस युवती को जानते हो?

''बहुत अच्छी तरह, पर मरने के बाद जानने से क्या होता है, फिर खुले आम हम किसी की मदद भी तो नहीं कर सकतें।

''मेरा आप से एक अनुरोध है क्या आप स्वीकार करेगें।

''तुम्हारा कोई भी अनुरोध हम मान सकते हैं परन्तु यदि तुम मेरी मदद करना चाहों तो अस्मभव है ज्यादा देर तुम यहाँ नहीं रह सकतें इसलिये अब जा सकतें हो!

देवेश की आँखे नम हो गयी – बोला एक बात बता दो भानू क्या तुम्हारे

पास कोई अलोकिक शक्ति है।

नहीं में एक साधारण मानव हूँ – संक्षेप में हम इतना अवश्य कह सकतें हैं ंकि आत्मसंयम ही हमारी शक्ति है हम भोग पर नहीं त्याग पर विश्वास करतें हैं। अब तुम जाओं देवेश....हमारा आदेश है।

न जाने क्यों देवेश का मस्तिष्क झुक गया, भावावेश में उसके हाथ जुड़ गये परन्तु भानू उससे बेखबर आगे बड़ गया फिर भानू के आदेश पर देवेश को जहाँ से लाया गया था वहाँ छोड़ दिया गया।

o o o

दस

माँ मुझे माफ कर दो, प्रधान की आँखों से झरझर आँसू गिर रहे थे माता जाह्नवी आश्चर्य चकित प्रधान को देख रही थी, उन्हें विश्वास नहीं हो रहा था कि यह वही प्रधान उनका अपना बेटा है। बचपन से आज तक न जाने उसने कितने रूप बदलें थें सोचते–सोचते जाह्नवी की आँखे भर आयी।

माँ मैं भटक गया था – मैने तुम्हें दुःख दिये – भगवान भी मुझे माफ नहीं करेगा, प्रधान का स्वर भर्रा उठा..... ।

''बेटा तू सचमुच माफी माँग रहा हैं, जाह्नवी का स्वर आश्चर्य से सना था।

प्रधान लगभग रो पड़ा मैं आपके कहे अनुसार नहीं चल सका जननी, क्योंकि मेरे अन्दर का मानव मर गया था, अब मुझे माफ कर दो माँ आप जहाँ चाहेगी वहीं मेरी शादी होगी – आज के बाद कभी आपको दुःख नहीं दूंगा माँ।

प्रधान मेरे लाल कहते हुए जाह्नवी ने प्रधान को सीने से लगा लिया, उन्हें ऐसा एहसास हुआ मानों प्रधान एक दम छोटा हो गया हों।

वह प्रधान जिसकी करूणा को देखकर कई बार जाह्नवी का हृदय गर्व से फूल गया था, परन्तु एक दिन यह गर्व चकना चूर हो गया, जब प्रधान ने कहा – शादी कँरूगा तो सिर्फ मनोरमा से..... ।

ठाकुर साहब का भी दिल टूट गया – परन्तु वे कुछ कह न पाये परन्तु आज प्रधान के परिवर्तन से माँ को चकित हो जाना स्वाभाविक था।

बेटा क्या तुम मुझे बता सकतें हो – तुम में यह परिवर्तन कैसे हो गया, क्या मनोरमा ने किसी दूसरे से शादी कर ली।

''आप ठीक कहती है माँ प्रधान का स्वर काँप गया।

''हराने के बाद सभी हरिनाम लेते है तुमने कोई नयी बात नहीं कहीं चलो अच्छा ही हुआ समय रहते तुम्हारी आँखे खुल गयी। कहते–कहते जाह्नवी का गला भर आया।

''माँ क्या मुझे माफ नहीं करोगी – प्रधान आर्त स्वर में बोला।''

''मेरी तरफ से कोई शिकायत नहीं बेटे – माँ का हृदय इतना कठोर नहीं होता कि वह प्रतिशोध भी कर सकें, मेरी तरफ से तुम्हे सदा आशीर्वाद रहा, रहेगा, लेकिन मेरी एक बात ध्यान से सुनो यह मैं नहीं वरन् माँ की ममता कह रही है वरना तुम स्वयं अपने दिल से पूछ कर देखों क्या तुम क्षमा के हकदार हो।

बचपन में तुमें देखकर मुझे ऐसा लगा था कि आगे चलकर तुम महात्मा बन जाओगे.....पर तुम्हे एकाएक इतना बदल गये जो कल्पना से परे है.....मैं आज भी न समझ सकी.....तुम में यह परिवर्तन क्यों हुआ।

खैर जो हो गया उसे भूल जाओ – मैं तुम से यही उम्मीद करूंगी कि यह शरीर अब अपने हाथों से मिट्‌टी में मिला देना कहते–कहते जाह्‌ववी का गला भर आया । प्रधान अपने आपको धिक्करता रहा मन में।

ठाकुर साहब को जब इस बात का पता चला तो उनकी आँखे भर आयी, जाह्‌ववी से उन्होंने सिर्फ इतना ही कहा था, मेरी इज्जत रह गयी। अगर प्रधान यह शादी न करता तो बहुत बड़ा नुकसान हो जाता माँ बाप की वह अकेली औलाद है, कहते कहते ठाकुर साहब का चेहरा खुशी से चमक उठा।

जाह्‌ववी को ठाकुर साहब की बाते अच्छी तो नहीं लगी.....परन्तु पति से कुछ कह न सकी, बस दिल मसोल कर रह गयी।

○ ○ ○

कर्नल सी.एच.अग्रवाल विशेष फाइल पर हस्ताक्षर कर रहे थे तभी टेलीफोन की घंटी बज उठी – माउन्थपीस उठाया कि दूसरे तरफ से आवाज आयी – मैं अरोड़ा बोल रहा हूँ महात्मा गांधी पार्क आज शाम को आ जाना – मिसेज को भी साथ लाना कर्नल अग्रवाल कुछ कहते इससे पहले सम्बंध कट गया।

शाम हो गयी न चाह कर भी अग्रवाल साहब गांधी पार्क की तरफ चले आखिर आदेश मानना अनुशासन है....गांधी पार्क में अग्रवाल साहब को अरोड़ा साहब दिखायी नहीं पड़ें आते ही होगे यह सोचकर अग्रवाल साहब एक बेंच पर बैठ गये। बाहर कार के पास चालक खड़ा था। अग्रवाल अरोड़ा साहब के इंतजार में पलक बिछाये बैठे थें। तभी मुस्कुराती हुई एक युवती अग्रवाल के सामने बैठ गयी..।

सहसा युवती की नजर एक व्यक्ति पर पड़ी तो चौंक गयी बरबस उसके

मुख से निकल गया देवेश! अपना नाम सुनकर वह युवक चौंका था।

क्या आप ने मुझसे कुछ कहा।

कुछ नहीं युवती अपने को संयत करती हुई बोली – टहलता हुआ देवेश बाहर निकल गया।

आपकों किसी का इंतजार है – आखिर अग्रवाल साहब बोल ही पड़े।

''युवती मुस्करायी – फिर बोली है तो जरूर पर....।

''पर क्या – अग्रवाल साहब ने बात को बढ़ाना चाहा.....।

''दरअसल मुझें एक पार्टी में जाना था पर कोई साधन नहीं.....।

चिंता की कोई बात नही मैं आपको छोड़ दूंगा पर थोड़ा इंतजार करना पड़ेगा अच्छा रुकों मैं फोन करता हूँ आखिर अभी तक अरोड़ा साहब क्यों नही आयें।

मैं कर्नल अग्रवाल बोल रहा हूँ सर आप ने मुझे गांधी पार्क में बुलाया था – पर आप क्यों नहीं आयें। फोन पर थोड़ी देर संनाटा छाया रहा – फिर अरोड़ा साहब बोले मैने तो फोन किया ही नहीं....।

आपने फोन नहीं किया था अग्रवाल साहब चौकें फिर वह कोन था जिसकी आवाज आप जैसी थीं।

इसका मतलब कोई चक्कर है आप फौरन मेरे पास आ जाओ। टैक्यू सर... ...कहते हुए अग्रवाल साहब ने फोन रखा।

क्या बात है आप कुछ परेशान से लग रहे हैं मिसेज अग्रवाल बोली.....!

अग्रवाल ने अपनी कहानी मिसेज को सुना दी फिर युवती के ओर मुखबित होकर बोले चलों हम तुम्हें भी छोड़ देते हैं मुस्काती हुई युवती बैठ गयी!

कहाँ चलना है अग्रवाल बोले! युवती ने स्थान का नाम लिया जो शहर से बाहर था।

अग्रवाल के आदेश पर कार चल पड़ी – चन्द्र छण चुप्पी – और इस चुप्पी को अग्रवाल ने ही तोड़ा कहाँ रहती हो?

''युवती हंस पड़ी उसकी खनखनाती हंसी अग्रवाल के बदन में सिंहरन

मचा दिया।

''तुम कुछ बोली नहीं, मैने कुछ पूछा है?

''इसी शहर में रहती हूँ.....।

''इस बार युवती खिलखिला कर हंस पड़ी, अग्रवाल साहब उसके मोहक रूप में खो गये, ड्रायवर भी तिरछी नजरों से उस रूपराशि को देख लेता था। उसके रूप को देख कर मिसेज अग्रवाल को इर्षा होने लगी थी। मैने कुछ पूछा है आपसे अग्रवाल बोले परन्तु उत्तर की जगह एकाएक युवती ने रिवालवर निकाल कर ड्राइवर के सर से लगा दिया – जिन्दगी चाहते हो तो कार मेरे इशारे पर चलती रहेगी, तुम तीनों में से किसी ने चालाकी की तो उसकी मृत्यु निश्चित है, युवती का चेहरा क्रोध में तमतमा उठा था।

ड्रायवर सहम कर युवती के इशारे पर चल रहा था – अग्रवाल साहब पर भय की लहर हाबी थी परन्तु मिसेज अग्रवाल का दिमाग काम कर रहा था मुबाइल के माध्यम से उन्होंने यह खबर पुलिस को देना चाहा।

मिसेज अग्रवाल के मुख से हैलो ही निकला कि युवती के हाथ में रिवाल्वर गर्ज उठा गोली मिसेज अग्रवाल के बाये बाजू में घंस गयी खून के फुहारे से अग्रवाल के भीग रहे थें।

चालाकी चूहा बिल्ली से नहीं कर सकता कर्नल, तुम दोनों में किसी ने चालाकी कि तो गोली सीधे सीने में उतार दूंगी। पत्नी को तड़फते देखकर अग्रवाल का हृदय कराह पड़ा आखिर वे बड़े करूण स्वर में बोले मुझे किस गुनाह की सजा दे रही हो।

युवती मौन – अग्रवाल साहब ने तड़फती हुई पत्नी को बाहों में लेना चाहा. .....खबरदार अगर तुमने उसे छुआ तो....युवती चीख पड़ी।

अग्रवाल साहब के हाथ काँप कर रह गयें ड्रायवर गाड़ी रोक दो – गाड़ी रूकी ड्रायवर कुछ समझता की युवती ने रिवालवर का मूठ उसके सर पर मार दिया चीख कर वह शान्त हो गया।

नीचे उतरों कर्नल युवती गुर्रायी अग्रवाल किसी यंत्र की भाँति हरकत करने लगें मिसेज अग्रवाल अभी भी तड़फ रही थी!

मेरे बारें में जानने को तुम बेकरार थे देखो यही हमारा भेष है युवती मुस्करा पड़ी हाँ अपने गुनाह को सुनना नहीं चाहोगें मरने से पहले सुन लो दस लाख रूपये कीमत लगायी थी भानू के जिस्म की, सोचा होगा, सारे देश में तुम्हारा नाम फैल जायेगा, लोग सोचगें कर्नल साहब कितने उदार है.......परन्तु यह भूल गये कि इसका परिणाम मौत भी हो सकता है...... ।

अगर तुम जिंदा रहना चाहते हो......तो अपने हाथों से मेमसाहब का गला दबा दो।

नहीं अग्रवाल चीख पड़ा।

पिट.......युवती के हाथ में रिवाल्वर गर्ज उठा अग्रवाल साहब लड़खड़ा कर गिर गयें।

मुझ पर रहम करो अग्रवाल साहब रो पड़ें.......युवती के अट्टहास में उनके स्वर दब गयें।

दुनिया ने हम पर रहम नहीं किया कर्नल फिर हम इस रहम को तुम्हे कैसे दे दें : भानू को पकड़ने के लिये सरकार ने पचास करोड़ रूपये घोषित किये हैं अगर सरकार मुझे मिल जाती तो उसका भी यही हश्र होता – जो तुम्हारा हो रहा है परन्तु हम मजबूर हैं इसलिये कि यह सरकार साली मिलती नहीं।

तुमने अपना गुनाह पूछा परन्तु मैं इतना कहूँगी कि तुम खुद सोचो क्या तुम्हें जीने का हक है जो तुमने किया है उसे यदि हम दुनिया के सामने कहेगें तो लोगों की दृष्टि में देश सेवा जैसी भावना मर जायेगी कर्नल। लोग किसी भी देश सेवी पर विश्वास नहीं करेगें, फिर एक समस्या पैदा हो जायेगी हमारे देश में।

इसलिये मैं कुछ नहीं कहूँगी हाँ तुम्हारी अन्तिम इच्छा।

मुझे छोड़ दो – अग्रवाल ने हाथ जोड़ लिये। युवती मुस्करायी – तुमने जो माँगा उसे हम नहीं दे सकते कर्नल हाँ तुम्हारे सामने तुम्हारी बाबी को सुहागिन के रूप में अंतिम विदाई दे रही हूँ वैसे तुम लोगों की पत्नीयाँ सेन्दूर लगाती नहीं, लगाये भी तो कैसे......यह अंधविश्वास जो ठहरा। तुम लोग तो हमारी संस्कृति पर धब्बा हो प्रगति के नाम पर जानवर बन गये हो.... ।

मैं भारतीय हूँ इसलिये तुम से पहले मेमसाहब को कहते हुए युवती ने

गोली चला दी – दोनों उरोजो के बीच में गोली समा गयाी.....तड़फ कर मेमसाहब शान्त हो गयी........।

अग्रवाल साहब का दाहिना पैर जख्मी हो गया था......युवती की गोली से, मारे पीड़ा के आत्मा तड़फ रही थी – परन्तु पत्नी की यह हालत देखकर वे अपनी पीड़ा भूल गये, बढ़े और पत्नी की लाश से लिपट गये।

लाश के साथ रोमांस मत करो कर्नल युवती का चेहरा बिगड़ गया।

कर्नल ने युवती की तरफ देखा कितनी याचना थी उनकी आँखों में परन्तु उस पागल लड़की ने शेष गोलिया कर्नल के जिस्मउतार दी।

तभी उसकी नजर ड्रायवर पर पड़ी जो भागने की कोशिश कर रहा था।

ठहरों अगर भागने की कोशिश की तो तुम्हारी भी लाश यहीं बिछा दूगीं। सहम कर ड्रायवर खड़ा हो गया – तुमनें कुछ नहीं देखा समझें युवती कह रही थी – अगर पुलिस तुम से पूछताछ करती है तो कह देना अग्रवाल साहब खुद ड्रायवरी कर रहे थे, गांधी पार्क से मुझे वापस कर दिया था। अगर तुमने यह किसी को बताया तो समझ लेना तुम्हारा भी आखिर दिन आ गया है। अब तुम भाग जाओं युवती का स्वर तेज था।

ड्रायवर इतनी तेजी से भागा मानों हवा में मिल जाना चाहता हो – युवती के अधरों पर मंद मुस्कान थिरक गयी। बोझिल आँखों में दोनों शवों को देखा फिर अंधकार में मिल गयी!

o o o

यह तुमने क्या किया गुड़िया – भानू गुड़िया को झिंझोड़ रहा था!

तुम पागल तो नहीं हो गये भानू – किसी को मेरे भाई के शव की तलाश हो–उसकी कीमत दस लाख लगाया हो और हम जिन्दा रहें धिक्कार है हमकों....।

यह तुम्हारी बुद्धि हीनता है गुड़िया, अग्रवाल का खून तुम्हे नहीं करना चाहिए था।

खून तो हो चुका भइया – अब आप के कहने से फाइदा नहीं – मैं उसकी चुनौती कैसे बरदास करती, अगर यह बुरा हुआ तो अब भविष्य में ऐसी गलती नहीं करुँगी।

''भानू मुस्करा कर रह गया।

''भइया आप चुप क्यों हैं?

''मेरे लिये तुमने जो यह हिंसा का खेल खेला इसके लिये हम तुम्हारे चिर अभारी है गुड़िया।

कैसी बातें करते हो भइया – वह तो मेरा कर्तव्य था। आपने मेरे लिये जान की बाजी लगा दी, यदि मैंने इतना कर ही दिया तो कौन सा एहसान कर दिया।

गुड़िया मेरी बहन – भानू की आँखे नम हो गयी, जितनी आसानी से तुमने अग्रवाल का खून कर दिया, मैं भी नहीं कर सकता था।

यह एक दम झूठ है भइया – अग्रवाल का खून मैंने कहाँ किया उसका खून तो उसकी वासना ने कर दिया, मैं तो कारण मात्र हूँ, जो मनुष्य हर नारी में सिर्फ एक ही रिस्ता देखते हैं, वे कब मर जाते है कहा नहीं जा सकता, यह तो दूसरी बात है कि लाश चलती रहती है।

गुड़िया – भानू का चेहरा क्रोध से तमतमा उठा, उसकी इतनी हिम्मत मेरी गुड़िया की तरफ आँख उठाकर देखे।

ऐसी बात नहीं भइया मैने खुद यह रूप अपनाया था, और मेरी चाहत पूरी हो गयी, अगर वह विलासी न होता तो इतनी आसानी से नहीं मार सकती थी।

''इसका मतलब विलासता ही मृत्यु है – भानू बोला।

''क्या अब भी आप को संदेह है।

''मुझे दोषी तो नहीं कहोगे भइया...... ।

''गुड़िया भानू का स्वर अथाह प्रेम में डूब गया, क्या कहती हो बहन जिन्दगी का मोह तो खत्म हो चुका था, परन्तु तुमने उसे फिर सजीव कर दिया।

गुड़िया कुछ कह न सकी – बस भानू के सीने से सिर टिका कर सिसक पड़ी। भानू मानस की इन पक्तियों को गुनगुना उठा –

अनुज बधू भगिनी सुत नारी, सुन सठ कन्या सम ए चारी।
इन्हहि क्रुदृष्टि बिलोकइ जोई, ताहि बधें कछु पाप न होई।।

○ ○ ○

कर्नल अग्रवाल का शव पुलिस को मिल गया, शव के पास कोई पत्र नहीं, इसका मतलब अग्रवाल का खून भानू ने नहीं किया। देवेश ने मन ही मन सोचा था, पुलिस कार्यवाही के उपरान्त लाश को पोस्टमार्डम के लिये भेज दिया गया।

कर्नल एवं उनकी पत्नी के मृत्यु के बाद भानू का खौफ और भी फैल गया।

सेना अधिकारियों ने पुलिस की असफलता पर कीचड़ उछाला था। सेना के आला अधिकारीयों ने रणवीर एवं मनोरमा को अश्वासन दिया कि वे शीघ्र भानू को गिरफ्तार करायेगे।

जनरल ने आई.जी. को पत्र लिखा जिसमें कर्नल आनन्द एवं अग्रवाल की हत्या की जांच शीघ्र कराने की माँग की थी। भानू को गिरफ्तार करने की उन्होंने सिफारिश की थी, उनके अनुसार जब तक भानू पकड़ा नहीं जाता, तब तक शान्ति नहीं हो सकती इस दशें में।

जनरल महोदय ने इन तीनों हत्याओं को एक ही कड़ी के अंतरगत कहा था।

कार ड्रायवर जो कर्नल अग्रवाल के साथ था उसने पुलिस को निम्न बयान दिया था – अग्रवाल साहब ने मुझे गांधी पार्क से वापस कर दिया था, और खुद ड्रायवरी कर रहे थे। इसके सिवा में कुछ नहीं जानता हूँ।

कई अफसर एवं देश के माने जाने हुऐ कई रईसों राजनेताओ की हत्या से सारे देश में हाहाकार मच गया।

गृह मंत्रालय ने विज्ञप्ति में भानू को शीघ्र गिरफ्तार करने के आदेश दिये थे। जिसे देश के सभी समाचार पत्रों ने नमक मिर्च लगाकर छापा था। मुख्य पृष्ट पर भानू की तस्बीर थी। जिसे जिंदा अथवा मुर्दा लाने के लिये सरकार ने पचास करोड़ रूपये ईनाम घोषित किये थे। यह समाचार जब भानू को मिला तो सिर्फ मुस्करा कर रह गया। परन्तु गुड़िया ने समाचार पत्र के सैकड़ों टुकड़े कर डाले।

यह क्या कर रही हो गुड़िया – एक खूनी को और मिल ही क्या सकता है.. ......ठीक ही तो लिखा है......आखिर मैं....।

भइया – गुड़िया रो पड़ी, उसकी बड़ी–बड़ी आखों में मोटी–मोटी बून्दे चमकने लगी।

पगली तू रोती है, मेरे लिये एक खूनी अपराधी के लिये....... ।

भइया – युवती का स्वर तेज था....अगर आप ने पुनः ऐसा कहा तो मैं स्वयं को गोली मार लूगीं.... ।

गुड़िया भानू ने उसके हाथ से रिवाल्वर छीन लिया तुम्हे देख कर ऐसा लगता है गुड़िया जैसे सारे पाप ताप से मुक्त हो गया हूँ। तुम्हारे इस अपनत्व को देख कर भानू का अपना सिधान्त टूट गया, दुनिया स्वार्थ का नाम है.....परन्तु तुमने विशुद्ध प्रेम की जो पराकाष्ठा की है उसकें लिये हम तुम्हें कुछ नहीं दे सकते बहिन, तेरी कसम गुड़िया यह तो मैने परिहास किया, मैं अपने को पापी नहीं मानता – मैने जो किया वह ठीक है...... । आ मेरे पास दूर क्यों खड़ी है अगर तू.....मुझसे नाराज हो गयी तो मैं जीवित कैसे रहूँगा मेरी बहन....... ।

भइया – गुड़िया भानू से लिपट गयी.....इस विशुद्ध प्रेम को देख कर लेखक की कल्पना भी क्षीण हो गयी।

○ ○ ○

सुजान के हाथों में समाचार पत्र था।

भानू का चित्र देखकर उसके हृदय में हलचल सी होने लगी – पूरी तहरीर पड़नें के बाद वह सोचने लगा।

भानू वही भानू जो कभी उसके साथ खेला करता था। वहीं भानू, जिसे उसने सदा गमगीन देखा था, वही भानू जो हँसना भी नहीं जानता था, उसके भाई ने ही उसे भूखों मारने की कोशिश की, परन्तु उस ने उफ नहीं की। कितना बद्नसीब था वह सोचते–सोचते सुजान की आँखों में आँसू उमड़ आये आज वहीं भानू जिसे दुनिया ने जीने नहीं दिया था कहाँ पहुँच गया है। आज उसके नाम से सरकार भी चिंतिंत है पचास करोड़ उसके जिस्म की कीमत है, सुजान अपने विचारों में मग्न था कि अलका आ गयी अरे भइया आप की आँखों में आँसू – पूछा था। सुजान ने बिना प्रतिबाद के वह अखबार अलका की तरफ बढ़ा दिया।

भानू – भइया अलका का स्वर......?

हाँ, दीदी यह भानू की ही तस्वीर है पचास करोड़ कीमत है मेरे यार की..... कहते – कहते सुजान का स्वर भारी हो गया....... ।

भइया – क्या कभी हम भानू से मिल पायेगें या यह सपना ही रह जायेगा, मुझे कभी–कभी वह दिन याद आता है कहते–कहते अलका सिसक पड़ी!

मत रोओ दीदी – परमात्मा को पूजने वाले उसे देखते कहाँ – विश्वास ही तो पूजा है – भानू को मैं कभी नहीं भूल सकता दीदी – दोष उसका इतना ही है कि वह सच्चाई का दिवाना था – किसी के बहते हुए आँसूओं को वह देख नहीं सकता था। बड़ा अजीब था, ऐसा मुझे लगा ही नहीं कि वह मानव है।

वह देवता था अलका बोली......।

नहीं – सुजान घायल स्वर में बोला – देवता भी तो स्वार्थी होते है – उनका भी मन डिग जाता है इन्द्र ने अहल्या पर ईमान खो दिया था। राम ने बालि को तरु की ओट से मारा था। वचन की लाज तो कृष्ण भी भूल गये थे, भले ही उनकी यह भक्त वात्सलता ही क्यों न हो। पर भीष्म को मारने के लिए चक्र उठाया था। ब्रह्मा स्वयं अपनी बेटी सरस्वती पर आसक्त हो गये थे, फिर हम भानू को देवता कैसे कह सकते हैं।

फिर उसके लिये क्या ठीक होगा भइया – क्या उसे महात्मा कहे अलका रुक गयी!

महात्मा भी तो स्वार्थ से परे नहीं होते – क्या दोष था शकुन्तला का यही न कि दुर्बासा को नमन नहीं किया, इसीलिये उसे शाप मिल गया। फिर महात्मा की महानता क्या जब उसे क्रोध आता हो। क्रोध पाप का मूल है, फिर भानू को हम महात्मा कैसे कह सकते हैं।

फिर उसे क्या कहेगें भइया, अलका बोली – सुजान गहरे सोच में डूब गया...! कुछ बोल न सका।

''क्या सोचने लगे भइया – अलका बोली।''

''सोच रहा हूँ दीदी – भानू न तो देवता है न ही मानव है तो फिर क्या है शायद उसका कोई दूसरा नाम हो।

भानू मानव होकर भी मानवीय भावना से ऊपर है अलका ने कहा।

तुम ने ठीक कहा दीदी – सचमुच वह विचित्र है। मुक्त पुरूष है।

क्या भानू भइया का भी अंत हो जायेगा – अलका का स्वर दर्द में डूब

गया।

अंत तो सबका होता है दीदी – भानु भी उदय होकर अस्त हो जाता है – परन्तु हमारा भानू कभी नहीं मरेगा करोड़ों आत्मायें उसे सदा अपने दिल में जिंदा रखेगी। जिसके लिये अलग उसनें अपना कानून बनाया है। मृत्यु तो उनकी होती है जिनमें पशुबृति होती है, जिनके जीवन का दायरा सिर्फ सोना, खाना, और मनोरंजन, धन संग्रह ही रह जाता है दूसरे शब्दों में जो स्व सूख डूब जाते हैं।

राम के चरित्र पर आज कितनी ही टीका टिप्पड़ी क्यों न लिखी जाय, परन्तु क्या रामचरित्र घूमिल हो जायेगा। एक नहीं अगर भारत में राम के विरोधी करोड़ों लोग पैदा हो जाय, फिर भी भारत की जनता के राम भगवान राम आदर्श के स्तभ एवं महामानव ही रहेगें।

ये समाचार पत्र उसे कभी समझ नहीं पायेगें और इनकी यह तहरीर देश के अरबों दिलों की भावना को नहीं बदल पायेगी।

आप ठीक कहते हैं भइया – भानू के न रहने पर भी उसकी कहानी अमर रहेगी। जब बहुत दिन हो जायेगें तो मातायें जब बच्चे जिद् करेगें तो राम शिवा गांधी की तरह भानू की भी कहानी सुनायेंगीं।

वाह दीदी – आप बहुत दूर तक सोच गयी सुजान के ओंठो पर एक मुस्कान उभर कर मिट गयी.....। सच कहता हू दीदी – दुनिया भानू को भूल भी जाये परन्तु मैं उसे नहीं भूल सकता।

भानू को पकड़नें के लिए सारे देश की पुलिस लगी है परन्तु मेरा दिल कहता है उसे कोई नहीं पकड़ पायेगा। उसका अंत खुद ही हो जायेगा जैसे सूर्य उदय होकर खुद अस्त हो जाता है।

अलका ने सुजान की बातें सुनी – फिर फफक – फफक कर रो पड़ी....! सुजान उसे समझानें लगा।

o o o

कल गुड़िया की शादी है हमें जाना है बहन–भानू का स्वर अथाह प्रेम से लरज रहा था।

मुझे तो डर सा लगता है भइया – जिस घर में तुम्हारे हाथ से आधी रोटी

छीन ली गयी। जहाँ पर आपकी जिन्दगी हर पल सिसकती रही.........वहाँ पर मत जाओ भानू.......।

तुम्हें गुड़िया से कितना प्रेम है इसका मुझे अच्छी तरह है ''उसी प्रेम के वशीभूत होकर आज तक आप ने मेरा नाम तक नहीं पूछा। अपनी गुड़िया को मुझमें देखते रहें, मैं तुम्हारे इस अतुल प्रेम की सराहना करती हूँ। तुम्हारे इस रूप को देख कर बरबस मन में आनन्द की अनुभूति होनी लगती है। आप वहाँ जायें, मैं नहीं कह सकती – वक्त को देखते हुए इस समय हमें छुप कर रहना हितप्रद हैं बाहर निकलनें का अर्थ मौत से खेलना।

मैं तुम्हारी बात मानता हूँ गुड़िया – परन्तु मेरी भावना इतनी बलवती हो गयी है कि मुझे जाने के लिये बाध्य कर रही है। प्रधान को खत्म करने की मैने प्रतिज्ञा की हैं यह देखों भानू ने हड्डीयों की एक माला दिखते हुए कहा'' ये उसी अभागी के फूल है जिसे प्रधान ने मरने के लिये मजबूर कर दिया था। जब तक इन्हें मैं प्रधान के रक्त से नहीं धो देता मुझे शान्ति नहीं मिलेगी – मुझे हर कीमत पर अपना प्रण पूरा करना है। फिर तुम जो चिन्ता करती हों उससे हम कब तक भाग सकते हैं – वक्त आने पर सब कुछ खत्म हो जाता है – सब कुछ मिट जाता है फिर मेरी क्या औकात है। मेरे ख्याल से अगर मौत की चिंता की जाये तो कभी बुद्धिमानी नहीं होगी, वैसे तुम तो जानती ही हो बहन मुझे मौत से खेलने का शौक है। मौत के भय से मैं अपने कर्तव्य से हटना नहीं चाहता – मैने किसी को वचन दिया है गुड़िया – प्रधान का बध मुझे शीघ्र ही करना है.......। मुझे अनुमति दो बहन......भानू मुस्करा पड़ा......।

मैं तुम्हारी भावना की कद्र करती हूँ भानू – फिर तुम्हें रोकने वाली भला मैं कौन हो सकती, बस एक निवेदन स्वीकार कीजिये आप अपने साथ मुझें भी.......।

युवती चुप हो गयी – परन्तु भानू उलझन में फंस गया – एकाएक कोई उत्तर न दे सका।

आप चुप क्यों हैं भइया........।

बस ऐसे ही – भानू मुस्करा पड़ा, मेरे विचार से तुम्हें मेरे साथ चलना ठीक नहीं बुरा नहीं मानना गुड़िया तुम्हारें साथ मैं कमजोर हो जाऊँगा! इसलिये लाचार

हूँ बहन।

तुम्हारी जैसी इच्छा – युवती का स्वर दर्द में डूब गया – अपने रुदन को रोकने के प्रयास में उसने आँखें बंद कर ली.....सहसा चरण स्पर्स से चौंकी – देखा भानू उसके चरणों पर झुका था।

भइया – युवती ने भानू के हाथ पकड़ लिये – यह क्या कर रहे हो मैं आप से छोटी हूँ।

हुश पगली – भानू ने युवती के केशो को सहलाते हुए कहा। मैं तुमसे वय में जरूर बड़ा हूँ, परन्तु मेरा नमन तुम्हारे ज्ञान को है – शुकदेवजी की क्या उम्र थी – परन्तु उनको कई वयोवृद्ध ऋषियों ने नमन किया था।

युवती कुछ नहीं बोली – बस भानू के वक्ष से सिर टिका कर रो पड़ी......... और भानू काफी देर तक उसे सांत्वना देता रहा।

○ ○ ○

पुलिस अपनी ऐड़ी चोटी की ताकत लगा कर भी भानू का पता न लगा सकी। अपनी हो रही बदनामी के कारण आई0जी0 की आँखों में चिंता की रेखायें गहरी हो गयी, कर्नल अग्रवाल की लाश के साथ पुलिस को कोई भी पत्र नहीं मिला था, आई0जी0 ने स्वयं पत्र के विषय में पूछताछ की थीं! उन्हें पूरा यकीन था यह खून भानू ने नहीं किया है, काफी सोचने के बाद उन्हें लगा कर्नल साहब का दस लाख का ईनाम ही इसका कारण है साफ मतलब है यह खून भानू के किसी आदमी ने किया है जो यह चुनौती बरदास नहीं कर पाया।

अग्रवाल हत्याकाण्ड काफी उलझ गया – पुलिस को सिर्फ इतना पता चला कि अग्रवाल साहब को किसी ने बिग्रेडियर अरोड़ा की आवाज में गांधी पार्क बुलाया था वहाँ से अग्रवाल साहब ने ड्रायवर वापस कर दिया था इसके अतिरिक्त पुलिस कुछ न खोज सकी........।

मनोरमा को पिता की मृत्यु का गहरा सदमा लगा। एक दिन उसने रणबीर से कहा...... यह सब आप के कारण हुआ न मैं प्रधान से नाटक करती न भानू मेरा दुश्मन बनता। आपके डैडी ने गर्व में आकर उसे जेल भेजवा दिया। उसका क्या गुनाह था परन्तु सबसे बड़ा दोष मेरा है भानू को फंसानें वाली मैं हूँ। परन्तु उसने

मुझे माफ कर दिया चाहता तो मुझे कीड़े मकोड़े जैसे मसल देता, दुनिया मैने भी देखी है रणबीर – परन्तु भानू जैसा इंसान नहीं देखा। उस दिन शायद न समझ सकी – परन्तु आज होता है गलती मैने ही की थी। अर्ध नग्न जवान लड़की को देख कर मुँह मोड़ लेना आसान नही है रणबीर मैने अपनी मम्मी को दूसरे के साथ.... ...नहीं मुझे ऐसा नहीं कहना चाहिए.........। तुम्हारे डैडी मुझे कहते तो बेबी परन्तु एक दिन मेरे उरसिज का चूम लिया, जब की मैं कमरे में कपड़े बदल रही थी......। पहले पहल मैं कुछ समझ न सकी, क्योंकि अक्सर वे मुझें प्यार से चूम लिया करते थे। परन्तु जब उन्होंने मुझे बेड पर लिटा कर गाऊन हटा दिया, उनके हाथ मेरे पैर से ऊपर बड़ने लगे तो मैं चीख पड़ी – और तभी द्वार पर किसी ने दस्तक दी थी अंकल ने मुझसे कुछ कहा नहीं चुपचाप चले गये, और मैं भी आज तक चुप रह गयी। एक दिन अंकल ने कहा – उस दिन की बात को बुरा नहीं मानना बेबी – मैं तुम्हें सैक्स के विषय में बताना चाहता था – परन्तु तुम तो बुरा ही मान गयी, मैने सिर्फ सुना और चुप चाप वहाँ से हट गयी।

जितनें भी दोस्त बनाये सब के सब एक जैसे कोई भी अंतर नहीं........ परन्तु भानू का परिचय मुझे जो मिला वह एक दम अलग था हमारे लिये......! जिस समय उसके हाथ मेरे गले पर लगें तो मुझे लगा वह मानव का हाथ नहीं वरन् लोहे का है। अपने गिरोह में ले जाकर भी सिर्फ इतना ही पूछा था कोई तकलीफ तो नहीं – इसके सिवा कोई सवाल नहीं किया परन्तु मैं एक नारी होकर भी नारी न बन सकी, दोष उस वातावरण का है जिसमें मैं पली बचपन से ही मम्मी डैडी के साथ पार्टी में जाती, शराब और ड्रांस की शौकीन हो गयी। बस इसी कारण नारी होकर लज्जा की तिलांजलि दे दी – परन्तु भानू कितना अजीब था रणबीर किसी नारी को नारी समझा ही नही।

तुम्हारा दिमाग खराब हो गया है मनोरमा या तुम्हें भानू से हमदर्दी हो गयी है। जिसने तुम्हारे डैडी मम्मी का खून कर दिया उसकी तरीफ करती हो, बंद करो यह बकवास मैं सुनना नहीं चाहता।

रणबीर मुझे भानू से हमदर्दी नहीं परन्तु मैंने जो कहा वह सत्य है! सत्य ही ईश्वर है। क्या तुम नहीं मानते।

जब तक भानू खत्म नहीं हो जाता मेरी आत्मा को संतोष नहीं मिलेगा –

कहता हुआ रणबीर खड़ा हो गया। फिर वह उस तस्वीर को देखने लगा जिसमें आनन्द पत्नी के साथ मुस्करा रहा था। बरबस ही रणबीर की आँखे गीली हो गयी।

मनोरमा को लगा रणबीर भी एक्कीसवी शताब्दी में पहुँच चुका है उसकी आत्म कथा सुनकर जैसे उसने मौन होकर कह दिया डैडी ठीक ही कर रहे थे आखिर ज्ञान ही तो दे रहे थे। न जाने क्या सोचकर मनोरमा को इस आधुनिकता से घृणा उत्पन्न हो गयी। घृणा होने लगी खुद अपने आप से इसका मूल कारण भानू का आदर्श ही था, जो मनोरमा के विवेक पर अपना अमिट छाप छोड़ चुका था।

o o o

ठाकुर साहब आप ने इज्जत रख ली, रामशरण का स्वर मारे खुशी के काँप रहा था।

ठाकुर साहब मुस्कायें – कैसी बात करते हो रामशरण प्रधान आखिर मेरा बेटा है – मेरी बात कैसे टाल सकता है – हाँ मुहूर्त कल की है, बारात कितने बजे तक आ जाये....... ।

बारात थोड़ा दिन रहे ही आ जाये, ताकि मेहमानों का उचित देख रेख कर सकू, रामशरण ने कहा ठाकुर साहब ने स्वीकृत में गर्दन हिलायी।

ठाकुर साहब जब वहाँ से चले तो मुख पर अनोखी चमक थी। घर पहुंच कर जाह्ववी से सुहागरात की बाते कहीं उस कल्पना को साकार भी करना चाहा।

वाह रे आदमी जाह्ववी मन ही मत सोच रही थी जब कि ठाकुर साहब उन्हें नयी नबेली दुल्हन की तरह चूम रहे थे, उन की हर क्रीड़ा मादक थी परन्तु जाह्ववी उस सुख की कल्पना में डूब गयी, जो अकथनीय है........ उन्हें ऐसा लगा मानों वे बहुत दूर हैं और उनका पति उनकी लाश से खेल रहा है। फिर जाह्ववी को ठाकुर साहब अबोध शिशु नजर आने लगे पानी में चांद को पकड़ता शिशु यही रूप दिखायी पड़ा पति का जाह्ववी को।

जाह्ववी की तन्द्रा टूटी – ठाकुर साहब कह रहे थे इस शादी में इतना धन मिलेगा कि तुम देखती रह जाओगी, पति की बाते सुनकर जाह्ववी की आँखे भर आयी दिल कराह उठा – परन्तु जाह्ववी खून का घूंट पी कर रही गयी...!

प्रधान के मुख पर खुशी की चमक थी, रामशरण की लड़की को उसनें

देखा – जो मनोरमा से कहीं अधिक सुन्दर थी, प्रधान उसे देखता ही रह गया।

० ० ०

रामशरन की कोठी विद्युत के प्रकाश से चमक रही थी ऐसा लगता जैसे स्वर्ग से कोई भवन भूमि पर उतर आया है बारात भी जनवासे में पहुँच गयी – रामशरण ने बारात का बड़े सुन्दर ढंग से स्वागत किया!

रात के दस बज गये भवारों का समय करीब होता जा रहा था, त्यों–त्यों गुड़िया के ह्रदय की धड़कन बढ़ रही थी, उसकी सहेलीयाँ उसे घेरे नाना प्रकार की बाते कर रही थी, परन्तु गुड़िया उन सब से बेखबर भानू की स्मृति में खो गयी, अगर आज भइया होते – सोचते सोचते गुड़िया की आँखे भरती चली गयी दिल में एक गुबार उठा जिसे वह छिपा न सकी – फूट–फूट कर रो पड़ी, ‘‘उसकी इस दशा पर पास बैठी लड़कियाँ चौंक गयी!

क्या हुआ बेटी – माँ एक दम उसकें करीब पहुँच गयी – और गुड़िया भावना में बहकर कहती चली गयी। जब तक भानू भइया नहीं आ जाते – मैं शादी नहीं करूंगी नहीं करूंगी माँ मुझपर इतनी दया करों, भानू के नाम पर वहाँ मौत जैसा संनाटा छा गया। ऐसा संनाटा कि सुई गिरने की भी आवाज सुनी जा सकती थी!

तुम पागल तो नहीं हो गयी बेटी, किसका नाम लेती हो, भानू जिसके ऊपर सारे देश की पुलिस लगी है, जो बागी है खूनी है, उसकें आने से तुम्हारी जिन्दगी बरबाद हो जायेगी बेटी।

नहीं गुड़िया लगभग चीख पड़ी – भानू भइया निर्दोष हैं तभी रामशरन भी वहाँ आ गये – किसी तरह उन्होंने गुड़िया को समझाया।

किसी बेजान लाश की भाँति गुड़िया को दो औरतों ने उठाया – फिर बेदी पर बैठा दिया, पंडित मंत्रों का जाप कर रहा था, अग्नि धधक रही थी, परन्तु गुड़िया सिसक रह थी, पंडित जी के आदेश पर भंवारें पड़ने लगी ठाकुर साहब की खुशी का ठिकना न रहा, रामशरन भी आज बेटी के बोझ से हलकें हो गये – विवाह सम्पन्न हो गया औरते लौकिक रीति रिवाज करनें लगी।

उसी क्षण दौड़ती हुई एक युवती ने प्रवेश किया एक पल में वह वहाँ पहुँच

गयी जहाँ भंवारें हुई थी। दूल्हा को देखते ही वह युवती काँपने लगी, दूसरे क्षण उसनें अपनी साड़ी खोलकर फैंक दिया! और सिंह के समान गर्जा प्रधान..........!

फिर गुड़िया पर उसकी नजर टिक गयी जो दुल्हन बनी बैठी थी! उस आवाज को सुनकर गुड़िया भी चौंक पड़ी, फिर पलट कर घूंघट की ओट से देखा तो बरबस मुख से निकल गया भइया..........! दूसरे क्षण वह सब कुछ भूल कर खड़ी हो गयी – उसे अपनी शादी का भी ध्यान न रहा। पागल की भाँति दौड़कर गुड़िया भानू के सीने से लग गयी। पर भानू ने उसे झिटक दिया। फिर चीख पड़ा मेरी बहन तूने यह क्या किया, फिर उसने गुड़िया को उठा लिया मेरी बहन मुझे माफ कर दें, कहता हुआ भानू पलट गया, ठहरों भइया कहती हुई गुड़िया ने उसे पीछे से पकड़ लिया। वहाँ पर उपस्थिति सभी स्त्री पुरुष भानू को देखकर काँप रहे थें।

भानू के गले में पड़ा एक काला धागा गुड़िया ने खीचा तो उसकें साथ छोटी–छोटी हड्डीयों भी बाहर आ गयी हड्डीयों का हार गुड़िया हैरत बस उसे देखती रह गयी......।

यह क्या है भइया – गुड़िया ने उस हार के विषय में जानना चाहा.........।

भानू के ओंठो पर उत्तर की जगह एक जहरीली मुस्कहट तैर गयी – गुड़िया को छोड़कर वह प्रधान की तरफ बढ़ा – बहुत संयम के बाद भी भानू का जिस्म क्रोध से थरथर काँप रहा था।

प्रधान यह वहीं गुड़िया है जिसका जिक्र मैं तुम से अक्सर किया करता था मैनें तुम्हें बहुत खोजा परन्तु तुम मुझे नहीं मिले – आखिर कहाँ छुप गये थे भानू के ओंठो पर कटु मुस्कहट नाच गयी।

ये हड्डीया सुधा की है प्रधान – उस दिन तुम ने झूठ बोलकर अपनी जान बचा ली थीं क्या सुधा की मृत्यु से तुम अवगत नहीं थे।

प्रधान मौन – जब कि भानू दाँत पीसते हुए बोला मैं तुम्हें कभी माफ नहीं कँरुगा, कसम गुड़िया की बिना तुम्हारा खून किये मुझे शान्ति नहीं मिल सकती तू मौत से कहाँ छिप गया था हरामखोर – भानू चीख पड़ा.....! एक सच बोल दे प्रधान – सुधा का क्या दोष था – यही न कि वह गरीब और सुन्दर थी!

यह सरासर झूठ है – प्रधान चीख पड़ा – भलाई चाहते हो तो यहाँ से चले

जाओ!

तड़ाक – भानू का हाथ प्रधान के गाल पर पड़ा प्रधान लड़खड़ा कर गिर गया। खबरदार अगर तूने सुधा को गाली दी तो तेरी जिन्दगी छीन लूँगा हरामखोर अगर तूने भानू से टकराने की कोशिश की तो यहाँ लाशों की वर्षा हो जायेगी, कहते हुए भानू ने तमंचा प्रधान के सर से सटा दिया।

''नहीं प्रधान रो पड़ा........!''

''अब भी सच बोल दो प्रधान.........!''

''मैं गुनाहगार हूँ भानू – उस दिन डर के कारण झूठ बोला था और आज डर के कारण सच बोल रहा हूँ....... ।

मरने से पहले तुम ने अपना पाप इकरार कर लिया दोस्त – और अब मैं तुम्हारे पापों की सजा मौत दे रहा हूँ –

भानू टेग्रर दबाने ही वाला था कि गुड़िया सिसक पड़ी और भानू ने जब वह चीख सुनी तो बरबस ही हाथ झुकता चला गया! दिल के गुबार को रोकने के लिये उसने दाँतों से ओंठ काट डाले – फिर गुड़िया की ओर मुखबित होकर बोला।

मैं तुम्हारा सुहाग छीन नहीं सकता गुड़िया न ही उस बदनसीब सुधा को भूल सकता हूँ – उसकी कसम भी नहीं तोड़ सकता हूँ – उसके कातिल को भी जिंदा नहीं छोड़ सकता हूँ..... अगर ममता से मुह मोड़कर चला गया तो ऊपर...... सुधा को क्या जबाब दूंगा। मैने जब से होश संभाला गुड़िया जिन्दगी को रोते देखा हैं, आधाी रोटी के लिये इन्हीं हाथों को जुड़ते हुए देखा है, परन्तु मनुष्य में मुझे दया दिखायी नहीं पड़ी, और आज यही हाथ किसी का खून करते नहीं काँपते, दुनिया ने मुझे मजलूम बनाया था और फिर मैंने दुनिया को मजलूम बनाना शुरू कर दिया। बागी बनने के बाद मैने कभी हार नहीं मानी – जिसे चाहा उसे प्राप्त किया – परन्तु आज वहीं भानू – दुनिया को मजलूम बनाने वाला – खुद मजलूम हो गया। प्रधान का खून करने की मैने प्रतिज्ञा की थी – परन्तु आज भानू अपनी प्रतिज्ञा तोड़ रहा है, भानू कहता जा रहा था, जब की वहाँ उपस्थिति हर जिस्म काँप रहा था।

गुड़िया एक बार मेरे करीब आ जा – सच कह रहा हूँ तू मुझे प्राणों से ज्यादा प्रिय हैं आओ दूर क्यों खड़ी हो – क्या मुझसे नाराज हो...।

भइया आप आवेश में क्या–क्या कह गये खुद आप को भी पता नहीं होगा, क्या इसी दिन के लिये मैं भगवान से तुम्हारी हिफाजत की प्रार्थना करती थी, कि एक दिन मेरे पति को जलील करो क्या गुनाह है स्वामी का गुड़िया का स्वर तेज था।

कोई गुनाह नहीं है तेरे पति का – वह तो र्निदोष है गुड़िया इस दुनिया में दोषी तो सिर्फ मैं हूँ। तुम्हारी शादी में आकर तुम्हें दुःख दिया – इसकी क्षमा चाहता हूँ....! अरे पगली तूने मुझे इतना नीच कैसे समझ लिया। तेरी कसम गुड़िया भानू इस परीक्षा में फेल नहीं हुआ परन्तु..........कहते–कहते भानू का चेहरा दहक उठा।

तू तो मुझसे अमित प्रेम करती थी, क्या मैं झूठ कह रहा हूँ, भानू कह चुका पर गुड़िया मूक किसी लाश के भाँति खड़ी थीं।

बहुत अच्छा हुआ गुड़िया – आज तूने भी मुझसें घृणा कर ली सिर्फ इसलिये कि तेरे पति को मैनें थप्पड़ मार दिया, पर तुमने कोई गलती नहीं की पतिव्रता नारी का यह धर्म है, तुमने अपने धर्म का पालल किया मेरे लिये हर्ष की बात है। पर भानू न तो धर्म मानता है न ही भगवान ही, क्योंकि ये दोनों मानवीय कल्पना है। गरीबों को तसल्ली देने एवं अमीरों के ऐश बरकरार रहने के साधन।

गरीबी भगवान की अनुकम्पा है कुछ लोंग कहते है गरीबी में भगवान आदमी की परीक्षा लेता है लेकिन मैं भगवान से पूछना चाहता हूँ अखिर यह कैसी परीक्षा है जो एक गरीब का बच्चा एक बूंद दूध के लिये दम तोड़ता है, और दूसरी तरफ अमीरों के घर में कुत्ते दूध पीते हैं पत्थर की मूर्तियों पर दूध की नदी बहती है।

मुझे घृणा है धर्म, भगवान और कानून से – जो सिर्फ निर्बलों के लिये होते हैं मैं वहीं करता हूँ जो मेरी आत्मा सही मानती है। सागर से पानी लेकर प्यासें को पिलाना अगर पाप है तो मैं पापी हूँ और मैं सदा पापी ही बना रहना चाहता हूँ।

प्रधान तो निर्दोष है गुड़िया – सारे गुनाह भानू ने किये है, तू जो भी चाहे मुझे सजा दे दें – आखिर तूने उस दिन रोटी देकर मेरे प्राण बचाये थे, नहीं तो अब तक भानू को मरे वर्षों हो गये होते। तेरा मुझ पर एहसान है गुड़िया – कर्जा है जिसे आज भानू उतराना चाहता है ताकि मरने के बाद भानू किसी का ऋणी न रहें। ऐसी बिकट स्थिति में भी भानू के अधरों पर मुस्कुराहट खेल रही थी।

गुड़िया कुछ कहती कि इससे पहले पुलिस साइरन की आवाज गूंज गयी – फिर इंस्पेक्टर देवेश का ललकार भरा स्वर – भानू अब तुम पुलिस के घेरे में हो – अपनी जिन्दगी चाहते हो तो अपने को कानून के हवाले कर दो वरना..... ।

भानू के ओंठो पर एक मुस्कान नाच गयी – फिर अट्टहास लगा कर हंस पड़ा........पागल इंस्पेक्टर रोशनी सिर्फ दिखयी पड़ती है उसे पकड़ने का प्रयास करना मूर्खता है।

भइया – एका एक गुड़िया भानू से लिपट गयी भाग जाओ भइया – मेरी बातों को को भूल जाना.....मुझे क्षमा कर देना भइया.... ।

पगली – तू इतनी डर क्यों रही हैं भानू ने उसका चेहरा हथेली में ले लिया, विश्वास करो गुड़िया – मैं सत्य कह रहा हूँ – प्रधान का खून मैं जरूर कर देता चाहे वह मेरी सगी बहन का पति ही क्यों न होता – परन्तु क्यों बताने का समय मेरे पास नहीं है – ऊपर जाकर किसी को जबाब देना है....... ।

इस पुलिस से तू मत डर यह क्या दुनिया के सभी स्त्री पुरुष अगर पुलिस बन जायें तो भी भानू को छू नहीं सकतें – तू पकड़ने की चिंता करती हैं याद कर गुड़िया एक दिन मैंने तुझसे कहा था – भानू जैसे उदय हुआ वैसे ही अस्त हो जायेगा – शायद आज वह समय आ गया है तेरी भक्ति के कारण मैं भी कृष्ण के समान अपना प्रण तोड़ रहा हूँ।

प्रधान मेरी तरफ देखों – आखिर पुराने दोस्त हो न सुजान को तो जानते ही हो – मेरी लाश उसी के हाथ से मिट्टी में मिलनी चाहिए – मेरा यह निवेदन है। शायद कद्र करोगें और सुनों, गुड़िया मुझे प्राणों से ज्यादा प्यारी है जिसके कारण तुम्हें जिन्दा छोड़कर सुधा के इन फूलों के साथ बागी भानू पहली बार जीवन में बेइंसाफ कर रहा है। तुम से यही विनय है इस गुड़िया को कभी दुःख नहीं देना यह नहीं सोचना की भानू मर गया, अगर तुमने मेरी बहन पर जुल्म किया तो याद रखों – भानू की आत्मा तुम पर कहर बन कर टूट पड़ेगी – फिर तुम्हारी ऐसी मृत्यु होगी कि विश्व का इतिहास एक नया अध्याय लिखेगा।

मेरी बात का सदा ध्यान रखना – हाँ मेरे जिस्म की कीमत पचास करोड़ है यह ईनाम तुम ले लेना आखिर बहुत पुराने यार हो न – अच्छा गुड़िया अब में

चलता हूँ....... ।

मेरी वीर बहन......एक बार मुस्करा दो.........देख गुड़िया कायर मत बन....... भानू के अधरों पर एक मोहक मुस्कान थी।

भइया – गुड़िया के ओंठो पर मंद मुस्कान बिना ऋतु के पुष्प के समान आ गयी – ठीक उसी क्षण पिट की आवाज गूंज गयी..... ।

गोली भानू के वक्ष में समा गयी – चन्द्र पल तड़फ कर वह सदा के लिये शान्त हो गया – गुड़िया पागलों की तरह भानू को झिझोड़ रही थी.......उठो भइया, उठो – उसकी मर्म ध्वनि प्रधान के हृदय में भी तड़प पैदा कर चुकी थी।

भानू – समाज के संपन्न तथाकथित लोग जिसे यमराज कहा करते थे मौत, बरबादी, तबाही मचाने वाला चौबीस वर्षीय भानू जिसका एक नाम मौत भी कहा जाता था, नियति के कूर चक्रों में फंस कर आज वह भी लहुलुहान हो गया, परन्तु मृत्यु लोक में वह अपना नाम अमर कर चुका था।

महान बनने के लिये दीर्घ जीवन की नहीं अपितु महान कर्म की आवश्यकता होती है, इस सत्य को भानू ने यथार्थ कर दिया था।

फायर की अवाज सुनकर देवेश भी वहाँ पहुँच गया और जब उसने दृश्य देखा तो मुख से आह निकल गयी – मूक चन्द्र क्षण तो वह सिर्फ भानू के शव को घूरता रहा – फिर न जाने किस भावना के वशीभूत होकर उसने अपनी टोपी उतार कर भानू के चरणों पर डाल दी, सहसा उसे अपनी गलती का एहसास हुआ फिर झुककर टोपी उठा लिया।

अपने को संयत कर के देवेश पुलिस कार्यवाही में लग गया।

प्रधान ने इंस्पेक्टर देवेश को सुजान का पता देते हुए कहा – इंस्पेक्टर यह लाश सुजान को दिलवा देना वह इसे बहुत चाहता था कम से कम लाश तो देख लेगा।

प्रधान की बात देवेश को अच्छी तो नहीं लगी पर बिना किसी प्रतिवाद के उसने वह पता नोट कर ली।

० ० ०

प्रधान के बताये गये पते पर देवेश स्वयं पहुँचा......इंस्पेक्टर को देखकर सुजान चौका.....अखिर बात क्या है इंस्पेक्टर...... ।

भा...........भा...........नू...........! देवेश कह न सका......!

क्या हुआ भानू को सुजान चीख पड़ा. ।

भानू खत्म हो गया – देवेश का स्वर भी...... ।

नहीं..... सुजान के मुख से घुटी–घुटी चीख निकल गयी क्या सचमुच भानू को अंत हो गया – किसने किया उसका अंत जबाब दो इंस्पेक्टर।

देवेश की आंखे डबडबा आयी – फिर बड़े करुण स्वर में बोला – उसने आत्महत्या कर ली, उसकी लाश आप को मिलनी चाहिए ऐसा मुझे प्रधान ने बताया था।

''प्रधान – कौन प्रधान – सुजान का हैरत भरा स्वर...... ।

''देवेश ने सारी कहानी कह दी!

''आप को शुक्रिया के सिवा मैं दे ही क्या सकता हूँ इंस्पेक्टर, पर आप की आँखों में आँसू क्या मैं इनका कारण जान सकता हूँ।

''नहीं बता पाऊगा सुजान – देवेश का स्वर दर्द से डूबा था।''

''तुम्हें परमात्मा की कसम – सच–सच कहो देवेश – आखिर एक कानून का रक्षक, एक बागी के लिये क्यों दुःखी है।

भानू की मृत्यु से मैं ही नहीं मेरी आत्मा भी रो पड़ी सुजान क्योंकि भानू आत्मा की पुकार का नाम था। फिर आप तो उसे अच्छी तरह से जानते थें, उस सत्य के पुजारी ने चन्द्र पल में मेरी आँखें खोलकर मुक्ति का पथ दिखा दिया। उसका परिचय आपको तो बहुत पहले से है फिर आप मुझसे क्यों पूछ रहे हैं, सुजान की आँखे डबडबा आयी.......कुछ कह न सका। अच्छा मैं अब चलता हूँ – भानू के अंतिम संस्कार के लिये मैंने पूरी व्यवस्था कर ली है बस तुम्हारी ही प्रतिक्षा रहेगी।

○ ○ ○

सफेद वस्त्र से भानू का शव लिपटा था चिता बन कर तैयार हो चुकी थी – भानू के अंतिम दर्शन के लिए सुजान ने भानू का सिर खोल दिया।

अद्भूत और आश्चर्य – सुजान के हैरत का भी ठिकना न रहा भानू के ओंठों पर अब भी मुस्कान थी ऐसा लगता मानो सोते–सोते मुस्काने की उसकी आदत है..... ।

सुजान ने भानू का मुँह ढ़क दिया तभी अलका सिसक पड़ी।

सुजान मूक शन्यू हो घूरता रहा।

भइया तुम्हारा हृदय इतना मजबूत है इसका पता मुझे आज चला क्या भानू के श्रद्धांजलि के लिये तुम्हारे पास दो बून्द अश्रु भी नहीं अलका ने कहा।

दीदी – तुम सोचती हो भानू मर गया, अरे उसे कौन मार सकता है जिसने दूसरों के लिए जीना सीखा है, मैं भानू के शव पर अश्रु गिरा कर उसकी महानता को कम नहीं करना चाहता। उसके आदर्श को नहीं तोड़ना चाहता, जिस पर आज वह कुर्बान हो गया। जानती हो दीदी भानू मौत को विश्राम कहा करता था। आज उसने अपना वचन सत्य कर दिया। देखा नहीं दीदी मर कर भी मुस्करा रहा है मेरा यार अगर मैं उसके लिये आँसू गिरता हूँ तो उसकी आत्मा भटक जायेगी।

आप ठीक कह रहें सुजान कहता हुआ देवेश आगे बढ़ गया। तुम बरबस उसके मुख से निकल गया।

मैं बहुत शरमिंदा हूँ इंस्पेक्टर अपने दोस्त का अंतिम दर्शन कर लेने दो.... ।

इंस्पेक्टर नहीं, मैं आदमी हूँ सिर्फ यहाँ मुझे देवेश कहो, मैं तुम्हें वहाँ नहीं जाने दूंगा प्रधान – भानू की मृत्यु के कारण तुम हो... ।

मुझ पर इतना जुल्म मत करो देवेश गुड़िया रो पड़ी और उनकी बाते सुनकर सुजान वहाँ आ गया।

सुजान मुझे माफ कर दो। कहते–कहते प्रधान का स्वर भर्रा गया।

चिता में सुजान ने अग्नि लगा दी, लपटे उठने लगी सुजान ने मुड़ कर प्रधान को देखा – जिसकी आँखों से मोटी–मोटी बूंदे टपक रही थी, गुड़िया हिचकियाँ ले रही थी।

सुजान आज भानू की कहानी खत्म हो गयी–प्रधान घायल स्वर में बोला.. ।

क्या बकते हो, सुजान का कटु स्वर, भानू कभी खत्म नहीं हो सकता यह

वह कहानी है जिसे इतिहास अनेक बार दुहरा चुका है बस भानू ने कुछ नवीन ढंग से मानवता की सेवा की है, सिसकती हुई मानवता के आँसू पोंछे है...... ।

चिता जल कर शान्त हो गयी.... उस राख को घूरते हुए सुजान ने कहा प्रधान वह दिन याद करो जब तुम ने चुनाव लड़ने का फैसला किया था, तुम्हारे नीति पर भानू ने अमल किया तुमने तो सिर्फ कागज पर ही लिखकर अपना कर्तव्य पूर्ण कर लिया। एक ही बात का मुझे दुःख है कि भानू को बागी नहीं बनना था।

नहीं सुजान – भानू ने जो किया वह ठीक था, तुम्हारा ख्याल सतयुग का है परन्तु यह घोर कलियुग है।

शायद तुम ठीक कहते हो देवेश सुजान ने कहा – तभी गुड़िया ने आगे बड़कर हड्डीयों का हार निकाल लिया।

''यह क्या है गुड़िया सुजान ने चौंक कर पूछा था।

''भानू भइया के गले में था गुड़िया इतना ही कह सकी सुजान को ऐसा लगा मानो ह्रदय फट जायेगा, वे सारे दृश्य एक साथ उसके सामने धूम गये। उसने खुद भानू को हार दिया था!

सुजान ने आगे बड़कर गुड़िया के हाथ से वह हार ले लिया, सारा रहस्य वह समझ चुका था। भानू की उदारता को देखकर उसकी आँखे भर आयी।

''यह हड्डीयों का हार – देवेश बोला....... ।

''अब सब कुछ भूल जाओ देवेश, भानू की उदारता या महानता को कहू मेरे पास शब्द नहीं कहता हुआ सुजान चल पड़ा – उसने पीछे मुड़कर फिर नहीं देखा।

वह युवती जिसे भानू ने गुड़िया की उपाधि दी थी, काल के कूर करो में एक दिन वह भी समा गयी।

० ० ०